

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume I (B)

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम



* अतिथि संपादक *

डॉ. अनंत केदारे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

डॉ. भाऊसाहेब नवले

उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

लोकनेते डॉ.बाबासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सन्मानित)

प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)



Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	'काली चाट' उपन्यास में चित्रित किसान जीवन का यथार्थ	डॉ. मंजु पुरी / डॉ. सुनीता	05
2	इक्कीसवीं सदी का किन्नर विमर्श और सामाजिक न्याय	डॉ. महात्मा पाण्डेय	09
3	कैलाश वनवासी की प्रकोप कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. रवि कुमार	16
4	दलितों की जीवन गाथा 'जूठन'	श्री कुपेन्द्र राठोड़	22
5	दलित साहित्य और मुर्दाहिया: एक जीवंत दस्तावेज़	डॉ. जया	25
6	'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित विमर्श	डॉ. तुबे स्वाति सुधाकर	29
7	हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	राजेश कुमार	32
8	साहित्य और पर्यावरणीय चेतना (वर्षा जल प्रबंधन और जन आंदोलन: एक विमर्श)	डॉ. सौरभ त्यागी	36
9	21 वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्या ('कुड़वाँजान', 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ', और 'एक लड़की पानी पानी' के विशेष सन्दर्भ में)	शोभांक चौधरी	39
10	आदिवासी सरहुल पर्व के गीतों में प्रकृति- सौंदर्य	आस्था कच्छप	42
11	21 वीं सदी के उपन्यासों में थर्ड जेंडर का चित्रण	डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब	44
12	मनोज सोनकर की काव्य -भाषा और दलित विमर्श	प्रा. सोनाली रामदास हरदास	47
13	'मैं भी औरत हूँ' और 'गुलाम मंडी' उपन्यासों में चित्रित किन्नर समस्याएँ	डॉ. नुरजाहान रहमतुल्लाह	49
14	जीवन संघर्ष की कहानी किन्नर विमर्श	प्रा. थोरात बबन किसन	52
15	संजीव के 'फाँस' उपन्यास में किसान विमर्श	प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण	55
16	प्रेमचंद के उपन्यास-साहित्य में किसान विमर्श	रुकसाना एल. जमादार	58
17	'सन्नाटा' कहानी में किसानों की समस्या	अंबादास.वि.कांबळे,	63
18	'गोदान' उपन्यास में किसान जीवन का संघर्ष	नितुश्री दास	65
19	हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित मुस्लिम समाज	डॉ. शकिला ज़ब्बार मुल्ला	68
20	डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों में अभिव्यक्त वृद्ध-संवेदना	सुषमा कौशल	71
21	'आना इस देश में' उपन्यास में भारत-पाक विभाजन का दर्द	डॉ. बलवंत बी.एस.	74
22	पटकथा लेखन एक परिचय	डॉ. दिग्विजय नारायण	76
23	नई पीढ़ी का भारत और समकालीन हिंदी बालकाव्य	डॉ. फ़हीम अहमद	78
24	बाल-विमर्श और फकीरचंद शुक्ला	डॉ. सुजितसिंह परिहार	81
25	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी का स्वरूप	डॉ. ललित मोहन	83
26	'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास की पृष्ठभूमि	डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे	86
27	प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य अवधारणा	प्रा. दहातोडे सोपान भानुदास	89
28	गोडवाड़ सर्किट के प्रमुख शिलालेख: एक विमर्श	डॉ. मनोज दाधीच	95
29	हरिशंकर परसाई और व्यंग्य विधा: एक विमर्श	ललित शर्मा	100
30	'बेजगह' कविता के माध्यम से अभिव्यक्त स्त्री की वेदना	डॉ. वंदना पाटील	105
31	हिंदी उपन्यास साहित्य और विमर्श - घमंत जनजाति विमर्श	डॉ. संगीता राहुल यादव	108

रुकसाना एल.जमादार

असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

यु.ई.एस महिला महाविद्यालय, सोलापुरा

मो.9579609758, ruksanjamadar7@gmail.com

सारांश:

किसान प्रेमचंद का सबसे अधिक चिन्ता का विषय रहा है। वे भारतीय किसान की दुर्दशा और शोषण से भली-भाँति परिचित थे। अपनी चिन्ता को व्यक्त करते हुए हंस की एक टिपण्णी में प्रेमचंद ने लिखा, "अंग्रेजी राज्य में गरीबों, मजदूरों और किसानों की दशा कितनी खराब है और होती जाती है उतनी समाज के और किसी अंग की नहीं। लेकिन यह सब होते हुए भी सरकार के हाथों किसी संप्रदाय की इतनी बरबादी नहीं हुई है जितनी किसानों और मजदूरों की-खासकर किसानों की।" "किसानों की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है। उन पर लगान बढ़ता जा रहा है - सख्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। कौंसिलों में उनके हितों का कोई रक्षक नहीं-अगर उन्हें संगठित करने की कोशिश भी की जाती है तो सरकार, जमींदार, सरकारी मुलाजिम और महाजन सभी भन्ना उठते हैं। चारों ओर से हाय-हाय मच जाती है। बोल्शेविज्म का हौवा बताकर उस आंदोलन को जड़ से खोदकर फेंक दिया जाता है।"

उनके उपन्यासों का मुख्य विषय ही किसान और उनसे जुड़ी समस्याएँ हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में जो किसान चित्रित किया है, वे निरीह और बेजुबान नहीं हैं, वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष भी करता है। उनके उपन्यासों में शोषण, पूंजीवादी, सामन्ती, अन्तर्वर्द्धों, टूटते हुए साम्राज्यवाद के शोषण-तंत्र कुटिल राजनीति आदि का हृदयग्राही चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद के साहित्य में भारत का सच्चा, यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रेमचंद का साहित्य हिन्दी नवजागरण की संपूर्ण विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करता है। उनके सम्पूर्ण साहित्य में मानव मात्र के प्रति असीम अनुराग है। निम्न एवं मध्यवर्गीय भारतीय जनजीवन के उत्थान के प्रति उनमें अत्याधिक लालसा थी। किसान भारतीय अर्थ-व्यवस्था का मेरूदण्ड है, फिर भी वह विभिन्न स्वार्थी तत्त्वों के शोषण का अभिशाप झेलता रहता है। किसानों के जीवन के हर पहलू का अगर किसीने चित्रित किया होगा तो वह सिर्फ-और-सिर्फ प्रेमचंद ही थे।

प्रस्तावना :

उपन्यास क्षेत्र को जैसे प्रेमचंद ने एक नई दृष्टि एक नया दृष्टिकोण दे दिया है। उपन्यासों में वे गाँव का वर्णन बखूबी करते थे। गाँव का जीवन नीरस माना गया था तथा कोई उस ओर झाँका तक नहीं लेकिन प्रेमचंद पहले कलाकार थे जो इस जीवन को उपन्यासों में चित्रित किया। किसान का मन उनके लिए एक खुली-किताब की तरह था, खुली आंख एवं मस्तिष्क से वे समस्त परिस्थितियों को देखते, परखते, पहचानते और आँकते थे। अन्य उपन्यासकारों के बीच में प्रेमचंद हिमागिरि की उच्चतम चोटि के समान खड़े दिखाई देते थे। यही नहीं, हिन्दी उपन्यास-साहित्य के इतिहास में इनका अविर्भाव ही एक महत्त्वपूर्ण घटना है, एक चमत्कार है। उनकी अनुभूति का क्षेत्र अधिक व्यापक है और इस अनुभूति के कारण ही उनमें मानव के प्रति सहानुभूति भी थी। डॉ. नगेंद्र का कहना है- "प्रेमचंद का सबसे प्रधान गुण है उनकी व्यापक सहानुभूति..... सहानुभूति का अभाव किसी भी अवस्था में नहीं है। प्रेमचंद कहीं भी कठोर नहीं होते और कहीं भी दम्भ नहीं करते। यह उनके व्यक्तित्व की अपूर्व विजय थी।"¹

साधारणतः प्रेमचंद के सभी उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। ग्रामीण समस्याएँ तो उनकी प्रायः सभी कृतियों का विषय बन गया है। उनका साहित्य केवल विश्वास के आधार पर अतीत की सदियों और असामायिक हो चुके नैतिक मूल्यों का समर्थन नहीं करता अपितु समसामायिक परिस्थितियों और समस्याओं से प्रभावित होकर समयानुकूल विवेक-विचार से संक्रमण की प्रेरणा भी देता है। अमृतराय ने प्रेमचंद को युग प्रतिनिधि कलाकार कहते हुए लिखा है- "अपने जीवन और साहित्य दोनों में प्रेमचंद पूर्ण रूप से जनवादी थे। वे अपनी जनता को अच्छी तरह जानते थे, वे उसे बहुत प्यार करते थे और उन्होंने अपनी कलम का इस्तेमाल जनता के हित में लड़नेवाली चमकदार तलवार के रूप में किया। सभी मामलों में, चाहे वे राजनीति हों, चाहे आर्थिक, चाहे सामाजिक, किसी बात के अच्छे बुरे की उनकी एक और अकेली कसौटी यह थी कि उससे जनता को

फायदा पहुँचता है या चोट लगती है।¹ इसलिए उनकी रचनाओं में हमें एक व्यवहारिक ढंग का समाजवाद दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद ने युग की चुनौती को स्वीकार किया और समयानुकूल साहित्य की रचना की जो उनके साहित्य में दृष्टिगत होता है।

प्रेमाश्रम:-

'प्रेमाश्रम' में उस सामन्ती संसार का चित्रण है जो नवीन आर्थिक शक्तियों के प्रभाव से धीरे-धीरे पूँजीवादी व्यवस्था में परिणत हो रहा था। बड़े और छोटे जमींदार अपने को नये परिवेश के अनुकूल बनाने के लिए अभिजात्य को ग्रहण करने जा रहे थे। 'प्रेमाश्रम' में जमींदार स्त्री-पुरुषों के विभिन्न प्रकार के चित्र ही नहीं, सामाजिक अन्याय और आर्थिक शोषण के विरुद्ध किसानों के संघर्ष की कथा है। प्रभाशंकर सामन्ती समाज के प्राचीन रूप की याद दिलाता है, जब इस उपन्यास का निर्माण हुआ, तब पहले विश्वयुद्ध का अन्त हुआ था। समस्त संसार में हलचल मची हुई थी। हमारे देश में स्वतंत्रता आंदोलन बड़ी तेजी से चल रहा था और उसे जन साधारण और किसानों-मजदूरों का सहयोग पहली बार प्राप्त हुआ था। प्रेमचंद जरूर इस परिस्थिति से प्रभावित थे। यह उपन्यास उनका पहला बड़ा उपन्यास है। उन्होंने हमारे देश की किसान समस्या को लेकर इसकी रचना की है। जमींदारों और उनके कारिंदों, पुलिस और दूसरे सरकारी कर्मचारियों के अत्याचार से किसान किस तरह पिसा जा रहा है, इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में उपलब्ध है।

'प्रेमाश्रम' में ज्ञानशंकर अत्यंत क्रूर जमींदार वर्ग का प्रतिनिधि है लेकिन उदारतावादी राय कमलानन्द और धर्मावतार रानी गायत्री वाणी से कुछ कहें, लेकिन किसानों के शोषण में वे किसी से पीछे नहीं। रानी गायत्री मानती हैं कि किसानों पर निर्दयता कोई अच्छी बात नहीं लेकिन यदि जमींदार असामियों पर निर्दयता करते हैं तो उनका कोई दोष नहीं। आखिर रूपए कैसे वसूल हों। अपने पति के सम्बन्ध में वह बताती हैं, "बड़े ही सज्जन पुरुष थे। सत्कार्यों में हजारों रूपये खर्च कर डालते थे। कोई दिन ऐसा नहीं था जब कि सौ-पचास साधुओं को भोजन न कराते हों। हजारों रूपये चन्दे में दे डालते थे। लेकिन वे भी आसामियों की मुश्के कसवा कर पिटवाते थे और उनके घरों में आग लगवा देते थे।"² अर्थात् अपना पति कितना अन्यायी था ग्राहकों पर जुल्म दाता था यह स्पष्ट हो जाता है। उनकी स्वार्थीता पर प्रकाश डालते हैं। 'प्रेमाश्रम' का राय कमलानन्द बड़ी-बड़ी व्यावसायिक संस्थाओं पर विश्वास नहीं करता और इस भावना को स्पष्ट रूप से कह भी देता है जब एक कम्पनी का एजन्ट उससे अपनी कम्पनी के हिस्से खरीदने का आग्रह करता है। उस समय उसका कहना है- "सेठ जगत राम और मिस्टर मनचूर जी का विभव देश का विभव नहीं है। आपकी यह कम्पनी धनवानों को और भी धनवान बनाएगी, पर जनता को इससे बहुत लाभ पहुँचने की संभावना नहीं।"³ इस प्रकार प्रेमचंद पूँजीपतियों का समायोजित उल्लेख कर, उनकी मनोवृत्तियों का खंडन करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के हृदय में किसान और मजदूरों के प्रति व्यापक सहानुभूति दिखाई देती थी।

आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने दिल दहलाने वाले शब्दों से किया है जब डपट सिंह के पुत्र की मृत्यु होती है तो उसके घर में कफन तक के लिए पैसे नहीं मिलते। कृषकों की शोचनीय दशा का यथार्थ चित्रण करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं- "चारों तरफ तबाही छाई हुई थी। ऐसा विला ही कोई घर था जिसमें धातु के बर्तन दिखाई देते हों। कितने घरों में लोहे के तवे तक न थोमिट्टी के बर्तनों को छोड़कर झोपड़ों में और कुछ दिखाई न देता था। कोठरियाँ न ओढ़ना, न बिछौना, यहाँ तक कि बहुत से घरों में खाटों तक न रथी और वह घर ही क्या थे; एक-एक, दो-दो छोटी कोठरियाँ थीं। एक मनुष्य के लिए एक पशुओं के लिए। उसी एक कोठरी में खाना, सोना-बैठना सब कुछ होता था.... जो किसान बहुत सम्पन्न समझे जाते थे, उनके बदन पर साबित कपड़े न थे। उन्हें भी एक जून चबेना पर ही काटना पड़ता था। वह भी ऋण के बोझ से दबे हुए थे..... कितने ही ऐसे गांव थे जहाँ दूध तक मयस्सर न होता था।"⁴ इस प्रकार किसानों की निर्धनता का मार्मिक चित्रण करते हुए प्रेमचंद यह भी बताते हैं कि कृषकों की निर्धनता का मुख्य कारण उनका अज्ञान है, उनकी मूर्खता है। वे कई प्रकार के शोषण सहते हैं, अन्याय सहते हैं। परिणामतः उनके पास धन का अभाव था। इसी अज्ञान के कारण कृषक/किसान ठगे जाते थे। उनकी मूर्खता का लाभ उठाकर पूँजीपति और धनी बनते जाते थे। इस कारण किसान की आर्थिक घड़ी ही बिघड़ जाती है और उन्हें अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

प्रेमचंद अपने साहित्य में किसानों के हक की बात करते हैं। वे चाहते हैं कि जमीन उसी की हो जो उसे रात-दिन मेहनत करता है, उसकी नहीं जो महलों में बैठकर उनके पसीने पर ऐश करता है। किसानों को उनका हक दिलाने की बात प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' के पात्र प्रेमशंकर के माध्यम से कही है - "भूमि उसकी है जो उसको जोते। शासक को उसकी उपज में भाग लेने का अधिकार इसलिए है कि वह देश में शांति और रक्षा की व्यवस्था करता है, जिसके बिना खेती हो नहीं सकती। किसी तीसरे वर्ग का समाज में कोई स्थान नहीं है।"⁵ किसानों की दुर्दशा और खेती से उगने वाले अनाज से दो जून की रोटी न मिल सकने की मजबूरी में प्रेमचंद किसानों के

उद्योगपति अपने मजदूरों को सुख-सुविधा देते हैं, एक अच्छा जीवन स्तर प्रदान करते हैं- एजेंट कहता है- "हम कुलियों को जैसे वस्त्र, जैसा भोजन, जैसे घर देते हैं, वैसे गांव में रहकर उन्हें कभी नसीब नहीं हो सकती। हम उनकी दवादारू का, उनकी संतानों की शिक्षा का, उन्हें बुढ़ापे में सहारा देने का उचित प्रबंध कर सकते हैं। यहाँ तक कि हम उनके मनोरंजन और व्यायाम की भी व्यवस्था कर देते हैं। वह चाहे तो टेनिस और फूटबॉल खेल सकते हैं, चाहे तो पार्क में सैर कर सकते हैं। समाह में एक-दिन गाने-बजाने के लिए समय से कुछ पहले ही छुट्टी दे दी जाती है। जहाँ तक मैं समझता हूँ पाकों में रहने के बाद कोई कुली फिर खेती करने की परवाह नहीं करेगा।"⁸ परंतु प्रेमचंद के गोदान का होरी इसके विपरीत है, वह इन सुख-साधनों का लालची नहीं है, उसे तो अपने पर भरोसा है। वह कहता है- "मजूर बन जाये, तो किसान हो जाता है। किसान बिगड़ जाये तो मजूर हो जाता है।"⁹ यह सर्वविदित है कि समस्त सामाजिक विरूपताओं के मूल में आर्थिक असमानता है। अर्थ हमारे संबंधों का निर्धारण करता है। यह एक ऐसा जीवन सत्य है जिससे समाज की सम्पूर्ण संरचना का एक-एक हिस्सा दिन की तरह उजागर होता है।

गोदान:-

यह भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। इसका नायक होरी केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय किसान के जीवन का प्रतीक है। भारतीय किसान की परंपराओं, सांस्कृतिक विरासतों, उसकी रूढ़ियों और रीति-रिवाजों, उसकी कष्ट-कथाओं, अतृप्त अभिलाषलाओं, दूसरे जमींदार, महाजन, हकीम आदि विविध वर्गों से सम्बन्धित जीवन की अभिव्यक्ति है। 'गोदान' में उच्च, मध्य, और निम्न वर्ग के पात्र आए हैं। उच्च वर्ग के अंतर्गत खन्ना जैसे पूंजीपति और राय साहब जैसे जमींदार आते हैं, मध्य वर्ग में मेहता, मालती और ओंकार नाथ आदि और निम्न वर्ग में होरी, गोबर, सिलिया, हीरा आदि पात्र आते हैं। इस उपन्यास में होरी यातना और संघर्ष के साथ अपना जीवन बिताता रहता है। उसका टूटना, बनना, हार जाना और फिर आगे चल पड़ना या एक छोटे से सपने को न पा सकना ही उसे देश और काल की सीमाओं के पार करता है। होरी ऋणग्रस्त किसान है- सबकी हाँ-हुजूरी न करें तो कैसे रह पाए? वह सरकार-मालिक रायसाहब के आदेशों को पूरी श्रद्धा, भक्ति से निभाता है। पुत्र गोबर भी पिता की चाटुकारिता का विरोधी है, पर होरी को बदल नहीं पाता।

'गोदान' का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में किसान का सहज, आंतरिक जीवन जैसा कि वह है, सामने रखने का प्रयास किया है। 'गोदान' की शुरुवात किसान जीवन के लम्बे ऐतिहासिक आकलन पर आधारित है - "गोदान का नायक न केवल उपन्यास का नायक है बल्कि भारतीय ईश्वरवादी है, भाग्यवादी है, परंपराओं और रूढ़ियों को मानने वाला है, भीरू है तथा जरूरत पड़ने पर छल और चोरी करनेवाला है।"¹⁰ इस उपन्यास द्वारा प्रेमचंद ने जमींदार और किसानों के आंतरिक भावात्मक और वैचारिक जीवन का चित्रण किया है। प्रसंगवश भले ही सम्पूर्ण समाज का चित्रण कर दिया गया है परंतु उपन्यास की धुरी किसान का दैनिक जीवन है। उपन्यास में युवा किसान के मन में क्रान्ति के बीज भी हैं, जो गोबर के व्यक्तित्व में कही कही अंकुरित होता नजर आता है। वह कहता है- "दादा का ही कलेजा है, यह सब कुछ सहते हैं, मुझसे तो एक दिन न सहा जाए।"¹¹ इससे यह स्पष्ट होता है कि युवा किसान कहीं-न-कहीं अपनी परिस्थितियों की असलीयत समझ रहा है, उससे कैसे चार हाथ करना है, यह भी जान गया है।

'गोदान' में गाँव के साथ शहर का कथानक रखकर प्रेमचंद अपने समय के समाज का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करना चाहते हैं। उनका लक्ष्य भारतीय जीवन की विशाल धारा को चित्रित करना है। गाँव की पुरानी व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो रही हैं, किसान और जमींदार दोनों टूट रहे हैं। होरी न अपने मरजाद की रक्षा कर पाता है न जमीन की। उसका बेटा गोबर शहर की शरण लेता है। जमींदार टूटती हुई सामंतवादी व्यवस्था में एक ओर गाँव का शोषण करता है और स्वयं शहर के महाजनों द्वारा शोषित होता है।

शोषण 'गोदान' का मूल विषय है और शोषित 'होरी' इसका नायक, जो भारतीय किसानों का प्रतिनिधि है। वह ग्रामीण परिवेश में पला-बढ़ा एक सामान्य गरीब किसान है जिसके चरित्र में वर्गगत अच्छाइयाँ और बुराइयाँ भी हैं। प्रेमचंद ने प्रारंभ में ही होरी का परिचय इस प्रकार दिया है। चालीस साल का वह किसान दरिद्रता, विविध प्रकार की पारिवारिक चिन्ताओं तथा साहुकार और जमींदार के खून चूसने की प्रवृत्तियों से इतना जर्जर हुआ है कि उसकी पत्नी धनिया उससे कहती भी है- "तुम्हारी यह दशा देख-देखकर तो मैं और भी सूखी जाती हूँ। भगवान यह बुढ़ापा कैसे कटेगा? किसके द्वार पर भीख मांगेंगे?"¹² और यहाँ पर पति-पत्नी के संवाद में थोड़ी-सी मूढ़ता यथार्थ की आग में झुलसने लगती है। तब होरी लाठी पकड़कर कहता है- "साठ तक पहुँचने की नौबत नहीं आने पाएगी धनिया, इसके पहले ही चल देंगे।"¹³ होरी की इन निराशा भरी बातों में उसके जीवन की सच्चाई छिपी हुई है। क्योंकि उनका जीवन ही अभावों से भरा हुआ है।

भारतीय किसान की आर्थिक समस्या को प्रेमचंद बखूबी जानते थे। प्रेमचंद का जन्म बनारस के पास लमही गाँव में हुआ था। उन्हें नौकरी करते समय गाँव-गाँव का दौरा करना पड़ता था। अतः प्रेमचंद उस ग्रामीण जीवन से सुपरिचित थे। उनकी दरिद्रता, उनकी आर्थिक विपन्नता, उनकी दुर्दशा आदि से भली-भाँति परिचित थे। उनकी कठिन परिस्थितियों ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाल दिया था। वे उस दुर्दशा का अपने उपन्यासों में अत्यंत मार्मिक शब्दों से चित्रण करते हैं। प्रेमचंद किसानों की आर्थिक दशा में सुधार करना चाहते थे। उनका विचार था कि आर्थिक दशा में सुधार किए बिना किसानों की समस्याओं का हल नहीं हो सकता। 'गोदान' में होरी के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए उसकी दयनीय आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं- "एक तो जाड़े की रात, दूसरे माघ की वर्षा। मौत-का-सा सन्नाटा छाया हुआ था। होरी भोजन करके पुनिया के मटर के खेत की मेड़ पर अपनी मडैया में लेटा हुआ था। चाहा था, शांति को भूल जाय और सो रहे; लेकिन तार-तार कम्बल, फटी हुई मिर्जई और शीत के झोंकों से गीली पुआल, इतने शत्रुओं के सम्मुख आने की नींद में साहस न था। आज तमाखू भी न मिला कि उसी से मन बहलाता। उपला सुलगा लाया था; पर शीत में वह भी बुझ गया। बेवाय फटे पैरों को पेट में डालकर, हाथों को जाँघों के बीच दबाकर और कम्बल में मुँह छिपाकर अपनी ही गर्म सांसों से 'अपने को गर्म करने की चेष्टा कर रहा था।..... कम्बल तो उसके जन्म से भी पहले का है। बचपन में अपने बाप के साथ वह इसी में सोता था, जवानी में गोबर को लेकर इसी कम्बल में उसने जाड़े काटे थे और बुढ़ापे में आज वही बूढ़ा कम्बल उसका साथी है; पर अब वह भोजन को चबाने वाला दाँत नहीं, दुखने वाला दाँत है। जीवन में ऐसा तो कोई दिन नहीं आया कि लगान महाजन को देकर कभी कुछ बचा हो।"¹⁴ इस प्रकार किसानों की निर्धनता का मार्मिक चित्रण करते हुए प्रेमचंद यह भी बताते हैं कि किसानों की निर्धनता का मुख्य कारण उनका अज्ञान है, उनकी मूर्खता है। वे कई प्रकार के शोषण सहते हैं, परिणामतः उनके पास धन का रहना असाध्य है। इसी अज्ञान के कारण बेचारे किसान ठगे जाते हैं। उनकी मूर्खता का लाभ उठाकर पूँजीपति और धनी बनते जाते हैं। प्रेमचंद किसानों को पूर्ण सुखी देखना चाहते थे। उनका हृदय किसानों के प्रति द्रवित था। उनकी कठिनाइयाँ उन्हें असह्य थीं। प्रेमचंद कृषकों के ही लेखक थे। अतः उनके सुधार का मार्ग खोजने का प्रयत्न करते रहें। उन्हें अच्छी तरह ज्ञात था कि कृषक और कृषि, देश की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। प्रेमचंद ने उनकी मात्र दयनीय दशा का चित्रण नहीं किया बल्कि मन में उभरते हुए विचारों तथा उनकी सरलता का भी चित्रण मार्मिक और सुंदर ढंग से प्रस्तुत कर दिया है।

भारतीय किसानों की सबसे ज्वलन्त समस्या ऋण के बोझ से मुक्ति पाने की समस्या है। अधिकांश किसान महाजनी सभ्यता के पाटे में पिसे जा रहे हैं। प्रेमचंद ने बताया है कि इन किसानों के लिए "कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।"¹⁵ किसानों को इस ऋण-भार से अत्यंत कष्ट उठाना पड़ा है। किसान ऋण से इतना दबा हुआ होता है कि उसे चुकाने के लिए उनके अनाज का पैसा इन्हीं महाजनों की जेब में चला जाता है और बेचारा किसान भरपेट खाना भी खा नहीं सकता। इतना होने पर भी वह ऋण से मुक्त नहीं होता। उस दल-दल में वह फंसता ही जाता है। 'गोदान' में होरी की ऋणबद्धता और अन्य किसानों की ऋण की चर्चा करते हुए प्रेमचंद मार्मिक व्यंग्य के साथ लिखते हैं- "फसल में सबकुछ खलिहान पर तौल देने पर अभी उस पर कोई सौ रुपये सूद के बढ़ते जाते थे। मंगरू साह से आज पांच साल हुए बैल के लिए साठ रुपये लिए थे। उसमें साठ दे चुका था; पर यह साठ रुपये ज्यों-के-त्यों बने हुए थे। दातादीन पंडित से तीस रुपये लेकर आलू बोये। आलू तो चोर खोद ले गए, और उस तीस के तीन बरसों में सौ हो गए थे।.... जिंदगी के दो बड़े-बड़े काम सिर पर सवार थे, गोबर और सोना का विवाहांगर सन्तोष था तो यही कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर पर न थी। प्रायः सभी किसानों का यही हाल था। अधिकांश की दशा इससे भी बदतर थी।"¹⁶ और वस्तुतः ऋण चुकाने के लिए एक दिन उसे अपना सबकुछ महाजन दातादीन के हाथों बेच देना पड़ता है। वह भूमि का स्वामी नहीं, सेवक मात्र रह जाता है। इस महाजनी प्रथा ने किसानों का खून चूस लिया और उनके जीवन के संतोष को लूट लिया, उनके खुशी को समाप्त कर दिया। एक ओर ऋण का बोझ, दूसरी ओर जमींदार के अत्याचार। इनके अत्याचारों में बेचारा किसान बुरी तरह दब जाता है। किसानों के शोषण का भयंकर रूप प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में विस्तार से प्रस्तुत किया है।

किसान धर्म पर आस्था रखते हैं। महाजन इस विषय का लाभ उठाते हैं। धर्म भीरू होने के कारण महाजनों के छलकपट और बेईमानी का विरोध नहीं करते बल्कि उनके सामने गिड़गिड़ाते हैं, अनुरोध करते हैं। इस पर महाजन उन्हें लूटने का सर्वोपरि प्रयत्न करता है। इस स्थिति का वर्णन करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं- "होरी के पेट में धर्म की क्रांति मची हुई थी अगर ठाकुर या बनिये के रूपये होते तो उसे ज्यादा चिन्ता न होती; ब्राह्मण के रूपये उसकी एक पायी भी दब गयी तो हड्डी तोड़कर लेगी। भगवान न करें कि ब्राह्मण का कोप किसी पर गिरे। बंस मे कोई चिल्लू भर पानी देनेवाला, घर में दिया जलाने-वाला भी नहीं होता। उसका धर्मभीरू मन खस्त हो उठा। उसने दौड़कर पंडितजी के चरण पकड़ लिये और आर्त स्वर में बोला-महाराज, जब तक मैं जीता हूँ मैं तुम्हारी एक-एक पाई

स्पष्ट होता है शोषक वर्ग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कुछ भी करने पर तुले रहते हैं किसानों की धर्म परायणता, अन्ध-विश्वास, निर्धनता और अबोधता पर मौज उड़ाते हैं, उन्हें लूट लेते हैं। उन निरीह किसानों को दिन-भर मेहनत करने पर भी न भरपेट खाना मिलता है, न तन ढँकने के लिए कपड़े ही। यह सब महाजनों की मेहरबानी है कि ये किसान इस तरह का जीवन जीने के लिए मजबूर है इस तरह प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान वर्ग के जीवन की झांकी मिलती है।

निष्कर्ष:-

“औपन्यासिक तत्व समस्यामूलक उपन्यासों में सीमित और विशिष्ट दृष्टिकोण लेकर आते हैं। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन देशकाल आदि सभी तत्व किंचित परिवर्तित रूप में इनमें दृष्टिगोचर होंगे। जहाँ तक वस्तु का सम्बन्ध है, समस्यामूलक उपन्यास में उसके विन्यास का विशेष महत्त्व है। समस्या को आधार मानकर उपन्यासकार वस्तु की रचना करता है। जीवन की घटनाओं का वह इस तरह संकलन करता है कि समस्या पाठकों के सामने धीरे-धीरे आती जाय और आगे चलकर पूरे उपन्यास पर छा जाय।”¹⁸ प्रेमचंद के उपन्यास ऐसे ही महान उपन्यास है जो समाज सुधारने, परंपरागत कुरीतियों को बदलने में सहायक सिद्ध होते हैं। अपने उपन्यासों में प्रेमचंद ने न केवल समस्याओं का सम्योचित उद्घाटन किया है, बल्कि उनके निवारणार्थ उपयुक्त सूझाव भी दिए हैं- जैसे ‘प्रेमाश्रम’ में किसान अपने अधिकार के लिए न्यायालय की शरण लेते हैं। ‘गोदान’ तक आते-आते प्रेमचंद के समक्ष इन किसान आंदोलनों की वास्तविकता पूरी तरह उजागर हो चुकी है। ये तथाकथित किसान आंदोलन दरअसल जमींदारों के हित, पोषण के लिए हैं, यह बात अब प्रेमचंद भलीभाँति समझ चुके हैं। इसलिए ‘गोदान’ में कोई किसान-आंदोलन नहीं है, यहाँ चतुर्दिक शोषण के बीच उनका सामना करता हुआ होरी अकेला खड़ा है। पुलिस, प्रशासन, कायदे-कानून सभी शोषकों के साथ है। इसलिए ‘गोदान’ का ‘होरी’ कर्ज के जाल में फँसकर मजदूर बनने को विवश है। भारतीय किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। इनके बगैर खुशहाल देश की उम्मीद करना बेमानी होगी। जब तक किसान खुश नहीं होंगे तब तक भारतीय व्यवस्था पूरी तरह से मजबूत नहीं होगी। भारत के चतुर्मुखी विकास के लिए भारतीय किसानों का उद्धार होना जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. प्रेमचंद साहित्य और संवेदना: संपादक-पी.वी. विजयन, पृ. 40
2. प्रेमचंद घर में : शिवरानी प्रेमचंद-पृ. 128.
3. प्रेमचंद साहित्य और संवेदना: संपादक-पी.वी. विजयन, पृ. 137.
4. प्रेमचंद-प्रेमाश्रम: अनुपम प्रकाशन, संस्करण. 2008, पृ. 89.
5. प्रेमचंद-प्रेमाश्रम: अनुपम प्रकाशन, संस्करण. 2008, पृ. 91.
6. प्रेमचंद-प्रेमाश्रम: अनुपम प्रकाशन, संस्करण. 2008, पृ. 158.
7. प्रेमचंद-प्रेमाश्रम: अनुपम प्रकाशन, संस्करण. 2008, पृ. 272.
8. प्रेमचंद-प्रेमाश्रम: अनुपम प्रकाशन, संस्करण. 2008, पृ. 67.
9. प्रेमचंद- ‘गोदान’ रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 143.
10. सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- प्रेमचंद, कीर्ति प्रकाशन गोरखपुर (1980) पृ. 165.
11. सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- प्रेमचंद, कीर्ति प्रकाशन गोरखपुर (1980) पृ. 166.
12. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 229.
13. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 229.
14. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 158.
15. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 45-46.
16. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 45-46.
17. प्रेमचंद-गोदान, रजत प्रकाशन, मेरठ, संस्करण-1995, पृ. 297-298.
18. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद-डॉ. महेंद्र भटनागर पृ. 192.



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
A/P Dongar Kathora, Tal-Yawal, Dist-Jalgaon, Maharashtra, India Pin Code: 425301

Certificate of Publication

This is to certify that the review board of Akshara Multidisciplinary Research Journal

accepted the research paper / article by

Prof./ Dr./ Mr./ Mrs *Jamadar Ruksana Lal Ahmed*

titled as *"Prem Chand ke Upanyas Sahitya mein kisan Vimarsh"*

It is peer reviewed and published in the Volume *I (B) Issue April 2022* *in the month of* *April*

Issue *05*

We express our thanks for sending research material to be published in our AMRJ.

SJIF Impact-5.54



G. S. Koli
Editor in Chief
Dr. G. S. Koli

وزارت ثقافت، بھارت سرکار کی جانب سے قومی ایوارڈ یافتہ مجلہ



UGC CARE LISTED
JOURNAL

ISSN 2278-229X

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

جولائی تا ستمبر ۲۰۲۱ء

اس شمارے کے قلم کار

باب نثر
ستیا پال آنند، میمون علی جوگے، اسلم حشید پوری، فرزانہ ایم شیخ، آو قیر زیدی
محمد انصر، ڈاکٹر عامر شیخ، فطین، ڈاکٹر غوث احمد شیخ لال نبی، ڈاکٹر محمود عالم

باب نظم
کنور صبیحہ رستگہ، بیدی سحر، عبداللہ جاوید، اظہر شنائی
ڈاکٹر کلیم شیخ، گل بخشا لوی، ڈاکٹر احمد معراج

افسانے
محمد جمیل شاہد، عامر صدیقی، فریدہ انصاری

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور) (2021-22)

مولوی عبدالحق کی علمی خدمات

مولوی عبدالحق صاحب 1888ء میں علی گڑھ آئے علی گڑھ اس زمانے میں برصغیر کے مسلمان نوجوانوں کا مرکز نگاہ و قلب تھا برصغیر کے گوشے گوشے سے مسلمان طلباء علی گڑھ میں داخلہ لیتا اپنی شان اور عزت تصور کرتے تھے یونین سازی، کھیل کود اور مختلف انجمنیں علی گڑھ کی جان تھیں مولوی عبدالحق صاحب نے بھی علی گڑھ کے ماحول میں اپنے لئے ادبی میدان چن لیا مولوی عبدالحق صاحب تحریر کرتے ہیں:

”میں کالج کا ایک مضامین طالب علم تھا۔ نہ کبھی کھیلوں میں شریک ہوا نہ یونین میں حصہ لیا اور نہ انتخاب پریزیڈنٹ و سیکرٹری کے ہنگاموں میں شامل ہوا کالج میں کئی انجمنیں تھیں، میں نے نہ ان میں شرکت کی البتہ ”انخوان الصفا“ میں جس کے بانی پروفیسر آرٹلڈ تھے دو ایک مضمون پڑھے ایک مضمون میں نے سینٹ پال پڑھا اس دن سے طالب علم مجھے سینٹ پال کہنے لگے۔“

علی گڑھ کے زمانہ طالب علمی میں مولوی عبدالحق صاحب کو مضمون نویسی کے مقابلے میں ایک مضمون پر لارڈ ڈینس ڈاؤن تمنہ ملا۔ گو یہ سب کچھ طالب علمانہ سرگرمیاں اور شوق تھے لیکن سرسید خان صاحب کی نظر کرم، حالی کا قرب اور شبلی کی شاگردی نے اس جوہر کو کندن بنا دیا اور علی گڑھ کے زمانہ طالب علمی میں قلم سے جو رشہ جوڑا وہ بستر مرگ تک قائم رہا اور لکھنا پڑھنا ہی مولوی عبدالحق صاحب کا اوڑھنا بچھونا بن گیا۔ مولوی عبدالحق نے اپنے ابتدائی مضامین کے سلسلے میں اپنے ایک خط مورخہ 21 ستمبر 1951ء میں ڈاکٹر عبادت بریلوی کو تحریر کیا:

”میرے تین مضمون جملہ عثمانیہ میں چھپے تھے ایک ”ایہام“ اور دوسرا ”چندہ“ ”چندہ“ تو کچھ لوگوں نے الگ بھی چھاپ دیا لیکن ”ایہام“ جملہ عثمانیہ سے مل سکتا ہے تیسرا ”قدیم اردو میں قرآن مجید کے ترجمے“ ”اردو“ میں بھی چھپا تھا۔ ایک اور مضمون ”انسانیت اور درندگی“ مولوی ظفر علی خان کے رسالے میں چھپا

تھا، جو کسی زمانے میں انہوں نے الہ آباد سے نکالا تھا یہ مضمون نصاب کی کتابوں میں بہت نقل ہوا ہے ایسے ہی مضامین قدیم علی گڑھ میگزین وغیرہ میں ہوں گے مگر وہ قابل ذکر نہیں ”دکن ریویو“ (ظفر علی خان) میں بھی کچھ مضمون لکھے تھے عالم اسلامی پر ایک مسلسل مضمون تھا جو کم و بیش 300 صفحوں پر ختم ہوا مگر اس قابل نہیں کہ مجموعہ میں شامل کیا جائے، زمانہ بہت بدل گیا ہے۔“

مولوی عبدالحق صاحب کا باقاعدہ تصنیف و تالیف کا سلسلہ 1905ء میں مولانا ظفر علی خان کی کتاب ”جنگ روس و جاپان“ کے مقدمہ سے شروع ہوا اور اس کی آخری کڑی ”قاموس الکتب“ کا مقدمہ ہے جو انہوں نے بستر مرگ پر 22 جون 1961ء کو جناح ہسپتال کے کمرہ نمبر تیرہ میں مکمل کیا۔ مولوی عبدالحق صاحب کی لوح و قلم کی اس طویل رفاقت نے اردو ادب کو انمول خزانوں سے بھر دیا۔

مولوی عبدالحق صاحب کی تصنیفی و تالیفی خدمات کا دامن بہت وسیع ہے۔ انہوں نے بہت سی کتابیں تصنیف کیں ان میں اردو کی نشوونما میں صوفیا کرام کا حصہ، مرحوم دلی کالج، سرسید احمد خان (حالات و افکار) افکار حالی، نصرتی ملک اشعراء بیجاپور، سر آغاز خان کی اردو نوازی، اردو زبان میں اصطلاحات کا مسئلہ، مرہٹی زبان پر فارسی کا اثر، انتخاب کلام میر، چند ہم عصر، قواعد اردو اور صرف و نحو جیسی کتب شامل ہیں جب کہ تالیفی سرمایہ میں دی اسٹینڈرڈ اردو ڈکشنری، اسٹوڈنٹس ڈکشنری، جیسی لغات ہیں اور اس کے علاوہ بہت سی ایسی قدیم کتب کی تدوین و ترتیب ہے جو گوشہ گم نامی میں تھیں۔ ان پر معلومات افزا مقدمات تحریر کئے جو اپنی جگہ خود تحقیقی و تخلیقی اور تصنیفی حیثیت رکھتے ہیں۔ سینکڑوں کتب کے دیباچے و تعارف مولوی عبدالحق صاحب کے زور قلم کا نتیجہ ہیں انجمن ترقی اردو کی رودادیں، اردو کی ترویج کی خاطر برصغیر کے گوشے گوشے اور کونے کونے میں دیئے گئے خطبات اور ہزاروں انہوں اور غیروں کو لکھے گئے مکاتیب، یہ سب کچھ مولوی عبدالحق صاحب کا تصنیفی و تالیفی سرمایہ ہے، جس کی بدولت اردو زبان و ادب کا دامن وسیع ہوا۔

مولوی عبدالحق کے تصنیفی و تالیفی سرمایہ کا ایک کثیر حصہ ان کی زندگی میں ہی منظر شہود پر آچکا تھا لیکن ان کی بعض کاوشیں اور بالخصوص ان کے بکھرے ہوئے خطوط ان کے انتقال کے بعد مرتب ہو کر طباعت کے زیور سے آراستہ ہوئے اور اب بھی ان کے بہت سے مضامین اور خطوط غیر مطبوعہ شکل میں موجود ہوں گے ان کا جو بھی تصنیفی و تالیفی سرمایہ کتابی شکل میں سامنے آیا ہے۔ بابائے اردو ڈاکٹر مولوی عبدالحق کا مقام ہند و پال میں اردو سے بے پناہ محبت کرنے والے اور اردو تحریک کو بام عروج تک

پہنچانے والوں میں سب سے زیادہ نمایاں ہے اس کے علاوہ دنیا میں کسی بھی زبان میں اس زبان سے اس قدر محبت کرنے اور اس کے فروغ کے لئے آخری سانسوں تک جدوجہد کرنے والی اگر کوئی شخصیت ہے تو یہ منفرد اعزاز بھی بابائے اردو مولوی عبدالحق کو حاصل ہے۔ بابائے اردو مولوی عبدالحق کو ابتداء ہی میں ریاضی سے گہرا لگاؤ تھا جس نے انہیں غور و فکر اور مشاہدے کا عادی بنا دیا۔

اس کے علاوہ انہیں فارسی اور اردو شاعری، نثر نگاری، تاریخ، فلسفہ اور مذہب کا مطالعہ کرنے کا بھی شوق تھا ان علوم اور ادب کے مطالعے نے مولوی عبدالحق کے قلب و ذہن پر مثبت اثرات مرتب کیے انہیں اپنے اطراف سے گہری دلچسپی پیدا ہوئی۔ غور و فکر، مطالعے اور مشاہدے کا ذوق مزید گہرا ہوا ان کی فکر میں وسعت، تخیل میں بلندی اور زبان و بیان کی باریکیاں واضح ہوئیں۔ بابائے اردو ڈاکٹر مولوی عبدالحق کے بے شمار کارنامے ہیں طلب آگہی نے انہیں مزید متحرک اور مضطرب بنا دیا تھا۔ پہلی بار مولوی عبدالحق کی کاوشوں سے دکنی زبان کے علمی اور ادبی شہ پارے سامنے آئے انہوں نے اپنی تحقیقی کاوشوں سے اس گوشہ ادب کی علمی اور لسانی اہمیت کو اجاگر کیا۔

فورٹ ولیم کالج کی طرز سے ذرا ہٹ کر دوبارہ دہلی کالج قائم کیا جس سے بلاشبہ اردو میں پختہ مغربی ادب اور علوم سے آگہی کا موقع میسر آیا۔ دہلی کالج نے اس دور کے طلبہ کی شخصیت اور ذہن سازی میں نمایاں کردار ادا کیا۔ بابائے اردو مولوی عبدالحق نے نہ صرف اردو میں تنقید نگاری، مقدمہ نگاری اور محتویت عطا کی بلکہ اردو میں پہلی بار حقیقی تبصرہ، جائزہ اور لسانی اکتساب صرف بابائے اردو مولوی عبدالحق کی مقدمہ نگاری میں میسر آیا انہوں نے اردو میں تبصرہ نگاری کو ایک نیا رنگ اور ڈھنگ عطا کیا۔ فارسی اور اردو ادب، تاریخ و فلسفہ کے شوق نے انہیں، مطالعہ کی طرف راغب کیا اور عبدالحق نے کتابوں سے گہری دوستی کر لی جس نے انہیں غور و فکر اور مشاہدے کے ساتھ نثر اور شاعری کو پرکھنے، تحقیق و تنقید کی نظر سے دیکھنے کا عادی بنایا اور خود ان کے تخیل نے قلم کے ذریعے صفحات پر اترا شروع کیا۔ بابائے اردو ڈاکٹر مولوی عبدالحق کے یوں تو متعدد علمی اور ادبی کارنامے گوائے جاسکتے ہیں، لیکن مستندین کے لیے ان کی تحقیقی اور لسانی کاوشوں کی وجہ سے انہیں، اردو کا عظیم محسن کہا جاتا ہے۔ مولوی عبدالحق نے اردو میں تنقید و مقدمہ نگاری کے علاوہ مختلف تصانیف، تالیفات پر تبصرہ اور جائزہ لینے کے لیے ایک نیا ڈھنگ عطا کیا۔

مولوی عبدالحق کی ذات ایک انجمن تھی اگرچہ انہوں نے بڑا تصنیفی سرمایہ نہیں چھوڑا تاہم جو

تنقید و تحقیق کا کام انہوں نے کیا ہے اسے اردو ادب فراموش نہیں کر سکتا۔ ایک اہم کارنامہ جسے اردو

ادب میں قدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے وہ ان کے خاکوں کا مجموعہ ”چند ہم عصر ہے“ عبدالحق نے ان خاکوں میں محبت یا عداوت سے بلند ہو کر تقریباً معروضیت کے ساتھ شخصیات کا مطالبہ کیا ہے کیونکہ وہ انسان اور انسانیت کی عظمت کے شناسا ہیں۔ جس شخص کا خاکہ تحریر کرتے ہیں اس شخصیت کے کسی روشن پہلو کو مد نظر رکھتے ہیں اور نہایت پر اثر انداز میں بیان کرتے ہیں۔ شخصیت کی پرکھ میں اس کی بڑی اہمیت ہے کہ خاکہ نگار کے ذہن میں خوبیوں اور خامیوں کا کیا معیار ہے؟ اس لئے یہ جاننا ضروری ہے کہ خاکہ نگار نے شخصیت کے کن خوبیوں کی ستائش کی ہے اور کن کمزوریوں کو بے نقاب کیا ہے۔ مولوی عبدالحق نے محاسن و معائب بیان کرنے میں دوستی، تعلقات اور شخصیات کی عظمت و شہرت کی کبھی پرواہ نہ کی۔ مولوی عبدالحق کے خاکوں میں ضمیر واحد متکلم کا استعمال بہت کم ہوا ہے یہ وہ خوبی ہے جو خاکوں کے معیاری ہونے کی ضمانت ہو سکتی ہے ”چند ہم عصر“ میں مولوی عبدالحق نے اپنے خاکوں میں کرداروں کی اس طرح مرقع کشی کی ہے کہ ان سے اپنائیت کا احساس ہوتا ہے اور خاکہ نگار کی نہ صرف انسان دوستی کا پتہ چلتا ہے بلکہ قاری کے دل میں انسانیت کا احساس بھی موجزن ہو جاتا ہے۔ خاکے کی زبان و بیان، سیرت و کردار کی بے لاگ معاشرتی عکاسی اور فنی اصولوں کی پاسداری کے لحاظ سے ”چند ہم عصر“ اردو خاکہ نگاری کے لیے مشعل راہ ہے۔

مولوی عبدالحق کا ایک کارنامہ انجمن ترقی اردو ہے جسے انھوں نے فعال ترین تنظیم اور علمی ادارہ بنایا اور اس انجمن کے تحت لسانیات اور جدید علوم سے متعلق کتابوں کی اشاعت اور علمی و ادبی سرگرمیوں کو فروغ حاصل ہوا۔ قیام پاکستان کے بعد اسی انجمن کے زور پر اردو آئرس کالج، اردو سائنس کالج، اردو کامرس کالج اور اردو لاکالج قائم کیے گئے۔ مولوی عبدالحق نے حیدرآباد دکن میں اسکول و کالج کے لیے خدمات اور سلطان العلوم نظام میر عثمان علی خان کی ذاتی دل چسپی سے قائم کردہ جامعہ عثمانیہ جس کا ذریعہ تعلیم اردو تھا، کے لیے بھی خدمات انجام دیں اور اردو لغت، فنون و سائنسی اصطلاحات کے تراجم اسی زمانے میں ہوئے۔ مولوی عبدالحق کی نگری، علمی، ادبی، لسانی اور تعلیمی جدوجہد کے بارے میں جیسا کہ سب جانتے ہیں وہ سراپا اردو اور اردو ادب کی ایک نادر اور منفرد شخصیت تھے۔ غالب کے خطوط کی ادب میں اپنی ایک اہمیت ہے۔ اس روایت کو آگے بڑھانے میں بابائے اردو مولوی عبدالحق نے زبان و بیان کا ایک نمونہ پیش کیا اور ان کے خطوط بھی اردو ادب کا اہم اثاثہ بن گئے اس میدان میں بھی بابائے اردو اکثر مولوی عبدالحق نے اپنا الگ مقام بنایا۔ بابائے اردو کی پوری زندگی اردو کے فروغ کی جدوجہد میں گزری، انجمن ترقی اردو اور لائبریری اور جامعہ عثمانیہ پر بابائے اردو اکثر مولوی عبدالحق کا بڑا قرض ہے۔



**A GEOGRAPHICAL ANALYSIS OF POTENTIALITY OF WATER
IN SOLAPUR DISTRICT**

DR. NAYAB Z.A.
Assistant Professor,
Geography Department,
UES. Mahila Mahavidyalaya, Solapur

Abstract

Water is singly the most important element to the world as a whole. It is the life blood of the environment essential to the survival of all living things, whether it is plant, an animal or humans. All the human activities use fresh water. 97% water on the earth is salty and only 3% is fresh water. (Dr. Pawan Kumar 2014). The world's supply of clean, fresh water is steadily decreasing. World's available fresh water is not distributed uniformly aerially and throughout the season or from year to year. Availability of water for consumption getting scarce day by day due to various activities of man. Today huge amount of water is required due to large number of total population and development in agriculture, industries etc. Hence attempt has made in this article to study the availability, potentiality of water in Solapur district.

Key words - Environment, availability, consumption, potentiality.

Introduction -

Water on the earth is found in different forms. Its major portion is distributed in saline form in seas and ocean, whereas fresh water is available in a small quantity. Water vapour is an important part of the atmosphere which plays an important role in the energy circle. Water resources are found in the forms of solid (ice), liquid (water) and vapour (gaseous form) and found in seas and oceans, under the ground (groundwater) and on the surface of earth (surface water). Out of these ground and surface water are only useful for drinking, agriculture and industries etc. According to Indian standard 135 liters of water is required for per person per day. But the water is not available as required quantity. So the people are suffering from shortage of water. The storage of water from the rainfall by adopting different methods are very necessary, e.g. through rainwater harvesting, increase the input to a sub-surface water source by building reservoirs or detention ponds.

In short available fresh water which can be usable to human being and other living beings is only 0.02%.i.e. very very small quantity of water is available on earth for human and other living beings. Hence it should be used very economically and in pure form. Otherwise shortage of fresh water will

create very acute problems on the earth. The research article focuses the availability and potentiality of water in Solapur district.

Objectives -

- 1- To study the water resources in Solapur.
- 2- To study the availability of water in Solapur.
- 3- To study the potentiality of drinking water in Solapur.

Research Methodology-

The present study based on primary and secondary data. The data collected from irrigation department, the municipal Corporation and socio economic abstract of Solapur District. The information is also collected from interview and daily newspapers.

Study Area-

Solapur district is situated in eastern part of western Maharashtra and south eastern part of Maharashtra. It is extended from $17^{\circ} 10'$ N to $18^{\circ} 32'$ North latitude and $74^{\circ} 42'$ east to $76^{\circ} 15'$ east longitude. The total geographical area of the district is 14895 sq. Kms. From the administrative point of view, it is divided into 3 sub-divisions namely Solapur, Pandharpur and Madha. The district is divided into 11 Talukas and 1142 villages.

Solapur district is bounded by Ahmednagar in the north, Osmanabad to east, the border of Karnataka and Sangli to the south, Satara and Pune district to the west.



Results and Discussion-

Water can be available through different modes and means. The main source of water i.e. water is available directly from the rainfall, the surface runoff as well as from groundwater. Availability of groundwater and surface water is totally depending upon the amount of rainfall in any region. Generally, in low rainfall area the surface water and groundwater availability is low and in high

Artificial Source of Water

Apart from rainfall the water is also made available from artificial sources like dams, canals etc. One of the important artificial source of water is Bhima Ujani Project. Besides this water is also available from Nira Right Bank Canal, Sina Kolegaon Project and Kukdi Project from other districts.

Table No. 1
Availability of water through dam for Solapur District (water in million cubic metre)

Sr. No	Name of the Project	Storage Capacity	Water for Solapur
1	BhimaUjani Project	3320	1396.53
2	Nira Right Bank Canal	726.46	86.06
3	SinaKolegaon Project	150.49	1.46
4	Kukdi Project	1037.6	1.6
	Total		1485.65

Source: Compiled by researcher

• Ujani Reservoir-

One of the important artificial source of water for Solapur district is Ujani Dam. It is also known as Bhima Ujani Project or Bhima irrigation project. The total storage capacity of Ujani dam is 117 TMC. It is one of the biggest reservoir in the region. The catchment area of the reservoir is 2.410 km³ (0.578 cumi)(Irrigation Department Solapur- 2005). The project provides water for agriculture, hydroelectric power, drinking, industries and for fishing activities. Water supplied from the reservoir to irrigate agricultural areas primarily aims to reduce incidence of famine and scarcity during drought conditions. The department generally releases water in four rotation, two rotation in winter and two in summer. Some of the important crop grown under irrigated conditions is sugarcane wheat, millet, and cotton.

Most of the reservoir water is used by Bhima Sina river and Sina-Madha Ursa jalsinchan and it is 30.41 TMC. Very less amount of water (103.89 mcm) is used for drinking purpose and (7.78 mcm) for industrial purpose.

• Nira Right Bank Canal

The Nira Right Bank Canal is constructed on Nira river. Total storage capacity of the dam is 25.65 TMC (726.46 mcm). The Nira Right Bank Canal is fed by Bhatghar dam in Pune District. The length of the Canal is 153 kms passing through Solapur and Satara district. This canal system provides irrigation facilities to Malshiras taluka, Pandharpur taluka and Sangola taluka and irrigate about 35236, 5656 and 2350 hectares respectively (Nira canal, Phalton). The water available from this project is 430 mcm.

• Sina- Kolegaon Project

The dam constructed on Sina river, in Paranda taluka of Osmanabad district. The catchment area of the dam is 5569 sq.kms. Gross storage capacity is 150.49 mcm. Live storage is 76.19 mcm and dead storage is 74.30 mcm The length of the dam is 1770 mts

While the height is 36-60 mts. Gross cropped area under the dam is 14641 hectares and irrigated Cropped area is 12100 hectares . There is no provision of drinking water to Solapur district by this project .The dam water(1.46 mcm) irrigate 3400 hectares land of Karmala taluka by lift irrigation. The project is

rainfall areas the surface water and ground water availability is more, but it also depends on number of factors like slope, rock type etc.

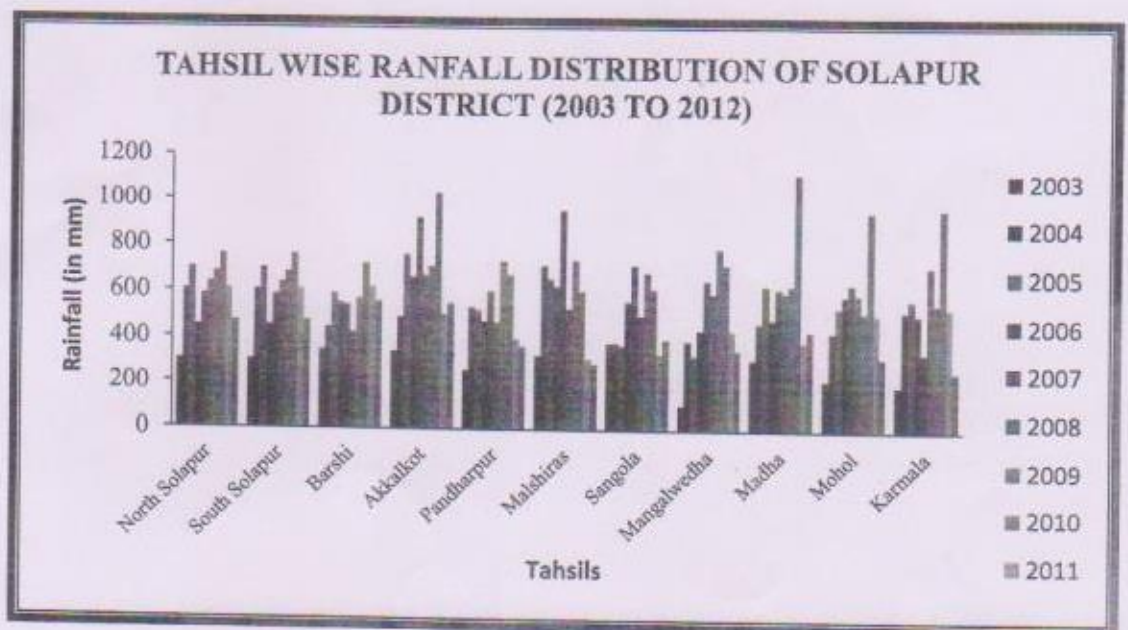
Solapur district receives water through two main sources.

- **Natural Sources**
- **Artificial Sources**

Natural Sources

Rainfall is the important natural source of water in the district. On an average the Solapur district receives 550 mm rainfall per year. But the availability of rainfall varies from year to year. The availability of water through rainfall is shown in the table. (Table 1).

The rainfall data supplied by the IMD (Indian Meteorological Department) is the average for last 10 years and the average rainfall is calculated for all the tahsils in Solapur district. It is observed that in the district minimum average annual rainfall in last 10 years is 479 mm. While maximum average rainfall is 662 mm in Akkalkot tahsil. The eastern part of the district i.e. North Solapur, South Solapur and Akkalkot, the average annual rainfall ranges between 579 mm to 650 mm. In the western part (Malshiras) receives average annual rainfall is 584 mm and the southern part (Sangola) receives average annual rainfall 492 mm.



The graph shows that rainfall is high in the year 2010. i.e. the average rainfall is 809 mm. and the rainfall is less in the year 2003 i.e. the average rainfall is 278 mm.

The data also shows that last 3 to 4 years, the average annual rainfall is 470 mm which is low as compare to requirement. Hence the Solapur district suffers from the shortage of water. So the drought condition occurs frequently. in Solapur district.

benefit Karmala, Barshi and Mohol talukas of Solapur district. The project is Completed in 2010-11.(SinaKolegaon project- Paranda). The water available for Solapur district is 1.46 mcm.

• **Kukdi Project**

Kukdi Major irrigation project constructed on Kukdi River. The work was started in 1969 and completed in 2009. Five storage dams are constructed across five tributaries such as Yedgaon dam, Manikdoh Dam, Dimbhe Dam, Wadaj Dam and Pimpalgaon Joge Dam. The total irrigable command area under the Project is 156278 hectares belongs to Seventalukas of three district namely Pune district (Ambegaon, Junnar and Shirur taluka), Ahmednagar district (Pamer Shrigonda and Karjattaluka) and Solapur district (Karmala taluka). Kukdi left bank canal irrigates 24562 hectares land of Karmala taluka. The water available for Solapur district is 1.6 mcm.

POTENTIAL OF WATER IN SOLAPUR DISTRICT

Water is available mainly from rain and underground. Hence to fulfill the needs of population it is very essential to know the potentiality of water in Solapur district. Water potential can be studied by two ways as,

- Potential of Open surface rainwater.
- Potential of Ground water.

Potential of Open surface rainwater

Rain is real and important source of water. The amount of water which can be obtain from rain in Solapur district is calculated by following formula.

Formula: $P = R \times A \times Cr.$

Where $P =$ Potential of water in liters
 $R =$ Annual rainfall in mms.
 $A =$ Area of the region in Sq. mts.
 $Cr. =$ Co-efficient of runoff.

Total area of Solapur district is 14895 Sq.kms. i.e. 1489500 sq.mts. The amount of average and annual rainfall of Solapur district is 870 mms. in 2014-15, This amount is shown in the table 4.

Table No. 2 Annual rainfall of Solapur district.

Month	Jan	Feb	Mar	April	May	June	July	Aug	Sep	Oct	Nov	Dec	Total
Rainfall	0	33	63	12	120	78	108	141	192	105	18	0	870

Source: Socio-economic abstract of Solapur district 2014-15.

Solapur district receives 870 mm. rainfall in the year 2012. Out of this 1% rainfall waist through infiltration and 4% rainfall wastage through evaporation. Hence total available rainfall is as follows ---

Available rainfall = Total rainfall – evaporation- groundwater

$$= 870 - 34.8 - 8.7$$

$$= 826.5 \text{ mm}$$

Total 826.5 mm rainfall received by the earth surface in the year 2012 .Hence according to the formula potential of open surface rainwater in Solapur district is

$$\begin{aligned} P &= R \times A \times \text{co-efficient.} \\ &= 826.5 \times 14895000 \times 1 \\ &= 12310717500 \text{ liters.} \end{aligned}$$

And the potential of water collected from open surface is 12,310,717,500 liters (1.23 mcm).

Ground Water Resource

Groundwater is an important source to meet the water requirements of various sectors. Demands for groundwater resources are ever increasing from day today. It can be classified as static or dynamic based on aquifers below or above the zone of groundwater table fluctuation respectively.

The total groundwater resources would be available for utilization for irrigation, domestic and industrial uses. Out of the total groundwater resources 15% was kept for domestic and industrial uses and remaining 85% was kept for irrigation purpose. Potential and available groundwater resource in the district by monsoon and non-monsoon period given by Central Groundwater Board are given in the table- 3.

Table- 3 shows that the taluka wise groundwater resource potential of Solapur district as on 31st March 2012. Rainwater is the only means by which annual recharge of groundwater takes place. The annual rainfall of the district is very poor. Hence the general position of groundwater in the district is not satisfactory.

Table -3 Ground water resources Potential of Solapur district as on 31st March 2012(unit ham)

Sr. No. 1	Taluka 2	Recharge from rainfall during monsoon 3	Recharge from Other Sources during monsoon 4	Recharge from rainfall during non-monsoon 5	Recharge from Other Sources during non-monsoon 6	Total Annual G.W. recharge 3+4+5+6 7	Natural Discharge during non-monsoon 8	Net annual G.W. availability 7+8
1	North Solapur	4824.59	339.79	644.87	853.69	6662.94	333.15	6996.09
2	South Solapur	8554.57	553.37	1345.57	1447.32	11900.83	595.04	12495.87
3	Barshi	7711.3	650.78	882.88	1783.37	11028.33	551.42	11579.75
4	Akkalkot	10592.36	504.82	1727.43	1366.3	14190.91	709.55	14900.46
5	Pandharpur	6887.93	1996.13	1158.9	4980.96	15023.92	751.2	15775.12
6	Malshiras	8324.3	3444.24	1902.7	8432.56	22103.8	1105.19	23208.99
7	Sangola	9809.01	1965.97	1949.1	3540.11	17264.19	943.95	18028.14
8	Mangalwedha	5236.23	984.42	764.55	2268.63	9253.83	462.19	9716.02
9	Madha	10220.16	1276.22	1474.05	3050.63	16021.06	827.02	16848.08
10	Mohol	7303.32	1144.63	1108.25	3166.11	12722.31	636.12	13358.43
11	Karmala	8503.12	884.56	1210.34	1802.6	12400.62	619.03	13019.65
	Total	87966.89	13744.93	14168.64	32692.28	148572.74	7533.86	156106.6

Source: GW Survey & Development agency. Govt. of Maharashtra (2012) (P-56, 57)

The total groundwater recharge from rainfall during monsoon season 87956.89 ham, while the recharge from other sources during monsoon season is 13744.93 ham. Recharge from rainfall during non-monsoon season is 14168.64 ham. Whereas recharge from other sources during non-monsoon is 32692.26

ham. The total groundwater recharge from rainfall during monsoon and non-monsoon season in the district is 148572.74 ham.

Net Groundwater (NGA) = Annual groundwater recharge – Natural discharge during non-monsoon

$$=148572.74 - 7533.86$$

$$=141038.88 \text{ ham}$$

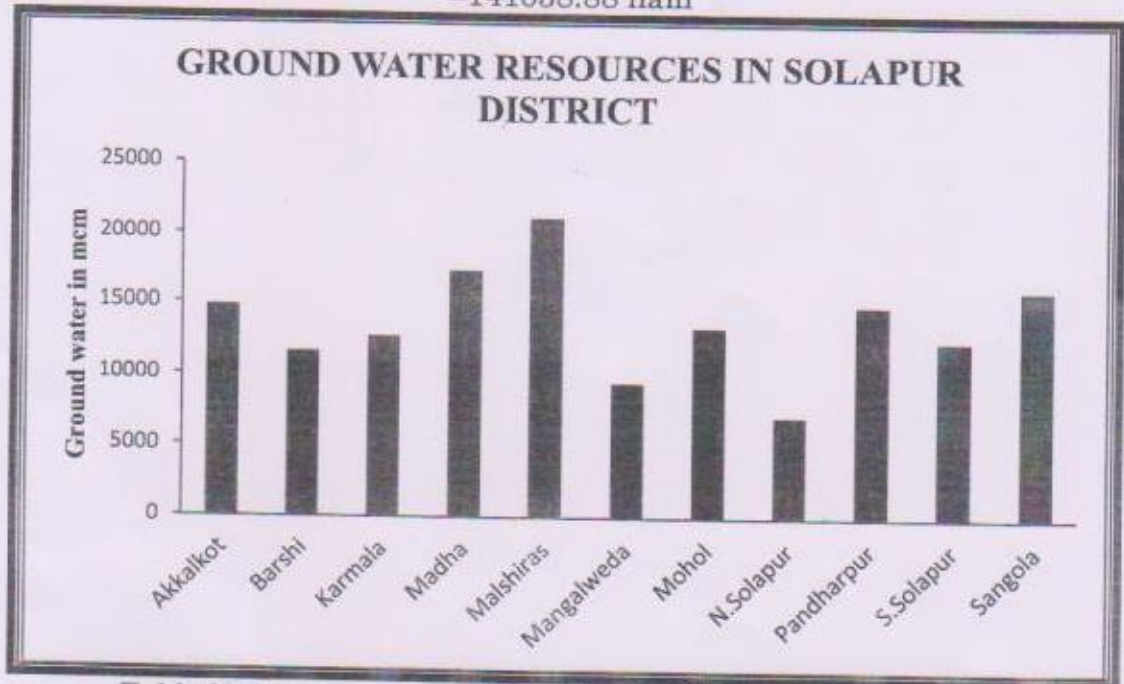


Table No-4 Total available water in Solapur District.

Sr. no.	Details	Available water(mcm)
1	Rain water	1.23
2	Ground water	1507.84
3	Artificial water	1485.25
	Total	2994.32

Source: Socio-economic abstract of Solapur district 2014-15

Total water availability from all sources such as rain water, ground water and dam water (solapur district and from other district) are 2994.32 mcm. Rapid population growth and intensive human activities have heavy stress on groundwater and significantly fresh water is becoming scarce and dearer in many areas. It is believed that in the coming decades the people will face critical situation with regards to availability of water. So it is very important to analyze the present situation and to find the potential of rainwater and encourage the people and scholars to collect and to save the rainwater by adopting different measures and use it in the scarcity period.

Conclusion-

Solapur District receives water through two main sources such as natural and artificial sources. Average annual rainfall in Solapur District is 550mm. It is observed that during the last 10 years the district receives high rainfall in 2010 and lowest rainfall in the year 2003. This amount of rainfall is very low. The main artificial source of water for Solapur District is Ujani dam. Total storage capacity of the dam is 117 TMC. Water is also available from Nira Right Bank Canal, Sina-Kolegaon Project and Kukdi Project.

Potential of surface water in Solapur district is 1.23mcm. The potentiality and availability of water in the district is 2994.32mcm. The proportion of water in the district is very low. Hence the district suffers from shortage of water.

References:

1. www.solapur.gov.in
2. Government of Maharashtra, Irrigation Department, Solapurvibhag, Ujani silver jubileemagzine – 2005.
3. Government of Maharashtra, JalsampdaVibhag,Pune – Nira Right Bank Canal Department, Phalton.
4. Government of Maharashtra, Irrigation Department – Sina- Kolegaon Project, Paranda.
5. Socio – Economic abstract of Solapur District.
6. Government of Maharashtra, Central Groundwater Survey and Development Agency.

Man-woman Relationship in Anita Desai's *Fasting, Feasting*

Shaikh Nikhat Begum
Head and Associate Professor
Mahila Mahavidyalaya, Solapur

Dr Mirza M. B.
Associate Professor
P. G. Dept of English and
Research Centre
People's College, Nanded

Anita Desai's *Fasting, Feasting*, as it is implied in the title itself, is a novel of contrast between two cultures, the one, Indian, known for its pious and longstanding customs representing 'fasting,' and the other, American, a country of opulence and sumptuousness epitomizing 'feasting.' The plot unveils through the perceptions of Uma, in India, and of Arun, in America. Both of them are entrapped, irrespective of the culture and enveloping milieu, by oppressive bonds exercised by their own parents, MamaPapa. They are just MamaPapa or PapaMama but remain nameless throughout the novel. Yet, this namelessness does not indicate their anonymity but signifies their universality. They are the prototypical parents found everywhere in the middle-class families of India, who discuss, plan, plot, control, govern the activities of their children, be it marriage or going abroad for studies. And in their over-dominating concern, they tend to ignore the inadvertent possibility of entrapping their own offspring. Thus, they do not give contingency to the fact that perhaps their children too can have a life to call their own. May be even their own preoccupations, their own priorities, maybe an agenda for themselves that goes beyond what they actually want for their children.

The novel begins with a snapshot of MamaPapa in a contemplative mood: "The parents sit, rhythmically swinging, back and forth. They could be asleep, dozing—their eyes are hooded—but sometimes they speak." That is when a sudden deluge of ideas hit them and they order their eldest daughter, Uma, to carry out them without delay. Uma is asked first to inform the cook to prepare sweets for her father, with neglectful impatience that she has been already asked to pack a parcel to be sent to her brother Arun in America. While she comes literally running on her toes, she is entrusted with an additional job of writing a letter to their son. Somewhere in the middle of the novel, the reader understands that it is the usual scene that goes on in the household of MamaPapa (Volná, Ludmila, 2005, pp. 9-24).

"All morning Mama Papa have found things for Uma to do. It is as if Papa's retirement is to be spent in this manner—sitting on the red swing in the veranda with Mama, rocking, and finding ways to keep Uma occupied. As long as they can do that, they themselves feel busy and occupied". In this

manner, living under the demanding rule of Mama Papa, Uma is repressed, suppressed and is imprisoned at home. The first part of the novel tells us in a flashback as how she became a reluctant victim of entrapment at home. The second part of the novel shows how her brother Arun, who leaves his home for higher studies, but feels trapped by the very education that is meant to liberate him.

Usually, at home, it would be an oppressive atmosphere even if one of the parents is overpowering. With regard to Uma, both of her parents appear to have merged into a single identity Mama Papa/Papa Mama, as if they have a 'Siamese twin existence'. Hence, whenever Mama Papa say something, and whoever says it, it comes with double the intensity and power that it cannot be defied at all. Having fused into one, they had gained so much in substance, in stature, in authority, that they loomed large enough as it was; they did not need separate histories and backgrounds to make them even more immense. Despite a slight variation in the roles they have chosen to play, Papa's of scowling and 'Mama's scolding', in terms of opinion, they never differed from each other. Therefore, if one refused there would not be any point in appealing to the other parent for a different verdict: none was expected, or given.

Furthermore, the women are not allowed for outings usually, but when Papa feels that the women laze around the house too much, then they would be taken to the park for walk. On one such occasion, Uma gets easily distracted and fails to keep pace with her Papa. Though Papa is far away, and she is left in the company of Mama, she would not dare attempt to buy some eatables on her wish though it is highly tempting: 'Uma finds saliva gathering at the corners of her mouth at the smell of the spiced, roasted gram but decides to say nothing'. In the end, Uma is blamed for being 'slow' when all the while Uma could not reconcile herself as why they are hurrying just to go back home. Likewise, the children are not allowed to have any sense of privacy even when they have grown-up. They are not allowed to shut any doors in the household. For this meant secrets, especially nasty secrets, which are impermissible: It meant authority would come stalking in and make a search to seize upon the nastiness, the unclean blot.

Mama Papa also decide which of their children should have education and how much of it. As far as Uma is concerned, a pleasant escape from her claustrophobic conditions at home is her school-going. The convent school for her is "streaked with golden promise". Hence, she always goes early to the school and later finds some excuse to linger there for longer time. Conversely, she feels deprived during dull weekends when she is left at home: "There were the wretched weekends when she was plucked back into the trivialities of her home, which seemed a denial, a negation of life as it ought to be, somber and splendid, and then the endless summer vacation when the heat reduced even that pointless existence to further vacuity" (emphases added). Regardless of Uma's verve for convent education, she is forced to

RESEARCH TODAY

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Journal of English Language and Literature
ISSN 2278-7585

stop going to school when Mama gives birth to the third baby, Arun. Even as Uma shows disagreement, she is coaxed, cajoled and finally threatened to accept her Mama's decision: 'But ayah can do this—ayah can do that—' Uma tried to protest when the orders began to come thick and fast. This made Mama look stern again. 'You know we can't leave the baby to the servant,' she said severely. 'He needs proper attention.' When Uma pointed out that ayah had looked after her and Aruna as babies, Mama's expression made it clear it was quite a different matter now, and she repeated threateningly: 'Proper attention'. Later, Uma looks forward towards her marriage to give her the much-needed relief, yet, unfortunately, she returns home frustrated after a deceitful marriage and subsequent divorce. Back at home, she gets a rare, job offer through Dr. Dutt, but Mama Papa refuse to send her. When Dr. Dutt persists on taking Uma for the job, Mama lies of an illness for which she needs Uma to nurse her. In like manner, when Uma receives an invitation for a coffee party from Mrs. O'Henry, Mama Papa refuse to send her to the party because of the apprehension that Mrs. O'Henry might ensnare her and convert her into a Christian nun (Aldama, Frederick Luis, 2000, p. 240).

Reduced thus to a baby-sitter at her earlier days and an unpaid servant for her self-centered parents for the rest of her life, Uma finds no escape from her entrapment. Uma experiences, however, a brief repose of happiness and freedom once when she is allowed to accompany her ailing aunt, Mira-Masi, on her pilgrimage. During her stay at 4 nights in an ashram, Uma finds a strange link of her life with the barks and howls of the dogs.

At night she lay quietly on her mat, listening to the ashram dog bark. Then other dogs in distant villages, out along the river bed and over in the pampas grass, or in wayside shacks and hovels by the highway—barked back. They howled long messages to each other. Their messages traveled back and forth through the night darkness which was total, absolute. Gradually the barks sank into it and drowned. Then it was silent. That was what Uma felt her own life to have been—full of barks, howls, messages, and now—silence.

At this juncture, one is reminded of Anita Desai's characteristic way of making her internally turbulent protagonists find expression by association with external surroundings. Thus, for instance, in *Cry, the Peacock*, Maya's feelings of isolation and longings are coupled with those of the crying of the peacocks. Still, one locates a kind of sublimity in the agonized inner cry of Maya when it is likened with peacocks. When Uma's pain is related to the barks and howls of dogs, the poetry of Maya's anguish is to be seen in sharp contrast to that of the excruciating poverty of Uma's entrapment.

Here again Desai is not implying that the un-burnt brides and the well-settled ones may live a content life. In this regard, she portrays the story of Aruna, Uma's smart and pretty younger sister who

makes a discreet choice and marries "the wisest, ... the handsomest, the richest, the most exciting of the suitors who presented themselves". Aruna's marriage to Arvind who has a job in Bombay and a flat in a housing block in Juhu, facing the beach is just a like a dream-come-true. Yet to live that dream-life fully she transforms herself and desperately seeks to introduce change in the lives of others. She cuts her hair, takes her make-up kit wherever she goes, and calls her sister and mother as 'villagers' once they refuse to accept her sophisticated and flashy style of life. For that reason, she avoids visiting her parents' home and the rare occasions of her short visits are spent in blaming the untidiness of the surrounding and the inhabitants. Even she goes to the extent of scolding her husband when he splits tea in his saucer, or wears a shirt, which does not match, with his trousers.

In this way, Aruna's entrapment is different from the rest. She has liberated herself from the customs and dominating home rules that bind the rest of the characters like Uma and Anamica. Yet, in negating those codes, she ensnares herself in her mad pursuit towards a vision of perfection. And in order to reach that perfection she needs to constantly uncover and rectify the flaws of her own family as well as of Arvind's. When none other than Uma sees through the entrapment of Aruna, she feels pity for her: Seeing Aruna vexed to the point of tears because the cook's pudding had sunk and spread instead of remaining upright and solid, or because Arvind had come to dinner in his bedroom slippers, or Papa was wearing a t-shirt with a hole under one arm, Uma felt pity for her: was this the realm of ease and comfort for which Aruna had always pined and that some might say she had attained? Certainly it brought her no pleasure: there was always a crease of discontent between her eyebrows and an agitation that made her eyelids flutter, disturbing Uma who noticed it (Swarnakala S., 2021, pp. 421-29).

While Uma, Anamica, Aruna present the female versions of entrapment in Fasting, Feasting, Arun pictures the male version of it. Unlike his sisters, right from his birth, Arun desists eating the food of his family which is symbolic of its values. Much to the dismay of his father, he shows his preference for vegetarian food. Simply because it revolutionized the life-style of his father, Arun can not be forced to eat non-vegetarian food. This, of course, is a cause of disappointment for Papa.

Papa was always scornful of those of their relatives who came to visit and insisted on clinging to their cereal and vegetable-eating ways, shying away from the meat dishes Papa insisted on having cooked for dinner. Now his own son, his one son, displayed this completely baffling desire to return to the ways of his forefathers, meek and puny men who had got nowhere in life. Papa was deeply vexed.

Nonetheless, Arun cannot fully come out of the clutches of Papa, especially, in terms of his education. And ironic enough, it is education, which instead of offering the desired autonomy, paves way for Arun's entrapment.

Papa, in order to give the best, the most, the highest" education for his son, takes charge of Arun's life from his childhood. Although Arun's school examinations are over, Papa cannot allow him to go to his sister's house in Bombay during holidays, since he has planned that time for taking up entrance examinations and preparation for sending applications to go abroad for 'higher studies'. However, in the eyes of Aruna, her father's manic determination to get a foreign scholarship for Arun, is actually on account of his unfulfilled dreams, which he tries to impose on his son. That is why, when the letter of acceptance from Massachusetts finally arrives, it stirs no emotions in Arun. Uma watched Arun too, when he read the fateful letter. She watched and searched for an expression, of relief, of joy, doubt, fear, anything at all. But there was none...There was nothing else—not the hint of a smile, frown, laugh or anything; these had been ground down till they had disappeared. This blank face now stared at the letter and faced another phase of his existence arranged for him by Papa.

Anita Desai, in portraying the stories of entrapment in *Fasting, Feasting*, presents one version after another; each contributing together to a master version, and each simultaneously subverting the other towards an open and contingent version. Accordingly, in the story of Uma, we find her unattractiveness leading to her eventual entrapment. Yet, if we pass a final verdict on this account, we would be proved erroneous since Desai presents the versions of Aruna and Anamica, Uma's appealing sister and charming cousin, respectively. Beauty cannot offer them escape from entrapments; in truth, it is rather their good looks that victimize them. Further, if we think again that it is Uma's lack of education that has led to her entrapped situation, Desai presents us the subversion of Anamica, where foreign scholarship fetches her an equal match but fails to provide her the required escape, it suffocates and kills her literally. In like manner, if as Uma thinks, "A CAREER. Leaving home. Living alone" would bring in the necessary freedom from entrapment, Desai presents us the story of Arun, who leaves home, lives alone for a career but feels the pangs of entrapment despite it (Aldama, Frederick Luis, 2000, p. 240).

Also, in providing a male version through the story of Arun's entrapment, Desai negates any feministic verdict based on the other female versions of entrapment that is likely to put the blame on the patriarchal, male-centred society. Thus, Anita Desai, often described as one of the finest writers of this country, has moved from her earlier, typical way of sympathizing with her characters, females especially, to a different level of sensibility now. Where it would be easy to presuppose her overt feministic concerns in a novel like *Cry, the Peacock*, it would be unwise to approach her *Fasting, Feasting* with any such preconceived notions. Desai herself speaks out in a recent interview that she has been deliberately shifting her focus from female characters to male characters. She rather feels she needs to address and voice out themes which concern males too.

Finally, if we consider the male version represented by Arun and the female versions constituted by Uma, Anamika and Aruna as Indian versions, Desai offers American versions to counter them. The story, thus dangling between two countries and cultures shows to prove through the characters of Uma and Arun, and their counterparts Melanie and Rod, that attempts of escape from entrapments can only be temporary, illusory and self-destructively futile since entrapments through familial knots are ubiquitous, all-encompassing and universal. And perhaps the salvation comes when one accepts entrapment of one kind or another envisioned as an inescapable fact of life.

Reference:

- Aldama, Frederick Luis, and Anita Desai. "Fasting, Feasting." *World Literature Today*, vol. 74, no. 1, 2000, p. 240. <https://doi.org/10.2307/40155538>.
- Swarnakala S., Hephzibah, and S. Azariah Kirubakaran. "Macaulay's People: Hegemony, Mimicry and Ambivalence in Anita Desai's Fasting, Feasting." *Towards Excellence*, vol. 7, no. 4, Sept. 2021, pp. 421-29. <https://doi.org/10.37867/te130335>.
- Volná, Ludmila. "Anita Desai's Fasting, Feasting and the Condition of Women." *CLCWeb: Comparative Literature and Culture*, vol. 7, no. 3, Sept. 2005, pp. 9-24. <https://doi.org/10.7771/1481-4374.1272>.

RNI No.-UPHIN/2017/74904

ISSN : 2581-687X

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका
खंड-4, अंक-4; आषाढ़-भाद्रपद, 2078/जुलाई-सितंबर, 2021



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण

RNI No.—UPHIN/2017/74904

ISSN : 2581-687X

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा जगत की होश एवं विचार केंद्रित पत्रिका
खंड-4, अंक-4; आषाढ़-भाद्रपद, 2078/जुलाई-सितंबर, 2021



जन्म : 2 फरवरी 1902
निधन : 6 मार्च 1995

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडू ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष भारतीय मूल के दो (2) विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

संरक्षक

श्री अनिल शर्मा 'जोशी'

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : vicechirmankhs@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. मथुरेश्वर पारीक

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
ई-मेल : m.pareek1952@gmail.com

प्रो. आर.पी. पाठक

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,

नई दिल्ली

ई-मेल : pathakoham@gmail.com

प्रो. अरविंद कुमार पांडेय

टीन, फेकल्टी ऑफ एजुकेशन

महात्मा गांधी कानूनी विद्यापीठ, वाराणसी

ई-मेल : arvinkumarpandey62@gmail.com

प्रो. अशोक सिडाना

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,

सी.टी.ई., जयपुर

ई-मेल : sidanaashok@gmail.com

डॉ. नीरा नारंग

एसेसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ई-मेल : naranng2611@rediffmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. बीना शर्मा

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : directorkhs1969@gmail.com

संपादक-प्रो. शंकर

अध्यापक शिक्षा विभाग

ई-मेल : shankaruk30@gmail.com

सह संपादक-चंद्रकांत कोठे

असिस्टेंट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई-मेल : koth2009@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. कैलाश चन्द्र वशिष्ठ

अधिष्ठाता-शिक्षा सहाय, दशमलोक एजुकेशनल

इंस्टीट्यूट, आगरा

ई-मेल : kevasishistha@gmail.com

प्रो. कल्पलता पांडेय

कुलपति, जननायक चंद्रशेखर

विश्वविद्यालय, बलिया

ई-मेल : p.kalpata@gmail.com

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

म.रा.अं.हि.वि.वि., वाराणसी

ई-मेल : gkthakur11@gmail.com

प्रो. अरविंद झा

टीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन

श्री श्री आर. आंबेडकर विश्वविद्यालय, जलनड

ई-मेल : drarvindjha@gmail.com



अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005

शिक्षा जगत में नवोन्मेष केंद्रित हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका
शैक्षिक उन्मेष खंड-4, अंक-4; आषाढ़-भाद्रपद, 2078/जुलाई-सितंबर, 2021

अनुक्रम

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक — अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संपादकीय कार्यालय — अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा — 282005
फोन/फैक्स — 0562-2530684
ई-मेल : departmentofteacheredu0@gmail.com

सदस्यता शुल्क — व्यक्तिगत — प्रति अंक ₹ 40/-, वार्षिक — ₹ 150/-
संस्थागत — वार्षिक शुल्क ₹ 250/-
(डाक व्यय प्रति अंक ₹ 35/- तथा वार्षिक
₹ 100/-अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10, वार्षिक \$ 40

मुद्रक — दि प्रिंट्स होम, 20/108, यमुना किनारा, बेलनगंज
आगरा-282004

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व — सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
	• आमुख ...	वीना शर्मा	05-05
	• संपादकीय ...	हरिशंकर	06-07
1.	राष्ट्रीय बोध का प्रवाह	श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी	09-13
2.	स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व विकास विषयक विचारों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	आर. पी. पाठक	14-29
3.	ऑनलाइन हिंदी वसुधैव विद्यालयम्	प्रमोद कुमार शर्मा	30-34
4.	डिजिटल शिक्षा : आवश्यकता एवं चुनौतियाँ (माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में)	ऋषिराज	35-44
5.	तय करना होगा 'ई' लर्निंग से 'वी' लर्निंग तक का सफर	कुमुद पुरोहित	45-51
6.	कोरोना काल में शिक्षा प्रणाली	जयश्री भास्कर वाडेकर	52-56
7.	दूर शिक्षा के उपागम एवं संप्रेषण माध्यम	रामशंकर	57-63
8.	वेब मीडिया एवं भाषा अध्यापन	भाऊ साहेब नवनाथ नवले	64-73
9.	शोध पथ की अनिवार्यता में भावदृष्टि का विलय	जमादार ए. जी.	74-81
10.	गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं में पर्यावरण संरक्षण	पृथ्वी सिंह बेनीवाल विश्नोई	82-86
11.	गांधी और नवाचार : नई तालीम का पुनर्पाठ	नवनीत शर्मा, नीरज कुमार मनी	87-100
12.	शिक्षा के मूल्य और चुनौतियाँ	दयानंद तिवारी	101-108
13.	भारत में शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियाँ	सहदेव वर्षारानी निवृत्तीराव	109-113

शोध पथ की अनिवार्यता में भावदृष्टि का विलय

—जमादार ए.जी.

प्रास्ताविक

साहित्य, समाज का अभिन्न अंग है। समाज के हर स्थिति का अंकन साहित्य की लकीर बन जाती है। साहित्य की वाणी ऐनक को गोयाई अता करने के समान है। साहित्य में वक्त की हर ताकत वाली आवाज को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जाता है। साहित्य को हर किसी ने सामाजिक हित के नजर से देखा है। साहित्य समाज की ध्वनि गुंजनता है; जो वक्त को बयानकर भविष्य के रेखांकन को उल्लेखीत करती है। साहित्य की स्मृति से व्यक्त लेखन को किसी भी प्रभावित शब्दोजन्तः में बांधना ऐसे है जैसे प्रकृति के मुक्त पवनमण्डल को शुद्धता के नाम पर बोटल में बंदकर जल बेचना। आज के शोधविमर्श में इस बात का प्रमाण नजर आता है। क्योंकि, एक शोधक अपने शोध का रास्ता उन्हीं दिशा-निर्देशनों में चलता नजर आता है; जो उसे उसके फिसलाहट के समय में सख्त जमीं का प्रमाण दे सके। चाहे वह रास्ता पाठक के दृष्टि से सवाल उपस्थित क्यों न करें? लेकिन, साधक अपने प्रमाणों के साक्ष्य में 'बोललेल्याच चीकल जात, न बोललेल्याच तसच राहत' की वाच्याता को सही करता दिखाई देता है।

आज साहित्यदिक्षार्थ में यह बात आवश्यकता है कि, 'देखी गई दुनिया से ज्यादा आने वाले समय की अभिव्यक्ति आवश्यक है' अगर इन बातों से गोयाई वाला नाबीना की शकल ले तो फिर इंसान को सीधे रास्ते चलने के लिए कदमों के निशानों से ज्यादा परिदों की उड़ान पर ही उम्मीद करना पड़ेगा। वर्तमान के साहित्यिक खोज में इन प्रश्नों का उत्तर देना अत्यंत जरूरी है; इस शोधलेख का रास्ता उसी की शब्दांग लहरता है।

विषय दृष्टि

मनुष्य, अन्य जीवों से पृथक है; इसका एक मात्र कारण है कि, मनुष्य अपने बुद्धि का निष्कर्ष विवेक तथा सदाचार पर ढालकर वास्तववादी कार्य व्यवहार से भविष्य के नीति-निर्देशन तय करता है। मनुष्य के विवेक और सदाचार का अस्तित्व उसे अपने और अपनों के होने का प्रमाण देता बनता है। और यही बात आवश्यक है उसके 'अशरफ' होने के लिए।

मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग प्रकृति से मिली हुई शक्ति है 'दृष्टि समालोन।' वह अपने हर नजर में बगैर सहारे के परख देखता है—यही कारण है कि, वह दृष्टि का असर सृष्टि से और सृष्टि का अर्थ व्यवहार से समझता-समझता है।

मनुष्य की असोमित कल्प दृष्टि ही सृष्टि के निर्माण का भाव स्पष्ट कराती है। साहित्य उसी की एक शाख है। साहित्य को मनु कल्पना का उच्च शिखर माना जाता है। इसी कारण, मनुष्य की कल्पना दृष्टि कुदरत का वह अर्थ समझाती है, जिससे उसके आदि-अंत का प्रमाण प्राप्त हो सके। साहित्य में अभिव्यक्तिकार अपने कल्प दृष्टि से जिस विश्व सृष्टि का निर्माण करता है उसे, विचार-मंथन-चिंतन के बाद एक शोध व्यष्टि ही स्पष्ट कर सकता है। कभी-कभी अभिव्यक्तिकार जिस आकार से अपने भावशब्दांग को चित्रित करता है, उससे कई अधिक शब्दोंकार देने का प्रयत्न एक शोधक करता है। और यही कारण है कि, हम व्यक्ति के बारे में भिन्न-भिन्न फैसले करते हैं। यह अंतर नजर का है क्योंकि, हर नजर नये भाव शब्द बनाने मजबूर करती है। और यही नजर साहित्य भावांकन के अमर होने का प्रतीक बन जाती है।

आज साहित्य के अनवरतता का सवाल उठाया जाता है—जो वक्त की रहचरी में सही है। लेकिन, सवाल यह आवश्यक है कि, शोधक की दृष्टि का पूरा विवेचन हो क्योंकि शोधक अपनी दृष्टि से बताता है और उसका विश्लेषक अपने प्रभावित वाणी से स्पष्ट करता है; जो कई अर्थों की गुंजनता बन जाती है। शोधक अपने भाव के प्रमाण में सहारा नहीं चाहता बल्कि रास्ता चाहता है जो उसे अपनी दृष्टि से मंजिल तक पहुँचा दे; जिससे उसके भाव संदर्भ को अर्थ मिलता हो।

शोध संदर्भ :

अक्सर शोध में संदर्भ आखरी अध्याय माना जाता है। इसका एक अर्थ यह माना जाएगा कि, 'शोधक के भाव संवेदना का आधार अन्य संदर्भित अध्याय का अर्थ है।' 'लेकिन, क्या! ज्यादा संदर्भ शोध के गुणवत्ता को प्रमाणित करते हैं?' या फिर शोधक के संपटित भाव के विखण्डन रूप को! हम अक्सर इस बात को मान्य करते हैं कि, 'व्यक्ति तितक्या प्रकृति' अतः तो क्या शोधक अपने भाव स्पष्टता में जो संदर्भ स्पष्ट करता होगा; क्या वे सब-के-सब को एक समान भाव को अलग-अलग शब्दों से अर्थ देते होंगे! या फिर अभिव्यक्त शब्द नये भाव गुंजनता का प्रमाण देता होगा? शोध में यह आवश्यक है कि, शोधक अपने लक्ष्य को साध्य करे यह आम बात है। शोधक के राह चलते-चलते अनेक छोटे रास्ते अनेक पगडंडियों से बड़े अर्थात् नेशनल हाइवे को मिल जाते हैं; जो लक्ष्य साध्य का आखरी रास्ता होता है। नेशनल हाइवे का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि, वह छोटे-छोटे रास्तों के सहारे बड़ा बना है; बल्कि उसका अर्थ यह होता है कि, उस बड़े रास्तों का सौंदर्य इन छोटे रास्तों के मिलाफ का कारण बना है। यह अर्थ जैसे व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक है वैसे तथ्योंधान की दृष्टि से भी आवश्यक है। हर शोध में शोधभाव को तथा शोधक की दृष्टि से ज्यादा प्रमाणों से नहीं बल्कि ज्यादा उपयोगिता से जाँचा जाए क्योंकि, 'प्रमाण स्थिर होते हैं और निष्कर्ष फलदायी।'।

प्रत्येक मनुष्य अपने व्यवहार को संचारी भावों के सहारे अभिव्यक्त करता दिखाई देता है। संचारी भावों का शब्दांकन रूप साहित्य होता है। हर साहित्यकार अपने भावाभिव्यक्ति में अपनी

खी-सुनी और एहसास की हुई जिंदगी को ही शब्द गुंफण में दर्ज कर अपनी भाव को आकर ता हुआ दिखाई देता है। साहित्यकार के भावनाओं की सही पकड़ संदर्भित भाव प्रकटीकरण से ही होती बल्कि 'दृष्टि ही व्यक्ति की समझ' इस घोष वाक्य के सहारे शोधक को अपना नजरिया ठनीत शब्द समूह से समझकर व्यक्तित्व का अर्थ समझना और समझाना चाहती है।

साहित्य में संदर्भित भाव हर व्यक्ति को अपनी समझ होती है, एक वाक्य में व्यक्त शब्द से समान अर्थ देता है उसी तरह हर वाक्य में हर शब्द का अपना अस्तित्व होता है। जैसे—

“मुझे, पता है—वह; बहुत 'अच्छा' लड़का है।”

इस वाक्य में समान्य अर्थ है, किसी के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए; लेकिन, जब शब्दों के अलगाव स्वरूप को देखा जाता है तब 'शब्द' अनेकार्थी बन जाता है। 'अच्छा' एक मात्र शब्द—'सरल, व्यंग्य, तिरस्कार, क्रोध, कुतूहल, विस्मय, ठहराव, गति, विच्छेद तथा मीत वादी' बन जाता है।

हर शब्दों के 'भावराज' को वही पाठक समझ सकता है, जो शब्दों के घाव से घातक हो उठा। शोधक प्रत्येक शब्द के हर खूबी से परिचित होता है; तथा इसी कारण शब्दों के घाव से भाव उभारने का प्रयत्न अगर कोई करता है—तो वह शोधक ही होता है। तथा साथ ही संदर्भों के बदती से शोध की महत्ता नहीं बल्कि उसकी उपयोगिता परखना ज्यादा समीचीन होता है।

व्यय स्पष्टीकरण

शोध एक शृंखला से बंधी-बंधाई कहानी कभी हो-ही नहीं सकती—क्योंकि, 'शोध चलते-चलते पर उपजने वाले सवालों का नाम है।' साहित्य इससे अनजान नहीं है। साहित्य को हम समाज का आईना मानते हैं। समाज में हर घड़ी, हर पल कोई-न-कोई परिवर्तन होते हुए हमें आता है; यह परिवर्तन समाज के व्यवहार में हो या फिर व्यक्ति समूह के नायक में, जो आगे बढ़कर समाज का रूप लेने वाला है। इन सभी बातों पर कलमकार अपने दृश्यात्मक समय को व्ययकल्प से रंगता है जिसका आशय कल के उगने वाला समय बखान करेगा।

आज शोध में आवश्यक है साधक की साधना का अर्थ समझे। हर साधक अपनी साधना में साधकता के सहारे भविष्य के रास्ते पर प्रेजेंट अर्थात् वर्तमान के हाल के अन्न की व्याख्या करता पाया जाता है। अब यहाँ आवश्यक होता है कि, शोधक; साधक के साधना कार्य को किसी व्याख्या में केंद्रितकर एक ही सुर में गुनगुनाने से अच्छा है कि, साधक की वैचारिक दृष्टि को प्रगति से विश्लेषित करें। हर शोधक के लिए अत्यंत जरूरी बात है कि, किसी भी साहित्यकार की कृति को एक ही दृष्टि से परखने से अच्छा है कि, वह कृति का समग्रता से पूर्ण विश्लेषण करनी पैनी नजर से एक भाव अधोलिखित करें। क्योंकि, यहाँ यह अत्यंत आवश्यक बात है कि, देखकर, सुनकर और समझकर किसी कृति का मूल्यांकन होता है तो व्यक्ति की

सृष्टि हमें नजर आती है; जिसे हम 'व्यक्ति की सृष्टि-दृष्टिसम समाज का निर्माणिक रास्ता कह सकते हैं।'।

आजकल के शोध में एक ही दृष्टि से किसी साहित्यकार के भाव-शैली को व्यक्त किया जाता है। यह भाव के विस्तारित रूप को सीमित करना है। यह बात शोध राहदृष्टि में आवश्यक है लेकिन, जब एक शोधक अपने पथ से चलते अन्वयों के लिए जब पथ निर्देशक बनता है तब इशारों पर चलने वाला व्यक्ति मात्र दूरी तय करता है, वह खुद पथ में लगे कदमों की गिनती नहीं करता बल्कि, छूटे कदमों के निशानों को नापने लगता है। यहाँ यह बात आवश्यक होती है कि, एक अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान में क्या नया कहता है? अगर वह शब्दों को हेर-फेरकर मात्र नये होने का रूप बतता है; तो भाव के स्थिर होने का प्रमाण कौन देगा? हमने आद्य से ही साहित्य को समाज के हित का दर्पण माना है; अगर 'साहित्य दर्पण है—तो वह नुमाया गया कैसे होगा! अगर मनुष्य अपने हकीकी शक्ल को भूलता हो—तो खुद की समीक्षा कैसे करेगा? यही बात आज के बंदिस्त भाव के एक पथ संशोधन में दृष्टिगोचर हो रही है। क्या खूब कहा है—

“शक्तो में बिखरे थे

मेरे जज्बात

मैं कहाँ दूँह पाता

सूरत एक-सी थी

बस; सूरत परखने का वक्त बदला था।”

(स्वयं के वक्त से निकले पद)

संशोधन में यह बात आवश्यक होती है कि, संशोधक सूरज की गति को नापकर अपने गति को समझे क्योंकि 'ब्रह्मांड में हर किसी की अपनी गति है; कोई एक ही है जो स्थिर है।'

शोध भाषा :

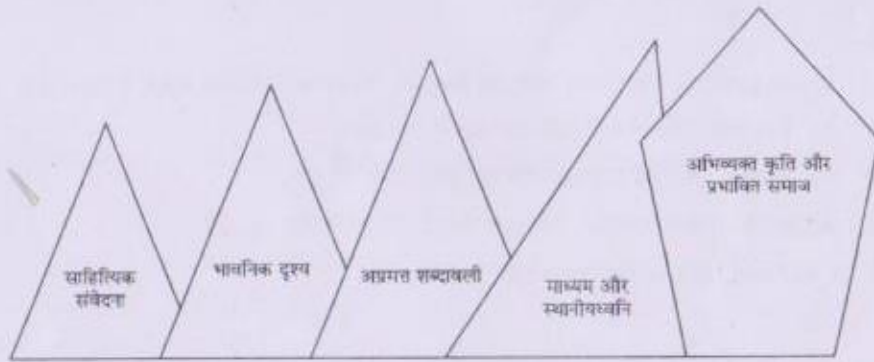
मनुष्य के भाव प्रकटीकरण करने का माध्यम भाषा है। भाषा का सीधा संबंध मनुष्य की प्रवृत्ति और प्रकृति से है। जीवन में अनुभूत स्थितियों, मूल्यों और विचारों के संवेदन को उजागर करने वाले तथ्य जैसे साहित्य का आधार होते हैं उन्हीं संवेदनाओं को सुस्पष्ट करने वाला माध्यम भाषा है। भाषा भाव संवेदना का एक अत्यंत आवश्यक रास्ता है। साहित्य, व्यक्ति भाव-विशेष का आधार होता है। जो साहित्यकार जिस परिवेश से हैं, जिस क्षेत्र से हैं, जिस स्थान से, स्तर से, वर्ग से, पथ से, पंथ से तथा आदि से हैं उन्हीं भाव-शब्दों को आधार बनाकर अपनी साधना को साध्य तक उपदेशित करता है। इस संबंध में रेनेवेलेक तथा आस्टिन वारेंन का संदर्भ समीचीन लगता है—

शैक्षिक उन्मेष

“साहित्य सृजन का अनुभव, साहित्य के अध्ययनकर्ता के लिए उपयोगी तो है किंतु फिर भी उसका काम सर्वथा भिन्न है। उसे साहित्य विषयक अपने अनुभव को बौद्धिक स्तर पर लाना होता है। उसे एक सुसंबद्ध योजना का रूप देना होता है, जो तर्कनापरक होने पर ही ज्ञान का रूप लग सकती है। संभव है, उसके अध्ययन की विषय-वस्तु तर्कशून्य हो, या कम-से-कम कुछ ऐसी बातें पाई जाए जो बिल्कुल तर्कहीन हो; परंतु इसीलिए उसकी स्थिति चित्रकला के इतिहासकार या संगीत शास्त्री से या इस विषय में समाजशास्त्री या शरीर विज्ञानी से भिन्न नहीं हो सकती।”¹

इस मत से स्पष्ट है कि, ‘साहित्य सृजन’ व्यक्ति निर्माण की कला है—तो साहित्य का अध्ययन एवं परीक्षण परिवेशिकरीक तथ्यों से स्वप्न समाज के निर्माण मंजिल का रास्ता है।

हम किसी व्यक्ति विशेष का साहित्य क्यों पढ़ते हैं ? हम जिस साहित्यकार की विशेषताओं की समझ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं। क्या वही खुबियाँ किसी अन्य साहित्यकारों में नहीं मिल सकती ? वह, ध्यानाकर्षित साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से अलग होने का जब हमें कारण पता चलता है तब उसका मुख्याधार ‘भाषा’ ही होती है। ‘भाषा दिलोन्तिका रास्ता है।’ हर रचना की प्रक्रिया भूमिका, प्रस्थान बिंदु, प्रक्रिया तथा परिणति का पूरा आकार होती है। यहाँ प्राण से रूप तक रचना का पूरा प्रसार है, जिसका आधार परिवेशोभाष्यता है। साहित्यकार के दृष्टि से भाषा के पूर्ण अध्ययन के नीचे प्रस्तुत पर्वतीय शृंखला चित्र से स्पष्ट रूप में समझ सकते हैं— जो एक-दूसरे के सहारे अपना-अपना स्थिराधार स्पष्ट कराते हैं—



प्रतिभा संकल्पित ज्ञान का सर्वोच्च रूप है। प्रतिभा का अर्थ व्यक्ति के ज्ञानेन्द्रियों के सहारे मनु इच्छा शक्ति के शब्दों का आकार है। हर इच्छा शक्ति को उसी आकार में ढालना अत्यंत आवश्यक होता है जिस बनावट में उसका निर्माण हुआ है। ‘एक शोध में तथ्यों की खोज जितनी आवश्यक होती है उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता प्राप्त तथ्यों का नवीन प्रत्याख्यान होता है और यही शोधांग होता है।’ आचार्य विश्वेश्वर इस संदर्भ में लिखते हैं—

“अभिनव इसलिए हमें प्राचीन सज्जन आचार्यों के मतों का (पूर्व आलोचना में दूषण) खंडन नहीं किया है अपितु उन्हीं का विशेष परीक्षा द्वारा संशोधन किया है। क्योंकि पूर्व आचार्यों द्वारा स्थापित सिद्धांतों की भली प्रकार संगति लगा देने में मौलिक सिद्धांतों की स्थापना का साफल्य मिलता है।”²

शोध एक साधना है। एक शोधक संयम-संतुलन से अपने-अपने बौद्धिक तटस्थता और आत्मनिग्रह के साथ अपनी तपस्या को साध्य तक पहुँचाता है। और एक साहित्यकार अपने दृश्य भाव संवेदना तथा कल्पदृष्टि को जब अपने भाव शब्दों में चित्रांकित कलाकारों को रंगता है तब यह अत्यंत आवश्यक होता है कि, अभिव्यक्त भाव शब्द के समय, गति, स्थान, स्थिति और स्तराद्यु से एक पाठक परिचित हो, क्योंकि एक समीक्षक से ज्यादा एक पाठक भाव संवेदनाओं को लेकर चलने में अधिक समर्थ होता है। भाषा का जितना निकट संबंध मानव से और उसकी भावनाओं से है उतना संभवतः किसी अन्य से है। मनु भावनाओं से सशक्त माध्यम के रूप में व्यक्ति ध्वनि को देखा जाता है; जिसका बृहद आधार भाषा है। एक अनुसंधानकर्ता का प्रथम कर्तव्य यह है कि, वह अनुसंधान के मौलिक कृतियों पर भाषानुसंधान में स्वभावानुशासन से वह स्वयं (मूल कृतिकार) को जाँचें ताकि, ‘स्वप्नलोक का वार्तालाप वास्तविकता के मार्गदर्शक का सहचर बन सके। शोध में नियमावली लक्ष्य के ‘सिद्धि के लिए होती है और साधना सिद्धाई के लिए।’

हर अनुसंधान में स्थानीयता की खोज करना हमें साहित्य-भाषा-भाव संस्कृति ऐतिहासिक तथा संचारी भाव विकास में अत्यंत फलदाई साबित होती है। मनु भाव प्रकृति का स्थिर रूप होता है; जिसका विकास वातावरण के अधीन है। इस संदर्भ में डॉ. देवराज का कथन समीचीन लगता है—वे लिखते हैं; “हम मानते हैं कि, साहित्य का आंतरिक या अंतर्निहित उद्देश्य हमारे चेतनामूलक जीवन को समृद्ध बनाना है। किंतु चेतना की जो समृद्धि साहित्य से आती है वह विशेष कोटि की होती है। साहित्यगत अनुभव रागबोधोत्पत्तिक होता है। चेतना की समृद्धि विभिन्न विज्ञान या शास्त्र भी होते हैं, किंतु उस समृद्धि में अनुवद्धि चेतना या बोध हम में जिस जीवन का उन्मेष करता है वह अपने विशुद्ध रूप में, राग या संवेदना के तत्व से अछूता होता है। यही कारण है कि, एक मामूली वैज्ञानिक जो अपने क्षेत्र के तथ्यों का निरुद्देश्य भाव से अनुचिंतन करता है, दार्शनिक अथवा जीवन का विचारक नहीं बन पाता। इसके विपरीत बड़े वैज्ञानिक जो अपनी अन्वेषण क्रिया में निमग्न न होते हुए, तटस्थ दर्शक की भाँति उसे बृहत्तर संदर्भों में रखकर अनुशीलन का विषय बनाते हैं, दार्शनिकों के बहुत कुछ निकट पहुँच जाते हैं। वैसे ही बड़ा साहित्यकार जीवन के छोटे-से-छोटे तथ्य या घटना को बड़े संदर्भों से जोड़ने की योग्यता से संपन्न होता है।”

इस मंतव्य से स्पष्ट है कि, हर युग में साहित्य पर दो प्रभावों का भाव प्रवाह हमें नजर आता है—

एक-प्राकृतिक विचारधाराओं का अस्तित्ववादी समाज रूप,

दो-प्रभावादी धाराओं का अध्ययनकर मनु मानस का भविष्य रूप।

इन दोनों भाव प्रवाह में भाषा की बोधगम्यता से वही साधक परिचित हो सकता है जो भविष्यक प्रत्येक वर्ण की गति-स्थिति से वाकिफ हो और अपने आँखों के सामने दृश्यों का भाषासी चित्र उपस्थित करने में सफल होता है। भाषा हर शोध के जीवन में घटित गति-अगति तत्वों का प्रमाण सिद्ध करने का कारण होता है।

शोध-जीवन का आभास

हर शोध जीवन का आभास है। एक ही दृष्टि पर अनेक कदमों की आहट का नाम शोध है। हर शोध से अपेक्षा यही होती है कि, अपने राह में चलते हुए प्रश्नों के साथ वह उन प्रश्नों को भी नजरतालोका बने जो भविष्य में उपजने वाले हैं। अब यहाँ सवाल उपस्थित होता है कि, 'शोध-विषय की व्याख्या कैसे करेगा?' या फिर 'भविष्य होता क्या है?' इन प्रश्नों का जवाब अगर शोध की नजर से देते बने तो कहा जा सकता है कि, 'इतिहास के रास्ते वर्तमान की रहबरी में अपने-अपने स्मृति के बल पर प्राप्त मंजिल का नाम भविष्य है।' हर शोध में कुछ ऐसे शब्दों का अर्थ समय से भाषना आवश्यक बनता है जो शोधक के कल्पदृष्टि का प्रमाण बन सके। हर शोध एक विषय सिद्धि के लिए साधना होती है जो वरदान के बगैर संभव नहीं है और शोध का दान हर साहित्यकार के स्थान विशेष शब्दों की समझ; जो आगे चलकर भविष्य की बात करती। इस संदर्भ में अनुवादक अशोक चक्रधर अपने भाव में लिखते हैं कि—

“आरंभ में इतिहासकार तथ्यों का सामयिक चुनाव करता है और उसकी एक सामयिक व्याख्या प्रस्तुत करता है, जिसकी रोशनी में उसने तथा अन्य लोगों ने तथ्यों का चुनाव किया है। जैसे-जैसे उसका काम आगे बढ़ता है वैसे-वैसे ही तथ्यों की व्याख्या चुनाव तथा वर्गीकरण में बहुत ही सूक्ष्म तथा संभवतः आंशिक अचेतन परिवर्तन होता रहता है। इस पारस्परिक क्रिया वर्तमान और अतीत की पारस्परिकता भी मिली होती है, क्योंकि इतिहासकार वर्तमान का अंग है जबकि तथ्य अतीत के।”⁴

यह बात सही है कि, 'हर कार्य का कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होता है; लेकिन, कारण स्थिति को परखने के लिए वर्तमान के भाव व्यवहार की गति से भविष्य के स्थान निर्धारणीकरण सादृश्यता प्राप्त करने की कला को साध्य करना ही पड़ता है। मनुष्य की हर एक स्थिति, गति, कल्प एवं भवोमृष्टि को समझना है—तो उसके हर एक सतह से वाकिफ होना ही पड़ेगा। संदर्भ में 'काडवेल' कहते हैं कि—

“कला का तत्व तब तक रहेगा, जब तक कि मनुष्य रहेगा। यह कला का स्रोत बिखर जाता है, जब मनुष्य व्यर्थ के संघर्षों में टूटता और बरबाद होता है और समाज का गतिमय में स्पंदन रुक जाता है। सदा रहने वाली सादगी, अपने वक्ष से ही कला की समृद्धि को जन्म देती है; इसलिए नहीं कि वह शाश्वत है, वरन् इसलिए भी कि वह परिवर्तन के बीच भी जीवित रहती है कला, मनुष्य को स्वयं को समझने का माध्यम है। मनुष्य की वास्तविकता में से कला भी एक है।”⁵ और शोध समझने और समझाने का एक रास्ता है। हर शोध में हमें उन प्रश्नों का उत्तर नजर आता है जो हमारे जीवन में हमारी रहबरी से हमारी कौशिशों से अनसुलझे हो। शोध ने हर स्तर को उत्तरांकित करने का प्रयत्न किया है। शोध में व्यक्ति विशेष का दृष्टिपथ क्यों-न-हो लेकिन, उसका निष्कर्ष सामाजिक प्रभाव के तस्वीर के लिए होती है।

निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकते हैं कि, 'शोध स्वयं के भीतर का वह अलिप्त रास्ता है जिससे हर शोधक अपनी विद्वत्ता और सेवा की आकलनियता से अपने कर्म तथा सुवर्णपूर्णित योग से एक अन्वेषक अपनी कर्मशीलता को आत्मसाधकर आत्मकुशलता, विचारों की दृढ़ता, मन की भद्रता, क्षमाशीलता, कष्ट सहिष्णुता से स्वर्णोत्साह को सुशोभितकर साकार रूप दे सकता है। इसमें उसके भाव विश्व को सौंदर्यात्मक बनाने में सबसे बड़ा सहयोग स्थानीय शब्दावली से मिलता है क्योंकि, भाव विश्व का संबंध दिल से होता है—तो दिल की जुँबा स्थानाश्रित प्रभाव का रूप होता है। इसी कारण हर शोध में स्थान विशेष की खुबियों से अवगत कराना यह शोध का प्रथमोद्देश है।’

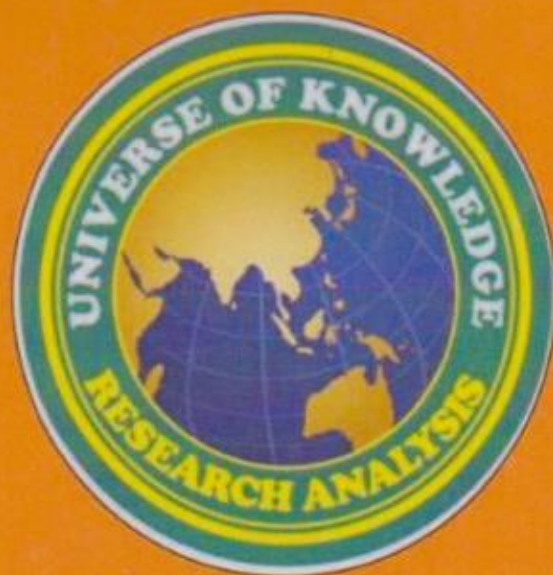
संदर्भ—

1. अनुवादक बी.एस. पालीवाल, साहित्य सिद्धांत, रेनेवेलेक-आस्टिन वारेन, पृ. 367-68.
2. आ. विश्वेश्वर की टीका, अभिनव भारती, पृ. 469.
3. डॉ. देवराज, साहित्य समीक्षा और संस्कृति बोध, पृ. 85.
4. अनुवादक अशोक चक्रधर, इतिहास क्या है? ई.एच.कार. पृ. 27.
5. Caldwell, usion and reality, पृ. 248.

ISSN: 2454-7689

UNIVERSE OF KNOWLEDGE: RESEARCH ANALYSIS

INTERNATIONAL PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL



Dr. Premchand Chavan
Chief Editor

अनुक्रमणिका

1. समकालीन साहित्य के विविध आयाम
- प्रो. परिमळा अंबेकर 001
2. समकालीन साहित्य में आदिवासी विमर्श
- डॉ. भानुबहन ए. वसावा 003
3. समकालीन कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श
- प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार 007
4. मधु कांकरिया के 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में आदिवासी जीवन
- पंडित शिशुपाल गौधी 010
5. समसामयिक हिन्दी साहित्य चेतना का स्वर वृ आदिवासी चेतना
- के. सुर्वणा 014
6. कविता के जानिब से आदिवासी स्वर
- डॉ. गोखले पंचशीला 016
7. आदिवासी समाज एवं आंदोलन
- धनराज कांबळे 018
8. परम्परा और पहचान के संकट से जूझता आदिवासी
- डॉ. रवीन्द्र अमीन 019
9. समकालीन हिन्दी साहित्य के आदिवासी विमर्श को कृष्णा अग्निहोत्री का योगदान
- प्रो. हुस्ना खानम. एम 022
10. निर्मला पुत्तल की कविताओं में चित्रित आदिवासी स्त्री
- प्रा. जमादार रूकसाना एल. 025
11. आदिवासी समाज एवं साहित्य
- डॉ. नीता द. भोसले 028
12. समकालीन साहित्य में दलित कविता
- डॉ. संतोष महीपति 030
13. समकालीन साहित्य में दलित विमर्श
- डॉ. सुनिता गोपाल नारायणकर 033
14. आधुनिक भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में दलित साहित्य
- बुद्धिराम 035
15. जयप्रकाश कर्दम और उनकी भाषा
- डॉ. इब्रार खान 040
16. गाँवों की कडवी सच्चाई: जूठन
- डॉ. विलास अंबादास साळुंके 043
17. समकालीन दलित कविता मानवता की पक्षधर
- प्रा. डॉ. शेख साबेर शेख कदीर 046
18. समकालीन साहित्य में दलित विमर्श

निर्मला पुत्तल की कविताओं में चित्रित आदिवासी स्त्री

प्रा. जमादार रुक्माना.एल.

हिंदी विभाग प्रमुख,
सहयोगी प्राध्यापक,

यु.ई.एस महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

सारांश:

आदिवासी क्षेत्रों की प्राकृतिक रचना और जलवायु संबंधी दशा में भिन्नताएँ होती हैं। विभिन्न क्षेत्रों जनजातीय समुदायों की भाषा सांस्कृतिक परिवेश, रिवाज तथा आर्थिक पद्धतियों में व्यापक भिन्नता होती है। ये जनजातियाँ अपेक्षाकृत दुर्गम वन प्रांत और पर्वतीय क्षेत्रों में रहती हैं तथा सदियों से नगण्य साधनों के बीच जीवनयापन करती हैं। किसी समुदाय में प्रचलित रीति-रिवाज और उत्सव उसकी जीवनशैली को प्रतिबिंबित करते हैं। प्रत्येक जनजाति का अपना विशिष्ट चरित्र है यद्यपि वह सामान्यतः स्थानीय परिवेश से जुड़ा हुआ होता है।

प्रस्तावना:

निर्मला पुत्तल आधुनिक काल की एक महत्वपूर्ण कवयित्री हैं। उनका जन्म 6 मार्च, 1972 को दुर्गम जिले के संताल परगना में हुआ, यह स्थान आज झारखंड राज्य में है। निर्मला पुत्तल कविता लेखन के साथ-साथ शिक्षा, सामाजिक विकास, मानवाधिकार और आदिवासी महिलाओं की प्रगति के लिए हमेशा कार्यरत रहती हैं। जनजातीय जीवन में जन्म होने के कारण उनका बचपन एक अलग परिवेश में बीता। इस परिवेश के कारण ही आगे चलकर उनकी कविताओं को प्रेरणा मिली। उन्होंने अपने लेखन के जरिये जनजातीय जीवन की सही तस्वीर समाज के सामने रखने का प्रयास किया है।

निर्मला पुत्तल अपनी कविताओं में स्त्रियों के प्रति किए जाने वाले शोषण को भी उजागर करती हैं। इन स्त्रियों में आदिवासी स्त्रियों का सौंदर्य उनकी आंतरिक सुंदरता, उनका भयावह जीवन के प्रति तणाव, जिनका शोषण किया जाता है उसका समावेश है।

एक स्त्री सिर्फ नाम मात्र व्यक्ति के रूप में हमारे सम्मुख रहती हैं। वास्तव में तो उसे अपना जीवन

पिता, पति और पुत्र के सहारे ही गुजारना होता है। इस पुरुष-प्रधान समाज में वह अपने अस्तित्व के साथ अपना स्थान भी तलाशती है। बचपन से अपने माता-पिता के लाड-प्यार में पली वह, विवाह के पश्चात एक अनजान घर, पति के साथ भेजा जाता है वहाँ जाकर भी वह खुद के लिए कभी-भी जीवन नहीं जीती बल्कि हमेशा दुसरों का विचार कर अपनी खुशी उसमें तलाशती रहती है, लेकिन कभी-कभी इन सब बंधनों को तोड़ वह आजाद होना चाहती है, अपनी जमीन तलाशती है—इसका चित्रण 'अपनी जमीन तलाशती बेचौन स्त्री' में किया है—

‘एक उन्मुक्त आकाश
जो शब्द से परे हो,
एक हाथ
जो हाथ नहीं
उसके होने का आभास हो।’

पुरुष ने कभी स्त्रियों की वेदना को जाना ही नहीं। कवयित्री कहती है कि पुरुष स्त्री के गर्भ में बीज तो छोड़ देता है किन्तु गर्भवती स्त्री की वेदना को समझने की कोशिश कभी नहीं की। उसने स्त्री को सिर्फ चूल्हा-चौकी तक ही सीमित रखा। इसे छोड़कर स्त्री के मन में चल रहे द्वंद को कभी नहीं जाना।

वह अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है। वह घर, प्रेम और जाति से परे अपनी जमीन तलाशती है जो सिर्फ उसकी हो। इस कविता के माध्यम से निर्मला पुत्तल स्त्री को सिर्फ 'देह' समझने वाली मानसिकताका विद्रोह करती है।

निर्मला पुत्तल अपनी कविता के जरिए आदिवासी लड़कियाँ मन से कितनी सुंदर, निच्छल झरने की तरह स्वच्छ, कृत्रिमता से परे, कुटिलता से परे, पवित्र प्रकाशमान होती हैं परंतु दुर्भाग्य से सभ्य समाज उसका

किस प्रकार असम्य अंकन करता है, जो किसी भी दृष्टि से योग्य नहीं है, आदिवासी लड़कियों की सुंदरता का वर्णन करती हुई वह कहती है।

ऊपर से काली
भीतर से अपने चमकते दाँतो
की तरह शान्त, धवल होती है ये
वे जब हैंसती हैं फेनिल दूध-सी
निश्चल हैंसी
तब झर-झराकर झरते हैं...
पहाड़ की कोख में मीठे पानी के सोते²

निर्मला पुत्तल की कविताएं स्त्री से संबंधित हर यातनाओं को उजागर करने का प्रयत्न करती है। स्त्री सबकुछ समझती है किन्तु कुछ नहीं कहती। पुरुषसत्ताक समाज में वह दबकर बेबस, लाचार, मजबूर, पीड़ा सहने के लिए विवश रहती है। स्त्री दूसरों का जीवन तो प्रकाशित करती है किन्तु स्वयं के जीवन में अंधकार पाती है। जैसे।

सब कुछ सहती है
मन-ही-मन गुनती है
लकड़ी सी घुनती है
ऑसू पीती है।
घुट-घुट जीती है
मोम-सी पिघलती है
कुछ न कहती है
रोज जन्मती मरती है
घर भर की पीड़ा सहती है
सबकी सुनती है³

कवयित्री अपनी कविताओं में स्त्री की मुक्ति की कामना करती है। स्त्री समाज में अपना स्वतंत्र जीवन चाहती है, इनकी कविता स्त्री संवेदना और भावना को व्यक्त करती है, साथ ही स्त्रियों की दशा पर विचार करने के लिए विवश करती है। स्त्री की मुक्ति ही निर्मला पुत्तल की कविताओं का मुख्य उद्देश्य है। कवयित्री अपनी कविताओं के माध्यम से स्त्रियों को नई जगह दिलाना चाहती है, उनका इतिहास बनाना चाहती है—

स्त्रियों को इतिहास में जगह नहीं मिली

इसलिए हम स्त्रियाँ लिखेंगे अपना इतिहास
हमारा इतिहास उन
इतिहास की तरह नहीं होगा
जिस तरह लिखे जाते रहे
अब तक इतिहास
हम खून से लिखेंगे अपना इतिहास
हम समय की छातीपर पाव रखकर
चढ़ेंगे इतिहास की सीढ़ियाँ
और बुलंदियों पर पहुँच कर
फहराएँगे अपने नाम का झंडा
कुछ इस तरह
हम स्त्रियाँ दर्ज कराएँगी
इतिहास में अपना इतिहास⁴

निर्मला पुत्तल अपनी कविता में आदिवासियों से सहानुभूति रखनेवाली शोषणकारी शक्ति को बेनकाब करती हुई कहती है—

कहाँ गया वह परदेशी,
जो शादी का ढोंग रचाकर
तुम्हारे ही घर में
तुम्हारी बहन के साथ
साल दो साल रहकर अघानक गायब हो गया ?⁵

यहाँ कवयित्री यह स्पष्ट करना चाहती है कि समाज का एक वर्ग ऐसा भी होता है कि जो इन भोली-भाली लड़कियों को अपने प्रेमजाल में फँसाकर किस प्रकार उनका उपभोग करता है और फिर समाज की टोंकरे खाने के लिए, बेबस, लाचार, विवश कर चला जाता है, इसी यथार्थ को बहुत ही सरल दृश्यों द्वारा पाठकों पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करती है। जो बिना किसी संकोच के पाठकों को अदग्त करता है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि सदियों से पुरुष सत्तात्मक समाजद्वारा प्रताड़ित, उपेक्षित स्त्री पुरुष के लिए सिर्फ भोग वस्तु ही रही। स्त्री का शोषण और उस पर अधिकार जताने के सिवा और कुछ नहीं किया। पुरुषों ने स्त्री को कभी समझा ही नहीं। निर्मला पुत्तल की कविताओं में स्त्रियों के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। साथ ही कवयित्री आदिवासी स्त्री की वेदना

संघर्ष, शोषण, अत्याचार को अपनी कविता में व्यक्त करती हैं। कविता की भाषा सरल, सहज होने से सामान्य पाठक भी उसे सहजता से समझता है। यथार्थतः कवयित्री अपने चिंतन द्वारा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर कर आदिवासी स्त्रियों के प्रति सुंदर छबी पाठकों के मन में उत्पन्न करने में सफल रही हैं। इनकी रचनाओं में एकप्रकार की अनगढ़ता और खुरदुरापन दिखता है। जो पाठकों को थोड़ा-सा निराश करता है, परंतु यही सच्चाई है, यही वास्तविकता है।

संदर्भ ग्रंथ।

1. साहित्यालोक— संपादक डॉ. राणू कदम तथा डॉ. गिरिश काशीद, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, अपनी जमीन तलाशती बेचौन स्त्री—निर्मला पुस्तक, पृ-138।
2. काव्यालोक—संपादक डॉ. अनिल सांडुके, डॉ. गिरिश काशीद, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर आदिवासी लड़कियों के बारे में—निर्मला पुस्तक, पृ-72।
3. निर्मला पुस्तक— बेघर सपने, आधार प्रकाशन पंचकुला हरियाण, पृ-104।
4. निर्मला पुस्तक— बेघर सपने, आधार प्रकाशन पंचकुला हरियाण, पृ-75।
5. आदिवासी अस्मिता और समकालीन हिंदी कविता— हनुमान सहाय मीना।

ماہی
اردو
مراستی
وسیم فرحت (علیگ)

UGC APPROVED
JOURNAL
ISSN 2278-229X



گوشہ جگر مراد آبادی

جان کر مجملہ خاصان سے خانہ مجھے
مدتوں رو یا کریں گے جام و پیمانہ مجھے

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام ہے فرحت۔
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے
بیادِ خلیل فرحت کارِ نجوی (مرحوم)



سہ ماہی

اراوتی

اپریل تا جون ۲۰۲۰ء

اراوتی، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۲

جلد نمبر ۹

سرپرست : جناب منور پیر بھائی (پونہ)

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com

Cell: 09370222321

نائب مدیران:
کلیم ضیا، احسن ایوبی

خط و کتابت کے لیے:

Waseem Farhat (Alig)
Post Box No.55, H. O,
AMRAVATI-444601(M.S)INDIA

صرف ذرا سالانہ اور رجسٹری ڈاک کے لیے:

The Editor, URDU,
"Adabistan", Near Wahed Khan
Urdu D. Ed. College, Walgaon Road,
AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)

پاکستانی خریداروں کا صرف ذرا سالانہ بھجوانے کیلئے:

بزمِ تخلیق ادب پاکستان

II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایشیا بیکری، ناظم آباد، کراچی

موبائل: 0321-8291908

مشیر

وسیم فرحت

شمارہ ہذا ۱۰۰ روپے

لائبریری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے

لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے

For Online Payments:

SEAMAHEE URDU

SBI ACCOUNT NO:

34961340420

IFS CODE : SBIN0000311

MICR CODE: 444002971

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEAMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔

مضمون نگار کی رائے سے ادارہ کا تعلق ہونا ضروری نہیں اور کسی بھی قسم کی قانونی پادار، جوئی صرف اراوتی عدالت میں ہی کی جائے گی۔

حیاتِ جہد مسلسل کا نام ہے فرحت
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے
بیا خلیل فرحت کارِ نجوی (مرحوم)

اردو

سہ ماہی

امراوتی

اپریل تا جون ۲۰۲۰

امراوتی، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۲

جلد نمبر ۹

جناب منور پیر بھائی (پونہ) : مسز است

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com

Cell: 09370222321

کلیم ضیا، احسن ایوبی

نائب مدیران:

خط و کتابت کے لیے:

Waseem Farhat (Alig)
Post Box No.55, H. O,
AMRAVATI-444601(M.S)INDIA

صرف ذر سالانہ اور رجسٹری ڈاک کے لیے:

The Editor, URDU,
"Adabistan", Near Wahed Khan
Urdu D. Ed. College, Walgaon Road,
AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)

پاکستانی خریداروں کا صرف ذر سالانہ بھجوانے کیلئے:

بزمِ تخلیق ادب پاکستان

II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایشیا بیکری، ناظم آباد، کراچی

موبائل: 0321-8291908

مشیر

وسیم فرحت

شمارہ نمبر ۱۰۰ روپے

لائبریری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے

لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے

For Online Payments:

SEAMAHEE URDU

SBI ACCOUNT NO:

34961340420

IFS CODE : SBIN0000311

MICR CODE: 444002971

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEAMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔

مضمون نگار کی رائے سے ادارہ کا متفق ہو، ضروری نہیں اور کسی بھی قسم کی قانونی پوارہ دہی صرف امراوتی عدالت میں ہی کی جائے گی۔

یو جی سی سے منظور شدہ جریدہ

UGC APPROVED JOURNAL

خُلم خانہ جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
4	مدیر	اداریہ
		مضامین
5	گوپی چند نارنگ (دہلی)	۱۔ اردو اور ہندی کا لسانی اشتراک
14	ڈاکٹر غوث احمد نبی لال شیخ (سولاپور)	۲۔ جوش ملیح آبادی کی شاعری
20	ڈاکٹر کلیم ضیا (بہمنی)	۳۔ ہندوستانی فلموں میں مشترکہ تہذیب
28	ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)	۴۔ 'سہاگن نامہ' کا تحقیقی مطالعہ
33	وسیم فرحت (علیگ)	۵۔ مجسم کیف: کیفی اعظمی
		گوشہء جگر مراد آبادی
42	علی سردار جعفری	۱۔ جگر مراد آبادی
44	شاربِ رودلوی (لکھنؤ)	۲۔ ایک نغمہء فراموش
49	محمد رضا انصاری فرنگی محلی	۳۔ خطوطِ جگر

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)

”سہاگن نامہ“ کا تحقیقی مطالعہ

دکن میں علاؤ الدین حسن بہمنی نے ۱۳۳۷ء میں بہمنی سلطنت کی بنیاد رکھی اور گلبرگہ کو اپنا پایہ تخت بنایا۔ اور ساتھ ہی ساتھ دہلی کی مرکزی حکومت سے اختلاف کر کے دکن کی مقامی زبانوں کی سرپرستی کی۔ بہمنی دور کے مذہبی رسالوں سے متعلق ہماری معلومات معدوم ہے تاہم تحقیق کے ذریعہ جو چند رسالے دستیاب ہوئے ہیں ان میں سہاگن نامہ، معراج العاشقین، مثنوی کدم راؤ پدم راؤ، رسالہ حدیث قدوسی چنگی نامہ، زرنگ نامہ اور رسالہ اذکار کا شمار ہوتا ہے۔

سید یوسف شاہ راجو قتال کا رسالہ ’سہاگن نامہ‘ سالار جنگ میوزیم لائبریری حیدرآباد کے قلمی نسخوں میں دستیاب ہوا ہے۔ اردو کے اکثر ناقدین اس موقف پر ڈٹے ہوئے ہیں کہ یہ تیرہویں صدی کا رسالہ نہیں بلکہ سولہویں صدی کے بزرگ ابوالحسن تانا شاہ کے پیر و مرشد سید شاہ راجو قتال حسینی کا تحریر کردہ ہے۔ اردو میں سب سے پہلے سید محی الدین قادری زور نے تذکرہ مخطوطات میں اور ڈاکٹر شمیمہ شوکت نے اپنی تحقیق ”شکار نامہ“ میں یہ بات ثابت کی کہ ’سہاگن نامہ‘ خلد آباد میں مدفون حضرت سید یوسف شاہ راجو قتال حسینی کی تصنیف ہے جو بندہ نواز کے والد اور نظام الدین محبوب الہی کے مرید خاص تھے۔ انہوں نے ۱۳۲۵ء میں دولت آباد کا رخ کیا اور ۱۳۳۱ء میں اس دارالبقاء سے کوچ کیا۔ یہ وہی دور ہے جب کہ دولت آباد پر تعلق سلطنت کا قبضہ تھا اور بیشتر دہلی کے علماء ترک مستقر کر کے دولت آباد میں سکونت اختیار کر چکے تھے۔ سید یوسف نے صرف چھ سال کا عرصہ دولت آباد میں گزارا جس کی وجہ سے ناقدین کو اعتراض کی گنجائش پیدا ہوگئی کہ چھ سال کے مختصر وقفہ میں کئی زبان سیکھ کر حضرت یوسف نے رسالہ کس طرح تحریر کر دیا۔ اس قسم کے اعتراضات کی تحقیق میں اس لئے گنجائش نہیں کہ بنیادی طور پر حضرت امیر خسرو کے دور میں دہلی کو مرکزیت حاصل ہو چکی تھی اور ایک نئی زبان کو دہلی میں بول چال کا درجہ حاصل ہو چکا تھا، جس سے ثبوت ملتا ہے کہ حضرت سید یوسف نے رسالہ ’سہاگن نامہ‘ جس زبان میں لکھا ہے وہ زبان، دہلی سے دولت آباد منتقل ہوئی تھی اور دہلی میں فارسی کا تسلط تھا جب کہ دکن میں اس نومولود زبان کو سرپرستی حاصل ہوگئی تھی اس لئے انھوں نے دولت آباد کے قیام کے دوران رسالہ ’سہاگن نامہ‘ ایک ایسی زبان میں لکھا جو دہلی کی عوامی بولی اور دکن کی

مقبول ہوئی تھی۔ چنانچہ اُن کے رسالے میں دکنی اور دہلی کا حسین امتزاج دکھائی دیتا ہے۔ حضرت سید یوسف نے یہ رسالہ دکن میں تحریر کیا، اس کا ثبوت اس بات سے مل جاتا ہے کہ اُس دور میں دولت آباد بزرگانِ دین کا مرکز بن چکا تھا اور یہ بزرگانِ دین وعظ و نصیحت کے ذریعہ اسلام کو پھیلانے میں مشغول تھے۔ رسالہ ”سہاگن نامہ“ تحریر کرنے کے دو اسباب تھے ایک تو یہ کہ حضرت یوسف کی اہلیہ محترمہ یعنی خواجہ بندہ نواز کی والدہ اپنی ایک بیٹی کی رحلت پر شب و روز غم میں ڈوبی رہتی تھیں اور زار و قطار روتی تھیں تو اُن کی توجہ کو کسی اور طرف منتقل کرنے کے لئے اور اُن کی دل بہلائی کے لئے سید یوسف نے یہ رسالہ تحریر کیا۔ دوسرا ہندوستانی معاشرے میں رائج چھلہ چھٹی اور دیگر رسومات جن کو ہندوستانی مسلمان عورتیں دین کا جزو لازم سمجھ کر ادا کرتی تھیں، جو مذہب کی رو سے بدعت تھا اُن پر بھی روشنی ڈالی ہے اور اس رسالے ”سہاگن نامہ“ کے ذریعہ ان خواتین اور ساتھ ہی مسلمانوں کو ان بدعتوں سے باز رہنے کی تلقین کی ہے۔ غرض یہ رسالہ اس دور کے ہندوستانی معاشرے کے تہذیب و تمدن، خیالات و نظریات کا بہترین ترجمان ہے۔

مسلمانوں کی آمد کا آغاز ہوا۔ نئے معاشرے میں اسلامی تعلیمات کے ظاہری اور باطنی دونوں رخ پیش کرنا ضروری تھے۔ یہاں آنے والے مسلمان ضرور تھے لیکن عالم دین نہیں تھے نہ مبلغ۔ اس لیے دین کی تبلیغ کی ذمہ داری بہ راہِ است ان پر عائد نہیں ہوتی تھی۔ محمود غزنوی کے دور میں یہاں علماء کی آمد کا سلسلہ شروع ہوا۔ محمود غزنوی چونکہ خود بھی صوفی منش اور صوفیہ کا قدردان تھا۔ اس لیے اس نے یہ تحریک پیدا کی کہ دوسرا علمائے دین کے ساتھ صوفیا بھی اس زمین میں تشریف لائیں اور مفتوحہ علاقوں میں اشاعتِ اسلام کا فریضہ سرانجام دیں۔ چنانچہ پہلے صوفی جن کا نام تذکروں میں ملتا ہے وہ اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ ہیں جنہیں وہ 1005ء اپنے ساتھ لایا تھا۔ اس دور میں آنے والے زیادہ لوگ علماء تھے اس لئے ابتدائی صدیوں میں فقہ اور حدیث کی تدوین اور فلسفیانہ بحثوں میں مشغولیت کے باعث اہل علم کی بڑی تعداد عوام الناس کی اخلاقی تربیت نہ کر سکی تھی۔ صوفیاء نے اس خلا کو پر کیا۔ انھوں نے انسانی نفسیات میں مہارت حاصل کی اور اس کو اپنے نظریات کے ساتھ لوگوں کی اخلاقی تربیت کی۔

ان مسلم صوفیاء نے عوام سے قربت اختیار کی انہوں نے اپنے لباس رہن سہن اور نشست و برخاست کو عوامی بنایا۔ علماء نے اپنے خیالات کو لوگوں تک پہنچانے کے لیے درس و تدریس اور تصنیف و تالیف کا طریقہ اختیار کیا۔ برصغیر کے علماء نے عام طور پر مقامی زبانوں کی بجائے عربی و فارسی کو اپنے خیالات کے اظہار کا ذریعہ بنایا۔ اس طریقے سے وہ پڑھے لکھے طبقے تک اپنا پیغام پہنچانے میں کامیاب ہو گئے۔ مگر عوام الناس تک ان کی رسائی ممکن نہ ہو سکی۔ اس کے برعکس صوفیاء کی جانب سے دینی اور علمی عمل کا آغاز آغاز ہوا

کیونکہ مقامی زبانوں میں کام کرنے کی وجہ سے صوفیاء نے زبان کو تحریک دے کر علمی ترقی کے عمل کا آغاز کیا۔ ان صوفیاء کی خانقاہیں اس زمانے میں سماجی ادارے کی حیثیت رکھتی تھیں۔ یہی وہ خانقاہیں تھیں جنہوں نے ہندوستان کی صرف تعمیر و تہذیب میں نمایاں کردار ادا کیا بلکہ انہوں نے ہندوستان کو پوری دنیا میں ایک الگ شناخت دی۔ انہی صوفیاء کے فیض سے آج بھی رواداری، اخوت، محبت اور امن قائم ہے۔ یہ آج کے دور کی بڑی ضرورت اس لئے بھی ہیں کہ یہاں من و تو کا امتیاز نہیں ہے اور نہ ہی کسی بھید بھاد کا دخل ہے اس دربار میں سب آسکتے ہیں۔

اردو شاعری میں حضرت سید یوسف کی رسالہ ”سہاگن نامہ“ اس وجہ سے اہمیت کا حامل ہے کہ اردو شعراء نے عورت کو صرف غزل میں موضوع بنایا ہے اور اس انداز سے کہ اُس کے حسن اور دوشیزگی کا چرچا کیا جائے، جبکہ عورت کی نسوانیت اور اُس میں چھپے ہوئے تخلیقی جذبے کی طرف کسی شاعر نے توجہ نہیں کی۔ تقریباً یہی حال ہندوستان کی دیگر زبانوں کے شعراء کا بھی رہا ہے۔ ہندوستانی سماج کے اس گمراہ ہونے معیار کا شدید احساس حضرت سید یوسف کو ہوا تھا۔ اگرچہ کہ وہ ایک صوفی اور مرشد زادے تھے اور بیعت حاصل کر کے اپنے عمل کے ذریعہ اولیاء اور صوفیاء کی صف میں شامل ہو گئے تھے لیکن وہ خالص اسلامی طرز کی زندگی کے قائل تھے، اس لئے عام صوفیاء اور اولیاء کی طرح آپ نے مجرد کی زندگی نہیں گذاری بلکہ سنت رسول کی پیروی کرتے ہوئے عورتوں کے جذبات و احساسات کا مشاہدہ کر کے ”سہاگن نامہ“ جیسا رسالہ لکھا، جس میں عورت کو اچھے کام کرنے کی ترغیبات دلا کر برے کام کرنے سے منع کیا ہے تاکہ وہ اپنے سماج اور معاشرے میں بلند مقام حاصل کر سکے۔ ہندوستانی سماج عورت کو مخلوق سے زیادہ ایک ضرورت کی چیز سمجھ کر اُس سے کام لیتا تھا جس کی مخالفت اور اسلامی رویہ کے فروغ کے لئے حضرت سید یوسف شاہ حسین نے رسالہ ”سہاگن نامہ“ تحریر کیا۔ ”سہاگن نامہ“ کی تحریر سے یہ بات ثابت ہو جاتی ہے کہ انہوں نے ہندوستانی معاشرے میں عورت کے گمراہ ہونے مقام کو بلند کرنے کے لئے یہ رسالہ لکھا، جس میں ہندوستانی سماج کی بھرپور نمائندگی دکھائی دیتی ہے۔ یہ رسالہ منظوم ہے۔ ”سہاگن نامہ“ کے چند اشعار حوالے کے لئے پیش ہیں۔

عور سہاگن سن ری سن	یک یک بول تو چت دھر سن
کن سوئی کپٹ یا کی کمان	کھول نہ کہنا بھید بیان
مت دیوا کہیں بھیجیں گے	ست دیو یا کہیں پونجیں گے
قیمت کر کے باند نکو	مشرک کیرے شانہ نکو
جانے جیو سے پونج نکو	سکھ اور سہرا کوچ نکو

یا کہیں سر پرواری کی
 بیشک دوزخ میں جاویں
 مات اور منگیاں مانڈے نا
 کافر ہو کر دوزخ نہ پڑ
 شیطان کی ہے راہ نشم
 چمک سواری ناچلا
 کن پال تو کہیں پھر نکو
 روزہ رکھ کر بھیک نہ منگ
 دین تے باغی کفر ہے کھوڑ
 بد بخت بڑا ادھے بدنام
 پاؤں لے تل سر کے گی
 یوں بند کہتا مختصر
 سو ہے کافر جن پونچا
 سخت شکنجے کھینچیں گی
 اس کا معبود شاہد ہے

کہیں صدقہ کیسر کاری کی
 دیوے ملیدا جن لاویں
 ناری کھریا ہاندھے نا
 غیر خدا کوں سجدہ نہ کر
 پیماں پڑیاں شہ ریشم
 چچا سہاگن نا کہلا
 ٹوٹکا ٹوٹا کر نکو
 ارکل ترت کا چھوڑے سنگ
 پاوٹیاں جالنا مسلم چھوڑ
 جس میں ہوویں ایسے کام
 تب جیب آنگے لڑکے گی
 اے من سیدھی عبرت دھر
 چھوٹنگ نرسو کے سو نہ جا
 جو کئی کا سر لیویں گی
 سید راجو عابد ہے

اس رسالہ میں حضرت شاہ راجو قتال نے ایک عورت سے گزارش کی ہے کہ وہ دل میں بیر نہ رکھے، دوسروں کے راز کو نہ کھولے، بتوں، دیوی دیوتاؤں کو نہ پوجے، نیک ارادہ کر کے ارادے کو توڑنے سے پرہیز کرے، شرک کرنے سے بچے، قلب کی گہرائیوں سے صرف ایک خدا کی عبادت کرے اور اُس کی ذات میں کسی اور کو شریک نہ کرے، دکھ سکھ سے بے نیاز رہے، غیر اللہ کو ملیدہ نہ چڑھائے، قبر پر منگے اور مانڈے نہ رکھے، زچہ کی رسومات اور ٹوٹا ٹوٹکا نہ کرے، پاوٹیاں نہ جلائے، نرسو کو نہ پوجے اور اماؤں و پونم کو دیے نہ جلائے۔ غرض اس طرح حضرت شاہ راجو قتال نے رسالہ ”سہاگن نامہ“ کے ذریعہ ہندوستانی مسلمان عورت کو شرک و فکر سے آلودہ رسومات کو ادا کرنے سے باز رہنے کی تعلیم دی ہے جنہیں اس دور کی خواتین دینی فرائض پر محمول گردانتی تھیں۔

2020-2021

سہ ماہی

اردو

امراوتی

UGC APPROVED
JOURNAL
ISSN 2278-229X

مدیر

وسیم فرحت (علیگ)

اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۰

اس شمارے کے قلم کار

شیمیم حنفی محبوب راہی، اسیم کاویانی، ڈاکٹر فرزانہ امجد
ڈاکٹر غوث احمد نبی لال شیخ، پرویز انجم، حارث حمزہ لون

باب نثر

دلاور فگار، عبداللہ جاوید، ستیہ پال آئندہ، منظور ندیم
عائف غنی، عبدالسلام کوش، ہوی مکرائی، فریاد آرزو احمد مصباح

باب نظم

شہناز خانم عابدی، سہیل جاوید

افسانے

2020-2021

سہ ماہی اردو امرات

Oct. to Dec = 2020

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام ہے فرحت
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے
بیاضِ خلیل فرحت کارِ نجوی (مرحوم)



سہ ماہی

امرات

اکتوبر تا دسمبر ۲۰۲۰

امرات، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۴

جلد نمبر ۹

سرپرست : جناب منور پیر بھائی (پونہ)

32.703
04

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com Cell: 09370222321

نائب مدیران: کلیم ضیا، احسن ایوبی

①

خط و کتابت کے لیے:	
Waseem Farhat (Alig) Post Box No.55, H. O, AMRAVATI-444601(M.S)INDIA	
صرف زمر سالانہ اور رجسٹری ڈاک کے لیے:	
The Editor, URDU, "Adabistan", Near Wahed Khan Urdu D. Ed. College, Walgaon Road, AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)	
پاکستانی خریداروں کا صرف زمر سالانہ بھجوانے کیلئے:	
بزمِ تخلیقِ ادب پاکستان II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایڈیا بیکری، ناظم آباد، کراچی موبائل: 0321-8291908	
مشیر وسیم فرحت	
شمارہ نمبر ۱	۱۰۰ روپے
تعاون خاص	۲۰۰۰ روپے
لائبریری اور اداروں سے	۲۵۰ روپے
لائف ممبر شپ	۷۰۰۰ روپے
For Online Payments:	
SEAMAHEE URDU	
SBI ACCOUNT NO: 34961340420	
IFS CODE: SBIN0000311	
MICR CODE: 444002971	

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEAMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔
مہینوں کی مدت سے ادارہ کا متن ہر ضروری نہیں اور کسی قسم کی قانونی پابندی صرف امرات کی عداوت میں ہی کی جائے گی۔

خُلم خانہ جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
3	مدیر	اداریہ
.....		
مضامین		
4	شمیم خنی (دہلی)	۱۔ غالب اور جدید فکر
10	ڈاکٹر محبوب راہی (آکولہ)	۲۔ منور رانا
23	اسیم کاویانی (بمبئی)	۳۔ بختی حسین
32	ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)	۴۔ سفر نامہ چلو جاپان پر ایک نظر
36	ڈاکٹر غوث احمد نبی لال شیخ (سولاپور)	۵۔ ساحر کے گیت
40	پرویز انجم (پاکستان)	۶۔ منقو: بمبئی سے مراجعت
54	حارث حنزہ لون (کشمیر)	۷۔ ٹیگور اور اقبال
.....		
ماضی کے جھروکوں سے		
64	دلاورنگار	۱۔ سہرے میں مرثیہ، مرچے میں سہرا
65	دلاورنگار	۲۔ گہر ہونے تک
.....		
بنتِ ماہتاب (بابِ نظم)		
66	عبداللہ جاوید (کینیڈا)، ستیہ پال آئند (امریکہ)	
74	حسام نو (بابِ غزل).....	
	عاکف غنی (پیرس)، منظور ندیم (آکولہ)، ابرار نعمی (رائسین)، وصی سکرانی (نیپال)، فریاد آزر (دہلی)، احمد معراج (کولکاتا)	
78	نکبہ گل (بابِ قطعہ)..... عبدالسلام کوثر (راج ناندگاؤں).....	
	حدیث دل (بابِ افسانہ).....	
79	شہناز خانم عابدی (کینیڈا)	• عقبی آئینہ
85	سہیل جاوید (کینیڈا)	• بز دل

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)

سفر نامہ 'جاپان چلو جاپان چلو'

پر ایک نظر

مجتبیٰ حسین طنزیہ و مزاحیہ ادب کے سپر بریس کے نجم الثاقب ہیں۔ ان کا شمار چوٹی کے طنزیہ و مزاحیہ نگاروں میں ہوتا ہے۔ دنیائے ادب میں آپ کا داخلہ حیدرآباد کے روزنامہ "سیاست" کے مزاحیہ کالم "شیشہ و تیشہ" سے ہوتا ہے۔ کوہ پیما کے فرضی نام سے ایک دہائی تک آپ کالم کے کوزے میں ہنسی کی سے انڈلتے رہے اور قاری کو محظوظ دمد ہوش کرتے رہے اور پھر اس طرح انھوں نے مزاحیہ نگاری ہی کو اپنا اوڑھنا و بچھونا بنا لیا۔ مجموعہ مضامین تکلف برطرف، قطع کلام، قصہ مختصر، بہر حال، بالآخر، آدمی نامہ اور سفر نامہ جاپان چلو جاپان چلو وغیرہ مجتبیٰ حسین کی مزاح نگاری کی شاہراہ کی گونا گوں منزلیں ہیں اور ہر منزل قاری کے حس مزاح کے ذائقے میں بتدریج اضافہ کرتی رہی ہے۔ سفر نامہ "جاپان چلو جاپان چلو" ۱۹۸۳ء میں کتابی شکل میں منظر عام پر آیا۔ ابتداء میں اس کی بیشتر قسطیں روزنامہ "سیاست" میں شائع ہو چکی تھیں۔ مجتبیٰ حسین کے سفر جاپان کی غرض و غایت تفریحی نہیں تھی بلکہ NCERT کے نمائندے کی حیثیت سے جاپان میں یونیسکو کے ایٹائی ثقافتی مرکز کی جانب سے منعقدہ پبلشنگ کے ایک تربیتی کورس میں شرکت تھی۔ یہ تربیتی کورس انتہائی خشک اور سنجیدہ تھا، یہی سبب ہے کہ مجتبیٰ حسین نے اس کا ذکر اپنے سفر نامے میں نہیں کیا بلکہ انھوں نے جاپانیوں کے اخلاق و عادات، خوراک، تہذیب و تمدن، رسم و رواج، مذہب، علم و فن، جرائم، قانون، ذوق مطالعہ، صنعتی و حرفی ترقی، بلٹ ٹرین، تقریب چائے وغیرہ کا ذکر کیا ہے۔ اس سفر نامہ کو مجتبیٰ حسین نے مختلف عنوانات میں منقسم کیا ہے۔ سفر نامے میں موضوع کی سنگینی و لطافت کے لحاظ سے طنزیہ و ظریفانہ پیرائے کو اختیار کیا ہے۔ غرض یہ اپنی نوعیت کا ایک دلچسپ سفر نامہ ہے۔ ذیل میں اس سفر نامے میں جن واقعات کو بیان کیا گیا ہے اس پر مختصر روشنی ڈالی گئی ہے۔

تو کوگا و افوجی حکمرانوں کے عہد میں جاپان ایک گنام ملک تھا اور ان کا پہلا دارالسلطنت نارا تھا پھر کیوٹو رہا۔ ۱۸۶۸ء میں جاپان کے قلمرو کی عنان جب میجی خاندان کے ہاتھ آگئی تو سب سے پہلے انھوں نے

پایہ تخت کوٹو کو منتقل کیا، پھر سائنس اور ٹکنالوجی کی طرف خاص توجہ دی۔ خام مال درآمد کیا اور اُن سے ریڈیو، ٹرانزسٹر، ٹیپ ریکارڈر، ٹی وی اور دیگر برقی اشیاء اور بچوں کے کھلونے، گڑیا اور نہ جانے کیا کیا چیزیں درآمد کرنی شروع کی کہ اُن کی ان ایجادوں پر پوری دنیا انگشت بدنداں ہو گئی۔

جاپانی اپنی حقیقت سے بخوبی واقف ہیں کہ ان کی زمینیں بقدر ضرورت اناج اگانے کی اہل نہیں ہیں اور نہ معدنی ذخائر کی دولت سے مالا مال ہیں۔ محنت پیہم اُن کی ملکی ترقی کی ضامن ہے۔ یہی سبب ہے کہ مزدوروں کا حکومت یا صنعت کاروں سے کسی بات پر جب اختلاف ہوتا ہے تو احتجاج کے طور پر کام کو موقف کرنے کی بجائے مزدور مقررہ وقت سے زیادہ کام کرتے ہیں۔ ہڑتال کا یہ نالاطریقہ جاپانیوں ہی کی اختراع ہے۔

جاپانی 'قد کے کوتاہ لیکن کردار کے بلند ہوتے ہیں۔ یوں دیکھیں تو ان کی ہر چیز چھوٹی ہوتی ہے۔ مثلاً جس ہوٹل میں مجتبیٰ حسین کا قیام عمل میں لایا گیا تھا اُس کا کمرہ انتہائی مختصر تھا کہ مصنف دل کھول کر بستر پر انگڑائی بھی نہ لے پاتے تھے۔ انگڑائی لیتے وقت کبھی اُن کا ہاتھ ٹی وی سے ٹکراتا تھا تو کبھی ٹیلی فون سے۔ جب انھوں نے اس کا ذکر اپنے ساتھی مندوین سے کیا تو کسی نے اُن سے کہا کہ وہ گیلری میں جا کر انگڑائی کیوں نہیں لیتے۔ کوتاہ قد ہونے کے ساتھ ساتھ جاپانی عمر چور بھی ہوتے ہیں۔ اُن کے چہرے بشرے اور قد کا ٹھہ سے وہ صدابہار نظر آتے ہیں۔ انھیں دیکھ کر اُن کی عمر کو بیان کرنا انتہائی دقت طلب مرحلہ ہوتا ہے جس سے مجتبیٰ حسین گذر چکے ہیں۔ جاپانیوں سے متعلق عجیب و غریب بات یہ بھی ہے کہ یہاں اکثر و بیشتر لوگوں کا خاندانی نام یکساں ہوتا ہے۔ مثال کے طور پر سوزوکی۔ آدی تو آدی دو چاکی اور چار چاکی گاڑیوں کے نام بھی سوزوکی ہوتے ہیں۔

مذہب نصاریٰ میں دو بڑے فرقے ہیں۔ ایک رومن کیتھولک اور دوسرا پروٹیسٹنٹ۔ نصرانیوں میں ریشہ ازدواج میں مقید ہونے کے لئے فریقین کا ہم فرقہ ہونا لازمی نہیں ہے۔ یوم عبادت یعنی اتوار کے دن میاں اور بیوی دونوں ایک ہی سواری میں بیٹھ کر اپنی اپنی عبادت گاہوں کو جاتے ہیں اور اُن کی واپسی بھی مل کر ہی ہوتی ہے لیکن جاپانی تو اس طرح کے معاملات میں نصرانیوں سے بھی چار قدم آگے ہیں۔ یہاں تو میاں اور بیوی ایک دوسرے کے مذہب سے بھی ناداقتف ہوتے ہیں اور نہ انھیں اس بات کا علم ہوتا ہے کہ مستقبل میں اُن کی اولاد کس مذہب کو اپنائے گی۔ جاپان میں دو بڑے مذہب ہیں ایک اُن کا قدیم مذہب شنتو اور دوسرا بودھ مت۔ جاپانی بیک وقت دونوں مذہبوں پر عمل کرتے ہیں۔ یعنی شادی بیاہ کے لئے شنتو مندر جاتے ہیں اور آخری رسومات بودھ مت کے اصول کے مطابق انجام دیتے ہیں۔ جاپان میں مذہب اسلام بھی موجود

ہے۔ ۱۹۷۴ء میں میڈیکل ڈاکٹر شوقی فتا کی اور اُن کے چند ساتھیوں نے اسلام قبول کیا اور پھر انھوں نے جاپان اسلامک کانگریس کی تاسیس رکھی۔ اُس وقت وہاں مسلمانوں کی تعداد پانچ ہزار تھی اور سات آٹھ سال ہی میں یعنی جس زمانے میں مجتبیٰ حسین جاپان گئے تھے تو اُس وقت مسلمانوں کی تعداد ساٹھ ہزار کے قریب تھی۔ یہاں ترکوں کی بنائی ہوئی دو مسجدیں ہیں۔ ایک کو بے شہر میں اور دوسری ٹوکیو کے مضافات شیمو کو میں ہے۔ ڈاکٹر شوقی فتا کی کی انجمن نے عربی زبان کی تعلیم کا بھی جاپان میں انتظام کیا ہے اور قرآنی تعلیمات کے بارے میں ایک تعلیمی حلقہ بھی قائم کیا ہے جو ہفتہ میں ایک مرتبہ لیکچر منعقد کرتا ہے۔ جاپان اسلامک کانگریس کی ان سرگرمیوں کی بدولت جاپان میں نوجوان تیزی سے مذہب اسلام کو قبول کر رہے ہیں۔

مجتبیٰ حسین کو جاپانیوں کے اس وصف پر بے حد رشک آیا کہ جاپان میں لسانی تعصب مطلق نہیں ہے۔ ہندوستان میں عہد کہنہ میں لسانی تعصب بالکل نہ تھا۔ ۱۸۲۲ء میں جب ہندوستان میں اخبار نویسوں کا آغاز ہوا تو اس عہد میں ایک اخبار مختلف زبانوں میں نکلتا تھا۔ مثلاً کبھی اردو، فارسی اور ہندی اور بلا تفریق مذہب کے ہر ہندوستانی جس زبان میں اخبار ہوتا تھا بغیر کسی تردد کے پڑھ لیتا تھا۔ لسانی تعصب کے ختم ہونے کے آغاز کا رتو انگریز ہیں، لیکن اس کی آبیاری ہم ہندوستانیوں نے کی ہے اور آج یہ لسانی تعصب کا ختم ایک تناور درخت میں تبدیل ہو چکا ہے۔ جس کی بدولت آئے دن ہمارے ملک میں فسادات ہوتے ہیں۔ لسانی تعصب اول اول قلم کی چنگاری اور آخر میں فرقہ وارانہ فسادات کی وبا بن جاتا ہے۔ جاپانی ایک زیرک قوم ہے۔ وہ ایک تیر سے دو شکار کرنا جانتی ہے۔ جب انھوں نے دیکھا کہ اردو اور ہندی دونوں کا گرامر یکساں ہے، اگر دونوں کی بنیادی زبانیں یعنی سنسکرت، فارسی اور عربی پر محنت کریں تو بیک وقت ہندی اور اردو دونوں پر عبور حاصل ہو سکتا ہے تو انھوں نے دونوں بنیادی زبانوں پر توجہ دی۔ جس کی بدولت جاپان میں جو شخص اردو جانتا ہے وہ ہندی بھی جانتا ہے۔ جاپان کی اوسکا اور ٹوکیو یونیورسٹی دونوں میں بھی اردو اور ہندی کی اعلیٰ تعلیم کا بہترین انتظام موجود ہے۔ ساتھ ہی وہ اُن طلباء کو جو اردو اور ہندی میں اعلیٰ تعلیم حاصل کرتے ہیں انہیں ہندوستان اور پاکستان کے اُن شہروں اور اُس ماحول میں یونیورسٹی کی جانب سے ضرور بھیجے ہیں، جہاں سے یہ زبانیں تعلق رکھتی ہیں۔ مثلاً اردو کے لئے ہندوستان میں لکھنؤ، حیدرآباد اور پاکستان کے مختلف شہر وغیرہ۔ مذکورہ بالا دونوں یونیورسٹیوں میں پاکستان سے شائع ہونے والی اردو کی بیشتر کتابیں موجود تھیں لیکن انڈیا کی کتابیں حال حال ہی تھیں۔ یہ بات مجتبیٰ حسین کو ناگوار گذری تھی۔

مجتبیٰ حسین جاپانیوں کے ذوق مطالعہ سے بھی بے حد متاثر ہوئے تھے۔ اُن کے خیال میں سارے ایشیاء میں جاپانیوں کی طرح پڑھا کو قوم اور کوئی نہ ہوگی۔ تمام عالم میں اُن کے اشاعتی کاروبار کا ڈکا

بجا ہوا ہے۔ عمر رسیدہ افراد اور بچے سب اس سرگرمی (مشغلہ) میں سرگرم رہتے ہیں۔ جاپان کے قیام کے دوران انھوں نے مشاہدہ کیا کہ ہر جاپانی یا تو پڑھتا ہے یا لکھنے میں مصروف رہتا ہے لیکن باتیں بہت کم کرتا ہے۔ یہاں ہر کوئی کتاب خرید کر پڑھتا ہے ہماری طرح نہیں کہ مانگنے کی روشنی سے اپنی شوق کو پورا کرے۔ ٹوکیو میں شہنشاہ جاپان کے محل سے متصل محلہ "کندا" میں کتابوں کا عظیم الشان بازار ہے۔ ساتھ ہی عوامی مقامات مثلاً ہوٹل، تفریح گاہ اور یلوے اسٹیشن پر بھی کتابوں کے اسٹال ہوتے ہیں۔ پلیٹ فارم پر ٹرین کے انتظار میں اور ٹرین میں منزل مقصود پر پہنچنے تک جاپانی ہنوز مطالعہ میں مصروف کار ہوتے ہیں۔

تاریخی عمارتوں کا شمار ملکی املاک میں ہوتا ہے۔ ہر محب وطن کا یہ فرض ہے کہ وہ اس کی حفاظت کرے۔ جاپانی اس فرض سے عہدہ برآ ہوتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں لیکن ہم ہندوستانی ہنوز وہی دھاگ کے تمبن پات ہیں۔ جاپان کے قیام کے دوران مصنف نے بلٹ ٹرین کا سفر کیا تھا۔ جاپان میں بلٹ ٹرین ۱۹۶۳ء میں جاری ہوئی۔ چونکہ یہ بندوق کی گولی کے مانند تیز رفتار ہوتی ہے اس لئے اسے عرف عام میں بلٹ ٹرین کہا جاتا ہے۔ بلٹ ٹرین کے ذکر کے ذریعہ بھی مصنف نے جاپانیوں کی خوبیوں کو سراہا ہے اور دونوں ملکوں یعنی جاپان اور ہندوستان کے ٹرین کے سفر کا اور ٹرین کے منتظمین کا موازنہ و مقابلہ کیا ہے۔ کہا ہے کہ جاپانی ٹرینیں وقت مقررہ پر پلیٹ فارم پر موجود ہوتی ہیں۔ اگر ٹرین دس منٹ بھی تاخیر سے آئے تو اس کے منتظمین پورا کرایہ مسافر کو واپس کرتے ہیں۔ جاپان میں سوائے ایک کے تمام ٹرینیں نجی ہیں اور لوگ نجی ٹرین میں سفر کرنے کو فوجیت دیتے ہیں کیونکہ سرکاری ٹرین کا کرایہ بھی زیادہ ہوتا ہے اور کارگزاری بھی کوئی خاص نہیں ہے۔ جاپان میں اکثر زلزلے آتے ہیں۔ جونہی زلزلہ آتا ہے ٹرین خود بخود ڈک جاتی ہے۔

قصہ کو تاہم مجتبیٰ حسین نے جن فنکارانہ صلاحیتوں کو بروئے کار لا کر ابھرتے ہوئے سورج کے ملک جاپان پر جو سفر نامہ تحریر کیا ہے اس کے ذریعہ مفت میں قاری کو جاپان کی سیر کرائی ہے اور مختلف واقعات و حادثات کو بیان کر کے جاپانیوں کے اوصاف حمیدہ کی ترجمانی کی ہے۔ جس طرز اسلوب کو مجتبیٰ حسین نے اس سفر نامے کے لئے منتخب کیا ہے وہ قاری کو کہیں بھی بے کیف نہیں ہونے دیتا۔ مناظر قدرت اور خصوصاً نیوجی پہاڑ کی منظر کشی جس طرز میں کی ہے قابل تحسین ہے۔ سفر نامے میں مجتبیٰ حسین نے جہاں یونیسکو کی چھتری، جیا کوڑی کے ہندوستانی سلام اور ہندوستانی ٹرین کے واقعہ کے ذریعہ قاری کو بے ساختہ تہنہ لگانے پر مجبور کیا ہے تو وہیں کسٹم آفیسر کی ایمانداری، جاپانیوں کے ہسپتال کا انوکھا طرز، ٹرین کے تاخیر سے پہنچنے پر مالکان ٹرین کا مسافر کو پورا کرایہ لوٹانا، تاریخی عمارتوں کی حفاظت اور لسانی بے تعصبی کے ذریعہ ایک حساس قاری کی روح پر کاری ضرب لگائی ہے۔



BIO-BIBLIOMETRIC PORTRAIT OF PROF. DR A. PARASURAMAN

Mr Dixit Amar Rangnath

Librarian,

U.E.S. Mahila Mahavidhyalaya, Solapur.

Email-amardixit491@gmail.com

Introduction-Brief Life History

A. Parasuraman is a professor and holder of the James W. McLamore Chair in Marketing (endowed by the Burger King Corporation) and Director of Ph.D. Programs at the School of Business, University of Miami. He teaches and does research in the areas of services marketing, service-quality measurement, and improvement, and the role of technology in marketing to and serving customers. In 1988 Dr. Parasuraman was selected as one of the "Ten Most Influential Figures in Quality" by the editorial board of The Quality Review, co-published by the American Quality Foundation and the American Society for Quality Control. He has received many distinguished teaching and research awards, including multiple Best Professor Awards given by Executive and Regular MBA classes and the Provost's Award for Scholarly Research at the University of Miami. In 1998 he received the American Marketing Association's "Career Contributions to the Services Discipline Award. He received the Academy of Marketing Science's "Outstanding Marketing Educator Award" in 2001 and was designated as a "Distinguished Fellow" of the Academy in 2004. He has also been named to the Chartered Institute of Marketing (U.K.)'s "Guru Gallery," which profiles the 50 leading marketing thinkers worldwide. In 2005 he received a "Distinguished Alumnus Award" from IIT-Madras, his undergraduate alma mater. In 2008 the e-TQM College (now Hamdan Bin Mohammed e-University) in Dubai established "The Parasuraman Service Excellence Research Prize," an annual award to foster more scholarly research throughout the Middle East region. In 2009 the Society for Marketing Advances honoured him with the "Elsevier Distinguished Scholar" award. In 2011 Maastricht University in the Netherlands conferred an Honorary Doctorate degree upon him. He is the recipient of the 2012 Paul D. Converse Award for significant scholarly contributions to marketing and the 2013 Gil Churchill Award for Lifetime Contributions to

Marketing Research. Dr Parasuraman has published over 130 articles in scholarly journals and has served as editor of the Journal of the Academy of Marketing Science (1997-2000) and the Journal of Service Research (2005-2009). He also serves on the editorial review boards of ten journals. He has authored several books, consulted with many companies, and conducted dozens of executive seminars on service quality, customer satisfaction and the role of technology in service delivery in many countries. (*Prof. A. Parasuraman, n.d.*)

Review of Related Literature:

Some of the Scientometrics profiles of writers generated by various authors using different approaches are enlisted below. Earlier many studies also revealed to study eminent personalities' publication patterns.

The analysis was done using the number of publications obtained, summing 88 documents in 2017–2021, relating to the predetermined topics. The study was titled "Bibliometric Using Vos-viewer with Publish or Perish (using Google Scholar data): From Step-by-step Processing for Users to the Practical Examples in the Analysis of Digital Learning Articles in Pre and Post Covid-19 Pandemic." The authors used the examination of articles on digital learning from the pre-and post-covid periods as examples in practice. They discovered that VOSviewer may be utilized to provide recommendations for data analysis outcomes(Fitria et al., 2021)

Based on information from the Web of Science, Kavya et al. performed research on Badiadka Narayana, a professor of chemistry at Mangalore University who is also a well-known authority on crystallography and a prolific writer in the field of chemistry. 691 pieces in international publications, 49 in national journals, and 165 papers in conference proceedings provide vivid documentation of his prodigious authoring. A sizable number of publications (392) were published between 2007 and 2011. 325 (59.2%) of the foreign journals in the "Acta Crystallographic section e-structure" have published publications by Narayana. He has collaborated on 242 articles in total, most of them with H. S. Yathirajan and Sarojini Balladka(Kavya et al., 2020).

An analysis of Anthony J. Leggett's publication output, who won the 2003 Physics Nobel Prize, was made by Angadi et al. He authored ten papers each in 1987, 1994, and 1998, which were his most active years. He published 194 books in total between 1964 and 2004 during the course of his publishing career(Angadi et al., 2006).

Anup Kumar Dasa and Sanjaya Mishrab drew attention to a June 8, 2015, revelation made by the Google Scholar Digest blog regarding the accessibility of Google Scholar profiles of legendary library and information science researchers. From a group of 29 scholars, only Dr. Shiyali Ramamrita Ranganathan was chosen. The study examined S R Ranganathan's scholarly output as it appeared

in Scopus, Web of Science, and Google Scholar Citations. To find citing and cited scholarly publications of S R Ranganathan, the study used three citation databases: Web of Science (Core Collection), Scopus, and Google Scholar Citations. Allen Kent and others edited Volume 25 of the Encyclopaedia of Library and Information Science, which was released by Marcel Dekker Inc. in New York in 1978. A Brief Biography of S.R. Ranganathan (Das & Mishra, 2015).

Significance of the study

Numerous studies have visualised the bibliographic information received from citation databases like Scopus and Web of Science and abstracting/indexing (A/I) databases (WoS). The authors searched for studies that attempted to undertake bibliometric or Scientometrics analyses using data from the free online database Google Scholar (GS) and well-known Scientometrics or scientific mapping tools like VOSviewer, but they were unable to discover any. Additionally, because GS is a free database and has more findings available, it was reasonable to conduct this study based on A Parasuraman's contributions. Utilizing a third-party programme to extract data from GS for bibliometric analysis also illustrates a novel methodology.

Objectives of the study

The study's goal is to analyse descriptive quantitative analysis of Prof Dr. A Parasuraman's scholar profile from its origin to the present.

The primary objective of this study is to conduct a bibliometric examination of the leading figure in service quality. The statistical evaluation of published scientific papers, books, or book chapters is known as bibliometric analysis, and it is a useful tool for assessing the influence of publications on the scientific community. The number of times a piece of research has been referenced by other authors can be used to determine its academic significance (Iftikhar et al., 2019).

Data Source

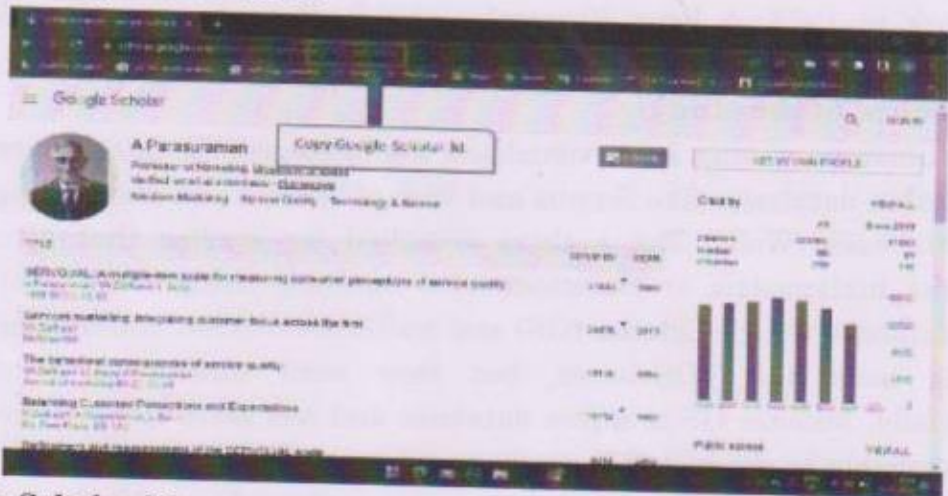
A free web search engine called Google Scholar (GS) indexes the full text or metadata of academic publications from a variety of publishing formats and fields. The vast majority of scholarly books, peer-reviewed online journals, and other non-peer-reviewed journals are all indexed by Google Scholar. Google Scholar allows users to search for printed or digital copies of papers, whether they are available online or in libraries. The "cited by" function in Google Scholar gives users access to the abstracts of articles that have cited the current article. Citation indexing, which was previously solely offered by Scopus and Web of Knowledge, is now available. The well-known citation databases Web of Science and Scopus are seeing competition from Google Scholar.

Method of Data Extraction

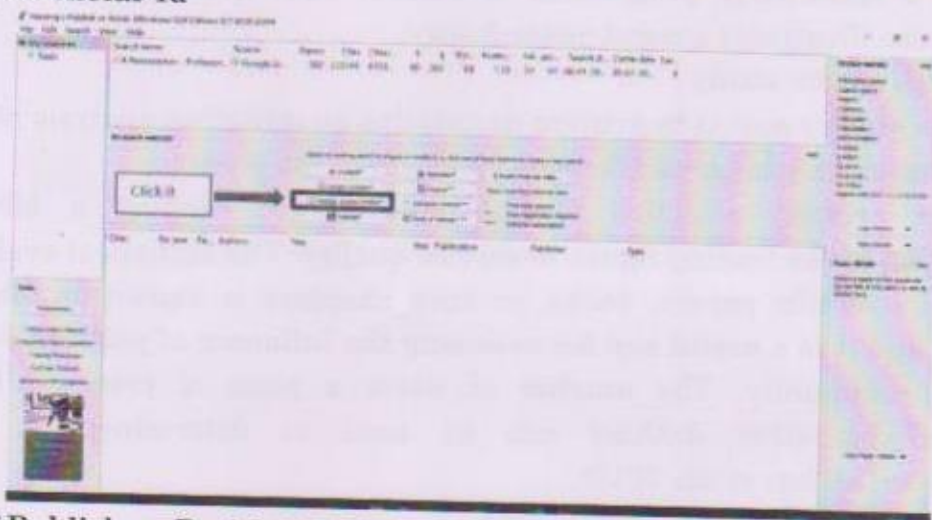
With the use of Publish or Perish (PoP), the pertinent bibliographic information from Google Scholar was extracted. Publish or Perish (PoP), a free

tool created by Harzing, A.W. (2007), allows users to query and retrieve search results from numerous academic databases, including as Scopus, Web of Science, GS, and others. PoP locates original citations and then analyses them to produce the research metrics listed below:

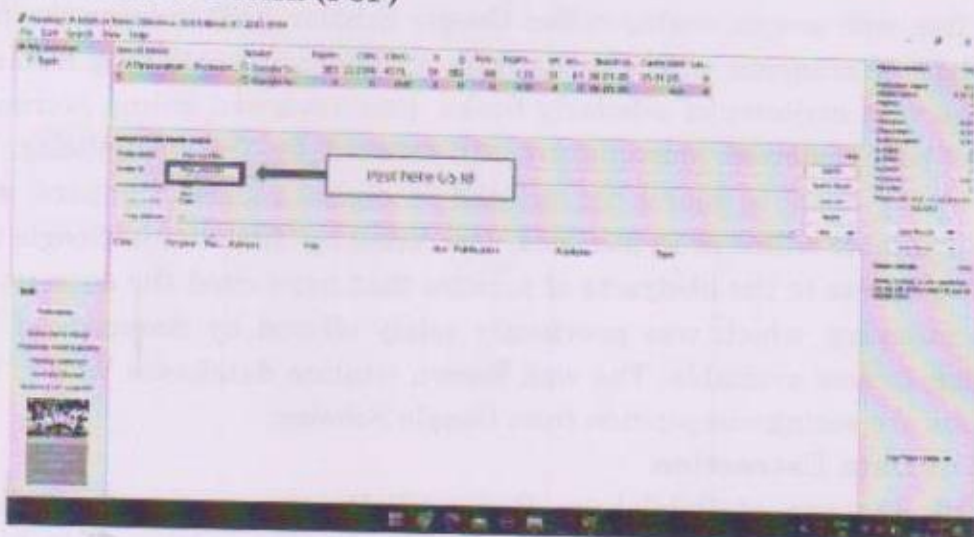
1. Step-1-Google Scholar Id



2. Google Scholar Id



3. Use of Publish or Perish (PoP)



to 1972. The oldest entry in this graph is of 1972 with 3 publications. His highest publication is between year 1981-2010 which are 223 in quantity. The GAP Model of Service Quality was first proposed by him in the year 1985.

2. Authors Collaboration pattern:

No. of Authors	No. of Publications	No. of Authors
One	70(21.94)	70(8.51)
Two	94(29.46)	188(22.87)
Three	105(32.91)	315(38.32)
Four	25(7.83)	100(12.16)
Five	7(2.19)	35(4.25)
Six	12(3.76)	72(8.75)
Seven	6(1.88)	42(5.10)
Total	319(100.00)	822(100.00)

Table 1. Authorship Pattern

- A. Parasuraman has independently authored 70 publications during his entire research career. Among 319 publications 94 publications are two-authored, 105 publications are three authored, 25 publications are four author collaboration.

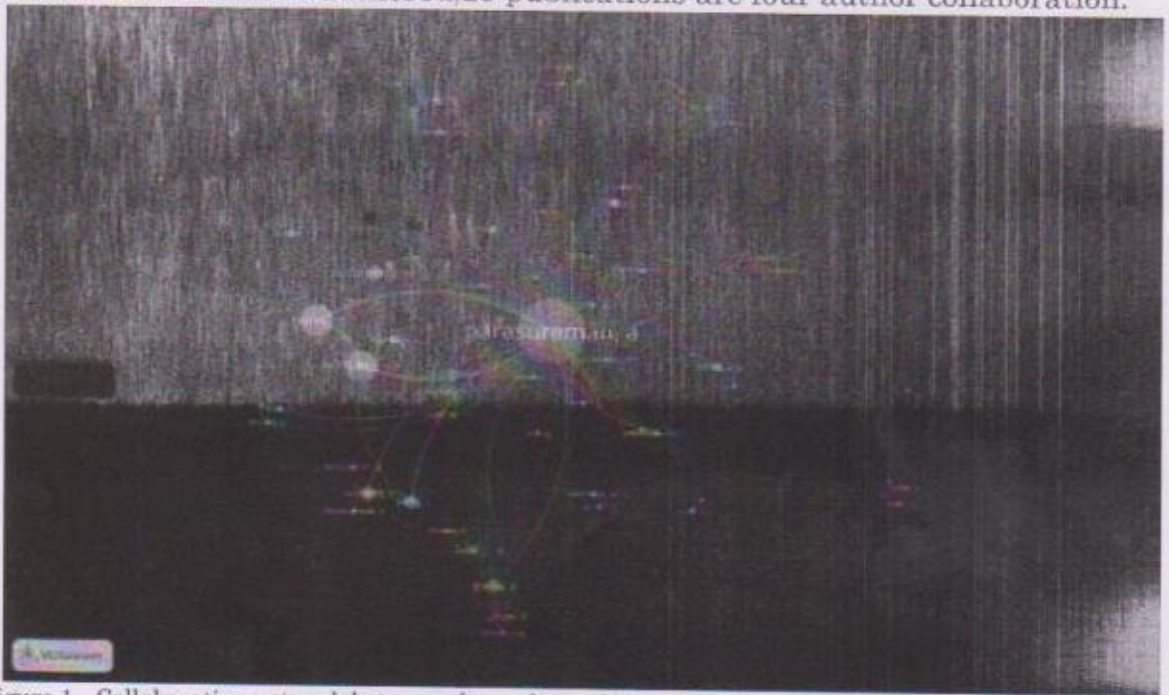


Figure 1.- Collaboration network between the authors of visualization map from VOSviewer.

From a total of 270 authors, 74 meets the threshold by considering the author having at least 2 numbers of documents. Out of 270, only 44 authors showed connections to each other. As highlighted in figure.1 the network contains 73 nodes, 135 co-authorship links and 29 clusters. Each node in the figure represents an author's productivity and the links between the authors denote the collaboration established through the co-authorship in the articles. The total link strength is 575. It has been observed from the network map that Prof. Dr. S.R Parasuraman had very strong collaboration with Co-author Berry and Zaithmal.

2. Highly Cited Scholarly Work.

Total Citations	Title
71443	Integrating business game performance with the grading process
19169	Degree of Uniformity in Achievement Motivation Levels of Team Members: It's Effect on Team Performance in a Simulation Game
10712	Degree of uniformity in achievement motivation levels of team members
8814	The relative importance of industrial promotion tools
6389	A study of techniques used and clients served by marketing research firms
4735	Demographics, job satisfaction, and propensity to leave of industrial salesmen
4324	The relationship of satisfaction and performance to salesforce turnover
3971	Organizational culture and marketing effectiveness
3705	Quality counts in services, too
3621	Model service its quality and implications for future
3279	A Conceptual Model of Service Quality and Its Service Quality and Its Implication for Future Research
3278	Social power bases of marketing executives: the relationship with organizational climate
3185	Journal of Marketing.
3020	A Conceptual Model of Service Quality and its Implications for Future Research
2667	Communication and control processes in the delivery of service quality
1968	Communication and control processes in the delivery of service quality
1826	The service-quality puzzle
1745	Performance and job satisfaction effects on salesperson turnover: A replication and extension
1672	I SPRING 1988 VOLUME 64, NUMBER
1600	Five imperatives for improving service quality

Table 2-Highly Cited Scholarly Publications.

Table no.2 shows top 20 highly cited scholarly work of Prof. Dr. A. Parasuraman. It is observed that the research paper "Integrating business game performance with the grading process" was published in the Proceedings, Midwest AIDS Conference (April 3-5, 1975) cited mostly 71443 times, Degree of Uniformity in Achievement Motivation Levels of Team Members: It's Effect on Team Performance in a Simulation Game cited 19169 times, Degree of uniformity in achievement motivation levels of team members cited 10712 times, The relative importance of industrial promotion tools cited 8814 times, A study of techniques used and clients served by marketing research firms cited 6389 times, Demographics, job satisfaction, and propensity to leave of industrial salesmen cited 4735 times. The relationship of satisfaction and performance to salesforce turnover cited 4324 times.

3. Top 20 publications Metrics based on GS Rank Algorithm

GS Rank	Year	Cites	ECC	Cites Per Year	Cites Per Author	Author Count	Age
1	1985	12	71443	2041.23	23814	3	35
3	1981	16	19169	709.96	6390	3	27
4	1993	5	10712	324.61	3571	3	33
5	2009	2	8814	419.71	2938	3	21
6	1978	18	6389	354.94	2130	3	18
7	1981	17	4735	157.83	1578	3	30

8	2015	2	4324	205.9	1441	3	21
9	1980	0	3971	283.64	662	6	14
10	1985	3278	3705	161.09	3705	1	23
11	1984	0	3621	172.43	905	4	21
13	1991	85	3279	142.57	1640	2	23
14	2009	2	3278	93.66	1093	3	35
15	1990	6	3185	99.53	1062	3	32
16	1987	8	3020	104.14	1007	3	29
17	2006	3	2667	91.97	889	3	29
18		0	1968	196.8	328	6	10
19	1985	3279	1826	70.23	1826	1	26
20	1990	0	1745	145.42	436	4	12
21	2005	0	1672	209	334	5	8
22	1998	4	1600	69.57	533	3	23

Table 3. Google Scholar Rank Algorithm

Conclusion -

A. Parasuraman ("Parsu") is considered one of the most influential figures in the field of services marketing and service quality, and is widely known for his work on SERVQUAL, E-S-QUAL, and the Technology Readiness Index (TRI). His bio-bibliometric study will help the researchers to know his achievements in service quality research field, his top 20 most cited articles, collaboration with other research scholars, google scholar ranking for his research articles.

References-

1. Angadi, M., Koganuramath, M. M., Kademanp, B. S., Kumbar, B. D., & Jange, S. (2006). Foundations of Quantum Mechanics (36). *J. Low Temp. Phys.*, 53(9), 203–212. <http://www.physics.uiuc.edu/people/faculty/profiles/>
2. Das, A. K., & Mishra, S. (2015). S R Ranganathan in Google Scholar and other citation databases. *ALIS Vol.62(4) [December 2015]*, 62, 290–298. <http://nopr.niscpr.res.in/handle/123456789/33726>
3. Fitria, D., Husaeni, A., Bayu, A., & Nandiyanto, D. (2021). *Bibliometric Using Vosviewer with Publish or Perish (using Google Scholar data): From Step-by-step Processing for Users to the Practical Examples in the Analysis of Digital Learning Articles in Pre and Post Covid-19 Pandemic*. <https://doi.org/10.17509/ijost.v6ix>
4. Iftikhar, P. M., Ali, F., Faisaluddin, M., Khayyat, A., Sa, M. D. G. De, & Rao, T. (2019). A Bibliometric Analysis of the Top 30 Most-cited Articles in Gestational Diabetes Mellitus Literature (1946-2019). *Cureus*, 11(2). <https://doi.org/10.7759/CUREUS.4131>
5. Kavya, K., Chandrashekara, M., & Harinarayana, N. S. (2020). Scientometric portrait of Prof. Badiadka Narayana. *Pearl: A Journal of Library and Information Science*, 14(4), 339–348. <https://doi.org/10.5958/0975-6922.2020.00039.X>
6. Prof. A. Parasuraman. (n.d.). Retrieved January 8, 2023, from <https://www.mica.ac.in/speakers/prof-a-parasuraman>.

अनन्य हिन्दी सेवी



डॉ. कामिल बुल्के (1909-1982)

बेल्जियम के कामिल बुल्के ने अपनी इंजीनियरिंग शिक्षा के मध्य ही संन्यास ग्रहण करने का मन बना लिया था। धर्म शिक्षा नीदरलैंड में लेकर 1935 में धर्म प्रचार हेतु भारत आये थे। वे भारत में राष्ट्रीय एकता की प्रतीक "हिन्दी" के प्रति उदासीनता एवं अंग्रेजी के प्रसार को देखकर दुःखी हुए। उन्होंने भारत की नागरिकता लेकर भारत को अपना देश व हिन्दी को अपनी भाषा माना। "रामकथा और तुलसी" तथा "हिन्दी शब्दकोष" आदि उनकी अनेक पुस्तकें हिन्दी को उनकी अमूल्य देन हैं। 1974 में पद्म भूषण से उन्हें सम्मानित किया गया। 17 अगस्त 1982 को दिल्ली में चिरस्मरणीय बुल्के का निधन हुआ और वे भारत की धरती में ही विलीन हो गये।



आदर बुल्के तुम्हें प्रणाम !
नाम प्रिय पल मोक्ष में
पू तुमका प्रिय भारत धाम । आदर
रही मातृभाषा मोक्ष की,
बोली हिन्दी लगी ललाम । आदर
इसाई संस्कार लिये भी
प्रिय तुमका श्री राम । आदर
तुलसी हित तुम्हें पगतरी
के हित देत अपना धाम । आदर
मदा महम श्रद्धा से लेगा
मेरा देश तुम्हारा नाम । आदर

- अणु

श्री तुलसी जीवके पुरवन से प्रनेह निकसल राम,
तन के लम्बा की पगतरी मेरे लन को धाम ।

GOVT. OF INDIA - RNI NO. UBBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal

ISSN 2348-2397

SPECIAL ISSUE

Shodh Sarita

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 7

• Issue 26

• April to June 2020



Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist



रहीम का नीति काव्य

□ प्रा. जमादार रुकसाना एल.*

ABSTRACT

भक्तिकाल के सुवर्ण युग का चमकता तारा है - रहीम। रहीम का जन्म सन १५५६ में 'लाहौर' में तथा मृत्यु ७२ वर्ष की अवस्था में सन १६२७ में दिल्ली में हुई है। अब्दुरहीम खानखाना मुगल सम्राट अकबर के मंत्री और सेनापति थे। यह ऐतिहासिक व्यक्तित्व तत्कालीन घटनाओं से सीधा जुड़ा रहा है। इसलिए इनका जीवनवृत्त कई ऐतिहासिक ग्रंथों में मिल जाता है। रहीम बैरम खाँ खानखाना के पुत्र थे। पिता की मृत्यु के बाद रहीम के पालन-पोषण की जिम्मेदारी स्वयं अकबर ने उठाई।

Keywords: सुवर्ण युग, भक्तिकाल, रहीम

अब्दुरहीम ने अपनी जिदगी में बड़े उतार-चढ़ाव देखे थे। कभी नवाब, सूबेदार, सेनापति, कभी कैद, कभी सम्मान तो कभी अपमान। उन्होंने निजी पीड़ा को बड़े साहस और दृढ़ता से झेला। वे गुणवान और बुद्धिमान थे। वे अरबी, तुर्की, फारसी, संस्कृत और हिंदी भाषाएँ जानते थे। अवधी, ब्रज और खड़ीबोली पर उनका असाधारण अधिकार था। फारसी और हिंदी में कविता करते थे।

अब्दुरहीम खानखाना हिंदी साहित्य में 'रहीम' नाम से प्रसिद्ध है। दोहावली नगर शोभा बरवै नायिका भेद, बरवै, श्रृंगार सोरठ, मदननाटक आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'दोहावली' में नीतिविषयक तीन सौ दोहे मिलते हैं। 'नगर शोभा' में श्रृंगार रस से परिपूर्ण एक सौ बैयालीस दोहे मिलते हैं। रीति-ग्रंथों की शैली में लिखा 'बरवै नायिका भेद' अवधी भाषा में है। इसके छंद सुगठित, लालित्य एवं कवित्वपूर्ण हैं। यह हिंदी के नायिका भेद संबंधी ग्रंथों में सबसे प्राचीन है। इसके एक सौ उन्नीस छंद ही प्राप्त हैं। 'बरवै' एक सौ पाँच छंदों की रचना है जिसमें अधिकांश श्रृंगार के तथा कुछ शांत रस के हैं। श्रृंगार सोरठ, मदननाटक इन ग्रंथों के कुछ पद ही आज उपलब्ध हैं।

रहीम बहुत बड़े दानी थे। इनकी दानशीलता लोकप्रियता और काव्य-रुझान की प्रशंसा समकालीन कवियों, शायरों और इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से की है। इनकी दानशीलता के अनेक किस्से प्रसिद्ध हैं।

रहीम लोकप्रिय कवि थे। उनकी पहुँच कबीर और तुलसीदास के समान सर्वसामान्य लोगों के हृदय तक थी। लोगों में उनकी रचनाएँ समादृत और प्रचलित रही हैं। उनकी इस लोकप्रियता का कारण यही है कि वे स्वानुभूत और वास्तविक जीवन के यथार्थ कहते लिखते रहे। उनकी कविता में मात्र कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं है। उसमें कल्पना और वास्तविकता का उचित सामंजस्य है। एक अनुभवी और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में उन्होंने जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख, मानापमान सहा था। यही अनुभव उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त हुए हैं। अपनी गहरी संवेदनशीलता के कारण उनकी उक्तियाँ सूक्ति के रूप में प्रचलित हो गयी हैं। उनके नीति-विषयक दोहे समाज में बार-बार उद्धृत किए जाते हैं।

रहीम का नीति काव्य :-

अब्दुल रहीम खानखाना की प्रमुख काव्य-सरिता सामान्यतः नीति, श्रृंगार और भक्ति की तीन धाराओं का सुंदर समागम है। यद्यपि उन्होंने ज्योतिष के योगों तथा खेलों आदि पर भी काव्य-रचना की थी किन्तु विषय-निरूपण और कवि-कर्म की दृष्टि से उक्त तीन विषय ही विशेष महत्त्व रखते हैं। इनमें भी रहीम को विशेष प्रसिद्धी नीति-काव्य के कारण प्राप्त

*हिंदी विभागाध्यक्षा, सहयोगी प्राध्यापक यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर

है। उनके नीति-काव्य का वर्णन करने से पूर्व नीति के सम्बन्ध में विचार करेंगे।

नीति का अर्थ :-

‘अमरकोश’ के अनुसार संस्कृत में ‘नय’ और ‘नीति’ शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। दोनों का उद्गम भी प्रेरणार्थक धातु ‘नी’ (णीत्र) से है। संस्कृत शब्दार्थ ‘कौस्तुभ’ में कहा गया है कि “लोक-परलोक सम्बन्धी (सफलता के) उपाय आदि जिसके द्वारा सिद्ध किये जाते हैं, वही नीति है।” (रहीम शतकत्रय-नीति श्रृंगार भक्ति-डॉ.बालकृष्ण ‘अकिंचन’ अलंकार प्रकाशन, पृ. ९८) वस्तुतः नीति को जीवनयापन का वह ढंग या रास्ता कहना चाहिए जिसे अपनाकर आदर्श सफलता प्राप्त की जा सकती है। आदर्श सफलता से तात्पर्य उस सफलता से है जो कर्तव्य-भावना, कौशल, चरित्र, अनुभव योग्यता अथवा दूरदर्शिता के बल पर किसी समाज अथवा व्यक्ति को हानि पहुँचाये बिना प्राप्त की गई हो। नीति में वे सिद्धान्त सम्मिलित रहते हैं जिनपर चलते हुए मनुष्य दूसरा को अहित किए बिना हित-साधन कर लेता है।

नीति काव्य का महत्त्व :-

नीति के कल्याणकारी एवं व्यावहारिक विषय को लेकर लिखा गया काव्य नीति-काव्य कहलाता है। नीति-काव्य सत्य सिद्धांतों पर आधारित होता है। शिव तत्त्व उसकी पहली शर्त है। कुशल कवि अपनी प्रतिभा द्वारा उसमें सुंदर तत्त्व का आयोजन ऊँचे-से-ऊँचे रूप में कर सकता है। इसलिए सत्यं-शिवं-सुंदरम् की दृष्टि से नीति-काव्य अपने आप में अद्वितीय है। केवल सौंदर्य, कल्पना और मनोरंजन को लेकर लिखा गया काव्य उतना उपादेय कभी नहीं हो सकता, जितना नीति-काव्य।

नीति काव्य का वर्गीकरण :-

नीति का क्षेत्र बहुत व्यापक है। अतः उसे अनेक प्रकारों से वर्गीकृत किया जा सकता है।

अ) देश-काल तथा स्थायित्व के आधार पर -

१. सामयिक नीति, २. शाश्वत नीति, ३. एकदेशीय नीति, ४. सार्वदेशिक नीति।

आ) सामाजिक संगठनों के आधार पर -

१. वैयक्तिक नीति, २. पारिवारिक नीति, ३. सामाजिक नीति, ४. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय नीति।

इ) विषय - व्यापारादि के आधार पर -

१. अर्थ-नीति, २. व्यापार नीति, ३. शिक्षा-नीति, ४. युद्ध नीति, ५. प्रशासन नीति।

इन भेदों के भी अनेक उपभेद किये जा सकते हैं। जैसे-पारिवारिक नीति के अनेक उपभेद इस प्रकार होंगे।

१. वय के आधार पर

२. सम्बन्धों के आधार पर

३. अधिकार के आधार पर

परिवार की अपेक्षा समाज और राष्ट्र तो और भी विशाल संस्थाएँ हैं। अतः इनकी नीतियों के असंख्य भेदोपभेद हो जायेंगे। इसी कारण शास्त्रकारों ने जीवन के चार परम पुरुषार्थ बताये थे। नीति और नीति काव्य को भी इन्हीं चार विभागों में वर्गीकृत करना योग्य है - १. धर्म-नीति, २. अर्थ-नीति, ३. कामनीति, ४. मोक्षनीति।

रहीम का नीति काव्य :-

कविता भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। भाव और अभिव्यक्ति को लेकर ही काव्य के दो पक्ष माने जाते हैं - अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष। अनुभूति पक्ष में भाव, विचार, कल्पना और रस का समावेश होता है। उच्च कोटि की कविता में चारों तत्त्वों का समुचित समन्वय आवश्यक है। मात्र भाव एक प्रलाप होगा, मात्र विचार एक उपदेश तथा मात्र कल्पना एक खोखलापन। भाव कविता की मांसलता है, विचार मेरुदण्ड, कल्पना रक्तसंचार और रस प्राण। स्वस्थ रहने के लिए सभी का विकसित होना आवश्यक है। यह बात दूसरी है कि मांसलता के अधिक होने पर शरीर अधिक आकर्षक, मेरुदण्ड की अधिक सम्पुष्टि में दीर्घजीवी तथा रक्तसंचार के अधिक सुचारु होने से फुर्तीला दिखाई देता है। प्राण की उर्जस्विता इन सब की सम्मिलित प्रक्रिया है।

नीति काव्य में तीनों पक्षों के साथ ही विचार पक्ष की प्रधानता रहती है। उसमें भावना और कल्पना का स्थान सुरक्षित रहते हुए भी विचार का प्राबल्य रहता है। विचार पक्ष जितना प्रौढ़, प्रबल तथा विस्तृत होगा, नीति काव्य का मूल्य उतना ही अधिक होगा। साथ ही उसकी अनुभूति जितनी मार्मिक और कल्पना जितनी सूक्ष्म होगी, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। अधिकांश संतों की रचनाएँ, उपदेश कृतियाँ-इसलिए बन गई हैं क्योंकि उनमें भावना की मांसलता और कल्पना की तरलता नहीं है। दूसरी ओर श्रृंगारी कविता में वासना की सड़ांध इसलिए आती है, क्योंकि वहाँ शुद्ध विचारों के स्थान नहीं है। नीति काव्य इन दोनों के बीच की अवस्था का काव्य है। कहने की आवश्यकता नहीं कि रहीम का नीति काव्य इसी प्रकार का काव्य है। उनके अनुभूति-पक्ष में भावों की मिठास, कल्पना की रंगीनी और विचारों की गहनता की

त्रिवेणी एक-साथ बहती है।

अपने जीवन के स्वानुभूत सुख-दुखों को रहीम ने अपने काव्य में सीधे-सादे शब्दों में व्यक्त किया। काव्य-कौशल की कसरत रहीम के काव्य में नहीं है। इनके काव्य में भक्ति, नीति, प्रीति और जन-व्यवहार आदि विषय होते हैं। साथ ही आत्मसम्मान, परोपकार, दया, गुणी का आदर, संयम, सहनशीलता, दुःख, निराशा, भाग्यवाद आदि पर भी विचार उनके काव्य में व्यक्त हुए हैं। इनके दोहों में जनसामान्य का दुःख-दर्द, प्यार, उदासी की झलक मिलती है। राजनीति, समाजनीति, परिवार नीति और भक्तिसंबंधी रचना भी इन्होंने की है। परंतु उनके काव्य में प्रधानता नीतिकाव्य की है। उनके दोहों में वह नीति स्पष्ट रूपसे दिखाई देती हैं।

“जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥”^२

अर्थात् रहीम कहते हैं कि, उत्तम स्वभाव वाले व्यक्ति पर दुर्जनों के संगति का कुछ असर नहीं होता। मनुष्य का मूल स्वभाव कभी नहीं बदलता। चंदन वृक्ष पर बड़े-बड़े विषैले सर्प लिपटे रहते हैं, मगर चंदन पर उनके विष का कुछ असर नहीं होता। अर्थात् अच्छाई पर बुराई का प्रभाव कभी नहीं पड़ता क्योंकि अच्छे व्यक्ति हमेशा अच्छा ही व्यवहार करते हैं, चाहे लोग उनके साथ बुरा व्यवहार क्यों न करें उसपर उसका कोई परिणाम नहीं पड़ता।

“रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून ॥”^३

रहीम अपने काव्य में दया, परोपकार, याचकता, दुःख, निराशा, आत्मसम्मान आदि विषयों को स्थान दिया है। स्वानुभूत सत्य के कारण उनका काव्य हृदयस्पर्शी बन गया है। रहीम कहते हैं - इस दुनिया में, मनुष्य के जीवन में ‘पानी’ का महत्त्व अनन्य साधारण है। दुनिया की हर चीज में जब तक पानी है, तब तक वह चीज सतेज और मूल्यवान होती है। इसचीज से ‘पानी’ उड़ जाय तो वह चीज बदसूरत, मूल्यहीन हो जायेगी। ठीक उसी तरह मनुष्य में भी जब तक ‘पानी’ (इज्जत, शक्ति, हिम्मत) होता है, तब तक समाज में उसकी कद्र होती है। मनुष्य में ये ‘पानी’ उड़ जाय तो वह आदमी समाज में मूल्यहीन हो जाता है।

मोती में जब तक ‘पानी’ (चमक) होता है, तब तक उसका मोल होता है। मोती का पानी उड़ जाये तो वह मूल्यहीन हो जाता है। लोक ऐसा ही चुना खरीदते हैं। चूने का पानी उड़

जाये तो वह मूल्यहीन हो जाता है। ऐसा चूना किसी काम का नहीं। उसी प्रकार आदमी को भी अपने भीतर के पानी को भी बचाए रखना चाहिए। एक बार मनुष्य का पानी चला गया तो वह मनुष्य निष्प्रभ हो जाता है। जब तक मनुष्य में पानी होता है, तब तक उसकी कद्र होती है, मोती, मनुष्य एवम् चूने की कीमत ‘पानी’ के बिना शून्य हो जाती है।

“बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ॥”^४

रहीम कहते हैं कि व्यक्ति को हमेशा सोच समझकर ही व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि बिना सोचे-समझे किए कार्य के लिए बाद में पछताना पड़ता है। नुकसान उठाना पड़ता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने फटे हुए दूध का उदाहरण दिया है। रहीम कहते हैं जिस प्रकार फटे दूध से लाख प्रयत्न करने के बाद भी मक्खन नहीं निकाल सकते। उसी प्रकार बिना सोचे समझे हमने किसी का दिल तोड़ दिया और बादमें, हालात अच्छे हो जाने के बाद उनमें वह मिठास, वह अपनापन, वह प्रेम नहीं होता जो पहले के संबंधों में होता था। अर्थात् हर व्यक्ति को बात बिगड़ने से पहले सोचना चाहिए।

“कहु रहिम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग ॥”^५

रहीम कहते हैं - जीवन में मित्रों का महत्त्व बहुत अधिक है। परंतु मित्र बनाते समय सोच - समझकर बनाने चाहिए। वे कहते हैं कि बेर और केला अगर दोनों साथ-साथ रहते हैं, तो इसमें केले के पेड़ का नुकसान होता है। क्योंकि बेर का पेड़ अपनी मस्ती में डोलता रहता है, परंतु उसके डोलने से केले के पेड़ के सारे पत्ते, सारा अंग फटता जाता है। उसी प्रकार समाज के, राजनीति के बेर के पेड़ जैसे दुष्ट लोग समाज में केले के पेड़ जैसे सज्जन लोगों को आनंद से झूमते-डोलते भी नहीं देखना चाहते। वे तुरंत उन सज्जनों का नुकसान करते हैं। उनके आनंद में बाधा डालते हैं। बेर के पेड़ जैसे दुष्ट स्वभाव के लोगों से समाज के सज्जन लोगों को बहुत दुःख एवं नुकसान उठाना पड़ता है।

निष्कर्ष :-

रहीम अकबरी दरबार की उपज थे। नवरत्नों में स्थान ग्रहण करने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता थी वे प्रायः सभी रहीम के व्यक्तित्व में दिखाई देते थे। रहीम जितने नीति कुशल और गंभीर थे उतने ही हँसमुख और विनोदप्रिय भी। साथही उनमें वाक्-पटुता भी दिखाई देती है - शाही स्वभाव

SPECIAL ISSUE

होने के कारण वे अपने महल में ठाठ-बाट की उन वस्तुओं को भी रखते थे जो केवल राजा के लिए ही विहित थी। किसी ने इसके बारे में राजा से चुगली की और हकीकत जानने के लिए जब वे रहीम के पास चले गए तो रहीम ने उत्तर दिया - “यह सब वस्तुएँ हुजूर के लिए हैं जिससे कि यहाँ पधारने पर आपको कष्ट न हो और आवश्यकता की सारी चीजें तैयार मिलें तथा मुझे भी किसी से याचना न करनी पड़ी।”⁵ अकबर इस वाक्पटुता से बहुत प्रभावित हुए। (रहीम रत्नावली, पृ. ११)

रहीम का काव्य सहज स्वाभाविक तथा अकृत्रिम होने के कारण मानव हृदय में सीधा पैठ करने की अद्भुत क्षमता रखता है। उन्हें कविता करने के लिए आकाश-पाताल के कुलाबे नहीं मिलाने पड़ते। वे राजप्रासादों के उपकरणों को छोड़, खेत-खलिहानों के उपकरणों से अपनी कविता का अलंकरण करते थे। नीति हो, भक्ति हो, श्रृंगार हो, या कुछ और सभी की अभिव्यक्ति वे लोकजीवन के माध्यम से करते थे। रहीम एक उच्च प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। रहीम का समूचा व्यक्तित्व विपरीत गुणों के सुंदर सामंजस्य का आदर्श था। इनके संदर्भ में आचार्य द्विवेदी का कथन है “निस्संदेह इस कवि (रहीम) का हृदय, मानवीय रस से परिपूर्ण था और अनासक्त तथा अनाविल सौंदर्य की दृष्टि से समृद्ध था। जीवन के अनेक घात-प्रतिघातों के भीतर से भी, राजकीय षडयंत्रों की चपेट में बराबर आते रहने के बाद भी, और हर प्रकार के उतार-चढ़ाव में उठते-गिरते रहने के बाद भी, जिस कवि के हृदय का माननीय रस निःशेष नहीं हुआ, उसके हृदय की अद्भुत सरसता का अनुमान सहज ही किया जा सकता है।” साहित्य में वे अपनी श्रृंगार एवं नीति सम्बन्धी कविताओं के कारण ही प्रसिद्ध हैं। ऐसी प्रतिभा के कारण ही रहीम हिंदी एवं हिंदुत्व का समर्थक यह मुसलमान कवि सर्वथा वंदनीय रहेगा।



संदर्भ ग्रंथ :

१. रहीम शतकत्रय - नीति श्रृंगार भक्ति - डॉ. बालकृष्ण ‘अकिंचन’ अलंकार प्रकाशन, पृ. १८
२. साहित्य रत्न, संपादक डॉ. सुरैय्या शेख, पृ. १२७
३. वहीं - पृ. १२७
४. मध्ययुगीन हिंदी काव्य - संपादक - राजेंद्र खैरनार, डॉ. बाबासाहेब खांडेकर
५. मध्यकालीन काव्य रत्न - पृ. ४३
६. रहीम रत्नावली - पृ. ११
७. हिंदी साहित्य, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ. २०४

APPROVED UGC CARE

ISSN - 2348 - 2397



SHODH SARITA

JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Certificate of Publication

प्रा. जमादार रुकसाना एल.

हिंदी विभागाध्यक्षा

सहयोगी प्राध्यापक

यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर

TITLE OF RESEARCH PAPER

रहीम का नीति काव्य

This is certified that your research paper has been published in
Shodh Sarita, Volume 7, Issue 26, April to June 2020

Date : 30-06-2020


SHODH SARITA
Editor in Chief

CHIEF EDITORIAL OFFICE

• 448 /119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.

Cell.: 09415578129, 07905190645

E-mail : serfoundation123@gmail.com

Website : <http://www.serresearchfoundation.in> | <http://www.serresearchfoundation.in/shodhsarita>

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 8 | Issue - 9 | June - 2019

REVIEW OF RESEARCH

International Online Multidisciplinary Journal



INDIAN DIET : A REVIEW



Harkare Gulnar Md Hanif

Physical Director.

Harkare Gulnar Md Hanif

ABSTRACT: People need a wide scope of supplements to lead a solid and dynamic life. For giving these supplements, great nourishment or legitimate admission of nourishment ...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

2019-2020



INDIAN DIET : A REVIEW

Harkare Gulnar Md Hanif
Physical Director.

ABSTRACT:

People need a wide scope of supplements to lead a solid and dynamic life. For giving these supplements, great nourishment or legitimate admission of nourishment corresponding to the body's dietary needs is required. A satisfactory, very much offset diet joined with customary physical movement is a foundation of good wellbeing. Poor sustenance can prompt diminished invulnerability, expanded helplessness to sickness, disabled physical and mental advancement, and decreased efficiency.



A sound eating regimen expended for the duration of the life-course helps in forestalling ailing health in the entirety of its structures just as wide scope of non-transmittable sicknesses (NCDs) and conditions. Yet, fast urbanization/globalization, expanded utilization of handled nourishments and changing ways of life has prompted a move in dietary examples.

Individuals are expending more nourishments high in vitality, fats, free sugars or salt/sodium, and many don't eat enough organic products, vegetables and dietary strands, for example, entire grains. In this way, these all elements are adding to an imbalanced eating. A decent and sound eating regimen will differ contingent upon the individual needs (for example age, sexual orientation, way of life, level of physical action), social setting, locally accessible nourishments and dietary traditions however the fundamental standards of what comprise a solid eating regimen continue as before.

KEYWORDS: *solid and dynamic life, non-transmittable sicknesses (NCDs) and conditions.*

INTRODUCTION

A reasonable eating routine is one which contains assortment of nourishments in such amounts and extent that the need of all supplements is enough met for looking after wellbeing, essentialness and general prosperity and makes a little arrangement for additional supplements to withstand

brief span of leanness.

The significant nourishment issues of concern are lacking/imbalanced admission of nourishments/supplements. One of the most widely recognized nourishing issues of general wellbeing significance in India are low birth weight, protein vitality lack of healthy sustenance in youngsters, interminable vitality insufficiency in grown-ups,

micronutrient hunger and diet related non-transferable infections. Wellbeing and sustenance are the most significant contributory variables for human asset improvement in the nation.

Solid dietary practices start from the get-go throughout everyday life. Ongoing confirmations show that under sustenance in utero may establish the tone for diet

related interminable infections in later life. Breastfeeding advances sound development and improves psychological improvement, and may have longer-term medical advantages, such as diminishing the danger of getting overweight or corpulent and creating NCDs further down the road.

Since a solid eating routine comprises of various types of nourishments, the accentuation has been moved from supplement direction to the nourishment based methodology. Nourishments can be arranged by the capacity as-

- **Energy rich foods** (Carbohydrates and fats)- entire grain oats, millets, vegetable oils, ghee, nuts and oilseeds and sugars.
- **Body building foods** (Proteins)- Pulses, nuts and oilseeds, milk and milk items, meat, fish, poultry.
- **Protective foods** (Vitamins and minerals) - Green verdant vegetables, different vegetables, natural products, eggs, milk and milk items and tissue nourishments.
- **Diet during different stages of Life**
- Nutrition is significant for everybody. In any case, the prerequisite is distinctive for each individual may it be a baby, developing youngster, pregnant/lactating ladies and old individuals. The eating regimen changes from individual to individual contingent on different components like age, sexual orientation, physical action, wholesome necessity during various physiological phases of the body and different elements. Body loads and statures of kids mirror their condition of physical development and improvement, while loads and statures of grown-ups speak to steps taken towards great wellbeing.

DIET FOR A GROWING CHILD:

Kids who eat a reasonable eating routine establish the framework for a sound and dynamic way of life and this further brings down the danger of long haul medical problems. Youth is the most crucial time for development just as for improvement of the psyche and to battle contaminations. In this way, it is basic that the kids get a decent portion of vitality, proteins, nutrients and minerals. It is imperative to follow that sterile practices are followed while getting ready and bolstering the correlative nourishment to the youngster; else, it may prompt looseness of the bowels. A very much figured adjusted eating regimen is essential for kids and young people to accomplish ideal development and lift their insusceptibility. Adjusted Diet, playing outside, physical exercises of youngster are basic for ideal body sythesis and to diminish the danger of diet related interminable conditions sometime down the road and to forestall any kind of nutrient insufficiency. Puberty has different elements appended to it: fast increment in tallness and weight, hormonal changes and emotional episodes.

Advancement of bone mass is continuing during this period so incorporation of dairy items (milk, cheddar, yogurt) and vegetables like spinach, broccoli and celery which are wealthy in calcium is an absolute necessity. Kids require great measure of sugars and fats for vitality. Hence, it is extremely fundamental to give them a day by day admission of vitality rich nourishments as entire grains (wheat, darker rice), nuts, vegetable oils, vegetables like potatoes, sweet potatoes, natural products like banana. If there should be an occurrence of youngsters, proteins are fundamentals for muscle building, fix and development and building antibodies. So give them diet which has meat, eggs, fish and dairy items.

A kid needs nutrients for the body to work appropriately and to support the resistant framework. An assortment of products of the soil of various hues ought to be included youngster's nourishment. Nutrient A is basic for vision and an inadequacy of the equivalent can prompt night visual impairment (trouble in finding in night). Dim green verdant vegetables, yellow, orange shaded vegetables and natural products, (for example, carrots, papaya, mangoes) are acceptable wellsprings of Vitamin

Nutrient D helps in bone development and improvement and it is fundamental for ingestion of calcium. Youngsters get a large portion of their Vitamin D from daylight and a modest quantity from some nourishment things like (fish oils, greasy fish, mushrooms, cheddar and egg yolks).

Young ladies experience more physiological changes and mental worry than young men in light of beginning of menarche (beginning of feminine cycle). Therefore, high school young ladies ought to eat diet which is plentiful in the two nutrients just as minerals to forestall iron deficiency.

Presently a days, kids are increasingly disposed towards low quality nourishment however it is imperative to persuade your children in adolescent to eat sustenance rich nourishments. Numerous youngsters have poor dietary patterns, which can prompt different long haul wellbeing complexities, for example, stoutness, coronary illness, type 2 diabetes and osteoporosis. As a parent, continue rolling out successive improvements in their menu to evade weariness of eating a similar nourishment consistently. Youthfulness is the most powerless stage for growing awful nourishment propensities just as unfortunate propensities like smoking, biting tobacco or drinking liquor. These ought to be kept away from. Notwithstanding utilization of a nutritious very much adjusted eating regimen, suitable way of life practices and association in open air exercises, for example, games/sports ought to be energized among youngsters just as youths. Ordinary physical activities increment quality and stamina, and are important for acceptable wellbeing and prosperity.

DIET FOR A GROWING CHILD:

Youngsters who eat a reasonable eating regimen establish the framework for a solid and dynamic way of life and this further brings down the danger of long haul medical problems. Youth is the most crucial time for development just as for advancement of the brain and to battle contaminations. Along these lines, it is extremely basic that the kids get a decent portion of vitality, proteins, nutrients and minerals. It is critical to follow that sterile practices are followed while getting ready and bolstering the correlative nourishment to the youngster; else, it may prompt the runs. A very much figured adjusted eating routine is essential for kids and youths to accomplish ideal development and lift their invulnerability. Adjusted Diet, playing outside, physical exercises of youngster are fundamental for ideal body creation and to lessen the danger of diet related ceaseless conditions sometime down the road and to forestall any kind of nutrient lack. Youthfulness has different elements connected to it: fast increment in stature and weight, hormonal changes and emotional episodes.

Improvement of bone mass is continuing during this period so incorporation of dairy items (milk, cheddar, yogurt) and vegetables like spinach, broccoli and celery which are wealthy in calcium is an absolute necessity. Kids require great measure of starches and fats for vitality. In this way, it is extremely fundamental to give them a day by day admission of vitality rich nourishments as entire grains (wheat, darker rice), nuts, vegetable oils, vegetables like potatoes, sweet potatoes, natural products like banana.

If there should be an occurrence of kids, proteins are fundamentals for muscle building, fix and development and building antibodies. So give them diet which has meat, eggs, fish and dairy items. A youngster needs nutrients for the body to work appropriately and to help the invulnerable framework. An assortment of products of the soil of various hues ought to be included youngster's nourishment. Nutrient A is basic for vision and an inadequacy of the equivalent can prompt night visual deficiency (trouble in finding in night). Dim green verdant vegetables, yellow, orange hued vegetables and organic products, (for example, carrots, papaya, mangoes) are acceptable wellsprings of Vitamin A.

Nutrient D helps in bone development and improvement and it is fundamental for ingestion of calcium. Kids get the greater part of their Vitamin D from daylight and a limited quantity from some nourishment things like (fish oils, greasy fish, mushrooms, cheddar and egg yolks). Adolescent young ladies experience more physiological changes and mental worry than young men as a result of beginning of menarche (beginning of feminine cycle). Therefore, high school young ladies ought to eat diet which is plentiful in the two nutrients just as minerals to forestall sickness.

Now a days, children are more inclined towards junk food but it is very important to motivate your kids in teenage to eat nutrition rich foods. Many children have poor eating habits, which can lead to various long-term health complications, such as obesity, heart disease, type 2 diabetes and osteoporosis. As a parent, keep making frequent changes in their menu to avoid boredom of eating the same food every day. Adolescence is the most vulnerable stage for developing bad food habits as well

- Salt consumption
- Whole grains
- Water and drinks
- Processed and prepared to eat nourishment
- Instant nourishments , quick nourishments, road food sources, undesirable nourishments.

Dairy Products

Fresh milk, cream and some delicate cheeses have just a short timeframe of realistic usability and lose quality quickly whenever presented to warm temperatures during capacity. These ought to be kept in fridge.

FRESH FRUIT AND VEGETABLES

- Fruit and vegetables ought to be taken care of cautiously to abstain from wounding and breaking the skin. Such harm will cause decay and spoiling.
- Most crisp organic products ought to be put away in the coolest piece of the house when space isn't accessible.
- Some natural products, for example, pineapple and bananas are chill touchy and ought not be put away in the fridge.
- To decrease withering or shrinking because of water misfortune, keep verdant and root vegetables, for example, silverbeet, broccoli, carrots and parsnips, in punctured plastic sacks, ideally in the cooler.
- By expelling verdant tops from carrots, parsnips, turnips and beetroot, their stockpiling life can be broadened such a large number of weeks or even a while in the cooler.
- Keep potatoes in a cool, dull, all around ventilated spot to abstain from greening and growing; expel from plastic sacks and spot in a solid paper pack, confine or a wire or plastic canister. Potatoes ought not be kept in the ice chest.
- Keep nectarines, peaches and plums in the fridge, except if you need to mature them.
- Tomatoes ought to be aged at room temperature, away from direct daylight. When completely ready, particularly in sweltering climate, they might be put away in the fridge for a few days.
- To decrease form development in onions, entire pumpkin, marrows and squashes, store at room temperature under dry conditions, in a net or free.

SOME COMMON INDIAN FOOD BELIEFS, FADS AND TABOOS

Nourishment propensities are framed right off the bat in adolescence, passed on from the older folks in the family and sustained to adulthood. Nourishment convictions either energize or demoralize the utilization of specific kind of nourishments. There can be impartial, innocuous or destructive practices. Sadly, the majority of the nourishment trends and biases (taboos) are related with ladies and kids, who are likewise the most defenseless against unhealthiness. Misrepresented useful or hurtful cases in regard of certain nourishments, without logical premise establish nourishment trends. Also, the conviction of warmth creating and cold actuating nourishments is broadly common. Here are a few models:

- Jaggery, sugar, groundnuts, seared nourishments, mango, bajra, jowar, maize, eggs and meat are considered as hot.
- Buttermilk, curd, milk, green gram dhal, green verdant vegetables, ragi, grain flour and apples are considered as chilly inciting nourishments.
- Papaya natural product is unequivocally suspected to prompt premature birth, however there is no logical premise.
- Vegetarianism is frequently drilled in India on strict grounds. Since nutrient B12 is available just in nourishments of creature inception, vegans ought to guarantee a satisfactory utilization of milk.
- During certain diseases like measles and looseness of the bowels, dietary limitation is rehearsed.



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: Harkare Gulnar Md Hanif. Topic:- Indian Diet : A Review The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of June 2019.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

اردو

UGC APPROVED
JOURNAL
ISSN 2278-229X

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

۲۰۱۹-۲۰

جولائی تا ستمبر ۲۰۱۹

اس شمارے کے قلم کار

شمس الرحمن فاروقی، ناصر عباس نیر، محمد انصر، فیاض رفعت

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ، ڈاکٹر جمیل قرہ، ڈاکٹر شہزاد احمد میر بانی

راجہ مہدی علی خاں، شعیب اعجاز، مصطفیٰ جمیل، سلیم انصاری

ڈاکٹر کلیم شہنا، سید اسلم صدیقی، ابرار نعیمی، طارق قرہ فریاد آفر

اقبال خورشید، جاوید انور، صدف اقبال، ابرار مجیب

باب نمبر

باب نمبر

افسانے

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام سے فرحت
بیادِ خلیل فرحت کارنجوی (مرحوم)
یو جی سی
منظور شدہ
سہ ماہی
UGC
APPROVED
امراوتی



جلد نمبر ۸ شماره نمبر ۳ امراتی، مہاراشٹر (ہند) جولائی تا ستمبر ۲۰۱۹ء

سرپرست : جناب منور پیر بھائی (پونہ)

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com Cell. 09370222321/07020484735

نائب مدیران: کلیم ضیا، احسن ایوبی

نظارہ کتابت کے لیے:
Waseem Farhat (Alig)
Post Box No.55, H. O,
AMRAVATI-444601(M.S)INDIA
صرف ڈراما لانا اور رجسٹری ڈاک کے لیے:
The Editor, URDU,
"Adabistan", Near Wahed Khan
Urdu D.Ed.College, Walgaon Road,
AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)
پاکستانی خریداروں کا صرف ڈراما لانا بھجوانے کے لیے:
بزمِ تخلیق ادب پاکستان
II-B/18، کمرشل ایریا، نزد پھرایشیا بیکری، ناظم آباد، کراچی
موبائل: 0321-8291908

مشیر
وسیم فرحت
شمارہ پڑا
۱۰۰ روپے
لائسیری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے
لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے
For Online Payments:
SEAMAHEE URDU
SBI ACCOUNT NO:
34961340420
IFS CODE: SBIN0000311
MICR CODE: 444002971

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEAMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔

مضمون نگار کے نام سے ادارہ کا متن ہو ضروری نہیں اور کسی بھی قسم کی قانونی چارہ جوئی صرف امراتی عدالت میں کی جائیگی۔

محمّد خان سے جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
4	مدیر	اداریہ
مضامین		
5	شمس الرحمن فاروقی (الہ آباد)	۱۔ مجروح سلطانپوری
11	ناصر عباس نیر (لکھنؤ)	۲۔ اختر الایمان کی نظم
25	محمد انصر (دہلی)	۳۔ اقبال کا تصور تعلیم
32	فیاض رفعت (لکھنؤ)	۴۔ راجندر سنگھ بیدی
47	ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)	۵۔ کلام اقبال میں شاہین بطور استعارہ
52	جمیل قمر (کینیڈا)	۶۔ ظفر گورکھپوری
57	شہزاد انجم برہانی (برہانپور)	۷۔ جون ایلیا کا تصور خدا
ماضی کے جھروکوں سے		
62	راجہ مہدی علی خاں	۱۔ ادیب کی محبوبہ
ہنر سے ماہتاب (بابِ نظم)		
● غنی اعجاز (مرحوم)		
64		۱۔ عکس جمیل

● مصطفیٰ جمیل (بالاپور)

66

۱۔ اپنے سائے سے

● سلیم انصاری (جبلیپور)

67

۱۔ مری نظمیں تمہاری منتظر ہیں

68

۲۔ کاذب قرار

حسام نو (بابِ غزل)..... 80 تا 84

سید اسلم صدآ آمری، ابرار نعیمی، ڈاکٹر طارق قمر، ڈاکٹر فریاد آذر

بابِ قطعات..... 74 تا 76

ڈاکٹر کلیم ضیا

حریشِ دل (بابِ افسانہ).....

76

اقبال خورشید (لاہور)

● سرد خانے کا ملازم

88

جاوید انور (کراچی)

● نارسائی

98

صدف اقبال (گیا)

● سفید اور سیاہ بالوں کا کولاژ

112

ابرار مجیب (پٹنہ)

● افواہ

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)

کلام اقبال میں 'شاہین'

بطور استعارہ

عہد اقبال میں ہندوستان پر اس زمانے کی انتہائی زیرک انگریز قوم اقتدار پذیر تھی۔ اس قوم کی ظاہری چمک دمک نے ہندوستانیوں اور خصوصاً مسلمان نوجوانوں کو مسحور و مرعوب کر دیا تھا۔ اس لئے وہ اپنے مذہب کے شاندار ماضی اور اپنے آبا کے قابل قدر کارناموں کو بھلا کر اجتماعی زندگی کی برکات کو ترک کر کے انفرادی زندگی کو اہمیت دینے لگے تھے۔ عیاشی، تن آسانی اور آرام طلبی نے غیرت، حمیت اور خودداری سب کچھ اُن سے چھین لیا تھا۔ حرام و حلال کی تمیز بھی وہ کھو بیٹھے تھے۔ شراب نوشی کرنا اور رقص و سرور کی محفلوں کو منعقد کرنا، یا ایسی محفلوں میں شریک ہونے کو انھوں نے اپنا شعار زندگی بنا لیا تھا۔ نوجوانوں کے گفتار و کردار میں انگریزوں کا سا مکرو فریب آ گیا تھا۔ مسلمان نوجوان کی اس بے راہ روی نے اقبال کو شدید رنج و غم میں مبتلا کر دیا تھا۔ وہ چاہتے تھے کہ اپنی شاعری کے ذریعہ نوجوانوں کو پھر سے مذہب کی طرف لے آئیں اور اُن میں مومن کی صفات پیدا کریں۔ انسان کی سرشت میں انحراف کے مقابلے میں انحراف کا جذبہ زیادہ فعال ہوتا ہے اس لئے اقبال کو یہ خوف لاحق تھا کہ اُن کا براہ راست مخاطب کرنا کہیں نوجوانوں کو اُن سے منحرف نہ کر دے۔ اس لئے اقبال نے پرندہ 'شاہین' کو بطور استعارہ استعمال کیا ہے اور اس کے ذریعہ اپنے پیغام کو جو اسلامی تعلیمات پر مبنی ہے نوجوانوں تک پہنچانے کی سعی کی ہے۔

اقبال نے یوں تو اپنی شاعری میں مختلف پرندوں کو بطور پیغامبر استعمال کیا ہے۔ جگنو، چیونٹی، گلہری، بکری، بلبل، عقاب، اونٹ، شیر، خچر وغیرہ۔ لیکن ان سب میں شاہین اپنے اوصاف کے سبب انھیں بے حد مرغوب و محبوب تھا۔ انھوں نے کہا ہے کہ نوجوانوں کو چاہئے کہ وہ اپنے اندر شاہین کی سی خوبیاں پیدا کریں۔ شاہین کی فطرت زاہدانہ ہے۔ وہ قناعت جرات و ہمت کا پیکر ہے۔ بلند پرواز ہے۔ ہر وقت متحرک رہتا ہے۔ غیور اور خوددار ہے۔ خود کا شکار کیا ہوا کھاتا ہے، مردہ نہیں کھاتا۔ وہ کبھی آشیانہ نہیں بناتا کیونکہ ایک مخصوص علاقے تک خود کو محدود کرنا اُس کی نہاد میں نہیں ہے۔

کلامِ اقبال میں شاہین بطور استعارہ بانگِ درا، بالِ جبریل، ضربِ کلیم اور ارمغانِ حجاز اردو کے ان چار شعری مجموعوں میں موجود ہے۔ اچھا شاعر صنائعِ معنوی کی بدولت اپنے مفہومِ مافی الضمیر کو دلکش اور مؤثر ترین پیرائے میں بیان کر سکتا ہے۔ اقبال نے بھی صنائعِ معنوی کا بر محل استعمال کر کے اپنی قادر الکلامی کے جوہر کو ہر شخص کے لوحِ قلب پر منقوش کیا ہے۔ شاہین استعارہ کا استعمال بانگِ درا، ارمغانِ حجاز اور ضربِ کلیم میں تو اقبال نے زیادہ نہیں کیا لیکن ”بالِ جبریل“ میں اس کا استعمال بکثرت کیا ہے۔

”بانگِ درا“ کی نظم ”ایک مکالمہ“ میں اقبال نے استعارہٴ بالکننا یہ استعمال کر کے شاہین کی خوبیوں کو دلکش انداز سے بیان کیا ہے۔ یہ نظم مکالمے کی شکل میں ہے۔ مرغِ سرا (معمولی پرندہ) اور مرغِ ہوا (شاہین) کے مابین بحث ہوتی ہے۔ مرغِ سرا، مرغِ ہوا سے کہتا ہے کہ میں بھی تمہاری طرح پردار، ہوا گیر اور آزاد پرندہ ہوں، مجھ میں اور تم میں کوئی فرق نہیں ہے تو تم کیوں غرور اور تکبر کرتے ہو؟ اس پر مرغِ ہوا جواب دیتا ہے کہ تو خاک نشین ہے اور تو اپنا رزق زمین پر تلاش کرتا ہے، ہماری گذرگروں پر ہے اور ہم اپنا رزق آسمان میں ڈھونڈتے ہیں۔ وہ کہتا ہے۔

واقف نہیں تو بہت مرغانِ ہوا سے
تو خاک نشین، انہیں گردوں سے سروکار
تو مرغِ سرائی، خورش از خاکِ بجوئی
مادر صد دوانہ بانجم زدہ منقار

مفہوم یہ ہے کہ دنیا میں عزت و عظمت انہیں میسر ہے جن کے عزم و حوصلے بلند ہوتے ہیں۔ قید و بند کی سزا ہر شخص کے لئے باعثِ عزت و احترام نہیں ہوتی۔ یہ سعادتِ معدودے چند عظیم المرتبت سیاسی، سماجی و مذہبی رہنماؤں اور مفکروں کو نصیب ہوتی ہے۔ اقبال نے نظم ”اسیری“ میں اس خیال کی ترجمانی یوں کی ہے۔

”شہپر زاغ و زغن۔ در بندِ قید و صید نیست
اس سعادتِ قسمتِ شہباز و شاہین کردہ اند“

زاغ و زغن کا نہ کوئی شکار کرتا ہے اور نہ انہیں قید کرتا ہے۔ یہ خوش نصیبی صرف شہباز و شاہین کے حصے میں ہے۔ زاغ و زغن استعارہٴ عام لوگوں کے لئے اور شہباز و شاہین عظیم المرتبت انسانوں کے لئے استعمال کیا گیا ہے۔ ”ارمغانِ حجاز“ کی نادر تمثیلی نظم ”ابلیس کی مجلسِ شوریٰ“ میں ابلیس کا پانچواں مشیر تیسرے کی تائید کرتا ہے اور کہتا ہے کہ ملوکیت، آمریت، فسطائیت، مزدکیت، جمہوریت و اشتراکیت وغیرہ ہماری ہی تخلیق

کردہ تحریکیں ہیں۔ لیکن یہ اشتراکیت نہ صرف دیگر تحریکوں کے لئے بلکہ ہمارے لئے بھی باعث خوف و خطر ہے، کیوں کہ اشتراکیت نے فاقہ کش مزدور کے ادراک و احساس کو بیدار کر دیا ہے اور ان کی کاپیلاٹ کردی ہے۔ اب مزدور (زاغ دشتی) کے حوصلے اور ارادے اس قدر بلند ہو گئے ہیں کہ وہ خود کو بے تاج بادشاہ (شاہین و چرغ) گمان کرنے لگا ہے۔

زاغ دشتی ہو رہا ہے ہمسر شاہین و چرغ

کتنی سرعت سے بدلتا ہے مزاج روزگار

مذکورہ بالا شعر میں شاہین و چرغ کا استعارہ بادشاہ، جاگیردار اور صنعت کار کے لئے استعمال کیا گیا

ہے لیکن کیا ان منصب داروں میں شاہین و چرغ کے اوصاف ہیں؟ یہ سوال بھی بحث کا موضوع ہے۔

بندہ مومن اور صاحب الہام کی ہم نشینی مسلمانوں کے لئے سود مند ہے، جس کی ترجمانی اقبال نے

”ضرب کلیم“ کی ایک نظم ”الہام اور آزادی“ میں کی ہے۔ جب شاہین (بندہ مومن) کی ہم نشینی مرغان سحر خیز

یعنی بلبل (عام مسلمانوں) کے فکر و عمل میں ایک انقلاب عظیم لانے کا سبب بن جاتی ہے تو غیر اللہ کا خوف ان

کے دلوں سے محو ہو جاتا ہے۔ پھر وہ گفتار کے غازی نہیں بلکہ کردار کے غازی بن جاتے ہیں۔

شاہین کی ادا ہوتی ہے بلبل میں نمودار

کس درجہ بدل جاتے ہیں مرغان سحر خیز

شاہین استعارہ ہے بندہ مومن کے لئے اور بلبل عام مسلمانوں کے لئے۔ کائنات میں ہر شے احکام الہی کی

پابند ہے۔ یہاں ہوا چلنے، شرر جلنے، چاند، سورج اور زمین اور انجم رفتار اور گردش پر مجبور ہیں۔ لیکن کائنات میں

انسان ایک ایسی ہستی ہے جو عمل کے لئے خود مختار ہے۔ انسان اگر چاہے تو اپنے سعی پیہم کے بل پر خلافت الہیہ

کے نائب کے منصب پر بھی فائز ہو سکتا ہے۔

شاہین کبھی پرواز سے تھک کر نہیں گرتا

پر دم ہے اگر تو تو نہیں خطرہ افتاد

اقبال کی شاعری میں ہمیں بعض الفاظ اور علامات بار بار نظر آتی ہیں اور شاہین بھی ان میں سے ایک

ہے۔ شاہین سے اقبال کی کیا مراد ہے؟ شاہین میں انھیں ایسی کیا خصوصیات نظر آئیں کہ انھوں نے بار بار اس

کا ذکر کیا اور خاص طور پر ہمارے نوجوانوں کو شاہین صفت دیکھنے کی تمنا کی؟ دراصل اقبال کے ہاں شاہین یا

عقاب ایک علامت اور ایک رمز ہے۔ شاہین ایک تشبیہ یا استعارہ ہے۔ لیکن یہ محض شاعرانہ تشبیہ نہیں ہے بلکہ

اقبال کے نظام فکر میں اس کی ایک خاص حیثیت ہے۔ چونکہ اقبال مسلمانوں اور بالخصوص نوجوانوں کو سخت کوشی

غیرت مندی اور خودداری کی تعلیم دیتے ہیں لہذا ان پر زور دیتے ہیں کہ اپنے اندر بلند پروازی، عالی ہمتی، بلند حوصلگی، استغنا اور بے نیازی کی صفات پیدا کریں۔ اقبال کے نزدیک شاہین ایک ایسی تشبیہ ہے جس سے یہ ساری صفات واضح ہو جاتی ہیں کیونکہ شاہین میں یہ تمام صفات موجود ہیں۔

خوش قسمتی سے اقبال نے خود ہی اپنے ایک خط میں شاہین کی علامت کی وضاحت کر دی تھی۔ یہ خط مولوی ظفر احمد صدیقی کے نام ہے اور شیخ عطاء اللہ (مختار مسعود کے والد) کے مرتبہ مجموعہ مکاتیب اقبال میں موجود ہے جو ”اقبال نامہ“ کے عنوان سے شائع ہوا تھا۔ یہاں شاہین کی وضاحت اقبال کے الفاظ میں لفظ باخظ پیش ہے:

”شاہین کی تشبیہ محض شاعرانہ تشبیہ نہیں، اس جانور میں اسلامی فقر کے تمام خصوصیات پائے جاتے ہیں۔ (۱) خوددار اور غیرت مند ہے کہ اور کے ہاتھ کا مارا ہوا شکار نہیں کھاتا۔ (۲) بے تعلق ہے کہ آشیانہ نہیں بناتا۔ (۳) بلند پرواز ہے۔ (۴) خلوت پسند ہے۔ (۵) تیز نگاہ ہے۔“ (اقبال اکیڈمی، لاہور، طبع نو، ۲۰۰۵ء، ص ۱۹۳)۔

یہاں فقر سے اقبال کی مراد غربت اور بے مائیگی یا ترک دنیا نہیں ہے بلکہ وہ اس استغنا اور بے نیازی پر زور دیتے ہیں جس کے سبب دل سے دنیا کی حرص و طمع نکل جاتی ہے اور اہل اقتدار کے حشم و جاہ سے بے نیازی پیدا ہوتی ہے اور اسی بے خوفی اور بے نیازی سے بلند تر منازل کا حصول ممکن ہوتا ہے۔ اقبال کی یہ شدید خواہش تھی کہ مسلمان نوجوان شاہین کی طرح بنا تھکے مسلسل صراطِ مستقیم پر گامزن رہیں۔ تو شاہین کی طرح ان کی خودی بھی قوی ہو جائے گی اور پھر انہیں زوال کا خوف ہر اسماں نہ کرے گا۔ استعارہ شاہین کلام اقبال کے چرخِ اخضر کا بدر کمال ہے۔ ذیل میں چند اشعار جو شاہین کے استعارے سے مزین ہیں پیش ہیں۔

گزر اوقات کر لیتا ہے یہ کوہ و بیاباں میں
کہ شاہین کے لیے ذلت ہے کار آشیاں بندی
شکایت ہے مجھے یا رب! خداوندانِ مکتب سے
سبق شاہین بچوں کو دے رہے ہیں خاکبازی کا
اے جانِ پُر نہیں ہے ممکن
شاہین سے تدریج کی غلامی
معلوم نہیں ہے یہ خوشامد کہ حقیق

کہہ دے کوئی اُلو کو اگر رات کا شہباز
 گرما دے غلاموں کو لہو سوزِ یقیں سے
 کھشکِ فر و مایہ کو شاہیں سے لڑاؤں
 ہوئی نہ زاغ میں پیدا بلند پروازی
 خراب کر گئی شاہیں بچے کو صحبت زاغ
 عقابی روح جب بیدار ہوتی ہے جوانوں میں
 نظر آتی ہے اُن کو اپنی منزل آسمانوں میں
 نہیں تیرا نشین قصر سلطانی کے گنبد پر
 تو شاہیں ہے بسیرا کر پہاڑوں کی چٹانوں پر
 پرواز ہے دونوں کا اسی ایک فضا میں
 کرگس کا جہاں اور ہے شاہیں کا جہاں اور
 جوانوں کو میری آہ سحر دے
 پھر ان شاہیں بچوں کو بال و پر دے

اردو کے علاوہ اقبال نے فارسی شاعری میں بھی شاہین کے استعارے کو استعمال کیا ہے۔ پیام
 مشرق میں تو ”شاہین و مائی“ کے عنوان سے شاہین پر ایک مکمل نظم ہے اور اسرارِ خودی میں مثنوی ”در حقیقت
 شعر و اصلاح ادبیات اسلامیہ“ میں شاہین کا ذکر ہے۔

مولانا اشعار کا مجموعی مفہوم یہ ہے کہ جو جوان مسلمان اور ملت اسلامیہ ان نکات پر صرف نظر کریں کہ
 دنیا دار العمل ہے۔ اپنی شباب کے عہد زریں کو فضول کے مشغولوں میں تباہ نہ کریں۔ دنیوی جاہ و حشمت کے مقابلے
 میں احکامِ الہی کی تعمیل کو فوقیت دیں۔ خود کی حقیقت پر غور و فکر کریں کہ خدائے تعالیٰ نے اُن کی تولیدِ شہنشاہی کے لئے
 کی ہے نہ کہ گدائی کے لئے۔ سخت کوشی، بلندیِ فکر اور رزقِ حلال کے لئے کوشش جیسی صفات کو خود میں پیدا کریں۔
 رنگ و نور کی محفلوں میں جانے سے پرہیز کریں۔ آرائشِ جسمانی کی بجائے شجاعت، طاقتِ ایمانی، خودداری، دینی و
 دنیوی علوم پر دسترس جیسے باطنی اوصاف سے اپنی شخصیت کو خوبصورت بنائیں۔ کمزور ہونے کے باوجود بھی پست
 ہمت نہ ہوتے ہوئے اپنے سے زیادہ طاقتور کے مقابلے کے لئے تیار رہیں کیوں کہ فتح و شکست تو نصیبوں سے ملتی
 ہے۔ بیکار لوگوں کی ہم نشینی سے پرہیز کریں۔ کیونکہ ایسے بے عمل اشخاص کی صحبت ان پر برا اثر ڈالے گی۔ ناکامی
 سے خوف نہ کھائیں، محکم یقیں کے ساتھ پیہم عمل کر کے کامیابی کو حاصل کریں۔ ☆☆☆

2019-2020

اردو

UGC APPROVED
JOURNAL
ISSN 2278-229X

مدیر
اسیمزمت (ایب)

جنوری تا مارچ ۲۰۲۰

اس شمارے کے قلم کار

باب شعر
شمس الرحمن فاروقی، ستیہ پال، نند، اسیم کاویانی، ڈاکٹر فرزانہ امیم شیخ
ڈاکٹر ولاء جمال العسلی، شاہد لطیف، سرور عالم راز مرور

باب نظم
عبدالاحد سار، ضیا فاروقی، کلیم ضیا
عبداللہ جاوید، سلیم انصاری، توقیر زیدی

افسانے
راجندر سنگھ بیدی، شہناز خانم عابدی
سلام بن رزاق، اسلم جمشید پوری

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام ہے فرحت
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے

بیادِ خلیل فرحت کارنجوی (مرحوم)

UGC
APPROVED



سہ ماہی

یو. جی. سی
منظور شدہ

امراوٹی

جنوری تا مارچ ۲۰۲۰ء

امراوٹی، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۱

جلد نمبر ۹

سرپرست : جناب منور پیر بھائی (پونہ)

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com Cell: 09370222321

نائب مدیران: کلیم ضیا، احسن ایوبی

خط و کتابت کے لیے: Waseem Farhat (Alig) Post Box No.55, H. O, AMRAVATI-444601(M.S)INDIA صرف ذر سالانہ اور رجسٹری ڈاک کے لیے: The Editor, URDU, "Adabistan", Near Wahed Khan Urdu Ed. College, Walgaon Road, AMRAVATI-444601, Maharashtra (India) پاکستانی خریداروں کا صرف ذر سالانہ بھجوانے کیلئے: بزمِ تخلیقِ ادب پاکستان II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایڈیا بیگری، ناظم آباد، کراچی موبائل: 0321-8291908	منشی وسیم فرحت شمارہ ہذا ۱۰۰ روپے لائبریری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے For Online Payments: SEAMAHEE URDU SBI ACCOUNT NO: 34961340420 IFS CODE: SBIN0000311 MICR CODE: 444002971
---	---

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEAMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔
مضمون نگار کی رائے سے ادارہ کا متفق ہونا ضروری نہیں اور کسی بھی قسم کی قانونی پارہ ہوئی صرف امراوٹی عمارت میں ہی کی جائے گی۔

Scanned with CamScanner

ختم خانہ جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
4	مدیر	اداریہ
		مضامین
5	شمس الرحمن فاروقی (الہ آباد)	۱۔ عرفان صدیقی کی غزل
11	ستیہ پال آنند (امریکہ)	۲۔ جدیدیت کی افراتفری
13	اسیم کاویانی (بمبئی)	۳۔ مجتبیٰ حسین کی خاکہ نگاری
31	ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)	۴۔ ساحر اور ترقی پسند تحریک
35	ڈاکٹر ولادیمیر جلال العسلی (مصر)	۵۔ تمدن مصر
42	سرور عالم راز سرور (امریکہ)	۶۔ سیماپ کی بیاض
		ماضی کے جھروکوں سے
54	مجتبیٰ حسین (حیدرآباد)	۱۔ ظ۔ انصاری
		گوشہء عبدالاحد ساز
58	ادارہ	۱۔ ارتحال ساز

- 59 ۲۔ بستی کتنی دور بسالی و سیم فرحت (علیگ)
- 60 ۳۔ خراج عقیدت ڈاکٹر کلیم ضیا (بہمنی)
- 61 ۴۔ شاعر تہذیبِ اردو: ساز شاہد لطیف (بہمنی)
- 67 ۵۔ انتخابِ ساز عبدالاحد ساز

بنتِ ماہتاب (بابِ نظم)

● ضیاءِ روقی (بھوپال)

73 ۱۔ خوف

● سلیم انصاری (جبل پور)

74 ۱۔ زندگی سے انحراف کی نظم

75 ۲۔ ایک غیر ضروری نظم

● توقیر زیدی (الہ آباد)

76 ۱۔ بیٹا (اپنے بیٹے کی وفات پر کہا گیا مرثیہ)

۷۹ تا ۸۱..... حجام نو (بابِ غزل)

عبداللہ جاوید (کینیڈا)

..... حدیثِ دل (بابِ افسانہ)

82 ● کوارٹین! راجندر سنگھ بیدی

91 ● کھویا ہوا آدمی شہناز خانم عابدی (کینیڈا)

97 ● دہشت سلام بن رزاق (بہمنی)

99 ● اسٹنٹ اسلم جمشید پوری (میرٹھ)

ساحر لدھیانوی اور ترقی پسند تحریک

ملوکیت، فسطائیت، آمریت اور نوآبادیاتی نظام کو نیست و نابود کرنے کے لئے ایک عالمگیر تحریک چلائی گئی تھی جسے ترقی پسند تحریک سے موسوم کیا جاتا ہے۔ ترقی پسند تحریک نے معاشرے کے جن مسائل کے خلاف آواز اٹھائی اُس کے ابتدائی نقوش عہد سربید کے ادب میں بھی دکھائی دیتے ہیں اور اقبال کے کلام میں بھی۔ فرق صرف یہ ہے کہ ان مسائل کو انھوں نے اسلامی تعلیمات کی روشنی میں بیان کیا ہے۔

ساحر لدھیانوی کے کلام میں بھی ترقی پسند تحریک کے اصولوں کی ترجمانی ہوتی ہے۔ ساحر کا دور ایک ایسا پُر آشوب دور رہا ہے جہاں ایک طرف برطانوی استعمار نے غریب ہندوستانیوں کو اپنے جبر و ظلم کا ہدف بنایا ہوا تھا اور دوسری طرف حکومت کا نظم و نسق امن و آتشی کے ساتھ چلانے کے لئے جاگیرداروں اور زمینداروں کی پشت پناہی کر رہا تھا اور نقل و وظائف کی حشیش پلا کر عیش و عشرت اور غفلت کے نرم بستر پر تھپک تھپک کر سلا رہا تھا تاکہ یہ طبقہ اُن کے انتظامی و انصرامی امور میں مداخلت نہ کرے۔ اعلیٰ عہدیدار دین سے بیگانہ انگریزوں کی نقالی میں مت تھے۔ جاگیردار اول درجے کے ضمیر فروش تھے، کسانوں کا استحصال کرتے تھے اور شب و روز تعیش و شوق خانہ خراب میں مستغرق رہتے تھے۔ تیسرا ساحر کے اپنے خانگی حالات تھے۔ اُن کے والد جاگیردار چودھری فضل محمد اُن کی والدہ جو پسماندہ طبقے سے تعلق رکھتی تھیں انھیں بحیثیت بیوی کے اپنے طبقے میں متعارف کرانے کے لئے تیار نہ تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ساحر کی والدہ نے عدالت سے رجوع کیا اور خلع لے لی۔ جس کا خمیازہ ساحر کو ایک طویل عرصے تک بھگتنا پڑا۔ جاگیردار خاندان کے اکلوتے چشم و چراغ ہونے کے باوجود بھی کسمپرسی و خوف و ہراس میں زندگی گذارنی پڑی۔ جب ساحر نے شاعری کرنی شروع کی تو اُن کے والد بے حد خوش ہوئے۔ لیکن جب ساحر جاگیرداروں اور امیروں کی مخالفت اور سماج کے کچلے ہوئے مظلوم طبقے کی حمایت میں شاعری کرنے لگے تو ساحر کے والد نے کہا کہ :

”اے خدا! تو نے مجھے یہ کیسی اولاد دی ہے جو اپنے باپ ہی کو ڈوبانا چاہتی ہے۔“

اپنی نظموں: کسی کو اداس دیکھ کر، گریز، مجھے سوچنے دو، جاگیر اور آج کل وغیرہ میں ساحر نے اپنے

بچپن کے ذہنی انتشار اور تلخ تجربات کا اور ہندوستانی معاشرے کے دو طبقوں کے طرز زندگی میں پائے جانے والے تفاوت کا مقابلہ و موازنہ کیا ہے۔ ایک طبقہ جاگیردار، زمیندار اور امراء کا ہے، دوسرا طبقہ مفلوک الحال کسان اور مزدوروں کا ہے۔ طبقہ اولیٰ دولت مند ہے، حاکم ہے، ظالم ہے۔ طبقہ ثانی محکوم ہے، مظلوم ہے، مفلس ہے۔ طبقہ اولیٰ عالیشان، خوبصورت مکانوں میں رہتا ہے، مرغن غذاؤں سے شکم سیر ہوتا ہے، ہر فکر سے آزاد عیش و طرب کی محفلوں کے مزے لوٹتا ہے اور اس طبقے کے بچے عیش و آرام کے ہنڈولوں میں جھولتے ہیں۔ طبقہ ثانی تنگ، تیرہ و تار یک جھونپڑوں میں زندگی بسر کرتا ہے۔ مرغن غذاؤں سے سیراب ہونا تو درکنار سادہ غذا بھی اُسے پیٹ بھر کر میسر نہیں ہوتی۔ اس طبقے کے افراد اپنے اہل خانہ سے پشیمان اور شرمسار رہتے ہیں کہ وہ اُن کی بنیادی ضرورتوں کو بھی پورا نہیں کر پاتے اور غذائیت سے بھرپور پیٹ بھر کھانا نہ ملنے کے سبب اُن کے بچے بن کھلے اس دار فانی سے رخصت ہوتے ہیں۔ جو زندہ رہتے ہیں وہ در یوزہ گری کرتے ہیں، جو کسان اور مزدور جاگیرداروں کی ظلم و زیادتی کے خلاف احتجاج کرتے ہیں، بغاوت پر اتر آتے ہیں۔ اُن کی اس بغاوت کا سبب کرنے کے لئے جاگیردار انھیں وہ عبرت ناک اور اذیت ناک سزائیں دیتے ہیں کہ شنیدہ و دیدہ افراد پر ہیبت طاری ہو جاتی ہے۔ درج ذیل اشعار ان نکات کی وضاحت کرتے ہیں۔

ہر ایک گھر میں ہے افلاس اور بھوک کا شور

(نظم: کسی کو اُداس دیکھ کر)

ہر ایک سمت یہ انسانیت کی آہ و بکا

پھر ایک تیرہ و تار یک جھونپڑی کے تلے

(گریز)

سکتے بچے پہ بیوہ کی آنکھ بھر آئی

لبہا تے ہوئے کھیتوں پہ جوانی کا سماں

(مجھے سوچنے دو)

اور دہقان کے جھپیر میں نہ بتی نہ دھواں

پھر کسانوں کے جمع پہ گن مشینوں سے

(گریز)

حقوق یافتہ طبقے نے آگ برسائی

اجنبی محافظ، یہ کس کا لہو ہے اور مادام ان نظموں میں ساحر نے انگریزوں کے ہندوستانیوں پر کئے

جانے والے مظالم کو موضوع بنایا ہے۔ نظم ”اجنبی محافظ“ میں یورپ کے اڈتے ہوئے خطرات کا سامنا کرنے

کے لئے انگریزوں نے کرایے کے محافظ منگوائے تھے جن کی اجرت ہندوستانیوں کے خون پسینے کی کمائی تھی۔

اس اجرت کا استعمال وہ اُن ہی کی دوشیزاؤں کو خریدنے کے لئے کر رہے تھے۔ یہ انگریز جانوروں سے تو

احسن سلوک کرتے تھے لیکن انسانوں کی اُن کے نظر میں کوئی وقعت نہیں تھی۔

نظم ”یہ کس کا لہو ہے“ میں جہازیوں کے بغاوت کے واقعہ کو موضوع بنایا ہے۔ اُن کے بغاوت کرنے پر انگریز آقا کے حکم پر خود غرض، بے ضمیر ہندوستانیوں نے اپنے ہی ہم وطنوں کو موت گھاٹ اتار دیا۔ اس نظم و بربریت پر رہنمائے قوم نے کوئی عملی قدم نہ اٹھایا۔ یہ بات سائر کو بڑی ناگوار گذری تھی۔

نظم ”مادام“ میں سائر نے اپنے آپ کو یعنی ہندوستانیوں کو وحشی اور غیر مہذب کہہ کر انگریزوں پر طنز کیا ہے اور کہا ہے کہ تہذیب و تمدن، علم و فن اُس قوم کی میراث ہوتے ہیں جس کے ملک میں امن و آتش ہوتی ہے اور دولت کی افراط ہوتی ہے اور وہ ملک آزاد ہوتا ہے۔

ہندوستانی معاشرے میں خواتین کے جملہ حقوق مثلاً تعلیم، شادی وغیرہ مردوں کے نام کر دیئے گئے ہیں۔ اس لئے ایسے معاشرے میں عورت کا محبت کرنا بہت بڑا جرم سمجھا جاتا ہے۔ مشرق میں یوں بھی عشق کا انجام ناکامی ہی ہوتا ہے۔ شکست، کسی کو اداس دیکھ کر، سوچتا ہوں، یکسوئی اور پرچھائیاں وغیرہ نظمیں اس بات کا واضح ثبوت ہیں۔

جب تمہیں مجھ سے زیادہ ہے زمانے کا خیال
پھر میری یاد میں یوں عشق بہاتی کیوں ہو
مجھے تمہاری جدائی کا کوئی رنج نہیں
میرے خیال کی دنیا میں میرے پاس ہوتم

(نظم: یکسوئی)

(نظم: کسی کو اداس دیکھ کر)

جاگیر دارانہ نظام ہو یا عہد ملوکیت دونوں نظاموں میں معاشرے میں عورت کا کوئی مقام و مرتبہ نہ تھا۔ بارسوخ ہو یا بے رسوخ شخص ہو، ہر کوئی ایک وحشی درندے کی طرح اُس پر جھپٹ کر اُسے اپنی ہوس کا نشانہ بنانا چاہتا تھا۔ میرے گیت، چکلے، گریز اور جاگیر اس موضوع پر بہترین نظمیں ہیں۔

نظم ”چکلے“ میں سائر نے طوائف کے کوٹھے کی جو لفظی تصویر کھینچی ہے وہ شاعرانہ مصوری کا شاہکار ہے۔ کوٹھے پر کوئی عورت اپنی خوشی سے نہیں آتی بلکہ حالات اُسے کوٹھے کی زینت بناتے ہیں۔ یہاں آئی ہوئی ہر عورت باہر نکلنا چاہتی ہے اور ایک باعزت زندگی گزارنا چاہتی ہے لیکن معاشرہ نہ اُسے وہاں سے نکلنے دیتا ہے اور نہ باعزت زندگی گزارنے دیتا ہے۔ سائر لدھیانوی نے ذیل کے اشعار میں عورت کی بے بسی کو اس طرح پیش کیا ہے۔

یشودھا کی ہم جنس رادھا کی بیٹی

مدد چاہتی ہے یہ حوا کی بیٹی

ثنا خواں تقدس مشرق کہاں ہیں

پیہمیر کی امت زلیخا کی بیٹی

علامہ اقبال کی نظموں کی طرح سائر کی نظموں کے عنوان کا بھی موضوع سے کوئی تعلق نہیں ہے۔ مثلاً

تاج محل کے عنوان کو پڑھ کر یوں محسوس ہوتا ہے کہ دیگر شعراء کی طرح ساحر نے بھی اپنی نظم میں تاج محل کی رعنائی صناعی و خوبصورتی کی اور اس کے اطراف و اکناف کی تعریف ہی کی ہوگی۔ قاری کا یہ گمان صحیح ہے لیکن ساحر نے تعریف شہنشاہ کی نہیں بلکہ تاج محل کے درودیوار اور جمنائے کنارے کی ہے اور بادشاہ پر تو انھوں نے طنز کے تیر ہی برسائے ہیں کہ بادشاہ خیانت گر ہے اور جس نے اپنی چیتھی بیگم کی آخری خواہش کو عملی جامہ پہنانے کے لئے عوام کی دولت کا ناجائز استعمال کر کے ایک حسین عمارت کو تعمیر کیا۔ بند ملاحظہ فرمائیں۔

یہ چمن زار یہ جمنائے کنارہ یہ محل
یہ منقش درودیوار یہ محراب یہ طاق

ایک شہنشاہ نے دولت کا سہارا لے کر
ہم غریبوں کی محبت کا اڑایا ہے مذاق
نظم ”نور جہاں کے مزار پر“ میں ساحر نے جہانگیر پر یہ الزام عائد کیا تھا کہ جہانگیر نے شیرانگن کو قتل کروا کر نور جہاں کو اپنی زوجیت میں لے لیا۔ عہد مغلیہ میں ایک قانون تھا کہ اگر بادشاہ کا دل اپنی سلطنت کی کسی شادی شدہ خاتون پر آئے تو خاتون کے شوہر کے لئے لازمی تھا کہ وہ اپنی اہلیہ کو طلاق دے۔ اس قانون کے ہوتے جہانگیر کو کیا پڑی تھی کہ وہ شیرانگن کو قتل کروائے۔

نظم کے بند میں جہاں ساحر نے نور جہاں اور جہانگیر کا ذکر کیا ہے وہیں انھوں نے جمہوری نظام کی مدح سرائی کی ہے اور ملوکیت کی مذمت۔ اُن کا کہنا ہے کہ جمہوری نظام میں عوام کو اپنا رہنما منتخب کرنے کا اختیار ہوتا ہے چونکہ مقتدر عوام کا منتخب کردہ ہوتا ہے۔ اس لئے وہ ان کے ساتھ حسن سلوک کرے گا لیکن یہ ساحر کا خیال خام ہے ملوکیت میں تو فرد شخص واحد کا غلام ہوتا ہے لیکن جمہوریت میں اسے کئی معبودوں کے سامنے سر تسلیم خم کرنا پڑتا ہے۔ ممکن ہے کہ درج ذیل بند میں ساحر نے لفظ ہاتھ اور زنجیر کا استعمال بطور استعارہ کے کیا ہو۔ ہاتھ جمہوریت کے لئے اور زنجیر شاہی حکومت کے لئے۔ بند ملاحظہ فرمائیں۔

تو میری جان مجھے حیرت و حسرت سے نہ دیکھ
ہم میں کوئی بھی جہاں نور و جہاں گیر نہیں

تو مجھے چھوڑ کے ٹھکرا کے بھی جاسکتی ہے
تیرے ہاتھوں میں میرے ہاتھ ہیں زنجیر نہیں

غرض ساحر نے اپنے کلام کے ذریعہ ترقی پسند تحریک کے اصولوں کی تبلیغ کی۔ ساحر کی شاعرانہ عظمت و لیاقت کو دیکھتے ہوئے حکومت نے انھیں مختلف انعامات و اعزازات سے نوازا ہے۔ ساحر بیرون ملک میں بھی شہرت رکھتے تھے جس کا واضح ثبوت یہ ہے کہ ۱۹۷۵ء میں کارلو کو پولانا کی امریکی نوجوان نے ”اردو شاعری میں ترقی پسند تحریک“ کے عنوان سے پانچ ہندوستانی و پاکستانی شعراء پر ایک مقالہ رقم کیا تھا۔ اُن پانچ شاعروں میں ساحر بھی ایک ہیں۔ اس مقالے پر شکاگو یونیورسٹی نے اُس نوجوان کو پی ایچ ڈی کی ڈگری تفویض کی تھی۔ ☆☆☆

ISSN: 2249-894X

REVIEW OF RESEARCH



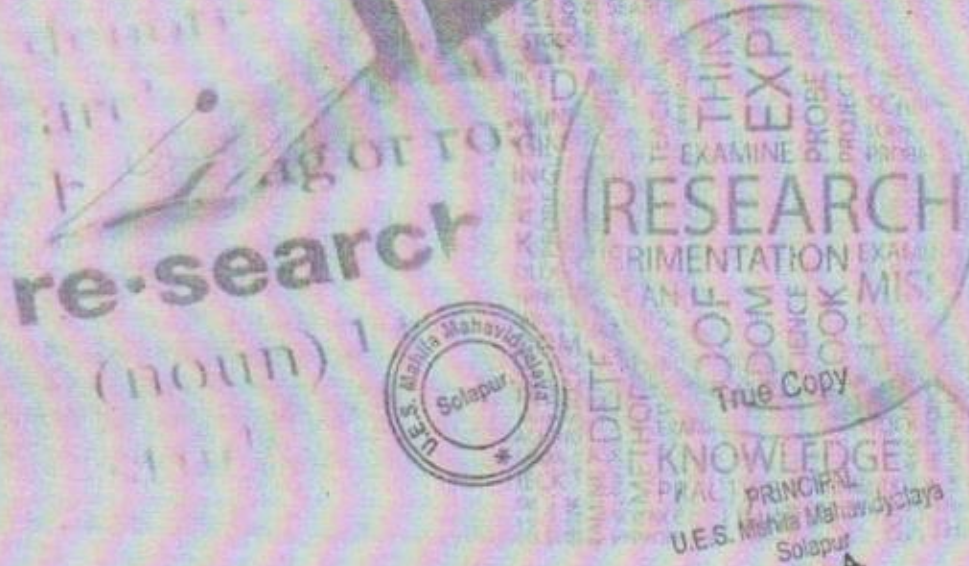
International Online Multidisciplinary Journal

Journal No.: 48514

Volume - 8 | Issue - 9 | June - 2019

Impact Factor : 5.7631 (UIF)

IMMAMUL HIND MAULANA ABUKALAM AZAD



Dr. Shaikh Maimuna A.

Asso - Professor , U. E. S. Mahila Mahavidyalaya Solapur.

Abstract : Maulana Azad Barsagir ki wo abkari shakhsyat hai jin par har Hindustani ko naaz hai wo nabagiya roozgar the unhone jiss maidan me kadam rakha waha appni innfaradiyat ka



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019



امام الہند مولانا ابوالکلام آزاد

سوسمی اینٹ پروفیسر ڈاکٹر سید مخدومہ امینہ بنت
یو ای ایس میڈیا میلوڈیو ایبہ ، سولاپور

مولانا ابوالکلام آزاد کا نام آئے ہی زبان پر مرزا غالب کا وہی شعر فوراً یاد آجاتا ہے۔

زبان پر بلر خدا یہ کس کا نام آیا

کہ میرے نطق نے تو سے میری زبان کے لیے

مولانا ابوالکلام آزاد پر صفیر کی وہ عبقری شخصیت ہیں جن پر ہندوستانی کو نثار ہے وہ نابغہ زندگی روزگار تھے انہوں نے جس میدان میں قدم رکھا وہاں اپنی انفرادیت کا سکہ بٹھا دیا۔ مولانا آزاد ذات میں ایک لاجپن تھے وہ بیک وقت منظم بیان مقرر، مفسر قرآن بیباک صحافی، مفکر قوم، خطیب، نقشا پرداز اور شاعر ہونے کے ساتھ ساتھ ایک سے محب وطن مجاہد آزادی اور ایک بیباک سیاست دان بھی تھے۔ انہوں نے اپنی غیر معمولی صلاحیتوں اور ذہانت سے دینی، علمی، ادبی، ثقافتی، سوسمی اور سماجی شعبہ بچائے جات میں اپنے ان مٹ نکوش قہت کئے جن کی نظیر مفقود ہے اس کے علاوہ وہ اپنے عہد کی بھین و آواز بھی تھے۔

مولانا ابوالکلام آزاد کی ۱۱ نومبر ۱۸۸۸ء کو مکہ معظمہ میں ولادت ہوئی۔ ان کا پورا نام محی الدین تھا۔ ان کے والد کا نام مولانا خیر الدین تھا وہ اپنے وقت کے ممتاز و جدید عالم دین تھے ان کی عظمت و فنسلیت اور رسدو پدایت کا چرچا بر سوا تھا ان کے مداح و مستفید ہندوستان کے علاوہ عرب دنیا میں پھیلے ہوئے تھے ایسے خالص مذہبی و عربی نسل گھرانے میں مولانا آزاد کی پرورش ہوئی۔ ان کی ابتدائی تعلیم مروجہ زمانے کے مطابق گھر پر ہی ہوئی۔ ۱۷ سال کی عمر میں مولانا آزاد نے جامعہ اطہر سے عربی، فارسی، ریاضی اور فلکیت میں تعلیم حاصل کی۔ وہ بچپن ہی سے محقق و ذہین طالب علم تھے۔ عربی زبان پر انہیں کافی مہارت حاصل تھی وہ مذہبی و دینی گھرانے کے چشم چراغ تھے مولانا آزاد اگر چاہتے تو اپنے والد محترم کے جانشین ہو سکتے تھے مگر انہوں نے ایسا نہیں کیا اپنے خاندانہ ماحول اور خاندان کی مروجہ پابندیوں سے رشتہ منقطع کر کے علیحدہ راستہ نکال کر تادم حیلت کا ریندر ہے۔

مولانا آزاد بوش سنبھالتے ہی ملک کے سوسمی حالات کا مشاہدہ کیا۔ ایک طرف ہندوستانی مسلمانوں کو سر سپرد اور علی گڑھ تحریک اور ان کے خیالات و افکار کے زیر اثر پایا تو دوسری طرف مسلمان ہند کو تحریک آزادی کے حصول سے بڑے اور انہیں انگریزی حکومت کے قریب دیکھا اس عمل سے مولانا آزاد نے مستقبل میں جرم خطرہ محسوس کیا۔ مولانا آزاد ایک دور اندیش انسان تھے۔ انہیں یقین ہو چلا تھا کہ اب ہندوستان میں مسلمانوں کا اقتدار بحال ہونا ممکن نہیں اور نہ کوئی مسلمان ہند کی رہنمائی کرے والا ہے۔ ایسے اضطراب آمیز اور نازک حالات میں مولانا آزاد نے قوم کی بچکولے کھاتے ہوئے سفرے کو سہرا دیا اور مسلمان ہند کو وقت اور حالات کے سانچے میں ڈھال کر انہیں خواب غفلت سے بیدار کرانے



کی عرض سے وہ کمر بستہ ہو کر میدان کا رزار سیاست میں قدم رکھا۔ انہوں نے اپنی حکمت عملی سے ملک میں متحدہ قومیت کا پرچم بلند کیا۔

۱۹۰۸ء میں مولانا آزاد نے مسلم ممالک کا دورہ کیا وہاں انہوں نے جنوچہ آزادی کی تڑپ اور حریت پسندی کے جذبے کا بخور مشاہدہ کر کے تازہ دم ہو کر اپنے وطن لوٹ آئے اور وہ وہاں کے مسلمانوں کو جدید تقاضوں سے واقف کروایا۔ انہوں نے اپنی اولاد عوام تک پہنچانے اور ملک میں ہندو مسلم اتحاد رتقہ کے تہذیبی متن کو کامیاب بنانے کے مقصد کے تحت پیشہ صحافت سے وابستہ ہوئے۔ چھوٹی سی عمر میں انہوں نے اپنی صحافتی سفر کا آغاز کیا۔ ۱۹۰۰ء ہفت روزہ ”المصباح“ کا اجراء کیا پھر پندرہ سال کی عمر میں ہفت روزہ ”اسمان الصدق“ بھی جاری کیا ان اخبارات کے بعد ”وکیل“، ”تحفہ محمد“، اور ”خندنگ نظر“ ہفت روزہ اخبارات بھی منظر عام پر آئے۔ یہ جراند آسمان صحافت پر نمودار ہو کر غروب ہو گئے۔ علاوہ ازیں مولانا آزاد نے ۱۹۱۲ء کلکتہ سے شہکار ہفت روزہ ”الہلال“ شائع کیا یہ اخبار سرف ایک سیاسی ترجمان ہی نہیں تھا بلکہ علمی و ادبی نوعیت کا پرچم تھا۔ اس اخبار کے اجراء کا عین مقصد ہندوستان میں اتحاد، یکجہتی اور سیاسی شعور کو اجاگر کر کے انہیں وقت کے تقاضوں سے روشناس کرنا تھا۔ اخبار ”الہلال“ انگریزی حکومت کی آنکھوں میں کٹنا بنا ہوا تھا اسے مخالف حکومت کی سرگرمیوں کی پلانت میں ضبط کر لیا گیا۔ مولانا آزاد ”الہلال“ بند ہونے کے بعد خاموش نہیں بیٹھے وہ لجتہاد پسند تھے۔ ۱۹۱۴ء میں ہفت روزہ ”البلاغ“ کا اجراء عمل میں لایا۔

مولانا ابوالکلام آزاد ایک ممتاز صحافی ہونے کے علاوہ ایک نامور ادیب، افتخار پرداز و منفرد قلم کار بھی تھے ان کے ظم کی سحری سے نکلے ہوئے جواہر دیروں میں ترجمان القرآن ”قول فیصل“ تنکرہ، کاروان خیال مکتب کا مجموعہ، غیر خاطر اور مقالات آزاد منظر عام پر آکر مقبولیت کی سند حاصل کر چکے ہیں متکرہ تصانیف اردو ادب کا گراں قدر سرمایہ ہیں جوئی نسل کے لئے نعمان منزل ہیں۔

مولانا ابوالکلام آزاد کی تحریروں میں شگفتگی، رنگینی، فلسفیانہ تصورات اور پروقار افکار و نظریات کی آمیزش ملتی ہے۔ مولانا آزاد کی تحریروں سے متاثر ہو کر رئیس المتزلیں مولانا حسرت موہانی مدیر ”اردوئے مطی“ نے کہا تھا۔

جب سے دیکھی ہے ابوالکلام کی نثر

نظم حسرت میں کچھ مزانہ رہا

مولانا آزاد نے اپنے زور قلم سے جہاں مذہبی اور ادبی دنیا میں اپنی شناخت بنا کر اپنا مرتبہ بلند کیا ہے وہیں یہ میدان شاعری میں بھی اپنی شاعرانہ عظمت کا جواہر جگایا ہے انہیں بچوں ہی سے شاعری کا ذوق تھا مولوی عبدالواحد خاں سپہرامی نے شاعری کا شوق پیدا کیا جو مولوی فاروق چریکوٹی کے شاگرد رشید تھے۔ مولوی عبدالواحد خاں سپہرامی نے ہی مولانا کا آزاد نخلص رکھا۔ وہیں سے مولانا آزاد کا شاعری ذوق پروان چڑھا گیا پھر بعد میں انہوں نے مولوی ظفر احسن سے شاعری کی بقاعدہ اصلاح لیتے رہے۔ مولانا آزاد نے بحیثیت شاعر اپنے جذبہ و احساسات اور تخیل کو شاعری کے سانچے میں ڈھال کر شعر لکھنے رہے لیکن مولانا آزاد زیادہ عرصے تک شاعری سے وابستہ نہ رہے۔ مولانا آزاد کے چند اشعار ملاحظہ فرمائیں۔

کیوں اسیر گیسوئے خمنار قتل ہو گیا
بے کیا بیٹھے بٹھالے تجھ کو اے دل ہو گیا

کوئی نالان، کوئی گریبل، کوئی بسمل ہو گیا
اسکے اٹھتے ہی دگرگوں رنگ، محفل ہو گیا
وعدہ وصل بھی کچھ طرفہ تھمتے کی ہے بات
میں تو بھولوں نہ کہی ان کو کہی یاد نہ ہو

مولانا ابوالکلام آزاد ایک سچے محب وطن، نڈر، بیباک رہنما نے قوم کے لیے ان کے بھی دل میں ہندوستان کو انگریزی سامراجیت سے نجات دلانے کی آگ بھڑک رہی تھی چنانچہ انہوں نے مولانا محمد علی جوہر، مہاتما گاندھی، پنڈت جواہر لال نہرو، رنجی احمد قنولانی، بدرالدین طیب جی اور سردار پٹیل جیسے مجاہدین آزادی کے کاروان میں شامل ہو کر جدوجہد آزادی کا نعرہ بلند کیا۔ انہوں نے اپنے افکار و جدید تقاضوں کے ذریعے بالخصوص مسلمانان ہند میں حب الوطنی اور جدوجہد آزادی کا جذبہ پیدا کر کے ان میں نئے افکار و نظریات سے ایک نئی جیت عطا کی۔ ۱۹۲۱ء میں پہلی بار انہیں سیاسی الزامات کے تحت کلکتہ جیل میں ڈال دیا گیا مگر مولانا آزاد عزم و استقلال کا پیکر تھے وہ صبر آزما اور حوصلہ شکن حالات کا مقابلہ کرتے ہوئے کام کرتے رہے۔ وہ انٹرنیشنل کانگریس کے کم عمر صدر بھی رہے۔ کانگریس ورکنگ کمیٹی میں مولانا آزاد کی رائے کو مقدم مانا جاتا تھا وہ اصول پسند تھے وہ خاموشی سے غور و فکر کر کے جواب دیتے۔ وہ حق بات کے لئے مہاتما گاندھی اور پنڈت نہرو کو متاثر کر دیتے تھے۔ مولانا آزاد ہمیشہ کم تو تھے۔ ان کی خاموشی پر بعض لوگوں نے تنگ مزاج کا نام دیا مگر ایسا نہیں تھا بعض ادیبوں نے لکھا ہے کہ ان میں سنجیدگی، مکتلت اور بردباری کا جذبہ بدرجہ اتم موجود تھا۔

مولانا آزاد جدوجہد آزادی ہند کے علمبردار تھے وہ ہندوستان کو انگریزوں کی غلامی سے نجات دلانے کے لئے قانونی قوم کے ساتھ آزادی کی مشعل لیے آگے بڑھتے رہے اس راہ میں انہیں قید و بند کی صعوبتیں برداشت کرنی پڑیں۔ **Defence of India and Audience** کے تحت انہیں راجی جیل میں نظر بند کر دیا گیا چار سال بد جیل سے رہا ہوئے تحریک خلافت سے منسلک ہو کر جدوجہد آزادی کے کاروان کو آگے بڑھاتے رہے۔

مولانا آزاد تحریک عدم تعاون **Non co-operation Movement** اور بھارت چھوڑو تحریک **Quit India Movement** میں شامل ہو کر مہاتما گاندھی جی اور پنڈت جواہر لال نہرو کے ساتھ قدم سے قدم ملا کر ہندوستان کو آزادی دلانے کے لئے کوشاں رہے۔ ۱۹۴۲ء میں انہیں گرفتار کر کے احمد نگر ظلع میں بند کر دیا گیا۔ ایلم اسیری میں مولانا آزاد نے اپنے متن کو جاری رکھا وہ احمد نگر جیل میں خاموش نہیں بیٹھے بلکہ وہ فرصت کے لمحات اور انتہائی سے استفادہ کرتے ہوئے خطوط کا مجموعہ ”غبار خاطر“ شایکار تصنیف کی تکمیل کی۔ غبار خاطر تصنیف سے مولانا آزاد کے ایلم قید کے سبب روز کے تپلی و فکری حالات کا عکس ہے۔ غبار خاطر مولانا آزاد کی شخصیت کی عکاسی کرتی ہے۔

مولانا آزاد اصول پسند و عبور پسند خوددار تھے۔ ایلم اسیری کے دوران ان کی اہلیہ ذلیخہ بیگم کا انتقال ہوا تب انگریزی حکام نے کہا تھا اگر مولانا آزاد درخواست کریں تو ہم انہیں رہا کر دیں گے۔ مگر مولانا کو یہ بات منظور نہیں تھی انہوں نے انکار کر دیا مگر انگریزی حکام کے آگے سر نہیں جھکایا انہوں نے اپنے قوم و وطن کی عظمت کی خاطر سب کچھ نڈر کر دیا۔ ۱۹۴۵ء میں قید سے رہتی ملی مگر ہندوستان کو آزاد کرانے کا جذبہ مائد نہیں بڑا۔ مولانا آزاد ہندو مسلم اتحاد کے حقیقی پیکر تھے۔ انہوں نے کانگریس کے ایک خصوصی اجلاس سے خطاب کرتے ہوئے کہا تھا۔ ”اگر ایک فرشتہ آسمان کی بلندیوں سے اتر کر آئے اور



دہلی کے قطب مینار پر کھڑا ہو کر یہ اعلان کر دے کہ سوراج چوبیس گھنٹے کے اندر مل سکتا ہے۔ مگر شرط ہے کہ ہندو مسلم اتحاد سے دستبردار ہو جائیں تو میں سوراج سے دست بردار ہو جاؤں گا کیونکہ سوراج کے ملنے میں تاخیر ہوئی تو ہندوستان کا نقصان ہوگا۔ اگر ہمارا اتحاد جتنا رہا تو یہ عالم انسانیت کا نقصان ہوگا۔“

مولانا آزاد کے اس خطبے سے یہ پیام ملتا ہے کہ وہ ہندو مسلم اتحاد کے حقیقی امین تھے۔ آخر کار 15 اگست 1947ء کو ہمارا ملک انگریزوں کی غلامی کی زنجیروں سے آزاد ہوا۔ مگر انگریزوں نے جتھے جتھے اپنی مکارانہ چالوں و دور اندیشی سے کام لیتے ہوئے اس عظیم ملک کو تقسیم کرنے کا بیج بو دیا جو بہت جلد تناور و درخت کی شکل میں نمودار ہو گیا۔ ہندوستان و پاکستان منقسم ہو کر رہ گئے۔ آزادی کے چند دنوں بعد ملک میں ہندو مسلم کش فسادات پھوٹ پڑے صدیوں پرانی ہندو مسلم دوستی، یکجہتی و تہذیب و تمدن کی عمارت متزلزل ہو کر رہ گئی۔ ہندوستان سے مسلمان کثیر تعداد میں پاکستان ہجرت کرنے لگے اس عمل سے مولانا آزاد کو ایک دھکا سا لگا اور انہیں تقسیم ہند کا صدمہ بہت گہرا ہوا۔ ان کی بگڑتی کا خواب چکنا چور ہو کر رہ گیا جس کا اظہار مولانا آزاد نے اپنی لکری تصنیف ہندوستان آزادی حاصل کرتا ہے۔ India Wind Freedom میں کیا ہے۔

مولانا آزاد اکتوبر 1947ء میں مسلمانان دہلی کے ایک اجتماع سے خطاب کرتے ہوئے کہا تھا۔

”اے میرے عزیزو! آپ جانتے ہیں کہ وہ کونسی چیز ہے جو مجھے یہاں لائی ہے۔ میرے لیے شاہ جہاں کی اس بلند گار مسجد میں اجتماع سے خطاب کرنا ہی بلیت نہیں۔ میں نے ایسے زمانے بھی دیکھے ہیں جس پر لول و نہار کی بہت سے گردیش بیت چکی ہیں۔ تمہیں یہیں سے خطاب کیا تھا جب تمہارے چہروں پر اضطراب کے بجائے اطمینان تھا اور تمہارے دلوں میں شک کے بجائے اعتماد تھا۔ آج تمہارے چہروں کا اضطراب اور دلوں کی ویرانی دیکھتا ہوں تو بے اختیار مجھے بچھلے برسوں کی بھولی بھری کہانیاں یاد آتی ہیں۔ تمہیں یاد ہے۔ میں نے تمہیں پکارا تم نے میری زبان کاٹ لی۔ میں نے ظم اٹھایا اور تم نے میرے ہاتھ ظم کر دیے۔ میں نے چلنا چاہا تم نے میرے پاؤں کاٹ ڈنڈے میں نے کروٹ لینا چاہی تم نے میری کمر توڑ دی۔“ (لاخالیات آزاد)

مولانا آزاد کے اس پُرانتور و فکر انگیز خطاب سے یہ نتیجہ اخذ کیا جا سکتا ہے کہ وہ کس قدر بے لوث قائد تھے۔ ان کے دل میں مسلمانوں کے منطوق سے کس قدر ہمدردی کا جذبہ موجزن تھا۔ مولانا آزاد قومی نظریے کے مخالف تھے وہ برگر نہیں چاہتے تھے کہ مسلمانان ہند تقسیم ہند کو قبول کر لیں ان کی دور اندیشی تھی کہ مسلمان اسی ملک میں رہ کر اپنے حقوق حاصل کریں انہوں نے اس وقت کے نام نہاد مسلم قائدین کو جھنجھوڑتے ہوئے کہا تھا۔

”دنیا پر حکومت کرنے والے ایک چھوٹے سے خطے پر انگٹا کر رہے ہو۔ آپ ملحد وطن چھوڑے جا رہے ہیں آپ نے کوئی یہ بھی سوچا کہ اس کا انجام کیا ہوگا۔ آپ کے اس طرح فرار ہونے سے ہندوستان میں بسنے والے مسلمان کمزور ہو جائیں گے۔ اور ایک وقت ایسا بھی آسکتا ہے جب پاکستان کے علاقائی باشندے اپنی جداگاہ حیثیتوں کا دعویٰ لے کر اٹھ کھڑے ہوں گے۔ بنگالی، پنجابی، بلوچی اور پٹھان خود کو مستقل قرار دینے لگیں تو اس وقت آپ کی یوزیتن کیا ہوگی۔ ہندو آپ کا مذہبی مخالف ہو سکتا ہے، قومی اور قوطنی نہیں۔ آپ اس صورت حال سے ایٹ سکتے ہیں۔ مگر پاکستان میں کسی بھی وقت قومی مخالفتوں کا سامنا کرنا پڑیگا۔ جس کے آگے آپ بے بس ہو کر رہ جائیں گے۔“



مولانا آزاد کی یہ سداغے درد صحرائوں میں بھٹکی رہی ان کی یہ بیش خمیسی مسیح
تلبت ہوئی۔ تقسیم ہند کی نصف صدی گزرنے کے بعد ہجرت کر کے پاکستان میں بسے ہوئے
مسلمانوں کو آج بھی مہاجر کہا جاتا ہے۔ کیوں؟
مولانا آزاد کو فرزند اور بے بس مسلمانوں کے ایک مجمع سے خطاب کرتے ہوئے انہیں
اپنی حیثیت کا احساس دلاتے ہوئے کہتا تھا

”آج تم زلزلوں سے ڈرتے ہو گویا تم خود ایک زلزلہ تھے۔ آج تم اندھروں سے کھینچے
ہو گیا تمہیں یاد نہیں کہ تمہارا وجود ایک اجالہ تھا۔ یہ بلالوں نے میز یاتی برسا لیا ہے۔ تم بھینگ
جانے کے خدشے سے اپنے پلاچے چھڑا لیتے ہیں۔ وہ تمہارے اسلاف تھے جو سفندروں میں لٹر
گئے پہاڑیوں کی جھلی کوروند ڈالا۔ بجلیوں انہیں تو اس پر مسکرا دیئے۔ بغل گرجے تو تم نے
کھپوں سے جواب دیا۔ سرسرا اٹھی تو اس کا رخ پھیر دیا۔ آدھیاں انہیں تو رخ پھیر دیا۔ گریبان
سے کھینچنے والے آج تم خود گریبانوں سے کھینچنے لگے ہیں اور خدا سے اس قدر غافل ہو گئے
کہ جیسے کبھی ایمان ہی نہیں تھا۔“

مولانا آزاد کے اس خطاب میں مسلمان ہند کو اپنی عظمت و شان شوکت کا احساس دلایا
ہے۔ آزادی سے پہلے مسلمانوں کی حیثیت کیا تھی اور آزادی کے بعد کیا ہو کر رہ گئی۔ مولانا
آزاد نے اپنے منہبی تشخص کو برقرار رکھتے ہوئے ملک و قوم سے لوٹ خدمات انجام دیں ساتھ
ہی ساتھ انہوں نے ہندو مسلم اتحاد کو مستحکم بنانے رکھنے کے لئے ہمیشہ کوشش کرتے رہے۔
مولانا آزاد کی زندگی ایک کھلی کتاب تھی وہ سادگی پسند تھے صرف تین شہزادوں پر اکتفا کر
کے استعمال کیا کرتے تھے۔ انہوں نے پیچھے کوئی بینک پیالٹس نہیں چھوڑا۔ ان کی سادہ
زندگی ہماری قومی زندگی کی ترجمانی کرتی ہے ان کے افکار و خیالات ہمارے لئے مشعل راہ
ہیں۔ لخر کار آزادی ہند کا علمبردار ہے ننگ میٹھی و درختندہ ستر ۲۲، فروری ۱۹۵۸ء کو ہمیشہ
ہمیشہ کے لئے غروب ہو گیا۔ لعلہ جمع مسجد، دہلی میں اہدیٰ لیند سو رہا ہے۔

بعد از مرگ مولانا ابوالکلام آزاد کو حکومت ہند کی جانب سے ان کی خدمات کے
اعتراف میں بلوکلر اعزاز ”بھارت رتن“ سے نوازا گیا جب کہ مولانا کے محترم کی شخصیت
کئی اعزازات کے استحقاق کی اہل تھی بقول مرزا غلام۔

روانی ہستی ہے عشق حقہ ویران سار ہے
قلمن ہے شمع ہے گر لریٰ خرمن میں نہیں



مولانا ابوالکلام آزاد

اسوسی ایٹ پروفیسر ڈاکٹر شیخ میمونہ اللہ بخش
یو۔ای۔ایس۔ مہیلا مہاوڈھیالیہ، شولاپور





Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: Dr. Shaikh Maimuna A. Topic:- Immamul Hind Maulana Abukalam Azad . College : Asso – Professor , U. E. S. Mahila Mahavidyalaya Solapur. The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of June 2019.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
SPH Mahila Mahavidyalaya,
Malegaon, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- ❖ Prof. Mohan S. - Dean faculty of Arts, Delhi University, Delhi, India
- ❖ Prof. Milena Brotaeva - Head, Classical East Department, Sofia University, Sofia, Bulgaria
- ❖ Dr. R. S. Sarraju - Center for Translation Studies, University of Hyderabad, Hyderabad, India
- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. [M.S.] India
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- ❖ Dr. G. Hareesh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sanjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari [M.S.]
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nanasahab Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. P. K. Shewale - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.] India
- ❖ Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.] India
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sandip Mali - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.] India
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindkheda [M.S.] India

Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna Kosic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- ❖ Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- ❖ Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopergaon
- ❖ Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258



71	शेतकरी दिर्घकाव्यातील दुष्काळजन्य परिस्थितीचे चित्रण	डॉ.बालाजी डिगोळे	322
72	मराठी साहित्यातील दुष्काळाचे चित्र	डॉ.सुनिल धनकुटे	327
73	देशातील पाणी समस्या आणि त्यावरील उपाययोजना	डॉ.देविदास गेजगे	331
74	व्यंकटेश माडगुळकर व रा.रं.बोराडे यांच्या कथेतील दुष्काळाचे चित्रण	प्रा.शोभा मिसाळ व सपना जाधव	335
75	समकालीन मराठी ग्रामीण कथेतील पाणी समस्या आणि स्त्री जीवन	प्रा.सौ.निर्मला मोरे	338
	ग्रामीण कवितेतील दुष्काळाचे चित्रण	प्रा.संजय चव्हाण	343
76	बनगरवाडी या कादंबरीतील दुष्काळ	प्रा.दादा साठे	348
77	धरणग्रस्तांच्या जीवनाची 'झाडाझडती	प्रा. दादा यमगर, डॉ. बिरा पारसे	351
78	मराठी कवितेतील दुष्काळ आणि शेतकऱ्यांचे चित्रण	प्रा.सुहास उघडे	355
79	A Tragedy of Indian Agriculture: Farmer's Suicide		
	Prof. Vinayak B. Suryawanshi, Miss. Chaitali N. Mane Deshmukh		361
80	संत साहित्यातील दुष्काळाचे चित्रण	डॉ. सुनिता सूर्यवंशी	365
81	उर्जा बचत एक काळाची गरज - एक अभ्यास	श्री.संदीप एडकेवार व श्री.तुषार साबळे	370
82	ग्रीन लायब्ररी	★ अमर दीक्षित	373 ✓
83	इको-फ्रेंडली पर्यावरण पूरक साधनांचा ग्रंथालयात वापर	डॉ.वैशाली मोरे	376
84	पिण्याचे पाणी : समस्या व उपाय	डॉ.बाळासाहेब मुळीक	380
85	मानसशास्त्राचे पर्यावरण आणि इतर क्षेत्रातील उपाययोजना	प्रा.अनिल मुंगूसकर	387
86	फळबाग शेतकरी आणि बिगर फळबाग शेतकरी तरुणांच्या व्यक्तिगत ताणाचा अभ्यास	श्री.रवींद्र माने व डॉ. रवींद्र घोती	392
87	जलप्रदूषण प्रतिबंध, नियंत्रण व उपाययोजना	श्री. प्रविण साळुंके	396
88	प्राचीन ग्रंथातील आणि शिवकालीन जलव्यावस्थापन ..	डॉ. विश्वनाथ आवड	401
89	महात्मा गांधीजींचे दक्षिण आफ्रिकेतील कार्ये	प्रा.वर्षा डोंबाळे	408
90	पाणी व्यवस्थापन आणि नियोजन	डॉ.गणपती बाघमोडे	412
91	प्राचीन व शिवकालीन पाणी नियोजनाचा सद्य स्थितीत होणारा उपयोग	डॉ.मंदाकिनी देवकर /गोडसे	415
92	राष्ट्रीय सेवा योजनेतर्गत जल संवर्धन व श्रमसंस्कार मुल्ये रुजवणुकीसाठीचे विविध उपक्रम आणि त्यांच्या परिणामकारकतेचा अभ्यास	डॉ.परमेश्वर पाटील	418
93	पर्यावरणाचे बदलते वातावरण	डॉ.अनिल कांबळे	421
94	पर्यावरण - जल कायदा १९७४	डॉ.जी.आर.गायकवाड	424
95	पर्यावरण शिक्षणासाठी व्याख्यान पद्धती व सहकार्ययुक्त अध्ययनाच्या परिणामकारकतेचा अभ्यास	डॉ.रविराज फुरडे	427
96	जलसंवर्धन व जलव्यवस्थापनासाठी जल साक्षरतेची आवश्यकता	प्रा.ईश्वर राठोड	430
97	कादंबरीतून आलेले दुष्काळाचे चित्रण विशेष संदर्भ 'चारापाणी'	डॉ.दीपक सूर्यवंशी	433
98	पर्यटनसाठी "राष्ट्रीय" आणि "आंतरराष्ट्रीय" ग्रंथालय	कु. सपनाराणी एस. रामटेके	437
99	कोल्हापूरसंस्थानातील'राधानगरी'धरणाचेयोगदान	डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे	441
100	कृष्णा -भिमा स्थिरीकरण प्रकल्प	Mr. Santosh P. Mane	447



ग्रीन लायब्ररी

अमर रंगनाथ दीक्षित

ग्रंथपाल,

यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर

ar_dixit@yahoo.com

सारांश :-

पर्यावरण रक्षण हे वैयक्तिक व संस्थांच्या सामुहिक प्रयत्नाने साध्य करणे शक्य आहे. प्रस्तुत लेखात ग्रंथालयाच्या पारंपारिक कार्यपध्दतीत बदल करून पर्यावरण रक्षण कसे करावे याची चर्चा केली आहे.

प्रस्तावना :-

ग्रंथालय ही एक आदर्श सामाजिक संस्था आहे. समाजातील प्रत्येक व्यक्तीला ज्ञानी बनवून त्यांना देशाचे सुजाण नागरिक बनवणे, एका पिढीने निर्मिलेले ज्ञान दुसऱ्या पिढीकडे हस्तांतरित करणे व त्याची निगा ठेवणे, समाजाचे मनोरंजन करणे, वाचकांच्या माहितीविषयक गरजा पूर्ण करणे इ. अनेक कार्ये ग्रंथालये करत असल्यानेच समाजातील सेवाभावी संस्थांच्या यादीत ग्रंथालय संस्था अग्रभागी आहे.

आधुनिक काळात माहिती व तंत्रज्ञानातील नवनव्या तंत्राचा उपयोग ग्रंथालयांनी आपल्या दैनंदिन कामकाजासाठी केला आहे. संगणक, इंटरनेट, संगणक आज्ञावली, क्लाऊड कॉम्प्युटींग, स्कॅनींग व डिजीटलायझेशन इ. बुक्स च्या कार्यक्षम वापराने ग्रंथालये या विभागातही मार्गदर्शक ठरली आहेत.

एकंदरीतच ग्रंथालयाच्या कामकाजावर जसे समाजातील प्रगतीचे प्रतिबिंब आढळते तसे सामाजिक समस्यांवरही ग्रंथालये योग्य प्रबोधनात्मक माहितीचे वितरण करून, वाचकांचे प्रबोधन करून, काही वेळेस दैनंदिन कामकाजामध्ये त्यावर उपाययोजना करून पथदर्शक पध्दतीचे विकसन करतात.

साधनसामग्री व वाचन साहित्याच्या वाढत्या किंमती (महागाई), तज्ञ व कुशल मनुष्यबळाचा अभाव (नोकरभरती बंदी) जागेची टंचाई, तंत्रज्ञानाचा अभाव (तुटपुंजे अनुदान) वाचकांची घटती संख्या (सोशल मीडियाचे वाढते प्रस्थ) या व यासारख्या अनेक सामाजिक समस्यांवर ग्रंथालयांनी यशस्वी मात केल्याचे अभ्यासअंती दिसून येते आहे. याचबरोबर इतर काही सामाजिक समस्यांवरही ग्रंथालये आपल्या परीने पथदर्शी प्रकल्प राबवत आहेत याचे अनुकरण सर्वच ग्रंथालये करू शकतात.

जागतिक तापमान वाढ आणि हवामान बदल -

जागतिक तापमानवाढीच्या समस्येची जाणीव आधुनिक औद्योगिक व तांत्रिक प्रगतीच्यानंतर प्रकर्षाने जाणवू लागली आहे. कळत नकळतपणे कृषी, नागरीकरण, दळणवळण, उद्योगधंदे, वाढती लोक संख्या इ. सारखे घटक यासाठी कारणीभूत असलेली तापमानवाढीच्या दुष्परिणामापासून कोणीही वाचू शकणार नाही.

पर्यावरणातील तापमान वाढ ही ग्रीन हाऊस गॅस (GHP) च्या उत्सर्जनाच्याद्वारे मोजली जाते. यामध्ये कार्बनडायऑक्साईड, नायट्रस ऑक्साईड, मिथेन सल्फरडाय ऑक्साईड, हायड्रोफ्लुरोकार्बन, सल्फर हेक्साफ्लोराईड, आझोन आणि अन्य नायट्रोजन ऑक्साईड्स इ. चा समावेश होतो. ¹ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) च्या अहवालात असे म्हटले आहे कि, 2020 मध्ये हे उत्सर्जन (सद्याच्या 50.1 G+Co2e उत्सर्जनात) 20⁰ ने वाढीव दर्शविले जाईल. सरासरी उत्सर्जन ने जास्त आहे. यामुळे जगातील तापमान वाढ 3⁰ ने वाढण्याची शक्यता आहे. ही तापमानवाढ 4⁰ ने झाल्यास, दुष्काळ, उष्णता लहर, पूर इ. आपत्तीची शक्यता वाढते.



ग्रंथालये व पर्यावरण :-

पर्यावरण व ग्रंथालये यांचा तसा परस्पर संबंध सहजासहजी लक्षात येत नाही. मात्र प्रत्येक शैक्षणिक संस्था, सरकारी कार्यालये, संशोधन संस्था, वर्तमानपत्रांच्या कचेऱ्या, रेल्वे कार्यालये, लोकसभा, राज्यसभा सारख्या उच्च शासकीय संस्थांनी स्वतःची ग्रंथालये उभारलेली आहेत. या ग्रंथालयामध्ये लाखोंच्या संख्येने पुस्तके नियतकालिके, हस्तलिखिते यांचा संग्रह केलेल्या असतो. या संग्रहासाठी अव्याहव्य इमारती तयार करण्यात आलेल्या असून त्यांच्या निर्मितीच्या वेळी ग्लोबल वॉर्मिंग चा विचार केला नव्हता. प्रकाशन व्यवसाय जगातील प्रमुख व्यवसायांपैकी एक मानला जातो. ग्रीन हाऊस गॅस उत्सर्जनाचा कारणीभूत उद्योगामध्ये पल्प व पेपर इंडस्ट्रीचा तिसरा क्रमांक लागतो. एक हजार किलो ग्रॅम पेपर निर्मितीसाठी 24 झाडांची कत्तल करावी लागते. अमेरिकेमध्ये 125 दशलक्ष वृक्षतोड पुस्तक व वर्तमानपत्रांसाठी सन 2008 या एका वर्षात करण्यात आली.

संगणकीकरणामुळे ग्रंथालयातील नियमित कामे प्रक्रिया, सेवा यांसाठी विजेचा वापर वाढला. संगणक, प्रिंटर, स्कॅनर, प्रोजेक्टर, झेरॉक्स मशीन्स इ. च्या अतिरिक्त वापराने आधुनिक ग्रंथालयामध्ये विजेचा अतिरिक्त वापर वाढला आहे.

ग्रीन लायब्ररी :-

स्थानिक हवामानामुळे ग्रंथालय इमारतीचे होणारे नुकसान कमी करणे, नैसर्गिक व पुनर्प्रक्रियाक्षम संसाधनाचा वापर करून पाणी व ऊर्जा यांची बचत करणे, ग्रंथालय इमारत व परिसरात स्थानिक वनस्पतींची लागवड करून ग्रंथालयात काम करणाऱ्या कर्मचाऱ्यांच्या सुदृढ आरोग्यासाठी शुध्द वातावरण ठेवणे. या सर्व घटकांचा समावेश ग्रीन लायब्ररी या संकल्पनेत होतो.

आधुनिक ग्रीन लायब्ररी संकल्पनेचा वापर ग्रंथालय इमारतीच्या निर्मितीपासूनच करावयास हवा. नैसर्गिक प्रकाशन, शुध्द हवा, जलपुनर्भरण, जलपूर्ण वापर, मॉड्युलर फर्निचर, एलईडी दिवे, सौरऊर्जा इ. चा प्रत्यक्ष वापर ग्रीन लायब्ररी अस्तित्वात येण्यास आवश्यक आहे.

ग्रंथालय संगणकीकरणाद्वारे सुध्दा ग्रीन लायब्ररी संकल्पना साकार होण्यास हातभार लागतो. पारंपारिक ग्रंथाऐवजी हजारो ग्रंथ साठवण्याची क्षमता असणारे किंडलचा उपयोग, इन्टीट्युशनल डिपॉझिटरीच्या निर्मितीद्वारे संस्थेतील सर्व संशोधनाचे संगणकीय साठवण व वापर करणे या प्रमुख प्रकल्पांची सुरुवात करून ग्रंथालये पर्यावरण पूरक बनण्याची करू शकतात.

दैनंदिन कार्यामध्ये पर्यावरण पूरकता खालील कार्य पध्दतींच्या अवलंबाने निर्माण करता येणे शक्य आहे.

1. संगणकीय पत्रव्यवहार - ग्रंथालयाचा दैनंदिन पत्रव्यवहार बूक ऑर्डर्स, स्मरणपत्रे, निमंत्रण पत्रे, उपस्थिती पत्रे, आभारे पत्रे, कार्यक्रम पत्रिका, अहवाल मेमो, इतर प्रमाणपत्रे डिजीटल स्वरूपात असावी.
2. बायोमेट्रीक्स - ग्रंथालयातील अभिप्राय, उपस्थिती इ. ची नोंद संगणकीय असावी.
3. सोलार पावरचा उपयोग - संगणक, फॅन, झेरॉक्स मशीन्स यासाठीची विजनिर्मिती सोलर पॅनलद्वारे निर्माण करावी.
4. जलपुनर्भरण, जलपुनर्वापर या प्रकल्पाची निर्मिती.
5. ई-वेस्ट प्रकल्प - कालबाह्य संगणक, इलेक्ट्रॉनिक वस्तू, विजेची उपकरणे यांची योग्य विल्हेवाट लावावी.

'ग्रीन ग्रंथालयांसाठी' आंतरराष्ट्रीय मानके :-

1. LEED - Leadership in Energy and Environment Design

Impact Factor - 6.625

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2020 Special Issue - 236 (A)



Guest Editor :

Dr. Devidas S. Gajage

i/c Principal,

Saheer Ganohi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Executive Editors :

Mr. Santosh P. Mane

IQAC Coordinator

Saheer Ganohi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Chief Editor :

Dr. Dhanraj T. Dhargar (Yeola)

This journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



Impact Factor - 6.625

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Janury -2020 Special Issue - 236 (A)

Guest Editor :

Dr. Devidas S. Gejage

I/C Principal,

Sameer Gandhi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Executive Editors :

Mr. Santosh P. Mane

IQAC Cordinator

Sameer Gandhi Kala Mahavidyalaya,
Malshiras, Solapur, Dist. Solapur

Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Road Transportation in Southern Konkan Region of Maharashtra	S.T. Gurav, Dr. D. C. Kamble	06
2	Spatial Pattern of Cropping Intensity and Irrigation in Solapur District: A Geographical Analysis	Dr. Govind Bhosale	11
3	Spatial Pattern of Development in Medical Facility: A Special Reference to Satara District	Dr. T.R.Magar	20
4	Distribution of Water in Solapur District: A Geographical Study	Dr. Z.A.Nayab	26
5	Precipitation Trend in Shrigonda Tahasil of Ahmednagar District, (M.S.)	Kadam1 S.M. , Parkhe2 S.B.	37
6	The Study of Land Use and Land Cover Pattern: A Case Study of Vijaypur District	Dr. B.N.Konade	41
7	A Geographical Analysis of Agricultural Productivity in Lower Sina Basin	Dr. Arjun Nanaware, Amar Wakade	46
8	Geographical Study of Water Pollution in Upper Bhima River Basin (Maharashtra)	Dr. Arvind Dalavi	53
9	Irrigation Projects of Solapur District : A Geographical Study	Dr. Vijaya Galkwad	61
10	Irrigation Status of Drought Prone Region in Maharashtra State : with Special Reference to Solapur District	Dr. Ankush Shinde	65
11	Role of NGOS and Society in the Management of Water Resources	Dr. Rahul Surve, Dr. C.V. Tate	72
12	Water Tank and its use in Malshiras Tahsil, Solapur District (Ms), India	Dr. Nagnath Dhayagode	77
13	Rainfall Variability in Marathwada Region Through PCI	Mr. Kishor Shinde, Dr. Parag Khadke	81
14	Availability and Distribution of Water in Maharashtra State	Dr. Shivaji Maske	87
15	Socio-Economic Condition of Farmers in Western Hilly Area of Kolhapur District: A Case Study	Dr. B. B. Ghurake, Dr. R. V. Hajare, Prof. P. S. Chougule	93
16	Socio-Economic Status of Women in Ahmednagar District of Maharashtra	Dr. Deepak Gadekar, Mr. S.D Gulave, Vijay Sonawane	103
17	Sustainable Development of Rainwater Harvesting in Drought Prone Region of Maharashtra, India	Dr. V. P.Galkwad	113
18	Modern Irrigation Systems: A Better Way of Water Management	Dr. H.L. Jadhav	120
19	Geographical Analysis of Watershed in Kalamb Tahsil of Osmanabad District	Dr. M.T.Suryawanshil & Mr. R.G.Koli	123
20	Indicators of Economic Development: A Theoretical Approach	Dr. Sachin Rajguru	128
21	Well and Tub Well Water and its uses in Malshiras Tahsil, Solapur District - A Geographical Perspective	Dr. P. P. Ubale	133
22	Comparative Study Between Land use Practices and Wetland in Punjab, India	Ramhari Bagade, N. G. Shinde	138
23	Decrease of Ground Water Depth in Solapur District: A Geophysical Analysis	Dr. N. J.Patil	147
24	Drinking Water Supply Status in Habitaions with Population Coverage - A Geographical Studym	Dr.C.Mallanna, Prof.D.A.Kolhapure	153



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
SPH Mahila Mahavidyalaya,
Malegaon, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- ❖ Prof. Mohan S. - Dean faculty of Arts, Delhi University, Delhi, India
- ❖ Prof. Milena Brotaeva - Head, Classical East Department, Sofia University, Sofia, Bulgaria
- ❖ Dr. R. S. Sarraju - Center for Translation Studies, University of Hyderabad, Hyderabad, India
- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. [M.S.] India
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- ❖ Dr. G. Hareesh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sanjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari [M.S.]
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nanasahab Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. P. K. Shewale - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.] India
- ❖ Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.] India
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sandip Mall - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.] India
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.] India

Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna Kosle - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- ❖ Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- ❖ Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopergaon
- ❖ Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258



Distribution of Water in Solapur District: A Geographical Study

Dr. Nayab Z.A.

Department of Geography

U.E.S. Mahila Mahavidyalaya, Solapur.

Abstract-

Water plays a very important role in every aspects of our existence. In Yajurveda water has been described as the elixir of life. Water is basic necessity of our life. We cannot survive without water. Despite of the fact that nearly three fourth of the surface is covered by water. Availability of water for consumption getting scarce day by day due to various activities. Water resources have tremendous important in drought prone area, in relation to agriculture. As studied in chapter three water is scarce in the study region. Inadequate or poor supply of water may lead to dry farming manifesting inferior subsistence farming. In such condition poor standard of peasant, which are compelled farmers to follow the traditional path of agriculture, thus inadequate water resources have forced the farmers of this region to find out alternative cropping system in given agro-climatic conditions. (Nanaware A.H., 2007)

The source of water that we get for our consumption i.e. rainwater is the primary source for all, and is one of the purest form of water. Water is required for human being from birth to death for different purposes such as drinking, washing, bathing, agriculture, industries etc. Most of our fresh water is obtained from rainfall. Rain replenishes water in ponds, lakes, tanks and reservoirs and seeps into the ground and stored as a groundwater. The present paper attempt the study of distribution of water in Solapur district.

Key words – Distribution, consumption, traditional

Introduction -

Water is distributed in different forms at different places from where it moves to other places. Water does not remain permanent anywhere. The distribution of water on the earth surface is extremely uneven. 97.41% water resides in the ocean, 0.99% resides in the glacier, 1.40% underground and very less i.e. only 0.20% water is usable water.

Objectives

- 1) To study the distribution of water in Solapur District.
- 2) To study the water resources in Solapur District.
- 2) To study the available water in various major, minor dams of Solapur district.

Methodology

The secondary data is collected from the State and Central Governments' published and unpublished reports and abstracts such as rainfall, temperature, land use pattern, means of irrigation, rivers and reservoirs data collected from Socio-economic Review, District Statistical Abstracts, District Census Handbooks, Groundwater Survey Development Agency Office Solapur district, and other government records. Ujani dam information, supply of water from Ujani to KTW's of Bhima, Sina and Man river water data collected from Groundwater Sdurvey Department, Solapur. Solapur city. water data collected from Groundwater Sdurvey Department, Solapur. Solapur city.

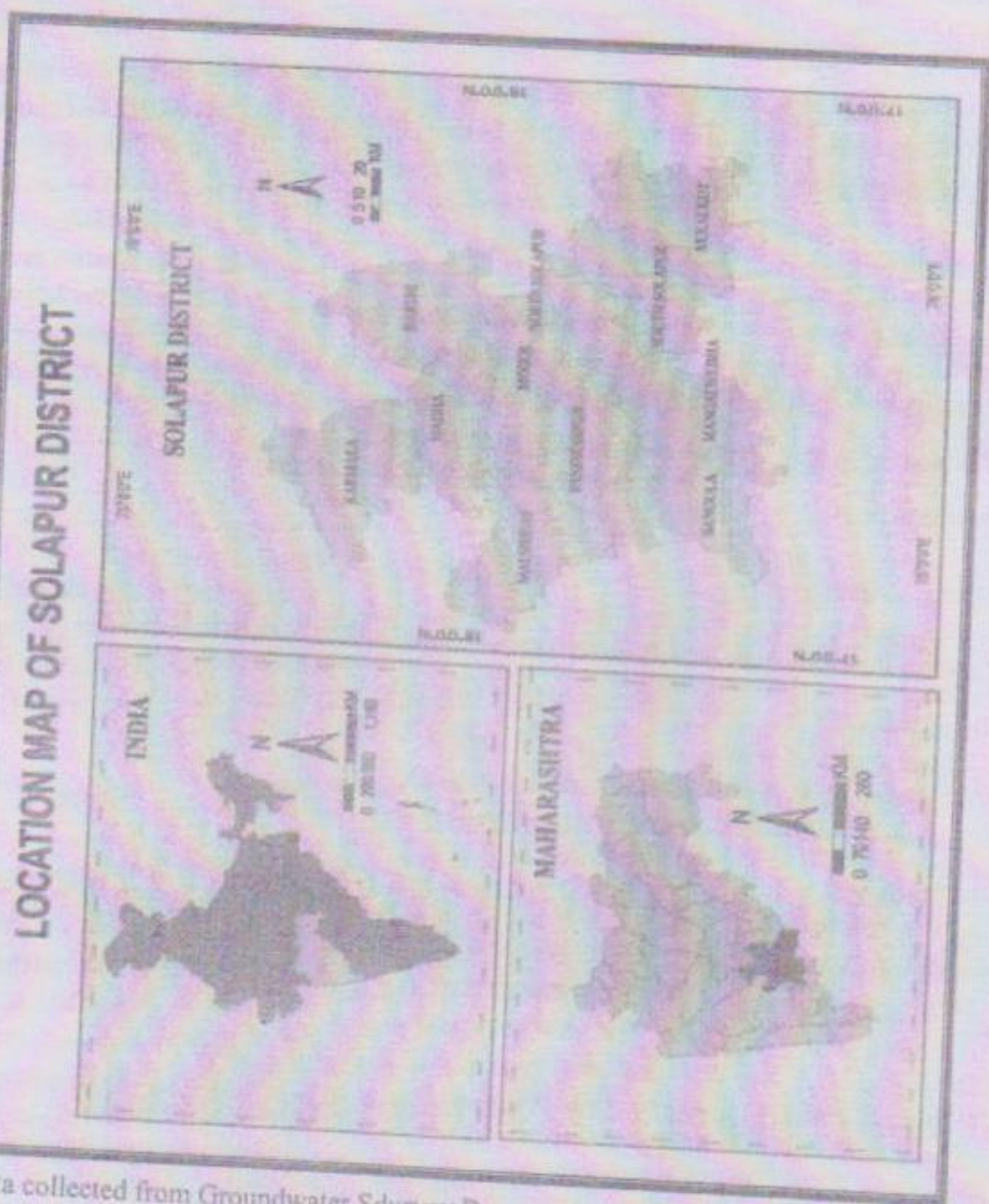
Study Area

Solapur is one of the most important district of Maharashtra state of India. The city of Solapur is the district headquarter. Geographically Solapur is extended between 17° 10' N to 18° 32' North latitude and 74° 42' east to 76° 15' east longitude. The total geographical area of the district is 14895 sq. Kms. From the administrative point of view it is divided into 3 subdivisions namely Solapur, Pandharpur and Madha. The district is divided into 11 Talukas and 1142 villages.

Solapur district is bounded by Ahmednagar in the north, Osmanabad to east, the border of Karnataka and Sangli to the south, Satara and Pune district to the west.

It lies in the basins of Nira, Bhima, Sina and Man rivers. Solapur is one of the chronic drought prone districts of Maharashtra.

LOCATION MAP OF SOLAPUR DISTRICT



groundwater data collected from Groundwater Survey Department, Solapur. Solapur city.

**Distribution of water in Rivers**

Bhima is the important river flowing through Solapur district. The river Man, Sina, Nira, Bhagavati, Bhend, Bori are the major tributaries of river Bhima. Most of the rivers in Solapur districts are non-perennial in nature. The flowing of the river is only in rainy season and they dry up in summer season. In order to understand their detail characteristics, it is most appropriate to discuss them one by one. There are 12 rivers in the district and their length is 767kms. (Table No- 4.1). All these rivers are unable to supply the water in dry i.e. in summer season.

Table
Rivers In Solapur District

Sr.no	Name Of The River	Length In Kms	Talukas
1	Bhima	289	Akkalkot, Karmala, Madha, Malshiras border Mangalweda, Mohol, Pandharpur, S. Solapur
2	Nira	75	Malshiras
3	Man	78	Mangalweda, Sangola
4	Sina	128	Karmala, Madha, Mohol, N. Solapur, S. Solapur
5	Bhogawati	33	Barshi, Mohol
6	Bori	41	Akkalkot
7	Harna	24	Akkalkot, S. Solapur
8	Nagzeri	33	Barshi
9	Apruka	26	Sangola
10	Korda	22	Sangola
11	Belwan	10	Sangola
12	Ramghat	08	Sangola
	Total	767	

Source: Socio-economic review of Solapur district 2012

The River Bhima

The Bhima is the major river of Solapur district. It originates near Bhima Shankar in Ambegaon taluka in western ghat in Pune district. After Pune she flows through Ahmednagar and then enters in Solapur district and then enters into Karanataka and falls into Krishna river.

The river Bhima flowing in the central part of Solapur district such as Karmala, Madha, Malshiras, Pandharpur, Mangalweda, Mohol and South Solapur talukas. The total length of Bhima river is 861 Kms. Out of these 289 Kms. lies within Solapur district.

The River Nira

The river Nira is the chief right bank tributary of Bhima. Nira originates in the Bhortaluka of Pune district. She runs south-east and east along the border of Pune, Satara and



During these 75 Kms. the Nira runs nearly east forming north boundary of Malshiras and passing the villages of Akluj and falls into the Bhima river about 8 kms south west of Tembhurni in Madhatahsil. 1065 sq. kms area drain by this river.

The River Man

The river Man is the right bank tributary of Bhima river. It rises in a spur of the Mahadev range in Satara district run through eastern part of Satara district and turns towards Sangola, Pandharpur and Mangalwedatalukas. It forms entire boundary between Pandharpur and Mangalwedataluka. The total length of river Man is 180 Kms. Out of which 78 Kms. lies within the Solapur.

The Rive Sina

The river Sina one of the chief left bank tributary of the Bhima. It rises 20 Kms. West of the Ahmednagar district and enters the Karmalataluka. It runs south-east through Ahmednagar and Solapur and falls into the Bhimariver near Kudal about 25 Kms. South of Solapur. The total length of river Sina is 128 Kms. Within the Solapur district.

The River Bhogavati

The river Bhogavati is the largest tributary of River Sina. It rises in the Balaghat range in the north-east of Barshitaluka. It flows initially to the south-west direction for a distance of about 65 kms in Barshi and Madhataluka of Solapur. Length of the river in Solapur district is 33kms. The Bhogavati joins Sina about 7 kms. north of Moholtaluka.

Table 4.2 shows the flow of water through the rivers of Solapur from the different station.

Table- Flow of water through rivers In Solapur district (water flow in m/sec)

Sr.No	Rivers	Station	2011	2012	2013	2014
1	Bhima	Pandharpur	4180	114.60	2992.54	670
2	Bhima	Takdi	4100	Nil	2650	450
3	Bhima	Devikauthe	4900	Nil	4625	453
4	Sina	Bawalgi	142	50	1200	360

Source - Minor irrigation department, Solapur.

Table 4.2 shows that the annual water flow by the rivers of Solapur District from different stations in the year 2011 to 2014. It is observed that the annual water flow by Bhima river from different station is more in the year 2011 i.e. (4000 to 5000 m/sec) and water flow in the year 2012 is very less due to very less rainfall. Water flow by the river Sina is more in the year 2013 and low in 2012. Water flow generally found in the month of July to September. All these rivers except Bhima (conditional) are unable to supply water in dry seasonal. Hence these are not useful to minimize the problem of water scarcity.

Lakes and reservoirs

There are some lakes and reservoirs in Solapur district. The famous lakes are Koregaon Lake, Ashtilake and Ekruk lake. Out of these three lakes Koregaonlake is an old work improved and the Ashti and Ekruk lakes are new works.

Table - Lakes and Reservoirs of Solapur district

Sr.No	Lakes	Taluka	Year	Length (feet)	Height (feet)	Capacity (mft)	Drainage Area (sq.kms)	Purpose
1	Koregaon	Barshi	1858	1295	71	81.3	11.9	



reservoir is 68,711 cubic feet or 429,133 gallons and the high level reservoir capacity is 88,193 cubic feet.

The Barshi Reservoir

The Barshi reservoirs were constructed to supply drinking water to Barshi. The reservoir was built close to the town in 1877. The storage capacity is 19 million cubic feet and a drainage area of 9.49 sq. kms.

Distribution of water in Dams

Table - Projects of Solapur District

Sr. No	Talukas	Major Projects	Medium Projects	Minor Projects	Percolation tank	KTWs	Bhuyari storage dam	Irrigation wells
1	Karmala	-	01	10	67	55	30	927
2	Madha	01	-	03	82	62	50	1108
3	Barshi	-	03	12	113	109	31	1566
4	N.Solapur	-	01	01	57	55	07	426
5	Mohol	-	01	01	331	66	29	883
6	Pandharpur	-	-	-	36	35	43	697
7	Malshiras	-	01	-	98	82	58	1093
8	Sangola	-	-	-	117	80	39	652
9	Mangalwedha	-	-	-	93	54	19	532
10	S.Solapur	-	-	03	79	56	34	712
11	Akkalkot	-	01	08	67	77	31	1093
Total		01	09	38	1140	731	371	9689

Source-Socio-Economic Abstract of Solapur District 2012

Major Project

Ujjani Dam

Solapur district is a drought prone area and affected by scarcity of water year after year. Lands in this area are fertile and capable for growing variety of crops. Average annual rainfall varies from 578mms to 728mms which is inadequate for growing of crops. To overcome from this problem Govt. of Maharashtra decided to construct a dam on Bhima river with aim to provide water for irrigation, industrial and drinking purpose. For this, river course near Ujjani village in Madhatahsil was selected to construct the dam. The dam is also called as BhimaUjjani Irrigation project. The construction of dam was begun in the year 1969 and opened to serve in June 1980. It is an earthfill gravity dam. The height of the dam is 56.4 mts (185 ft), length is 2534 mts (8,314 ft) and the width is 6.7 mts (22 ft). The dam capacity is 3,320,000 mcm. Live storage is 1517.19mcm and dead storage is 1802.81mcm. The catchment area of the reservoir is 14858 sq. km. So it is one of the biggest reservoir in the region supplying water for many purposes. The reservoir formed in this project is named as YashwantSagar as Late Yashwantrao Chavan(Ex-Chief Minister Of Maharashtra) has got large efforts to sanction and complete this project.

The large population from Pandharpur, Malshiras, Madha, Mohol, Akkalkot talukas of Solapur district are benefited by irrigation. Also agriculture near the bank of backwater is benefited by this water through lift irrigation schemes.

2	Ashti	Madha	1981	12709	57.75	1499.47	N.A.	Irrigation
3	Ekrukh	Solapur	1969	7200	72	3350	4.14	Irrigation & Domestic
4	Solapur reservoir	Solapur	1881	N.A.	N.A.	15.35	0.17	Drinking
5	Barshi reservoir	Barshi	1877	N.A.	N.A.	19	9.49	Drinking
6	Karmala reservoir	Karmala	1877	N.A.	N.A.	N.A.		Drinking
7	Pandharpur reservoir	Pandharpur	1874	3500	44	89.33	25.89	Drinking

Source: Socio-economic abstract of Solapur district 2010-12.

Koregaon Lake

The Koregaonlake is situated at north east of Barshi. Two earthen dams are build across two separate valleys. The larger dam on the west and smaller dam is in the south east. The original depth of the lake near the dam is 50 feet and the depth is reduced due to accumulation of silt. Total gross capacity of the lake is 81.3 million cubic feet and supplies of water to 282 acres of land.

Ashti Lake

The Ashti lake lies in the Madha sub-division at north-east of Pandharpur. It is big reservoir and spread over an area of about 1145 hectares. Water holding capacity is 1499.47million cubic feet. On this lake two canals are constructed one is left bank canal, which is 18.50 kms long and discharge 30 cubic feet water per second and commands 12258 acres and the other is right bank canal whose length is 16 kms and discharge 10 cubic feet water per second and command 5624 acres. The lake supply sufficient water in regular rotation. The discharging capacity is 48,000 cubic feet a second. The construction of dam was started on 1st December 1876 and completed in 31 July 1881, as a famine relief work.

Ekrukh Lake (Hipparga lake)

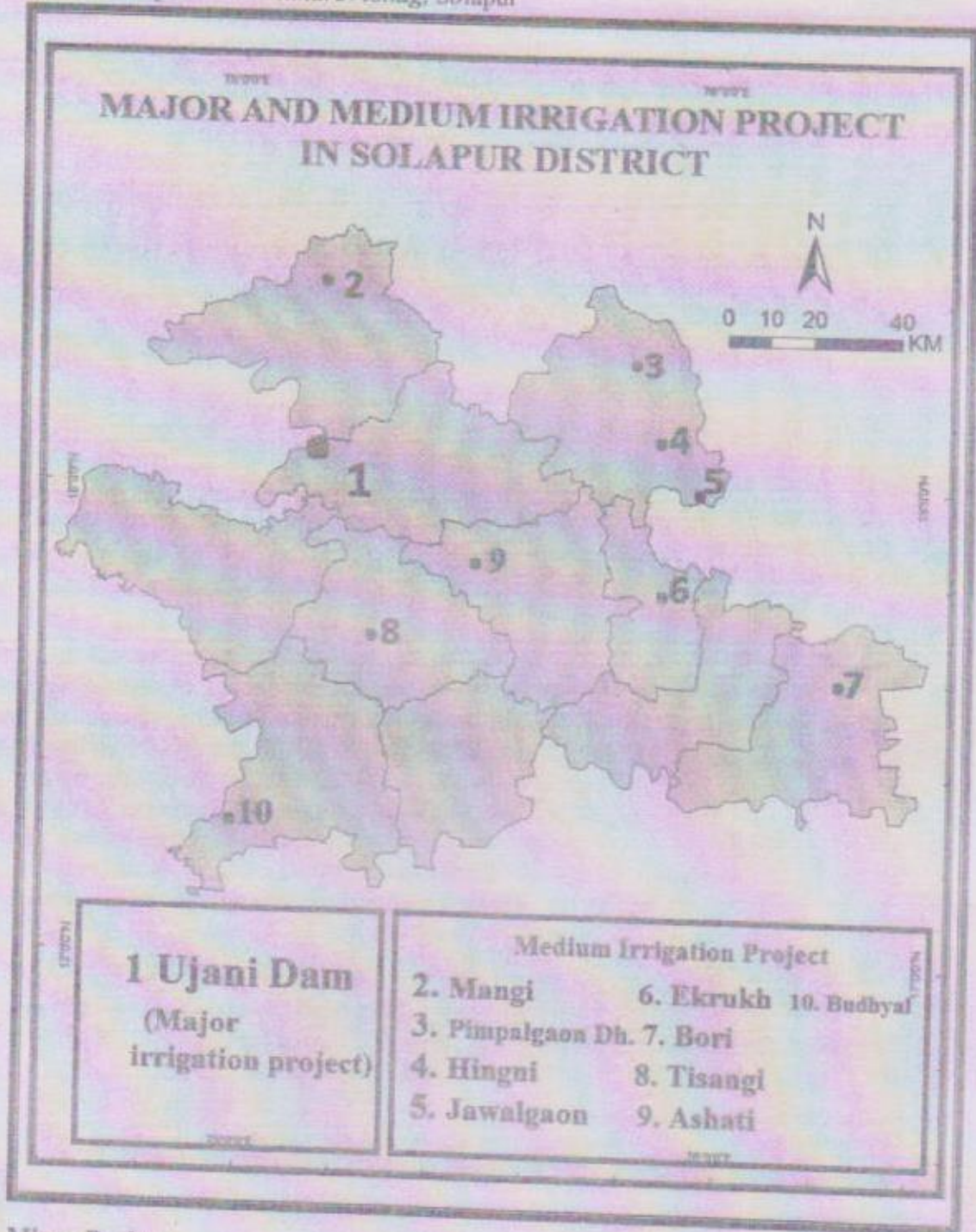
The Ekrukhlake is located in Solapur city. It is a second largest irrigation project installed during the British regim. The scheme was prepared in 1863 and sanctioned in 1866. The dam is thrown across the course of the Adhila, a feeder of the Sina. Two small canals were constructed from this lake.

The construction of Hippargalake was completed in 1871. Storage capacity of the reservoir is 3.33TMC. The length of the lake is 2934mts, width is 7.60mts and height is 24.45mts. Gross Cropped Area (G.C.A.) of the lake is 6944 hectares and C.C.A. is 6858 hectares. The water of the reservoir is used for drinking (14.55 Mcum), for irrigation(46.51 Mcum) and for industry (0.10 Mcum) also.

Solapur water reservoir

The Solapur water reservoir were designed and completed by Mr. C. T. Burke. The construction was begun in November 1878 and opened in March 1881. The storage capacity of reservoir is 5.35 mcft. The high level reservoir is designed to supply the water to Sakharpath and sub-urbs and the low level reservoir Supplies the rest of the town. The capacity of low level

Source-SolapurPatbhandhareVibhag, Solapur



Minor Project-

All minor schemes are under the administrative charge of ZillaParishad.

Percolation Tanks

Percolation tanks are the structure for recharging ground water .They are generally constructed across streams and bigger gullies in order to impound a part of runoff water. Percolation tanks are very useful for indirect irrigation in drought prone areas. More than 1140



Table - Canals on Ujjani Dam

Sr.No.	Name of Canal	Length G.C.A.(hectores)		C.C.A(hectores)	I.C.A(hectores)
1	Ujjani left bank canal	126	41430	33144	29830
2	Ujjani right bank canal	132	71945	57555	51800
3	Begumpur branch	55	54576	19661	17695
4	Kurul branch	65	20680	16544	14890
5	Mohol-karamba branch	170	46646	37317	33585
	Total	548	205277	164221	147800

Source – Solapur irrigation department Solapur.

Two main canals are constructed from Ujjani reservoir. first one is left bank canal which runs for a length of 20kms from where it bifurcates into two canals. One running along the left bank and the other on the right bank after crossing same i.e. Bhima river at Sangam village through Bhims aqueducted.

The Ujjani left bank canal (ULBC) runs for a distance of 126kms and up to the ridge between Bhima and Sina valley irrigating areas in Madha, Mohol and Pandharpur talukas. The Begumpur branch takes of at the end of main canal for irrigating areas in Pandharpur and Mohol talukas. Two more branches Kurul and Mohol-Karamba branch take off after the deep cut of 2.5kms at the end of U.L.B.C irrigating areas on the right and left banks of river Sina.

The Ujjani right bank canal (URBC) runs for a distance of 132 kms at village Umbre and goes up to boundry of the state, irrigating areas in Malshiras, Pandharpur and Mangalweda talukas. Actually it is one of the branch of main canal which starts from reservoir runs as left bank canal. When it reaches at village Sangam branch is constructed which takes water to right bank of river. From where it is known as Right Bank Canal.

Medium Projects

Table 4.6 Medium irrigation project in Solapur District (Water in MCM)

Sr. No	Medium Project	Taluka	Gross Storage	Use Of Water		
				Domestic	Irrigation	Industries
	Mangi	Karmala	30.72	0.00	26.51	0.00
2	PimpalgaonDhale	Barshi	12.66	0.00	9.86	0.00
3	Hingani	Barshi	45.51	1.02	36.15	0.66
4	Jawalgaon	Barshi	34.92	2.46	26.91	0.00
5	Ekrukh	N. Solapur	61.16	15.94	35.54	0.10
6	Bori	Akkalkot	23.29	2.10	18.22	0.00
7	Tisangi	Pandharpur	26.17	0.74	17.03	0.47
8	Ashti	Mohol	23.01	2.96	13.36	1.17
9	Budhyul	Sangola	19.03	0.00	19.03	0.00



percolation tanks are in Solapur district and most of them are found in Mohol, Sangola and Barshi tahsils.

Kolhapur Type Bandharas

The construction of local level Kolhapur type bandhara has been introduced in 1989. The irrigation potential of this bandhara is 50 to 100 hectors which helps to increase underground water table of the region. There are 731 Kolhapur type Bandharas and mostly observed in Barshi, Malshiras, Sangola, Akkalkot, Madha and Mohol tahsils.

Surface Rain Water

Surface water more specifically rain water that falls on the all types of surfaces of earth or study region and also includes water that drains to the public sewer from activities.

Rainfall is the most important natural source of water on an average Solapur district receives 550 mm rainfall annually. But the distribution of rainfall is uneven from year to year.

It is observed that the actual and average rainfall is very less in the year 2003 in all tahsils of Solapur district and it amounts 278.7 mm only. In the year 2003 Malshiras, Mohol, Karmala receives minimum rainfall. The data also shows that the rainfall was more in the year 2009 in all tahsils of Solapur district as compare to earlier years. In 2009 the average rainfall was 662.2 mm. In 2009 Mangalwedha, Malshiras, Pandharpur received maximum rainfall i.e. above 700 mm.

In the year 2012 the average rainfall again less within the district i.e. 412 mm. In most of the talukas of Solapur district availability of rainfall was very low i.e. 300 mm. In 2010 the highest rainfall was received in the Solapur district. Barshi and Madha have received maximum and sufficient amount of rainfall than the other tahsils in this year. But in 2012 the actual and average rainfall is very low. So the district suffer from the shortage of water.

Table - Actual and average tahsilwise rainfall in Solapur district in 2010, 2011 and 2012.
(Rainfall in mm)

Sr. No.	Taluka	2010	2011	2012
1	North Solapur	305.42	127.15	64.4
2	South Solapur	226.26	121.98	42.62
3	Barshi	279.3	118.72	84.75
4	Akkalkot	268.82	111.17	50.61
5	Mohol	243.15	128.49	32.86
6	Madha	319.09	100.18	81.57
7	Karmala	222.99	145.77	86.84
8	Pandharpur	231.74	92.9	54.79
9	Sangola	136.59	192.44	44.2
10	Malshiras	216.78	81.9	42.95
11	Mangalwedha	148.88	122.8	74.86
	Average	236.27	122.14	57.59

Source : Socio-economic review of solapur district 2015.



9	Sangola	155017	155017	4981	150035
10	Malshiras	136046	136046	27042	109004
11	Mangalwedha	164588	164588	26340	164324
		1484474	1478864	197286	1281578

Source – Groundwater survey and Development agency Govt. of Maharashtra (2009)

The Groundwater estimation was done by CGWB and GSDA based on the GEC-2009. As per the estimate the net annual groundwater availability is 1507.84mcm. The annual groundwater draft (the quantity of groundwater withdrawn from the groundwater reservoir) for all uses is 49.36. The net annual groundwater availability for future irrigation is 34158.39 mcm. Whereas the projected demand for domestic and industrial uses is 89.30 mcm for next 25 years. The net annual groundwater availability is to be apportioned between domestic, industrial and irrigation uses. Among these, as per the National Water Policy (NWP) 2002 requirement for domestic purpose is to be accorded priority. The requirement for domestic and industrial water supply is to be kept based on the population as projected to the year 2025. In short 150.78 mcm water is available from groundwater.

Conclusion-

Water resource plays an important role in development of Solapur district. Bhima River is the main River and important source of water to Solapur district. Man, Sina, Nira, Bhagavati, Bhend, Bori are the main tributaries of the River Bhima. Ujani is the important reservoir in the Solapur district. Koregaon, Ashti, Ekrukhet lakes are important for the distribution of water in Solapur district. One major project, 9 medium project and 38 minor project, 731 KTWs, 1140 percolation tanks, 9689 irrigation wells and 371 bhuyari storage dams are in the district. Apart from this 327709 dug wells and 65308 borewells. The Malshiras and Pandharpur tahsils have highest ground water comparatively other tahsils of Solapur district. Dug wells and Bore wells also important water distribution and measurement indicator of water in the Solapur district.

References

1. GSDA, Govt. of Maharashtra & CGWB, Nagpur Govt. of India: "Report on the the Dynamic Ground Water Resources of Maharashtra (2008-09 & 2011-12)
2. GW Survey and Development agency, Govt. of Maharashtra 2007-2008.
3. Nanaware A.H.(2007), " Changing Pattern of Agricultural Land Use and Agricultural Productivity in Solapur District: A Geographical Analysis", unpublished Ph.D Thesis, Dr. BAMU, Aurangabad. Pp-33.
4. Socio-Economic review of Solapur district 2003 to 2012.
5. Solapur gazetteer
6. Solapur irrigation report.



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

2019-2020
June-2019



EXPLORING WOMAN'S CONDITIONS IN ANITA DESAI'S *FASTING, FEASTING*

Mrs. Shaikh Nikhat Begum Mehmood Sab

Associate Professor & Head, Department of English, Union Education Society's,
Mahila Mahavidyalaya, Solapur.

ABSTRACT:

At the outset I would like to present two famous statements about the status of women- "Because you are women, people will force their thinking on you, their boundaries on you. They will tell you how to dress, how to behave, who you can meet where you can go. Don't live in the shadows of peoples' Judgment. Make your own choices in the light of your own wisdom" - Amitabh Bachchan.

"There are two powers in the world; one is the sword and the other is the pen. There is a great competition and rivalry between the two. There is a third power stronger than both, that is of women" - Muhammad Ali Jinnah.

Anita Desai is recognized as the first Indian author writing in English who addresses feminist themes focusing on the condition of women in India seriously. Unlike Nayantara Sehgal or Kamala Markandaya, who respond primarily to the external social and political circumstances of their female characters, Desai concentrates on the exploration of the psychological condition of the oppressed heroines who are at first entirely passive but revolt in the course of time.

From the early ages, women have always been exploited in the society. Women writers have written about their status and role in the society. Problems of women is the central theme of the most of the women writers. It is quite natural to explore the problems of the individual in the universal point of view. However, it is quite ridiculous to think of how a woman is being exploited in many ways even after seven decades of independent India.

Anita Desai's novel *Fasting, Feasting* describes the condition of women in general, their role in a family and the status of single women in particular. Uma, the protagonist of the novel is a spinster and her individual life is reduced to that of a maid in the family.

KEYWORDS: Exploration, Social, Political, Psychological Condition, Women, Sufferings, Problems, Exploited, Love, Betrayal, Status.

INTRODUCTION

Fasting, Feasting (2000), Desai's latest novel, is, above all, a work in which her main concern is the condition of women in India and is related to women in general. Anita Desai is widely recognized as

an Indian feminist writing in English. She deals with the situation of women in India, in a typical Indian manner and not in terms of feminism in the Western sense. In each of her novel she deals with different sets of values and sensitivity associated with its

main woman character. These different sets of values are alluded by Desai in the title itself. The title *Fasting, Feasting* clearly suggests 'fasting' and 'feasting' as two parts of the novel respectively. The first term 'fasting' refers to India as the country of fasting not only in the



religious aspect but also in the perspective of the 'force' which is inherent part of 'fasting' of many poor people in India and the second term refers to 'feasting' in The United States which is the country of abundance.

Anita Desai always tries to project the misery and problems of women in India. Anita Desai is one such writer, who tries to change the mindset and outlook of society towards women and to free them from the sufferings and hardships due to social conditions and to give her a status equal to men through her most absorbing and appealing work *Fasting, Feasting*. She deals with this theme seriously and always tries to highlight the problems of women in a male dominated society.

In *Fasting, Feasting* the central character is Uma, an Indian girl who lives in the household of her parents even when she is grown up. She represents an ordinary unmarried Indian woman who is forced to practice 'fasting'. These women don't have access to education and the free development of personality. Indian women novelists occupy a distinct place in Indian English literature. They describe the true condition of these women in their novels. They fearlessly state the loopholes of patriarchal society and describe in a vivid manner the plight of women in their writings. Anita Desai is among the best of these women novelists and one of India's foremost writers. She occupies a distinct position in Indian English literature.

The title of the novel suggests severity of 'fasting' and 'hunger' in the life of Indian women. Uma's awareness of her own hunger and suffering goes on increasing as she becomes more and more reactive to the complete or partial 'feasting' in the life of other women characters due to power of freedom and education. Her emotions and feelings are trampled by her family. Even her parents and 'Superiors' force her to 'fasting' part of the novel. It is only Arun the protagonist of the second part who becomes aware of her suffering. It is he who himself, contrary to her, is (forced into) 'feasting' as to education (and in the first part on the literary level of abundance), simply because he is a 'male child' in the family and he must get 'the best' in all respects, whether he deserves it or not.

Fasting, Feasting is, nevertheless above all a genuinely Indian novel. To understand this, the sophisticated pattern of the fabric of the novel, which determines the way the novel is built up around its main protagonists, must be disclosed. For this purpose, it is necessary to work with structures which have been formed by the cultural tradition to which the novel belongs.

The novel is divided into two parts. The first part is set in India and the second part is set in the USA. In the beginning of the novel, the readers are provided with a picture of a typical Indian house hold where all the love and care is bestowed to a boy child. In the family 'Papa' is the head of the family and 'Mama' is the helper who assists him in each and every walk of life. The family is ruled by customs and traditions and their sole aim is to marry off the girls and educate the boys. The fact of weight age being given to the boys was present in the society from the past generations, that is why Mama says - "In my day, girls in the family were not given sweets, nuts, good things to eat. If something special had been bought in the market, like sweets or nuts, it was given to the boys in the family." (Page-5)1 In this novel, Anita Desai presents both female and male characters to present the actual face of a patriarchal society. She presents various female characters in this novel, who are the victims of patriarchal society and mainly the character of a woman Uma, who suffers the most. Though at the end of the novel she realizes her condition and she tried different means and ways to break the patriarchal norms. But it was not enough to strike and cut down the age long tradition of male domination to gain freedom and liberation. Whereas, Arun brother of Uma enjoys full freedom only because of being a male.

Eldest daughter Uma has stayed at home to look after her parents, after two failed attempts of marriage, middle child Aruna has a successful marriage and has almost forgotten her roots, and the third a son named Arun has gone to the US where the women have the freedom to do as only like even though their real happiness is a matter of question. Mrs. Patton seems to find her happiness in the super market and Melanie, their daughter takes comfort in her bulimia which seems to give her a kind of relief from the strains of her life (page 134). 2

The novel introduces us to Indian contemporary middle-class urban Hindu (most probably Brahmin) nuclear (not joint) family. The story revolves around the life of a woman in general and the

life of an unmarried woman in particular. Uma's pilgrimage, then, begins shortly after the birth of her brother Arun when she is in her early teens. "A son, a son," is heard everywhere in the house; when pronounced it can be confused with the sound of, 'sun'. The atmosphere of the household is changing, Mama is proud to have fulfilled her life's role by giving birth to a son, Papa is proud to have been able to produce, finally, a male offspring and lets Mama into the realm of patriarchal structures, although only as an instrument as pointed out previously. Mama and Papa do not allow Uma, who has previously been sent to a Catholic convent school, to continue her education and she, although not a good student, is an eager one and opposes fervently her parents' decision. Now that there is a son in the family, "there is no need" (a famous phrase of Papa) to waste money and education as such on girls which will be necessary to spend on the boy.

Another character whose identity is submerged in the family is Uma's cousin Anamika. Anamika is the graceful and every one's favorite in the family. But unfortunately, even though she won a scholarship to Oxford, her parents didn't even consider allowing her to go just because she is a girl. And after her marriage to a rich, educated man she spent her entire time in the kitchen and had a miscarriage due to the beatings by her in-laws. The miscarriage made her infertile and her value was that of damaged goods with no perfection. When Uma hopes for Anamika's return to her home, Mama says-

"How can she be happy if she is sent home? What will people say? What will they think?" (page-72).

And when Uma showed her indifference to the views of people in the society, once again Mama comes up with her view-

"Don't talk like that, 'Mama scolded them."

I don't want to hear all these modern ideas. Is this what you learnt from the nuns at the convent. (Page-72)

So, it is very clear from the sayings of 'Mama' -what woman thinks about woman, what is their role in the society and their contribution towards the family. Ironically, Mama and other woman characters in the novel have no sympathy for Uma or Anamika even though they themselves belong to the same category.

Consequently, Uma feels she has to escape but she does not know yet exactly what for. It is the 'secret chambers' of the inner world what Uma cherishes, for the outer world which is dreary and grey. She is progressively introduced into the inner world of Hindu legends and tales by Mira-masi, an ardent worshiper of Shiva. Mira-masi's stories show the dual character of the woman's fate: one of the heroines is a victim, dies after having been abandoned by her husband; the other is a poetess, independent, struggling for recognition; in the meantime she is considered a mad woman (allusion to Mira-Bai, a legendary 16th century poet and Krishna's devotee known for her rebellious attitude). With Mira-masi, Uma feels that she is "admitted into some sanctuary that had been previously closed to her." The nuns at St. Mary's had not admitted her into their chapel, where she had always wanted to go. Now, "She was counted in, a member, although of what, she could not say."

From the point of view of fasting and feasting, Uma's pilgrimage is that of hunger. The items of food are used more significantly as markers of Arun's journey. Food being of significant importance in Indian culture, ways of disposing it have been strictly prescribed since the time of Manu (a supposed ancient law-giver, between 200 B.C. 200 A.D.) and food has been closely related to matters of ritual hierarchy, and worship. Thus, the motives of food are favored and often employed by Indian authors. Food in modern Indian literature is used to stress the importance of what the particular literary work is dealing with and is often associated with social problems. In *Fasting, Feasting* this is particularly apparent when it concerns the introductory passages of each part respectively, which deal with the distribution of power and its hierarchy.

Uma's behavior, however, comes, before all, very close to how a pativrata (the ideal Hindu wife) is supposed to act, almost again, because she stays unmarried. In India, more than in Western Cultures, a woman lives for the sake of others, namely for the sake of her husband. Nabar informs us Brihaspati's (a law giver between 300-500A.D.) definition of 'pativrata': "She is someone whose state of mind

reflects that of her husband. She shares his distress, his delight, grows sickly and dresses unattractively in his absence, and dies when he does."

Within the huge body of Hindu mythology numerous representations women exist and they have different names, but in each myth, she plays the role of the loyal wife. She is meek, docile, trusting, faithful and forgiving. The goal and fulfillment of the woman's life is the marriage and the birth of (male) children: "Woman is created only to enable man to continue his species through sons and gods." This is deeply rooted in the Hindu socio-religious code as fulfillment of a woman's 'dharma' (duty, law) and has a direct impact on the perception of her future lives' representations.

An unmarried (and subsequently childless) woman has even a lower status than a widow. An unmarried woman living in the house of her parents can be neither a 'pativrata' nor an angel, do what she will, and so she is condemned to be a monstrous outcast. The description is fitting: Uma, impresses us in her appearance of blinking her myopic eyes behind the thick glasses. However, she is not found attractive either by her family or by any of the possible suitors and desirous husbands. When still at school, she fails in almost all exams, grown up she is often reprimanded for being childish, slow, and "always sleeping" (*Fasting, Feasting* -101).

Arun himself, although receiving a first-class education, is starving because he has difficulties to adapt to the American 'diet' both literal and metaphorical, the food and the American culture.

Anita Desai has made a clear distinction between the male and female characters in the novel. The man is an epitome of freedom while the woman is struggling for freedom and identity. They are discriminated only on gender bias. To quote Simone de Beauvoir-

"One is not born, but rather becomes, a woman."
(*The Second Sex*)

Desai is often known for her sensitive portrayal of the inner life of her female characters successfully portrays the woman characters in the novel. The stark reality along with the shocking and sad story of woman's suffering is presented through the characters of Uma and Anamika.

In view of the analysis of the story of the novel and appropriate quotations cited above, we can state with ample confidence that Anita Desai is one of the most promising Indian Woman Novelist who has delineated the condition of women in India in general and educated women in particular in most convincing manner. All of us will agree that women have a long way to go for getting equal position with men not only in India but anywhere in the world. However, the condition of Indian women is more worrisome because they still have no voice in their respective families like the central character Uma in *Fasting, Feasting*. The researcher herself being a woman has total sympathy and empathy for Uma and Anamika.

REFERENCES:

- 1) Jain, Jasbir. *Stairs to the Attic: The Novels of Anita Desai*. Jaipur: Printwell, 1987.
- 2) Desai, Anita. *Fasting, Feasting*. London: Vintage, 1999.
- 3) Daiches, David. *The Novel and the Modern World*. Chicago: University of Chicago Press, 1970.
- 4) Robinson, Andrew. 'Interview: Anita Desai' *Saturday Statesman*, 13 August: 2, 1988.
- 5) Batra, Shakti. *Anita Desai's Fasting Feasting*. New Delhi: Surjeet Publications, 2000.
- 6) Liz, Sam. *A View of Two Different Cultures*. Independent Publishers, Chennai, 1999.

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.2331(UIF)

Volume - 7 | Issue - 10 | July - 2018

REVIEW OF RESEARCH

International Online Multidisciplinary Journal



Bahadur Shah Zafar Ka Shaeerana Muqam

Dr. Shaikh Farzana Md. Husain

U.E.S. Mahila Maha Viddyalae Solapur

Dr. Shaikh Farzana Md. Husain

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولاپور)

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

بچ میں پردہ دوئی کا تھا جو حائل اٹھ گیا
ایسا کچھ دیکھا کہ دنیا سے مراد ل اٹھ گیا
اے ظفر کیا پوچھتا ہے بے گناہ و پر گناہ
اٹھ گیا اب تو جدھر بھی دست قائل اٹھ گیا

بہادر شاہ ظفر کا پورا نام 'ابو ظفر سراج الدین محمد بہادر شاہ' تھا۔ اردو زبان میں 'ظفر' تخلص کرتے تھے۔ وہ معین الدین اکبر ثانی کی راجپوت ہندو بیوی 'لال بائی' کے بطن سے 24 اکتوبر 1775ء کو پیدا ہوئے۔ والدین کی اولین اولاد ہونے کی وجہ سے آنکھوں کا تارا تھے۔ ابتدائی تعلیم شہزادوں کی طرز پر ہی ہوئی، جو ہونا طے تھی۔ ان کے پہلے اتالیق حافظ ابراہیم تھے، جن سے فارسی اور عربی کی تعلیم حاصل کی۔ دادا اور والد سے روٹے میں شعر کہنے کا ہنر ملا تھا۔ شہزادگی کے زمانے سے ہی شعر کہتے تھے، شاعری کی ابتدائی تعلیم و اصلاح شاہ نصیر اور کاظم علی سے حاصل کی، ان کے بعد ذوق اور غالب کی شاگردی میں بھی رہے۔ شاعری کے علاوہ خطاطی کا بھی اشتیاق رکھتے تھے۔ انہوں نے جب شاعری کے لیے ہوش سنبھالا تو میر تقی میر بھی موجود تھے لیکن بہت ضعیف ہو چکے تھے، جبکہ مرزا مظہر

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

جاں جاناں، میر درد، مرزا رفیع سودا کا دور گزر چکا تھا۔ وہ ذوق اور غالب کے زیر سایہ شاعری کی تربیت پارہے تھے۔

تمام تر بے سرو سامانی کے باوجود انگریز سرکار کی طرف سے بادشاہ کی علامتی حیثیت اور دربار کا مصنوعی وقار قائم تھا۔ وہ 30 ستمبر 1837ء کو 63 سال کی عمر میں تخت پر براجمان ہوئے تھے۔ دہلی پر شب خون مارے جانے کے بعد جنگ آزادی کا نعرہ مستانہ دربار کی سازشیں، انگریزوں کا دوبارہ اقتدار پر قبضہ اور ان پر چلنے والے مقدمے میں سزا کے طور پر جلا وطن کرنے کا فرمان، ایک پورا عہد ہے جس کو بیان کرنے کے لیے الگ دفتر درکار ہے۔

بہادر شاہ ظفر کے ساتھ بطور شاعر بھی نا انصافی روا رکھی گئی۔ وہ اپنے دور کے معروف شعرا میں سے ایک تھے جن کا شمار اب کلاسیکی شاعروں میں ہوتا ہے۔ انہیں بد قسمتی سے وہ مقام نہیں ملا جس کے وہ حق دار تھے۔ ان کی شاعرانہ عظمت کو نہ پہچاننے کی ایک وجہ ادبی نقاد بھی تھے۔ اردو تنقید کے 2 بڑے نقاد اور ایک دوسرے کے ہم عصر مولانا محمد حسین آزاد اور مولانا الطاف حسین حالی تھے، جنہوں نے بہادر شاہ ظفر کو بطور شاعر نظر انداز کیا۔ رام بابو سکسینہ کی تاریخ اردو میں بھی بہادر شاہ ظفر کا تذکرہ نہیں ملتا البتہ ڈاکٹر جمیل جالبی نے تاریخ ادب اردو میں ان کا ذکر تفصیل سے کیا ہے۔

بعض نقادوں نے ان کے کلام کو استاد ذوق سے منسوب کیا کیونکہ وہ ان کے کلام کی اصلاح کرتے تھے لیکن کئی نے اس امکان کو مسترد بھی کیا ہے۔ ڈاکٹر جمیل جالبی نے

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

بہادر شاہ ظفر کی شاعری کو ان کی آپ بیتی کی مانند قرار دیا، جس کا اندازہ ان کی شاعری میں درج مضامین سے بھی ہوتا ہے جس میں زندگی کے سارے رنگ نمایاں ہیں لیکن یاسیت اور جمالیات کے رنگوں کا درجہ سب سے بلند ہے۔

معروف ادبی محقق منشی امیر احمد علوی کے مطابق بہادر شاہ ظفر کے 5 دیوان تھے، ایک ہنگاموں کی نذر ہو گیا جو باقی 4 محفوظ رہ گئے انہیں لکھنؤ سے منشی نول کشور نے شائع کیا۔ اب تو پاکستان اور ہندوستان میں کئی ادارے ان کا مکمل اور جامع دیوان شائع کر چکے ہیں۔

زبان سے رغبت اور تصوف سے محبت کے نتیجے میں ان کے نام سے دیگر 2 کتابیں بھی منسوب کی جاتی ہیں، جس میں سے ایک کا نام 'تالیفات ابوظفیری' جبکہ دوسری 'نسیان تصوف' ہے۔ یہ ان کی 2 نثری تصنیفات تھیں جن میں سے پہلی کتاب تاریخ کے اوراق میں گمشدہ ہے۔ پاک و ہند میں ان کے کلام پر کام جاری ہے، ان پر ہندوستان اور آسٹریلیا میں ہونے والی 2 ڈاکٹریٹ کے علاوہ ان کی شخصیت پر دنیا بھر میں بہت ساری عمدہ کتابیں لکھی گئی ہیں، جن میں سے چند ایک بہت مشہور ہیں، مثال کے طور پر ولیم ڈی ریپل کی کتاب 'وی اسٹ مغل' جو دنیا بھر میں اس موضوع پر مقبول کتاب ہے۔

بہادر شاہ ظفر بطور شاعر اپنے عہد کی انگریز سرکار کی جبرمانہ سرگرمیوں کو شاعری کے صفحات پر منتقل کرتے رہے۔ انگریزوں کی قید میں تو انہیں قلم دوات بھی میسر نہ تھی لیکن ان کے درود یوازہ اور کونے کے ٹکڑے ہی ان کی لوحِ فن تھے۔ وہ ابتدائی زندگی کے زمانوں کی

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

عیش رقم کرتے کرتے حالات کے جبر، سماج کی تلخیوں اور ذات پر بیٹنے والے پے در پے
 ساخت کے ہاتھوں رومانویت سے یاسیت اور درد کے شاعر بن گئے، جلاوطنی نے اس کو
 مزید توڑ دیا، جس پر انہوں نے وہ کلام لکھا جس میں آہیں اور سسکیاں محسوس کی جاسکتی ہیں
 کہ کس طرح مثل سلطنت اس منظر نامے پر دم دے رہی تھی۔

نہ کسی کی آنکھ کا نور ہوں، نہ کسی کے دل کا قرار ہوں

جو کسی کے کام نہ آسکے، میں وہ ایک مشت غبار ہوں

بہادر شاہ ظفر کو شعر گوئی سے ایک فطری تعلق تھا۔ ابتدا میں شاہ نصیر کے شاگرد
 تھے۔ کچھ عرصہ کا ظلم حسین بے قرار سے بھی اصلاح لی اور آخر میں ذوق اور غالب کے
 شاگرد ہوئے۔ شاہ نصیر کی شاگردی سے ظفر کے کلام میں پختگی آگئی۔ شاہ نصیر کی پیروی
 کرتے ہوئے اور اپنا مخصوص رنگ قائم رکھتے ہوئے اپنے استاد سے کہیں آگے نکل گئے۔
 ظفر نے سنگاخ زمینوں میں بہت بڑی تعداد میں زور دار غزلیں کہی ہیں۔ چونکہ ذوق خود
 بھی شاہ نصیر کے شاگرد تھے اور ایک حد تک مقلد بھی، اس وجہ سے ظفر اور ذوق کے کلام
 میں کئی باتیں مشترک نظر آتی ہیں۔ لیکن ظفر محاورہ بندی کے استعمال میں ذوق سے بہتر
 شاعر دکھائی دیتے ہیں۔

ظفر کے کلام میں وہ تمام خصوصیات پائی جاتی ہیں جو ان کے عصری شعراء کے
 ہاں موجود تھیں۔ شکوہ الفاظ، وہیما پن، عمدہ انداز بیان، رعایت لفظی اور محاورہ بندی ظفر کے
 کلام کی چند خصوصیات میں سے ہیں۔ ظفر کی شاعری پر روایتی اثرات بہت گہرے ہیں،

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

کہیں کہیں ان اثرات کو نئے انداز سے بیان کرتے دکھائی دیتے ہیں اور بعض مقامات پر روایت ہی کو مزید پکا اور مضبوط کرتے ہیں۔ کچھ اشعار ملاحظہ ہوں جن میں آپ کو روایتی اثرات صاف اور گہرے دکھائی دیں گے۔

لے گیا ایک ہی بار آنے میں دل اپنا ظفر
ہوگا کیا دیکھیے جب وہ کئی بار آوے گا

ایک نزل کے چند اشعار:

محبت چاہیے باہم ہمیں بھی ہو تمہیں بھی ہو
خوشی ہو اس میں یا ہو غم، ہمیں بھی ہو تمہیں بھی ہو
ہم اپنا عشق چکا گئیں تم اپنا حسن چکاؤ
کہ حیراں دیکھ کر عالم، ہمیں بھی ہو تمہیں بھی ہو
ظفر سے کہتا ہے مجنوں کہیں درد دل مخزوں
جو غم سے فرصت اب اک دم ہمیں بھی ہو تمہیں بھی ہو

ظفر کے کلام میں بہت سی ایسی خصوصیات ہیں جو اس زمانے کو شاعری میں عام تھیں۔ ان کے ہاں خوبصورت تشبیہ و استعارے کا استعمال ملتا ہے۔ مجاورت بھی مناسب انداز سے استعمال کیے گئے ہیں۔ ظفر کے ہاں احساس جمال سوائے مومن خان مومن کے دیگر معاصر شعراء سے بڑھ کر ہے۔

ظفر کے اشعار میں دلکشی ہے اور اثر پذیر بھی۔

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

کھول کر زلف سیراں نے جو دیکھا آئینہ
صاف دریا پر نظر کالی گھٹاسی آگئی
آگے تو شیوے نہ ہوں گے ایسے چرخ پیر کے
شاید اب پیری کے باعث بے حواسی آگئی
زلف اس کی ہم سے بل کرنے لگی ناحق
ورنہ کوئی وجہ ایسی کج ادائیگی نہ تھی

ظفر نے فارسی الفاظ، بندشوں اور تراکیب سے غیر معمولی فائدہ اٹھایا لیکن ان کے استعمال میں اعتدال کا دامن نہیں چھوڑا اور شمار سبھ مرغوب بت مشکل پسند آیا * تک نہیں پہنچے۔ ان کے کلام میں میر کا ساجزن و ملال بھی ہے اور سوز و گداز کا گہرا رنگ بھی۔ یہ ان کے ذاتی حالات کی پیداوار ہے۔ اسکی ایک اور وجہ دبستان دہلی کا وہ مخصوص رنگ ہے جہاں دہلی کے شعراء کو غم سے عشق تھا۔ اس دور کی شاعری میں آہ و زاری، نالہ و فریاد اور رونے دھونے کے مناظر عام دکھائی دیتے ہیں۔

ضروری ہے کہ بہادر شاہ ظفر کی شاعری اور زندگی پر تحقیق کی جا *۔ اب تک بہادر شاہ ظفر پر ہندوستان میں اردو میں ایک پی ایچ ڈی مقالہ لکھا گیا ہے۔ ایک پی ایچ ڈی مقالہ آسٹریلیا میں انگریزی زبان میں لکھا گیا ہے لیکن اسکی نوعیت مختلف ہے۔ ۲۰۰۶ میں سکاٹ لینڈ سے تعلق رکھنے والے مشہور معنی و لیم ولریمیل نے آخری مغل * کے عنوان سے بہادر شاہ ظفر پر انگریزی میں ایک بہترین کتاب تحریر کی ہے۔ بہادر شاہ ظفر اور اردو

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام

شاعری کے لیے ان کی خدمات پر وہ یوں رقمطراز ہیں

Shah Zafar was the last Mughal emperor of Delhi, and one of the most talented, tolerant and likable of his remarkable dynasty. Despite political decline of the Mughals, he succeeded in creating around him a court culture of unparalleled brilliance, and, partly through his patronage, there took place in Delhi one of the greatest literary renaissances in Indian history.

Zafar was a mystic, poet and calligrapher of great charm and accomplishment, but his achievement was to nourish the talents of India's greatest love poet, Ghalib, and his rival, Zauq.

اپنے دور کے، غالب اور مومن کے بعد، بہادر شاہ ظفر یقیناً تیسرے بڑے شاعر

ہیں۔ شاہ ظفر کے اس مشہور شعر کے ساتھ اجازت چاہتی ہوں،

نہ پوچھ مجھ سے ظفر مری تو حقیقت حال

اگر کہوں گا ابھی تجھ کو میں رلا دوں گا

☆☆☆

ڈاکٹر فرزانہ امیر شیخ

بہادر شاہ ظفر کا شاعرانہ مقام



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.2331(UIF)

Review of Research

*This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: **Dr. Shaikh Farzana Md. Husain** Topic:-**Bahadur Shah Zafar Ka Shaeerana Muqam** .College:-**U.E.S. Mahila Maha Vidyayalae Solapur**. The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of **July** 2018.*



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 7 | Issue - 12 | September - 2018

REVIEW OF RESEARCH

International Online Multidisciplinary Journal



Ghalib Kee Mushkil Psandi

Dr. Shaikh Farzana Md. Husain

U.E.S. Mahila Maha Vidyayalae Solapur

Dr. Shaikh Farzana Md. Husain

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (سولہ پور)

غالب کی مشکل پسندی

غالب کی مشکل پسندی نفسیات کے نقطہ نظر سے دیکھا جائے تو انسانی ذہن بہت سے پیچیدہ مسائل کی آماجگاہ نظر آتا ہے۔ ان کا تجزیہ کرنا اور مسائل کا حل تلاش کرنا ایک عام آدمی کے بس کی بات نہیں۔ اس لیے عام آدمی کے تجزیوں کو اہمیت نہیں دی جاتی لیکن جب یہ بات ہمیں کسی شاعر کی شعری 'منصور کے فن پارے' یا کسی ادیب کی تحریر میں نظر آتی ہے تو ہم حیران رہ جاتے ہیں اور ہمیں لگتا ہے کہ اس نے ہمارے دل کی بات کہہ دی ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ انسانی ذہن تک رسائی بہت مشکل ہے۔ مگر نفسیات کو سمجھنا اور اس سے فن پارہ تشکیل دے دینا خالصتاً 'فن کی معراج' ہے۔ اردو دان طبقہ بجا طور پر "غالب" کو اردو غزل کا سب سے بڑا شاعر تسلیم کرتے ہیں۔ غالب نفسیاتی لحاظ سے مشکل پسند شاعر تھے۔ ان کی غزلیں ان کی اہم نفسیاتی زندگی کی تصویریں ہیں شاید اسی نفسیاتی پیچیدگی نے ان میں مشکل پسندی کوٹ کوٹ کر بھر دی۔ شعر کا مضمون ہو یا الفاظ کی تراکیب اسلوب بیان ہو یا بجزوں کا چناؤ غالب نے نہایت آسانی سے مشکل پسندی کو برتنا۔ غالب کے کلام کا جائزہ ہمیں بتاتا ہے کہ لغت ذات اور محبوب کی چاہ نے ان کے

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

شعروں میں مشکل پسندی کے خدو خال ابھارے۔ اور وہ اپنی عظمت کا احساس دلاتے چلے گئے۔ ابتدائے شاعری ہی میں شعور اور لاشعور میں پیدا ہونے والے سوالات سے شعری تخلیق فاری تراکیب کا استعمال غالب اپنی عظمت کا سکہ جاتے نظر آتے ہیں۔

نقش فریادی ہے کس کی شوخی تحریر کا
کافذی ہے چیر بن ہر پیکر تصویر کا
بسکہ ہوں غالب اسیری میں بھی آتش زہیر پا
سوئے آتش دیدہ ہے حلقہ مری زنجیر کا

ان کی ابتدائی شاعری میں بیدل کا رنگ نظر آتا ہے۔ مگر جب وہ عربی اور نظیری سے ہوتے ہوئے میر کی شاعری سے متاثر ہوئے تو ساوگی اور سہل پسندی کی انتہا پر پہنچ گئے۔ کبھی وہ کہتے تھے کہ ان کا اصل کلام فارسی کلام ہے مگر جب اردو کلام میں ان کا نام ہر جگہ گونجنے لگا تو غالب کو فارسی کی مشکل پسندی سے میر کی سہل نگاری کی طرف سفر کرنا پڑا مگر مزہ مارا دل مشکل پسندی کو ترک کرنے کا۔ ایک تنقید نگار کا کہنا ہے کہ غالب کی شاعری کا ارتقا بہت تیزی سے ہوا۔ وہ بہت سے شاعروں سے متاثر ہوئے مگر میر کی طرف سب سے آخر میں آئے۔ غالب کی شاعری کی نمایاں خصوصیات میں سے ایک خوبی یہ بھی ہے کہ ان کی شاعری کو جس دور میں بھی تنقید کی نظر سے دیکھا گیا وہ ہر معیار پر پورا اترتا۔ ادبی تحریکوں نے اپنی کسوٹیوں پر پرکھا جدید تخلیقی تصورات بھی بہت نمایاں رہے مگر کوئے ان کی شہرت کو داغ نہ لگا سکا۔ اردو ادب کی تاریخ میں ان کا ہمت مسلم ہے۔ غالب کے ادبی دشمن بھی ان

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

کی عظمت اور عظمت کے معترف رہے اپنے عصر سے دور حاضر تک ان کی شہرت بڑھتی رہی کبھی کم نہ ہوئی۔ آگرہ میں 27 دسمبر 1797ء میں اسد اللہ پیدا ہوئے۔ 13 سال کی عمر میں شادی ہوئی خاندانی عظمت اور نسلی برتری کا احساس غالب رہا۔ آمدنی کا کوئی خاص ذریعہ نہ تھا پھر بھی آن بان سے رہے۔ مے نوشی اور جوئے کے شوقین تھے گرفتار بھی ہوئے مغل دربار سے بھی وابستہ رہے۔ گھریلو زندگی ہمیشہ کبھی نہ سلینے اور نہ سلجانے کا معما بنی رہی۔ جس کا اظہار ان کے لطائف اور شاعری میں بھی ہوتا ہے۔ مفلوک الحال 'مقروض' خود پسند 'حسن پرست' نفسیاتی مسائل کو موضوع سخن بنانا 'محمومیوں کے ساتھ ساتھ زندہ دلی کی تصویر پیش کرنا اس عظیم شاعر کے مقام کو متعین کرتے ہیں۔ یہی وہ مقام ہے کہ جہاں ہر شاعر پہنچنے کا آرزو مند ہے مگر یہ مقام غالب کے علاوہ کسی کو نہ مل سکا۔ ان کی شاعری میں جہاں سدگی اور موضوعات کا تنوع نظر آتا ہے وہیں خیال کی بلندی اور تراکیب کا اچھوتا پن بھی نمایاں ہے۔ ان کی مشکل پسندی میں بھی ایک سہل پرستی ہے جو ہر دور کے انسان کی زندگی کے تصورات کو منعکس کرتی ہے تبھی ہر دور کا قاری ان کا گرویدہ ہے اردو ادب کا یہ عظیم شاعر 15 فروری 1869ء کو دارقانی سے کوچ کر گیا۔

درد منت کش دوا نہ ہوا
میں نہ اچھا ہوا برا نہ ہوا
کہنے شیریں ہیں ترے لب کہ ترا رقیب
گالیاں کھا کے بے مزہ نہ ہوا

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

کچھ تو پڑھیے کہ لوگ کہتے ہیں

آج غالب غزل سرا نہ ہوا

غالب کے عہد میں ہندوستان کی غیر مستحکم حکومت مغلیہ کا شیرازہ بکھر رہا تھا جس میں ہند ایرانی اثرات سے مملو تمدن آخری سانس لے رہا تھا۔ دوسری طرف ایسٹ انڈیا کمپنی کی عملداری بڑھتی جا رہی تھی گویا زندگی اور تمدنی انقلاب کے نئے نئے تقاضوں سے ہندوستانی عوام نہرو آ رہے تھے۔ ان مایوسی کن حالات میں غالب نے اپنے کلام میں تخیل کی بلندی اور اپنے منفرد اور اچھوتے طرز بیان سے اردو کو ایک نئی قسم کی شاعری اور فلسفہ حیات سے روشناس کروایا، دراصل غالب کی شاعری کا تقاضا یہ ہے کہ اسے متعدد بار غائر مطالعہ کے بعد ہی سمجھ میں آتی ہے اور مرزا غالب کا کلام دنیائے ادب کی وحدت کا جزو لاینفک بن گیا ہے عمومی طور پر غالب ایک مشکل پسند اور فکری شاعر سمجھے جاتے ہیں آپ بھی دیکھ لیجئے:

آگہی دام شنیدن جس قدر چاہے بچھائے

مدعا عتقا ہے اپنے عالم تقریر کا

ہو گرمی نشاط تصور سے نغمہ شیخ

میں عندلیب گلشن نا آفریدہ ہوں

دام شنیدن، گرمی نشاط تصور اور گلشن نا آفریدہ جیسے ناما نوس تراکیب کی بابت غالب کی شاعری مشکل سمجھی گئی۔ اس طرح نادر تشبیہات اور حشر خیز خیالات کو عہد غالب میں اسی زمرہ میں رکھا گیا تھا۔

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

تھامیں گلدشت احباب کی بندش کی گیاہ

متفرق ہوئے میر سے رفقا، میر سے بعد

الغرض غالب کی شاعری کے تجزیہ نگاروں نے غالب کی مشکل پسندی اور ان کے خیالات کی انفرادیت کو ان کی خوش پرستی، انفرادیت پسندی سے تعبیر کیا جاتا رہا، لیکن یہ مشکل پسندی دراصل جذبات و احساسات کی تہہ داری ہے۔ ان کے گرد و پیش کے خیالات، جبر و اختیار، واقعات کی کشاکش اور ان کی زندگی کی تمنیاں انہیں فلسفہ زندگی کی جمالیات اور معیارات کا دوسرے ہم عصر شعراء سے الگ الگ شناخت عطا کی جو مشکل پسندی (Thinking poetry) ہے جو غور و فکر کرنے والے ادب کی بنیاد گزار بنی ہے۔ غالب کی ایک اور فکری عنصر تصوف کو مدنظر فرمائیے:

نہ تھا کچھ تو خدا تھا کچھ نہ ہوتا تو خدا ہوتا

ذہب یا مجھ کو ہونے نے، شد میں ہوتا تو کیا ہوتا

مندرجہ بالا شعر بھارت کی دشوار ترکیب، استعارات کی جوہیدگی، نقطہ نظر، فلسفہ ادب اور زاویہ نگاہ کی دین ہے۔ اسی لئے تو وہ خود کہتے ہیں:

ہیں اور بھی دنیا میں سخن ور بہت اچھے

کہتے ہیں کہ غالب کا ہے انداز بیاں اور

غالب نے اپنی شاعری کو فکری اور فلسفیانہ رنگ روپ دیا ہے۔ گویا تہذیب و ثقافت کی ایک طویل ارتقائی سفر کو اپنی شاعری میں سمودیا ہے۔ شاعری بنیادی طور پر جذبات پر مبنی

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

ہوتی ہے لیکن غالب کی شاعری میں خیالات اور جذبات کے ساتھ فکر بھی رواں دواں نظر آتی ہے۔ اس فکری عنصر نے متعدد نتائج پیدا کئے ہیں۔

غالب اس لیے مشکل گو تھے کہ وہ اپنی فطرت سے مجبور تھے۔ اس بات کو یوں بھی کہا جاسکتا ہے کہ چونکہ ان کی فطرت میں منفرد ہونے کا تقاضا شدت سے ودیعت ہوا تھا، اس لیے انھوں نے خود کو دوسروں سے مختلف و ممتاز کرنے کے لیے ایسی راہ جان بوجھ کر اختیار کی جو مذاق عام کے منافی تھی۔ گویا انھوں نے ایک منصوبہ بنایا کہ مجھے دوسروں کے مقابلے میں مختلف شعر کہنا ہیں اور اس منصوبے کو عملی جامہ پہنانے کے لیے انھوں نے مروجہ اسلوب کے برخلاف ایک پیچیدہ اسلوب اختیار کیا۔ محمد حسین آزاد کی تشخیص یہی ہے اور بہت صحیح ہے لیکن یہ تشخیص اپنی منطقی انتہا تک نہیں لے جائے گئی ہے، کیونکہ سوال یہ اٹھتا ہے کہ غالب نے مختلف ہونے کے لیے پیچیدہ اسلوب ہی کیوں اختیار کیا؟

اس کا مطلب یہ بھی نہیں کہ مشکل شعر خراب ہوتا ہے اور آسان شعر خراب تر۔ آسان (یعنی مبہم کی ضد) شعر بھی اچھا اور بڑا شعر ہو سکتا ہے۔ مشکل شعر بھی اچھا ہو سکتا ہے، لیکن مبہم شعر اور مشکل شعر ہم معنی اصطلاحات نہیں ہیں۔ غالب کو مشکل گو کہہ کر مال دینے کے معنی یہ ہیں کہ انھیں غزل میں قصیدہ نگار فرض کیا جائے یا انہیں الفاظ کو کرا کرا کر زبردستی ایک بھونڈی شعری عمارت تعمیر کرنے کا مجرم ٹھہرایا جائے۔

ایلیزبتھ بیرٹ براؤٹنگ نے اپنے شوہر کے بارے میں کہا تھا کہ بہت سے شاعر چسکتی دھوپ میں کھڑا ہونا پسند کرتے ہیں اور بہت سوں کو تاریک گھر کی نیم روشنی اچھی لگتی

ڈاکٹر فرزانہ امیر شیخ

غالب کی مشکل پسندی

ہے۔ میرا شوہر موخر الذکر میں سے تھا۔ تاریخ نے عموماً یہ فیصلہ کیا ہے کہ دھوپ میں کھڑے ہونے والوں کے شعر بہتر تھے۔ لیکن ایلز بیچہ نے ایک تیسری قسم کے شعر کو نظر انداز کر دیا تھا۔ یعنی وہ شاعر جو تار یک گھر کی نیم روشنی میں رہتے ہیں لیکن ان کا وجود نیم روشنی کو دھوپ میں تبدیل کر دیتا ہے۔ غالب انہیں میں سے تھے۔

غالب نے معشوق کو مشکل پسند کہا ہے، لہذا دیکھنا یہ ہے کہ مشکل پسندی کی تعریف انہوں نے کیا کی ہے۔ یہ بات طے کرنے کے بعد کہ غالب مشکل پسند کیوں تھے اور یہ کہنے کے بعد کہ ان کا اشکال دراصل صد جہت ابہام کا مرہون منت ہے، اب یہ دیکھنا ضروری ہے کہ ان کے شعر کی وہ داخلی مشینیاں کیا ہے جس کے ذریعہ سے یہ صد جہت ابہام بروئے کار آتا ہے،

شمار سجد مرغوب بت مشکل پسند آیا
تماشائے بہ یک کف برون صد دل پسند آیا

معشوق کو بہ یک کف برون صد دل کی اداس خوش آتی ہے۔ اپنی اس ادا کو ظاہر کرنے کے لیے وہ مجرد الفاظ سے کام نہیں لیتا، بلکہ ہاتھ میں عقین سرخ کی تسبیح لے لیتا ہے۔ گویا وہ اپنی سرشت کا استعاراتی اظہار کرتا ہے۔ یہ کہنے کے بجائے کہ میں مشکل پسند بھی ہوں اور ایک ہاتھ سے سیکڑوں دل اڑالے جانا مجھے اچھا لگتا ہے، وہ اپنے ہاتھوں میں تسبیح لے کر بہ یک وقت دو حقائق کا اظہار کرتا ہے، اور ایسا اظہار جو بابا ۱۱۱۔ طرافاظ کا مرہون منت نہیں ہے۔ اس طرح استعاراتی انداز بیان مشکل پسندی کا معیار ٹھہرا۔ استعاراتی انداز بیان سے جو فوائد

ڈاکٹر فرزانہ امیم شیخ

غالب کی مشکل پسندی

حاصل ہوتے ہیں ان میں سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ استعارہ اس حقیقت سے بڑا ہوتا ہے جس کے لیے وہ لا گیا ہوتا ہے، چنانچہ جس حقیقت کی نمائندگی کرنے کے لیے استعارہ لایا جاتا ہے، وہ حقیقت اپنے عمومی Dimension سے بڑی ہو جاتی ہے، یا اس میں کسی ایسی جہت کا اضافہ ہو جاتا ہے جو اس میں پہلے نہیں تھی۔

☆☆☆

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ

غالب کی مشکل پسندی



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of

*Dr./Shri./Smt.: **Dr. Shaikh Farzana Md. Husain** Topic:-**Ghalib Kee Mushkil Psandi.***

*College:- **U.E.S. Mahila Maha Viddyalae Solapur.** The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of **Sept** 2018.*



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

سہ ماہی
اردو

امراؤتی

ISSN 2278-229X

ملیہ
وسیم فرحت (ملک)

UGC CARE LISTED
JOURNAL

ISSN 2278-229X

اس شمارے کے قلم کار

بابِ نثر شمس الرحمن فاروقی، محف اقبال توسیقی، فرزندانہ ایم شیخ، اسیم کاویانی، نصرت بخاری

بابِ نظم ابرار نعیمی، ارمان نجمی، منظور ندیم، شاہد پٹھان، وفا بیودوی

افسانے علی حسین شائق، فرحین چوہدری، ناصر خان ناصر

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام ہے فرحت
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے
بیادِ ظلیل فرحت کارِ نجومی (مرحوم)

UGC CARE
LISTED JOURNAL

امراتی



سہ ماہی

یو جی سی
منظور شدہ

اکتوبر تا دسمبر ۲۰۱۸

امراتی، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۴

جلد نمبر ۷

سرپرست : جناب منور پیر بھائی (پونہ)

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfahat@gmail.com Cell: 09370222321

نائب مدیران: کلیم ضیا، احسن ایوبی

خط و کتابت کے لیے:

Waseem Farhat (Alig)
Post Box No.55, H. O,
AMRAVATI-444601(M.S)INDIA

صرف ذر سالانہ اور ذر ذری ذاک کے لیے:

The Editor, URDU,
"Adabistan", Near Wahed Khan
Urdu D. Ed. College, Walgaon Road,
AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)

پاکستانی خریداروں کا صرف ذر سالانہ بھجوانے کیلئے:

بزمِ تخلیقِ ادب پاکستان
II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایشیا بیکری، ناظم آباد، کراچی
موبائل: 0321-8291908

مشیر

وسیم فرحت

شمارہ ہذا ۱۰۰ روپے
لائبریری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے
لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے
یورپی ممالک کیلئے ۱۲۲ امریکی ڈالر
برطانوی ممالک کیلئے ۱۶ پاؤنڈ
پاکستان کیلئے ۹۰۰ ہندوستانی روپے
خلیجی ممالک کیلئے ۹۰۰ ہندوستانی روپے

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEHMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔

مضمون نگار کی رائے سے ادارہ کا تعلق ہو یا ضروری نہیں اور کسی بھی قسم کی قانونی چارہ جوئی صرف امراتی عدالت میں ہی کی جائے گی۔

ختمِ خانہ جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
4	مدیر	اداریہ مضامین
5	شمس الرحمن فاروقی (الہ آباد)	۱۔ میراجی۔ سو برس کی عمر میں
12	مصحف اقبال توصیفی (حیدرآباد)	۲۔ احمد ہمیش
19	اسیم کاویانی (بہمنی)	۳۔ اردو میں جمالیات شناسی
26	فرزانہ ایم شیخ (شولا پور)	۴۔ ابابیل کا تنقیدی جائزہ
31	سید نصرت بخاری (پاکستان)	۵۔ جعلی خطوط کی روایت ماضی کے جھسرو کول سے
37	مشفق خواجہ	۱۔ شاعری یا کلام موزوں بنتِ ماہتاب (بابِ نظم)
42	ارمان نجمی (پٹنہ)	۱۔ تو فقط ایک تصویر ہے
44	ارمان نجمی (پٹنہ)	۱۔ میری آواز
45	ابرار نعیمی (رائے سین)	۱۔ سانیٹ
46 تا 49	ارمان نجمی، منظور ندیم، شاہد پٹھان، وفایہ ودوی	حسام نو (بابِ غزل)
		حدیثِ دل (بابِ افسانہ)
50	علی حسین شائق (کلکتہ)	● صبح کا انتظار
54	فرحین چوہدری (پاکستان)	● دیمک
62	ناصر خان ناصر (امریکہ)	● پیاس

71

76 تا 72

رفتارِ زمانہ
زبانِ حلق کو نقارۂ خدا سمجھو
ڈاکٹر رفیع بخش، شہناز خانم عابدی، ابرار نعیمی، سلیم انصاری، فرار عارف

بیسویں صدی کی سب سے زیادہ چونکا نے والی ادبی شخصیت
جس کے افسانے گلی کوچوں سے عدالتوں تک پہنچے
بادشاہِ مہرنگ جس کی کہانیوں سے چونکا اٹھے
ولسیرانہ طرزِ ادا، بے باکانہ طرزِ تحریر جس کی شناخت
معاشرتی بدحالی کو آئینہ دکھانے والی پہلی حنا تون افسانہ نگار
بدنامی کے حسرت کو شہسرت کی خلعت پہنانے والی ادیبہ
اردو ادب کی سب سے زیادہ مشہور افسانہ نویس
عصمت چغتائی پر ایک قطعی نئے زاویے سے نگاہ ڈالتی کتاب

عصمت چغتائی

نتیجہ فکر

وسیم فرحت (علیگ)

عمدہ دبیز کاغذ، بہترین جلد سازی، دیدہ زیب سرورق
صفحات: ۱۲۰ قیمت: ۱۵۰ روپیے

رابطہ
آئیڈیل پبلسٹی کیشنز

کہکشاں کالونی، ولگاؤں روڈ، امراؤٹی۔ ۳۳۳۶۰۱

موبائل: 09730106107

Email

idealpublications1@gmail.com

اداریہ

معزز قارئین !!

سنہیلنے دے مجھے اے ناامیدی! کیا قیامت ہے!

کہ داماں خیال یار چھوٹا جائے ہے مجھ سے

مقلد اور پرستار یگانہ ہونے کے باوجود اس سے مجھے انکار نہیں کہ غالب کا مذکورہ بالا شعر اور اسی قبیل کے دوسرے اشعار ہی نے اردو شاعری کو دیگر تہذیب یافتہ اور ترقی یافتہ زبانوں کی شاعری کے مد مقابل کھڑا کر دیا ہے۔ وگرنہ غالب کے بغیر اردو شاعری کو اردو کے غیر زبانوں سے واقف ناقدین نے 'کارہیکاراں' سے معنون کیا ہے، تو اس میں کوئی عجب نہیں۔ اوپر درج شعر کی کیفیت اور حسیت قاری کو اسی دنیا میں لے جاتی ہے جہاں خود شاعر پہنچانا چاہتا ہے۔ پورے شعر میں کوئی ایک بھی حرف مرئی نہیں ہے، لیکن اظہار کا وسیلہ کچھ ایسا منتخب کیا ہے کہ تمام لفظوں میں جان دوڑ آئے۔ کیف و انبساط کا وہ عالم ہے کہ قاری پہروں اسی شعر پر سردھننا رہ جاتا ہے۔ ایک کثیف جذبے کو کس قدر لطافت سے غالب نے شعر کے قالب میں ڈھالا ہے، بلا تامل عرض کروں کہ یہ مہارت اکتسابی نہ ہو کر قطعاً خدا داد ہے۔

اس لوچ کے علاوہ آپ شعر کی ساخت پر غور فرمائیں تو عقدہ کھلتا ہے کہ شعر کا ایک جز دو مرتبہ بروئے کار لایا گیا ہے۔ 'سنہیلنے دے، کیا قیامت ہے، گویا نہ سنہیلے جانے کو قیامت کے مماثل قرار دیا ہے۔ اب یہی جز 'کیا قیامت ہے' دوسرے مصرعہ میں بھی معنی آفرینی کے ساتھ رکھا گیا ہے۔ ملاحظہ کریں کہ 'کیا قیامت ہے کہ داماں خیال یار مجھ سے چھوٹا جا رہا ہے' مراد یہ ہے کہ داماں خیال یار کا چھوٹا جانا بھی قیامت سے کسی طور کم نہیں۔ یہ کرشمہ صرف غالب ہی کا حصہ ہے۔ مزید غور فرمائیں کہ لفظ 'ناامیدی' پورے شعر کی اساس ہے۔ بلکہ شعر میں فاعل کا کام یہی 'ناامیدی' کر رہی ہے لیکن مکمل شعر اس چسکی سے نظم کیا ہے کہ تیرات نشاط انگیزی کا روئی غیر فاعل انجام دے رہے ہیں۔ اس ایک شعر کی شرح پر کئی کئی کتابیں لکھی جاسکتی ہیں۔ بجائے خود استاد یگانہ چنگیزی نے اس شعر کے حسن اور معنوی تہہ داری کی خوب داد دی تھی۔ مولانا حسرت موہانی کی 'شرح غالب' (مطبوعہ ۱۹۱۶) پر مفصل بحث میرا دیرینہ خواب ہے۔ اشراہ شعر کے ذیل میں مولانا نے کئی کئی شعر کو اٹھلے اٹھلے معنی سے سمجھنا شروع کر رکھا دیا ہے۔ کبھی فرصت ملے تو انشا اللہ سیر حاصل گفتگو ہوگی۔

شمارہ ہذا میں عظیم آباد (پٹنہ) کے قابل لکھاری جناب ارمان نجمی کی چیدہ نگارشات بہ یک مشت

شامل کی گئی ہیں۔ امید کے قارئین اردو پسند فرمائیں گے۔

سعید

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (شولا پور)

’ابابیل‘

ایک تنقیدی جائزہ

افسانوی ادب میں افسانہ ایک ایسی صنف ہے جو اپنے زمانہ تخلیق سے عہد حاضر تک قاری کی منظور نظر رہی ہے۔ اس کے مشہور و مقبول ہونے کا سبب یہ ہے کہ اہل قیام جوں جوں سائنس اور ٹیکنالوجی کے مشینی دور کے خیابان پر سبک سیر ہوئی تو بنی نوع انسان کے ورق حیات سے فرصت کے اوقات بتدریج گم ہونے لگے۔ قاری ادب کے مطالعہ کا تو خواہشمند تھا لیکن فراغت کی قلت اس کے شوق کی سنگ راہ بن گئی تھی۔ لہذا اس صورتحال کو پیش نظر رکھتے ہوئے ادیبوں نے ناول کے ہمراہ ایک نئی صنف افسانے کو مروج کیا تاکہ قاری قلیل وقت میں اپنے مطالعہ کی تشنگی کو مٹائے۔ ادب کے شائقین نے اس صنف کو ہاتھوں ہاتھ لیا۔ اس طرح افسانہ ایک قلیل عرصے میں بام عروج پر پہنچ گیا۔ افسانے میں زندگی سے تعلق رکھنے والے مخصوص واقعے، جذبے احساس و کیفیت کی ترجمانی کی جاتی ہے۔ افسانے کی کہانی کئی کرداروں پر مشتمل ہوتی ہے لیکن مرکزی کردار اپنی جگہ اہمیت کا حامل ہوتا ہے۔ گو اس میں واقعات تو فرضی ہوتے ہیں لیکن یہ حقیقی زندگی سے متعلق ہوتے ہیں۔

افسانہ ’ابابیل‘ خواجہ احمد عباس کی اولین تخلیق ہے جس کا شمار عالمی ادب کے بہترین افسانوں میں ہو چکا ہے اور جس پر سوویت روس نے انھیں ایوارڈ سے بھی نوازا تھا۔ اس افسانے میں خواجہ احمد عباس نے ایک ابابیل کے جوڑے کے ذریعہ اس حقیقت پر روشنی ڈالی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے نہ صرف انسان بلکہ دیگر ذی روح میں بھی بچوں سے محبت اور ان کی پرورش کرنے کے جذبے کو ودیعت فرمایا ہے اور وہ اپنی اس ذمہ داری کو باہمی افہام و تفہیم سے اس احسن طریقے سے انجام دیتے ہیں کہ قاری پر غور و فکر کے درواہ ہو جاتے ہیں۔

خواجہ احمد عباس ایک ہمہ گیر شخصیت ہیں وہ ایک ایسے منفرد ادیب ہیں جو بیک وقت دوزبانوں اردو اور انگریزی پر یکساں دسترس رکھتے ہیں اور دونوں زبانوں میں ان کی تصانیف کو برابر کا درجہ حاصل ہے۔ ادب ہو یا صحافت یا فلم، جس کا رزار میں گئے وہاں اپنے انمٹ نقوش ثبت کر آئے لیکن زندگی میں کہیں بھی کسی

بھی مقام پر اپنے نظریات سے سمجھوتہ نہ کیا۔ اپنی تخلیقات میں خواجہ احمد نے زندگی سے متعلق اپنے جو نظریات، اصول اور فکر تھی اس کی بھرپور ترجمانی کی ہے۔ یعنی معاشرے کے غریب و نادار افراد کے مسائل کو پیش کرنے، رنگ، نسل، ذات پات، گدائی و تونگری ادنیٰ و اعلیٰ کے امتیاز کو مٹانے اور ملک میں اتحاد و اتفاق امن و محبت کو عام کرنے کی انتھک کوشش کی۔ اسی فکر اور نظریے کو کثیر تعداد افراد تک پہنچانے کے لئے انھوں نے اپنی کہانیوں پر فلمیں بنائیں۔ چونکہ یہ فلمیں مقصدی تھیں اس لئے اکثر فلمیں ناکام ہی رہیں۔ ناکامی کا انھیں غم نہ تھا بلکہ انھیں اس بات کی خوشی تھی کہ کیا ہی بہتر ہے کہ تحریری کہانیوں کے قلیل قاری کے مقابلے میں فلموں نے لاکھوں لوگوں تک ان کے پیغام کو پہنچایا۔ زندگی کے آخری ایام میں مختلف بیماریوں سے معرکہ آرائی کرتے ہوئے بھی انھوں نے اپنے نظریات کی نمائندگی کا حق ادا کیا۔ خواجہ احمد عباس قلم کی شمشیر کے بے باک جری تھے۔ حق گوئی و بے باکی اس مردِ مجاہد کی طبیعت کا خاصہ تھی۔

ترقی پسند افسانہ نگاروں پہ یہ الزام عائد کیا جانے لگا کہ وہ محبت کی کہانیاں نہیں لکھتے۔ وہ اپنے افسانوں میں ہمیشہ بھوک، بیکاری اور بیماری کا رونا روتے ہیں۔ عباس صاحب نے اس الزام کا جواب دیا۔ ”کہتے ہیں جس کو عشق“ ”شکر اللہ کا“ اور ”مسوری“ جیسے افسانے لکھ کر۔ یہ تینوں طویل افسانے انکے مجموعہ ’عشق‘ میں شامل ہیں۔ یہ تینوں طویل افسانے عشقیہ موضوع پہ ضرور ہیں مگر ان کا تعلق روایتی عشق سے نہیں ہے۔ عباس صاحب کا تعلق بمبئی کی فلمی دنیا سے بڑا گہرا تھا۔ اس لئے انکے کئی افسانوں میں بمبئی کی زندگی اپنی تمام تر رنگینیوں اور رعنائیوں کے ساتھ موجود ہے۔ ”پاؤں میں پھول“ ایسا ہی ایک خوبصورت افسانہ ہے جس میں فلمی دنیا کی زندگی کو اندر تک جھانک کر دیکھنے کی کوشش نظر آتی ہے۔ عباس صاحب کے افسانوں پہ مقصدیت حاوی ہے۔ کہیں کہیں افسانے کا فن مجروح ہوتا ہے۔ مگر انکو اس کی فکر نہیں ہے۔ وہ تو افسانے کے ذریعے اپنی فکر کو قارئین تک پہنچانا چاہتے ہیں۔ کشمیر اور کشمیر کے حسن پہ اردو کے کئی افسانہ نگاروں نے افسانے لکھے ہیں۔ کرشن چندر نے تو کشمیر کے حسن کو بھرپور ڈھنگ سے اپنے افسانوں میں پیش کیا ہے۔ عباس صاحب کے افسانہ ”زعفران کے پھول“ کا تعلق بھی کشمیر سے ہے۔ لیکن یہاں کشمیر کا حسن نہیں ہے بلکہ ڈوگر حکمرانوں کے ظلم و تشدد کے خلاف کشمیری عوام کی صدائے احتجاج کی کہانی ہے۔ اس افسانے کا مرکزی کردار ایک دیہاتی لڑکی زعفرانی ہے۔ زعفرانی شیخ محمد عبداللہ کی تقریر سن کر متاثر ہوتی ہے اور ایک انقلابی بن کر سماج کو تبدیل کرنے کا خواب دیکھنے لگتی ہے۔ اس افسانے میں فن کی سطح پہ عباس صاحب نے تجربہ کیا ہے۔ اسی لئے بعض ناقدین ’زعفران کے پھول‘ کو افسانہ کے بجائے رپورٹاژ قرار دیتے ہیں۔ لیکن عباس صاحب ناقدین ادب کی تنقید سے گھبراتے نہیں تھے۔ انکا افسانوی مجموعہ ”نیلی ساڑھی“ مکتبہ

جامعہ سے ۱۹۸۹ء شائع ہوا۔

خواجہ احمد عباس میں دوسروں کی اچھی چیزوں کو اپنالینے کا حوصلہ بھی تھا اور نت نئے اسلوب تلاش کر کے انھیں بے جھجک سامنے لانے کی جرأت بھی۔ اجتماعی زندگی کے مسائل فرد کے ذہن اور دل و دماغ پر کس طرح اثر انداز ہوتے ہیں اس کا مطالعہ عباس صاحب نے بڑی باریک بینی سے کیا ہے اور اپنے دائرہ عمل میں فرد کے فکری اور جذباتی رد عمل کو ایک خاص انداز میں اپنے افسانوں میں پیش کیا ہے۔ انھوں نے زندگی کا جو مشاہدہ کیا اس سے نئے نئے موضوعات سامنے آئے۔ ان نئے موضوعات کے اظہار کے لئے عباس صاحب نے نت نئے تجربات کئے۔ کچھ تجربے کامیاب ہوئے اور کچھ ناکام بھی ہوئے۔ تجربات کی کامیابی یا ناکامی کا ان پر کوئی اثر نہیں ہوتا تھا۔ وہ بنے بنائے راستے پر چلنے کے بجائے اپنا راستہ خود بناتے تھے۔ موضوع کے لحاظ سے اسلوب اپناتے تھے۔

خواجہ احمد عباس کا شمار مشہور ترقی پسند افسانہ نگاروں میں ہوتا ہے۔ سعادت حسن منٹو، راجندر سنگھ بیدی، کرشن چندر اور عصمت چغتائی جیسے مشہور و معروف اردو افسانہ نگاروں کے ہم عصر خواجہ احمد عباس ایک اہم افسانہ نگار ہیں جو ترقی پسند مصنفین کے اہم ستون بھی ہیں۔ خواجہ احمد عباس کا پہلا افسانہ ”ابابیل“ ۱۹۵۳ء میں جامعہ ملیہ اسلامیہ سے شائع ہونے والے رسالہ ”جامعہ“ میں شائع ہوا، جس کا ذکر انھوں نے اپنی خودنوشت سوانح میں بھی کیا ہے۔ یہ افسانہ بقول عباس تیرہ جگہوں سے واپس آنے کے بعد ”جامعہ“ میں شائع ہوا، شائع ہوتے ہی اس افسانے کو بے پناہ مقبولیت حاصل ہوئی۔ دنیا کی تقریباً تمام بڑی زبانوں مثلاً جرمن، انگریزی، فرانسیسی، روسی، عربی، چینی، سویڈش وغیرہ میں اس کا ترجمہ ہو چکا ہے۔ اس افسانے کی اہمیت کا اندازہ اس سے بھی ہوتا ہے کہ جرمن زبان میں افسانوں کا ایک انتخاب شائع ہوا۔ اس انتخاب میں ہندستان کی تین کہانیاں لی گئیں۔ ایک راجندر ناتھ نیگور کی، ایک ملک راج آنند کی اور ایک خواجہ احمد عباس کی۔ اسی طرح ملک راج آنند اور اقبال سنگھ نے کہانیوں کا جو انتخاب شائع کیا اس میں بھی ”ابابیل“ شامل ہے۔

خواجہ احمد عباس کی ایک حیثیت ترقی پسند ادیب کی تھی۔ پریم چند کے بعد جن ادیبوں نے اپنی غیر معمولی تخلیقات سے ترقی پسندی کے جھنڈے گاڑے ان میں سعادت حسن منٹو، کرشن چندر، راجندر سنگھ بیدی، اور عصمت چغتائی کے علاوہ خواجہ احمد عباس کا نام بھی شامل ہے۔ خواجہ احمد عباس، انسان دوستی، بھائی چارے، آپسی میل ملاپ اور ملک میں ترقی اور امن و سلامتی کا ماحول بنائے رکھنے کے خواہاں تھے۔ یہی جذبہ اخوت و رواداری ان کی ادبی اور فلمی سرگرمیوں میں بھی کارفرما نظر آتا ہے۔ مقصدیت کو ادب میں عیب سمجھا جاتا ہے حالانکہ مقصدیت کے بغیر ادب، ادب نہیں رہتا۔ ادب میں مقصدیت اور بے راہ روی بھی مغرب ہی

کی دین ہے۔ البتہ یہاں یہ عرض کرنا ضروری ہے کہ فن پارے میں مقصدیت ایک زیریں لہر کی طرح موجود رہے۔ مقصدیت فن پہ غالب نہ آئے۔ خواجہ احمد عباس کے ناقدین نے انھیں ادیب کے بجائے اخبار نویس گردانا ہے جو بہت حد تک ان کے ساتھ زیادتی کہی جاسکتی ہے۔ مانا کہ خواجہ احمد عباس کے افسانوں میں صحافتی انداز کی جھلکیاں موجود ہیں لیکن اس کے باوجود ان کے ادبی مقام و مرتبے کے لئے یہی کیا کم ہے کہ ان کا پہلا افسانہ ”ابابیل“ جامعہ ملیہ اسلامیہ نئی دہلی سے شائع ہونے والے مجلے ”جامعہ“ میں شائع ہونے کے بعد مقبولیت و شہرت کی بلندیوں کو چھو گیا۔ یہی افسانہ دنیا کی بڑی زبانوں مثلاً انگریزی، جرمن، فرانسیسی، روسی، عربی، چینی اور سویڈش میں ترجمہ کیا گیا ہے۔

افسانہ ”ابابیل“ کے مرکزی کردار کا نام تو رحیم تھا لیکن وہ رحم کے وصف سے عاری تھا۔ وہ انتہائی بے رحم، ظالم اور سفاک تھا۔ اس کی اس فطرت کی بدولت گاؤں والے اس سے سخت تالاں اور ناراض تھے۔ بالکل یہی کیفیت اس کے زن اور فرزندوں کی بھی تھی۔ انسان ہی پر کیا بس جانور بھی اس کے زد و کوب سے محفوظ نہیں تھے۔ بیل جب کام میں سستی دکھاتے تو سوت سے گندھی ہوئی رسی سے وہ انھیں اس وقت تک مارتا تھا جب تک کہ زخم کے نشان جسم پر نہ ابھرتے۔ اس کے دو بیٹے نور اور بندو تھے۔ معمولی خطا پر ان کا لڑکا کر انھیں بے ہوش ہو جانے کی حد تک مارتا تھا۔ کھانے میں نمک و مرچ کے کمی بیشی پر بیوی کو بھی نہ بخشا تھا۔ آئے دن کے اس ظلم و ستم سے تنگ آ کر ایک کے بعد دیگر بچے اور شریک حیات گھر چھوڑ کر چلے جاتے ہیں۔ ان کے جانے کے بعد وہ بالکل تنہا ہو جاتا ہے، ان ہی دنوں ایک ابابیل نے اس کی جھونپڑی کی چھت میں دو بچے دیئے تھے۔ ابابیل کے جوڑے کا باہمی اتحاد، بچوں کی پرورش میں ایک دوسرے کا ہاتھ بٹانا رحیم کو متاثر کرتا ہے۔ جس کی بدولت تحت الشعور کے تاریک کباڑ خانے میں گم اس کا جذبہ محبت شعور کی سطح پر آتا ہے اور پھر اس کے مزاج میں تبدیلی آ جاتی ہے۔ وہ رحیم جس نے کبھی اپنے بچوں پر شفقت و محبت کی نظر بھی نہ ڈالی تھی وہی رحیم بچوں کی پرورش میں ابابیل کا ہاتھ بٹاتا ہے۔ پرندوں کے بچوں کا ہاضمہ انتہائی قوی ہوتا ہے۔ ادھر دانہ حلق سے نیچے نہ اترتا ادھر ہضم ہو گیا۔ اس سبب سے پرندوں کو ہر وقت غذا کی تلاش میں تنگ و دو کرنی پڑتی ہے۔ ان کی اس مشکل کو حل کرنے کے لئے رحیم ان کے گھونسلے کے قریب ہی طاق میں روٹی کے ٹکڑے اناج کے دانے اور پانی رکھتا ہے۔ رحیم ان کے بچوں سے بالکل اپنے بچوں ہی کی طرح پیار کرنے لگتا ہے اور انھیں نور اور بندو اپنے بچوں کے نام سے مخاطب کرتا ہے۔ ابابیلوں سے اپنی حقیقی محبت کا عملی ثبوت وہ یہ دیتا ہے کہ تیز بارش میں بھیگ کر ان کے گھونسلے کو ٹوٹنے سے بچاتا ہے اور پھر گیلے لباس کو تبدیل کئے بغیر سو جانے کی وجہ سے وہ نزلہ و بخار میں مبتلا ہو جاتا ہے۔ چونکہ گاؤں میں اس کا کسی سے کوئی تعلق نہیں تھا اس لئے کوئی بھی دودن

تک اس کی خیر و خیر لینے نہیں آتا۔ جس وقت گاؤں والے اُسے شفا خانے لے جانے کے لئے آتے ہیں تو نزلہ و بخار کی شدت میں وقت پر دو اور کھانا نہ ملنے اور تہائی بے دست و ہائی کا شکار ہو کر وہ لقمہ اجل بن جاتا ہے۔ اس کی لاش کے پانسی چاروں ابابیل سرنیوڑائے بیٹھے ہوئے ہوتے ہیں۔ افسانہ ”ابابیل“ کے ذریعہ خواجہ احمد عباس نے قاری کو یہ پیغام دیا ہے کہ محبت، اتحاد و امن زندگی کا جزو لاینفک ہیں۔ ان کا عدم وجود انسانی زندگی کو اجاڑ اور بے رونق بنا دیتا ہے۔

افسانہ ”ابابیل“ میں خواجہ احمد نے انسانی جذبات کی تین مختلف اقسام پر فکا رانا انداز میں نظر ڈالی ہے۔ پہلا جذبہ رحیم کا ظالمانہ و سفاکانہ جذبہ، جس سے نہ ظالم کو کوئی سکون میسر ہوتا، نہ مظلوم کو۔ دوسرا جذبہ والدین کی فطری محبت کا۔ جس کے نقیب ابابیل ہیں۔ یہ وہ جذبہ ہے جسے خالق کائنات نے ہر ذی روح میں ودیعت فرمایا ہے کہ جس کی بدولت والدین چاہے وہ انسان ہوں یا دیگر تمام مخلوقات، پیشانی پر بل لائے بغیر بچوں کی پرورش میں پیش آنے والی مختلف تکالیف کو خندہ پیشانی سے برداشت کرتی ہیں۔ تیسرا جذبہ بے لوث محبت کا۔ یہ وہ جذبہ ہے جو اپنی ذات کے لحاظ سے زندہ جاوید اور ابدی ہے۔ یہاں انسان عقل کے نہیں دل کے حکم کو مانتا ہے اور جس سے اُسے محبت یا عشق ہوتا ہے اُس کے لئے اپنی جان نثار کرنے سے بھی دریغ نہیں کرتا۔ جس کا واضح ثبوت رحیم ہے کہ دو روز کے فاقے اور شدید بخار میں مبتلا ہونے کے باوجود بھی اُسے اپنی مطلق پرواہ نہیں رہتی بلکہ یہ فکر کھائے جا رہی تھی کہ آج ابابیل کے بچوں کو کھانا کون دے گا۔

افسانہ ”ابابیل“ میں جہاں رحیم کا کردار تشدد (ہنسا) کا ترجمان ہے کہ جس سے نہ تشدد کا بھلا ہوتا ہے اور نہ جس پر تشدد کیا گیا اس کا۔ وہیں دوسری طرف ابابیل اتحاد، امن و محبت کے نقیب ہیں کہ جن کی بدولت ایک ظالم شخص محبت و امن کا پجاری بن جاتا ہے۔ قصہ کوتاہ اس افسانے کے ذریعہ خواجہ احمد عباس نے جبر و ظلم کے نقصانات اور محبت و اتحاد کے فائدوں کو اجاگر کیا ہے۔

کتابیات و رسائل :

- (۱) اردو افسانہ روایت و مسائل مرتبہ: پروفیسر گوپی چند نارنگ
- (۲) ماہنامہ ایوان اردو۔ دسمبر ۱۹۸۷ء خواجہ احمد عباس نمبر
- (۳) ماہنامہ آج کل۔ دسمبر ۱۹۸۸ء خواجہ احمد عباس نمبر
- (۴) ماہنامہ آج کل۔ جون ۲۰۱۶ء خواجہ احمد عباس شخصیت و فن

مجموعہ گوگرد پید کہ سن شاہ جہانم

سہ ماہی

اردو

ISSN 2278-229X

UGC CARE LISTED
JOURNAL

ISSN 2278-229X

مدیر

وسیم فرحت (ملیگ)

اس شمارے کے قلم کار

باب نشر گوپی چند نارنگ، شمیم منی، تصنیف حیدر، مہر اجئی، معراج رحمان، فرزات ایم شیخ

باب نظم جاوید اختر، ڈاکٹر ولاہ جمال، اعلیٰ سلیم انصاری

اقساط شکیل احمد، طاہت زہرا، نمر و عرفان

حیاتِ جہدِ مسلسل کا نام ہے فرحت
جمود سے بھی مقدر کہیں بدلتا ہے
بیادِ خلیل فرحت کارِ نجوی (مرحوم)

UGC CARE
LISTED JOURNAL

ارواٹی



سہ ماہی

یو جی سی
منظور شدہ

جنوری تا مارچ ۲۰۱۹

ارواٹی، مہاراشٹر (ہند)

شمارہ نمبر ۱

جلد نمبر ۸

جناب منور پیر بھائی (پونہ)

اسپرست

مدیر
وسیم فرحت (علیگ)

Email: wkfarhat@gmail.com Cell: 09370222321

کلیم ضیا، احسن ایوبی

نائب مدیران:

خط و کتابت کے لیے:

Waseem Farhat (Alig)
Post Box No.55, H. O,
AMRAVATI-444601(M.S)INDIA

صرف ذرا سا ادوارز سے ہی ڈاک کے لیے:

The Editor, URDU,
"Adabistan", Near Wahed Khan
Urdu D.Ed. College, Walgaon Road,
AMRAVATI-444601, Maharashtra (India)

پاکستانی خریداروں کا صرف ذرا سا لانا بھجوانے کیلئے:

بزمِ تخلیق ادب پاکستان

II-B/18، کمرشل ایریا، نزد سپر ایشیا بیکری، ناظم آباد، کراچی

موبائل: 0321-8291908

مشیر

وسیم فرحت

شمارہ ہدا ۱۰۰ روپے

لائبریری اور اداروں سے ۲۵۰ روپے

لائف ممبر شپ ۵۰۰۰ روپے

یورپی ممالک کیلئے ۱۲۲ امریکی ڈالر

برطانوی ممالک کیلئے ۱۶ پاؤنڈ

پاکستان کیلئے ۹۰۰ ہندوستانی روپے

خلیجی ممالک کیلئے ۹۰۰ ہندوستانی روپے

اگر آپ چیک یا ڈرافٹ بھیجنا چاہیں تو صرف SEHMAHEE URDU اس نام سے بھیجیں۔

مخمس خانہ جاوید

صفحہ نمبر	قلم کار	عنوان
4	مدیر	اداریہ
		مضامین
5	گوپی چند نارنگ (دہلی)	۱۔ منٹو کی نئی پڑھت
23	تصنیف حیدر (دہلی)	۲۔ انٹرویو۔ شمیم حنفی
35	معراج رعنا (پاکستان)	۳۔ شمس الرحمن فاروقی کی نظری تنقید
43	عبداللہ (دہلی)	۴۔ اردو اور سکھ مذہب
51	ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (شولا پور)	۵۔ نظم بلا د اسلامیت: ایک جائزہ
56	حمیرا حیات (دہلی)	۶۔ فہمیدہ ریاض

گزر کے آپ سے ہم آپ تک پہنچ تو گئے
مگر خبر بھی ہے کچھ پھیر کھائے ہیں کیا کیا

(استاد یگانہ چنگیزی)

'اردو' کا تازہ شمارہ جنوری تا مارچ ۲۰۱۹ء آپ کے ہاتھوں میں سوچتے ہوئے مجھے ایک گونہ مسرت و طمانیت کا احساس ہو رہا ہے۔ ابھی دو ہفتے قبل ہی گزشتہ شمارہ آپ تک دست بہم کیا گیا۔ اور فی الفور یہ اور ایک شمارہ اپنے سابقہ تمام تر ہنگامہ آرائیوں کے ساتھ آپ کے مطالعہ کی میز پر پہنچ گیا ہے۔ خدا کرے یہ سلسلہ اور رفتار سلسلہ دونوں یونہی قائم رہے۔ زرسالانہ کے ذیل میں ایک بڑی تعداد میں قارئین پر بقایا جات کا حساب سامنے آیا ہے۔ جو فرداً فرداً اسی شمارے کے ساتھ علیحدہ پرچی پر آپ کی شفقتوں کے سپرد کیا جا رہا ہے۔ مجھے امید ہی نہیں بلکہ یقین ہے کہ آپ پرچی پر درج تفصیلات کے عین مطابق بقایا جات کی ادائیگی میں بلا تساہل کارروائی فرمائیں گے۔

گزشتہ شمارے کے ادارے میں غائب کے شعر کے متعلق میں نے اظہار خیال کیا تھا۔ لیکن جس مقدار میں تاثرات مقصود تھے، موصولہ حسب توقع ثابت نہ ہوئے۔ اب خیال پڑتا ہے کہ ادارے میں علمی اور خالص علمی معاملات بھی قصہ ہائے پارینڈ بن چکے ہیں۔ گزشتہ شمارے نیز تازہ شمارے سے متعلق تاثرات مجموعی طور پر آئندہ شمارے میں شائع کیے جائیں گے۔

تازہ شمارے میں جناب جاوید اختر، بمبئی کی چار بے حد خوبصورت نظمیں بطور خاص شامل کی جا رہی ہیں۔ منظومات مرحمت فرمانے کے لیے ہم جاوید صاحب کے ممنون ہیں۔ ساتھ ہی میرے محترم قبلہ شمیم حنفی کے خیالات کا احاطہ کرتا ہوا ایک بے حد وقیع انٹرویو جو برادر مراد تصنیف حیدر نے لیا ہے، اس شمارے کی زینت ہے۔ نارنگ صاحب نے اپنے مضمون میں سعادت حسن منٹو کے متعلق ایک قطعی نئے پہلو پر خوب بحث فرمائی ہے۔

تازہ شمارے کے سرورق کے ذیل میں عرض کرتا چلوں کہ پرگتی میدان، دہلی کی ایک تصویری نمائش میں وہاں موجود روسی مصور جناب میکسم (ماسکو) نے ان کی طبع زاد تصویر کے سرورق پر استعمال کی خصوصی اجازت عطا فرمائی ہے۔ امید کے قارئین 'اردو' پسند فرمائیں گے۔

سعید احمد

ڈاکٹر فرزانہ ایم شیخ (شولاپور)

نظم 'بلادِ اسلامیہ' ایک تجزیہ

(ملت اسلامیہ کی ۱۳۰۰ سالہ تاریخ کی ترجمان)

شہرِ دہلی ایک زمانے میں ملتِ اسلامیہ کا علمی، ادبی، تہذیبی، ثقافتی، سیاسی و مذہبی مرکز تھا۔ نظم 'بلادِ اسلامیہ' کی ابتداء سقوطِ دہلی کے تذکرے سے ہوتی ہے اور اختتامِ اسلام کے عاصمہ اولیٰ یا اولین دار الحکومت یثرب پر ہوتا ہے۔ اس نظم کا پردہ نقاشی کافی کشادہ ہے۔ جس پر انہوں نے پانچ شہرت یافتہ اسلامی سلطنتوں یعنی دہلی، بغداد، قرطبہ، قسطنطنیہ اور یثرب (مدینہ منورہ) کو ایک کے بعد دیگر ان کی عظمت کو پیش نظر رکھتے ہوئے سعودی ترتیب (ascending order) میں لایا ہے۔ یعنی سب سے کم عظمت والے شہر کا ذکر سب سے پہلے کیا ہے اور یثرب (مدینہ منورہ) جو دنیا کے تمام شہروں کے مقابلے سب سے زیادہ عظمت والا ہے اُس کا ذکر سب سے آخر میں کیا ہے اور ہر سلطنت کی پر شکوہ تاریخ اور ان کے اوصافِ حمیدہ کو بھی درج کیا ہے۔ اسلامی سلطنتوں کے زوال نے جس شدید رنج و کرب میں اقبال کو مبتلا کیا تھا اُس رنج و الم کو انہوں نے صفحہ قرطاس پر شعر کے جامہ میں ثبت کیا ہے تاکہ ملتِ اسلامیہ ان کے شعری اعجاز سے بیدار ہو جائے اور اپنے اسلاف کے شاندار کارناموں اور ان کے مہتمم بالشان ماضی سے آگاہی حاصل کر کے اپنے اسلاف کے نقش قدم پر گامزن ہو جائے اور دنیا میں دوبارہ سرخروئی حاصل کرنے کا عزم و ارادہ کرے۔ 'بلادِ اسلامیہ' اپنی جامعیت کے لحاظ ایک مثالی نظم ہے۔ پانچ بندوں پر مشتمل اس مختصر نظم میں اقبال نے دنیائے اسلام کی تیرہ سو سالہ (۱۳۰۰) تاریخ کو یوں قلمبند کیا ہے گویا دریا کو گزے میں بند کر دیا ہو۔ علامہ اقبال موقع و محل کے لحاظ سے موزوں الفاظ کے گنیوں کو اشعار کے زیور میں اس چابکدستی سے جڑ دیتے ہیں کہ قاری پر ایک کیفیت طاری ہو جاتی ہے۔ پُرکشش تراکیب، زورِ بیاں اور صوت و آہنگ کے لازوال حُسن کے گنج گراں مایہ سے ان کی یہ نظم آراستہ ہے۔

دہلی، بغداد، قرطبہ، قسطنطنیہ اور یثرب (مدینہ منورہ) کے سقوط کی بدولت دنیائے اسلام پر بکبت اور ادبار کی گھٹائیں چھا گئی تھیں۔ مسلمانوں پر آفاتِ ارضی و سماوی کے مسلسل نزول کو دیکھ اقبال کا دل خون کے آنسو بہا رہا تھا اور اپنے ان آنسوؤں کے ریلے میں وہ ملتِ اسلامیہ کو بھی بہا لے جانا چاہتے تھے۔

سرزمینِ دہلی کی مہجورِ دلِ غم دیدہ ہے

ذڑے ذڑے میں لبو اسلام کا خوابیدہ ہے
پاک اس اجڑے گلستاں کی نہ ہو کیونکر زمیں
خانقاہِ عظمتِ اسلام ہے یہ سرزمیں
سوتے ہیں اس خاک میں خیر الامم کے تاجدار
نظمِ عالم کا رہا جن کی حکومت پر مدار
دل کو تڑپاتی ہے اب تک گرمی محفل کی یاد
جل چکا حاصل مگر محفوظ ہے حاصل کی یاد

نظمِ بلادِ اسلامیہ میں سب سے پہلے شہرِ دلی کا تذکرہ کیا گیا ہے۔ دلی ایک زمانے میں اسلام کا مرکز، بادشاہوں کی کان، سیدوں کا صدر مقام اور بزرگانِ دین کے رشد و ہدایت کا گڑھ تھی۔ دلی دنیا کے اُن بد قسمت ترین دار الحکومتوں میں سے ایک ہے جو کئی مرتبہ اُجڑی اور بسی۔ بیرونی حملہ آوروں اور داخلی فتنہ و فساد کے نتیجے میں یہاں آئے دن لوٹ مار اور قتل و غارت گری کا بازار گرم رہا۔ دلی تقریباً ایک ہزار سال تک اسلامی تہذیب و تمدن اور ثقافت کا گہوارہ اور اسلامی روایات کا امین رہی ہے۔ مختلف ہندو و مسلم بادشاہوں کے زمانے میں دلی کے مختلف نام تھے۔ مثلاً اندر پرست، ہستنا پور، لال کوٹ، پرانا قلعہ، قطب مینار، مہرولی، تغلق آباد، شیر گڑھ، شاہ جہاں آباد وغیرہ۔

دلی پر آٹھ مسلمان خاندان کے مختلف بادشاہوں نے حکومت کی۔ ان خاندانوں کے نام کو ایک شاعر نے ایک شعر میں بترتیب یوں رقم کیا ہے۔
غزنی و غوری ہوئے بعد ازاں آئے غلام
خلجی تغلق سید و لودھی مغل پر اختتام
یہ شہر دریائے جمنا کے دائیں کنارے پر آباد ہے۔

تشریح :

نظمِ بلادِ اسلامیہ میں سب سے پہلے شہرِ دلی کا ذکر کیا گیا ہے۔ دلی ہندوستانی مسلمانوں کا محبوب ترین شہر ہے۔ علمی، ادبی، مذہبی، ثقافتی، معاشی و تہذیبی لحاظ سے یہ ان کا عروس البلاد ہے۔ دلی اس لئے بھی مسلمانوں کی نظر میں محبوب ہے کیونکہ اس کی خاک کے ذرے ذرے میں ان کے اسلاف کا خون شامل ہے۔ اس سرزمین میں مسلمانوں کے مذہبی رہنماؤں مثلاً حضرت نظام الدین اولیاءؒ، بختیار کاکیؒ اور ناصر الدین چراغ دہلوی وغیرہ کی خانقاہیں موجود ہیں۔ اس خاک میں خیر الامم کے تاجدار یعنی مسلمان بادشاہ اتش، فیروز تغلق، سکندر لودھی وغیرہ استراحت فرما ہیں کہ جن کی حکومت پر نظمِ عالم کا دار مدار تھا۔ شومی تقدیر کہ دلی ایسی مٹی کہ اُس

کے منٹے کے نشان بھی آج باقی نہیں ہیں۔ لیکن اس کے باوجود بھی مسلمانوں کو اُن بادشاہوں کی علمی، ادبی، ثقافتی محفلوں کی سرگرمیوں کی یاد تازہ پاتی ہے۔ گو مسلمانوں کی مندر نشینی تو دہائی سے رخصت ہوئی۔ لیکن اُن کے عہد کے رعب و بد بے، شان و شوکت کے سہرے اور آج بھی مسلمانوں کے تحت الشعور میں محفوظ ہیں۔

خطِ قسطنطنیہ یعنی قیصر کا دیار

مہدی امت کی سطوت کا نشان پائیدار

صورت خاک حرم یہ سرزمین بھی پاک ہے

آستانِ مند آرائے شہ لولاک ہے

تکھتِ گل کی طرح پاکیزہ ہے اس کی ہوا

ترتیبِ ایوب انصاریؓ سے آتی ہے صدا

اے مسلمان ملت اسلام کا دل ہے یہ شہر

سینکڑوں صدیوں کی کشت و خون کا حاصل ہے یہ شہر

نظم 'بلادِ اسلامیہ' کا چوتھا شہر قسطنطنیہ ہے۔ قسطنطنیہ تین عظیم سلطنتوں کا دار الحکومت رہا ہے۔ اس کا قدیم نام بازنطین ہے جسے قدیم یونان کے شہر میگار کے حکمران بازا نے آبنائے باسفورس کے کنارے ۶۵۷ قبل مسیح میں آباد کیا تھا۔ ۳۳۰ء میں قسطنطین اعظم نے اسے اہل میگار سے چھین لیا اور اپنے نام پر اس کا نام قسطنطنیہ رکھا اور اسے سلطنتِ روم کا پایہ تخت بنایا۔ یہ شہر دو براعظم یورپ اور ایشیاء اور دو سمندر بحر روم اور بحر اسود کے درمیان ایک گذرگاہ (Gate way) ہے۔ ۱۴۵۳ء تک یعنی تقریباً ۱۱۰۰ سال تک قسطنطنیہ پر روم کے عیسائی حکمرانوں کی کارفرمائی تھی۔ ۱۴۵۳ء میں سلطان محمد الفاتح نے اسے فتح کیا۔ ۱۹۲۳ء تک یہ سلاطین عثمانیہ کا پایہ تخت رہا۔ غرض عربوں کی غداری کی بدولت انگریز اپنے ناپاک ارادے میں کامیاب ہوئے اور پھر قسطنطنیہ سے سلاطین عثمانیہ کا تسلط اٹھ گیا۔

تشریح:

قسطنطنیہ پر ابتدا میں یونان کے قدیم شہر میگار کے حکمران بازا کی حکومت تھی۔ پھر مشرقی روم کے عیسائی حکمران قسطنطین اعظم ملقب بہ قیصر نے اس شہر کو اپنا پایہ تخت بنایا اور عرصہ دراز تک یہاں پر حکومت کی۔ ساتھ ہی قسطنطنیہ میں مہدی امت سلطان محمد الملقب بہ فاتح کی شان و شوکت کے پائیدار آثار ثبت ہیں۔ چونکہ یہ سرزمین حضورؐ کے جانشین یعنی سلاطین عثمانیہ کا مدفن ہے اس لئے حرم کعبہ کی طرح قسطنطنیہ کی زمین بھی مسلمانوں کی نظر میں بے حد محترم ہے۔ قسطنطنیہ پر دوسرا حملہ کرنے کے لئے ۱۴۹۹ء میں امیر معاویہؓ نے جو لشکر بھیجا تھا اس میں ابو ایوب انصاریؓ بھی شامل تھے، جن کا شمار محمدؐ کے مشہور صحابہ میں ہوتا ہے اور وہ اُن خوش

نصیب افراد میں سے ہیں جنہیں حضورؐ کی میزبانی کا شرف حاصل ہوا تھا۔ انہوں نے انتہائی شجاعت و جوان مردی سے اعدیہ کا مقابلہ کرتے ہوئے داعی اجل کو لبیک کہا تھا۔ اُن کی وصیت کے مطابق انہیں قسطنطنیہ کی دیوار کے نیچے دفن کیا گیا ہے۔ اس لئے اس شہر کی ہوا اقبال کو نکھت گل کی مانند پاکیزہ محسوس ہوتی ہے اور اپنی قوی قوتِ مخیلہ کی بدولت انہیں ابو ایوب انصاریؓ کی مزار سے یہ صدا آتی ہوئی محسوس ہوتی ہے کہ وہ کہہ رہے ہیں کہ اے مسلمانو! یہ شہر ملتِ اسلامیہ کا دل ہے۔ کیونکہ اسے فتح کے لئے مسلمانوں نے صدیوں جنگ و جدل کی ہے، کشت و خون کا بازار گرم کیا ہے۔

اس بند میں لفظ 'لولاک' کا استعمال کیا گیا ہے جو ایک حدیثِ قدسی کا ابتدائی حصہ ہے۔ حدیث کا ترجمہ ہے خدا کہتا ہے کہ اگر میں تجھے (حضورؐ) نہ پیدا کرتا تو ان آسمانوں (کائنات) کو بھی نہ پیدا کرتا۔

وہ زمیں ہے تو، مگر اے خواب گاہِ مصطفیٰ
دید ہے کعبے کو تیری حج اکبر کے سوا
خاتم ہستی میں تو تاباں ہے مانند نگین
اپنی عظمت کی ولادت گاہ تھی تیری زمیں
تجھ میں راحت اس شہنشاہِ معظم کو ملی
جس کے دامن میں اماں اقوامِ عالم کو ملی
نام لیوا جس کے شاہشاہِ عالم کے ہوئے
جائینِ قیصر کے وارثِ مسندِ جم کے ہوئے
ہے اگر قومیتِ اسلام پابندِ مقام
ہند ہی بنیاد ہے اس کی نہ فارس ہے نہ شام
آہ! یثرتِ دیس ہے مسلم کا تو ماویٰ ہے تو
لفظہِ جاذبِ تاثر کی شعاعوں کا ہے تو
جب تلک باقی ہے تو دنیا میں باقی ہم بھی ہیں
صبح ہے تو اس چمن میں گوہرِ شبنم بھی ہیں

آخری بند میں اقبال نے شہرِ یثرت کا ذکر کیا ہے۔ یثرب مدینہ کا قدیم نام ہے۔ عیسیٰ کی پیدائش کے قبل سے یہودی مدینہ میں آباد تھے۔ لیکن ۱۳۵ء میں جب رومی شہنشاہ ہیڈرین نے انہیں فلسطین سے کامل طور پر بے دخل کیا تو انہیں لامحالہ مدینہ ہی کو اپنا مسکن بنانا پڑا۔ ۴۰۰ء تک اس شہر کی آبادی اور ترقی میں

یہودیوں کا بلا شدت غیرے عمل و دخل رہا ہے۔ ۲۰ ستمبر ۶۲۲ء کو حضورؐ کی آمد نے مدینہ کی تاریخ میں ایک نئے باب کا اضافہ کیا۔ اسی طرح اسی سال ہجری سن کا آغاز بھی ہوا اور یثرب کا نام مدینہ منورہ (روشن شہر) رکھا گیا۔ یہ شہر تین اطراف سے پہاڑیوں سے گھرا ہوا ہے۔ پہاڑوں میں سب بلند کوہ احد ہے۔ مدینہ ایک زرخیز نخلستان ہے۔ مکہ معظمہ سے ۲۷۵ میل کے فاصلے پر ہے اور مکہ معظمہ کے بعد اسلام کا دوسرا مقدس ترین شہر ہے۔

تشریح :

باعتبار تقدس اقبال نے اس نظم میں یثرب (مدینہ) کا ذکر سب سے آخر میں کیا ہے۔ بقول اقبال یہ وہ مقدس زمین ہے کہ جس کے دیدار کو خود خانہ کعبہ اپنے لئے حج اکبر سے بڑھ کر سمجھتا ہے۔ اے یثرب دنیا کی انگوٹھی میں تو گننے کی مانند منور ہے۔ تیری زمین اپنی عظمت کی جائے تولید ہے، تو نے اُس شہنشاہ معظم کو اپنے دامن میں جگہ دی۔ جس نے تمام اقوام عالم کو اپنے دامن میں پناہ دی تھی۔ اس شہنشاہ معظم کی عظمت کا کیا مقام و مرتبہ کہ اس کے پیروکار اس دنیا کے عظیم شہنشاہ بن گئے۔ مثلاً ترکی میں سلاطین عثمانیہ جنھوں نے روم کے عیسائی حکمرانوں کو شکست دی اور عجم میں عمر فاروقؓ ایران کے بادشاہ جمشید تخت پر براجمان ہو گئے۔ یوں تو مذہب اسلام میں قومیت کا کوئی تصور نہیں ہے، دنیا کے ایک گوشے سے دوسرے گوشے کے مسلمان کا آپس میں بھائی کا رشتہ ہے اور اگر کبھی قومیت کا تصور ہوتا بھی تو اس کی بنیاد نہ ہند ہوتی نہ فارس اور نہ شام بلکہ یثرب ہوتی۔ پھر یثرب سے خطاب کرتے ہوئے کہتے ہیں اے یثرب! تو عالم کے تمام مسلمانوں کا بچاؤ ماوا ہے۔ تجھ میں وہ کشش نقل ہے کہ جس کی بدولت تمام عالم کے مسلمان تیری طرف بن ڈور کھینچے چلے آتے ہیں۔ جس طرح اس کائنات میں صبح و شبنم لازم و ملزوم ہیں اسی طرح یثرب و ملت اسلامیہ ہے۔ یثرب اقبال کا محبوب ترین شہر ہے جس کا اظہار انہوں نے مثنوی 'اسرار خودی' کی ایک فصل میں بھی کیا ہے۔

خاک یثرب از دو عالم خوشتر است

اے خنک شہرے کہ آنجاں دلبر است

☆

حوالے :

- (۱) بانگِ درا - علامہ اقبال (۲) تاریخ طبری تاریخ الامم والملوک - نفیس اکیڈمی، اردو بازار، کراچی (۳) اسرار خودی - علامہ اقبال (۴) داستان اٹھارہ سو ستاون - مرتب : فاروق ارگلی (۵) تاریخ اندلس - سید ریاست علی ندوی ☆☆☆

ISSN: 2249-894X

REVIEW OF RESEARCH

UGC
APPROVED

International Online Multidisciplinary Journal

Journal No.: 48514

Volume - 8 | Issue - 2 | November - 2018

Impact Factor : 5.7631(UIF)

JOSH MALI AABADI B HESİYAT TARAKI PASAND SHAYAR

re-search

(noun)

RESEARCH

EXPERIMENTATION

ANALYSIS

True Copy



U. E. S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur



Dr. Shaikh Maimuna A.

Asso - Professor , U. E. S. Mahila Mahavidyalaya Solapur.

Abstract : Taraki Pasand Shayaro ka nam aate he chand shohara ke saat Josh Mali Aabadi ka nam zehen me ubharta hai . aur do halseyato se aapni taraf mutowaja karta hai. Shayer - e - inqalab, Shayer - e - Shabab kaha gaya hai.....

Dr. Shaikh Maimuna A.

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



جوش ملیح آبادی بحیثیت ترقی پسند شاعر

اسوسی ایٹ پروفیسر ڈاکٹر شبیح میمن، اعلیٰ مدرسہ
ہوای لائسنس مہیلا ماہوادیہ، ٹولاپور

ترقی پسند شاعروں کا نام آتے ہی چند شعراء کے ساتھ جوش ملیح آبادی کا نام لہن میں ابھرتے اور دو حیثیتوں سے اپنی طرف متوجہ کرتے۔ شاعر انقلاب، شاعر شباب بھی کہا گیا ہے۔ دور حاضر کے بیشتر نقادین ادب نے ترقی پسند تحریک کا جائزہ لیتے ہوئے جوش ملیح آبادی کی خدمت کا اعتراف کیا ہے۔ یہ ایک حقیقت ہے کہ اردو میں ترقی پسند تحریک کو آگے بڑھانے میں جوش کا قابل قدر حصہ رہا ہے۔ ترقی پسند تحریک کے ابتداء سے ہی جوش اس سے متعلق ہو گئے تھے اور آخر تک نہ صرف یہ کہ اس تحریک کے ساتھ رہے بلکہ اپنی تخلیقات میں ترقی پسندانہ نظریات سے استفادہ بھی کیا لیکن جب ہم جوش کی شاعری کا جائزہ لیتے ہیں تو ان کے پہلے ہمیں بہت سے وہ موضوعات شروع سے ہی کھرما دکھائی دیتے ہیں جو ترقی پسند شعراء کے پہلے خصوصیات کے حامل ہیں۔

جوش ملیح آبادی کی شاعری کا زمانہ ۲۰ ویں صدی سے ہی شروع ہوتا ہے۔ انہوں نے اپنی شاعری کی ابتداء سے ہی اپنی نظموں میں فوسے موضوعات اختیار کرنا شروع کر دیے تھے جو ترقی پسند تحریک کے آغاز کے بعد اردو شعراء نے اپنی تخلیقات میں اختیار کیے۔ یہ تحریک ۲۰ ویں صدی کے ابتداء سے ہی رونما ہونے والی معنوی، سیاسی اور سماجی تبدیلیوں کا نقطہ ارتقاء بھی۔ اس لحاظ سے جوش کی شاعری میں ترقی پسندانہ عناصر کا ملنا مناسب چیز نہیں۔ ۱۹۳۶ء میں لکھنؤ میں جو کانفرنس ہوئی تھی اس میں ادب کی مقصدیت پر زور دیا گیا۔ سرمایہ دارانہ نظام سے ٹھیک و کلچر کو خطرات تھے۔ ان سے ادیبوں کو آگاہ کیا گیا اور بتایا گیا کہ فنکار کا منصب یہ ہونا چاہیے کہ وہ ادب کے ذریعے انصافیت، جمہوریت اور اخوت و مساوات جیسی اقدار کو ترجیح دے۔

اس تحریک کو پندوسٹن کی مختلف زبانون کے ادیب اور شاعروں کا تعاون حاصل تھا۔ بعد ازاں وہ تمام فنکار تحریک کے مقاصد کے حصول کے لئے سرگرم عمل ہو گئے۔ ترقی پسند تحریک نے اردو ادب پر اپنے گہرے اور ہمہ گیر اثرات مرتب کئے اور اردو کے مختلف اصناف ادب میں تحریک سے متاثر ہونے لگے لیکن خاص طور پر اردو شاعری پر ترقی پسند تحریک کے بہت زیادہ اثرات پڑھے اور اس تحریک کے زیر اثر اردو شاعری میں ایک نیا سرمقے کا اضافہ ہوا۔ شاعروں کی ایک پوری نسل جس میں جوش، مجاز، مندو، جنتی، علی سردار جعفری، فیض احمد فیض، مجروح وغیرہ شامل تھے۔ ترقی پسند تحریک کے زیر اثر اردو شاعری میں نظم گوئی کو بڑا فروغ حاصل ہوا اس تحریک سے اردو شاعری میں مقصدی اور موضوعاتی نظموں کو اہمیت حاصل ہوئی۔ تقابلی رجحان کے تحت غلامی کے خلاف شعراء کی جلاکوں اور آزادی کے موضوعات پر بھی بہت حساب نظموں کہی گئی۔ حقیقت نگاری کے تحت ترقی پسندوں نے اپنی نظموں میں عام انسانی زندگی کی تصویر کشی کے ساتھ ساتھ عام انسانی زندگی کے مسائل اور نچلے غریب طبقے کے دکھ درد، پریشانیوں اور مصیبتوں کی بھی بھرپور ترجمانی کی ہے اور ان کے اسباب

کو بھی بے نقاب جہالت میں پیش کیا۔ ترقی پسند تحریک کے زیر اثر اردو شاعری میں محبت اور محبوب کا ایک تقریباً نیا تصور سامنے آیا اور شاعری کے اظہار اور زبان و بیان کے پیرایوں پر بھی اپنے اثرات مرتب کئے۔

اردو شعر و ادب میں ترقی پسندانہ اور انجمن ترقی پسند مصنفین کے اثرات کا جائزہ لیتے ہوئے جب ہم جوش کی شاعری کے موضوعات ان کے انداز بیان اور اب و لہجہ پر نظر ڈالتے ہیں تو جوش ہمیں کافی اہم دکھائی دیتے ہیں اس تحریک سے پہلے جوش ملیح آبادی نے اپنی انفرادیت قائم کر لی تھی اور وہ ایک خالص نظم گوئی کی حیثیت سے معروف ہو چکے تھے۔

جوش کی ۱۹۲۶ء سے قبل کی نظموں سے یہ صاف واضح ہے کہ جو کام پریم چند نے افسانوی ادب کے ذریعے انجام دے رہے تھے جوش نے اپنی شاعری میں اسے مقلد بنا لیا۔ جوش کی حقیقت پسندی، مقصدیت اور انقلاب کی نعرہ بندی ان کے اجتہادی ذہن کی دلیل ہے۔ جوش کی فلور الکاتمی کا معجزہ تھا، انہوں نے غیر شاعرانہ موضوعات کو بڑی خوبی کے ساتھ شاعرانہ بنا دیا۔ جوش کے سرگرم جذبے نے ابتداء ہی سے دنیا اور بالخصوص عالم ہندوستان کے زخموں کو محسوس کر لیا تھا۔ اس لئے ان کی نظموں میں جو بڑا، سرگرمی، جوش اور جذبہ موجزن ہے اس کی جھلک ان کے پیش روؤں میں کہیں نہیں ملتی۔ "حالاتِ حاضریہ" شکستِ زندان کا خواب، "نامِ غریب" گرمی اور دہکتی بزلزلا، ہم لوگ وغیرہ قابل ذکر نظموں ہیں۔ ان نظموں میں جوش نے آزادی، انقلاب، بغاوت اور حقیقت کی بھڑیور ترجمانی کی ہے۔ انہیں موضوعات کو ترقی پسند مصنفین نے بہت بعد میں اپنایا تھا۔ "حالاتِ حاضریہ" جو پہلی جنگ عظیم کے زمانے میں لکھی گئی تھی جوش نے ہندوستانی حالات سے عوام کو آگاہ کرتے ہوئے جنگ کے نقصانات بھی بتائے ہیں اور اس کا احساس دلاتے ہوئے کہتے ہیں۔

ہر چیز پر سکوت ہے ہر تہے پندیں ہے
خیم حکمران سے دہر میں دنیا اداس ہے

یہ جنگ کیا ہے ایک مجسم جنوں ہے

گلزارِ کلانت کے شالوں میں خون ہے

ان کی ایک اور نظم "شکستِ زندان کا خواب" جو کہ ۱۹۲۱ء میں لکھی گئی تھی جوش کی سیاسی اور سماجی موجد بوجھ اور عالمی ہمہ تنی کی مثال ہے۔ اس نظم میں جوش نے ہندوستان کو ایک قید خانے کی شکل میں پیش کیا ہے۔ اس قید خانے کے قیدی اب انقلاب برپا کرنے والے ہیں۔ وہ لکھتے ہوئے لگے ہیں وہ اب قید کی زندگی سے اکتا گئے ہیں اور غصے میں بے قابو ہوئے لگے ہیں۔ بالمشافہ وقت کا چہرہ ان کی اس کیفیت سے خشک نظر آ رہا ہے۔ جوش اس نظم میں خطاب کا انداز اختیار کرتے ہوئے کہتے ہیں۔

کیا ان کو عید تھی ہوشوں پر جو ٹھل لگایا کرتے تھے
ایک روز اس خاموشی سے ٹپکیں گی دہکتی تقریریں

۱۹۲۸ء میں سلطنت کمیشن کی آمد کے موقع پر ایک نظم "نامِ غریب" لکھ کر اپنے ظہنی اثرات پیش کئے۔ ۱۹۳۱ء میں زندوں کا گیت لکھ کر قفس کی کڑوٹوں میں طوفان کی آمد کی اطلاع اور آزادی کی شدید خواہش کا کھنڈ لظہار کیا۔ اس طرح نظم "بوشیار" میں ملک کے مزدوروں کو سرمایہ داری کے خطرات سے آگاہ کیا۔ نظم "لمحہ آزادی" میں جو انہوں نے ۱۹۳۱ء میں لکھی تھی غلامی سے اپنی نفرت کا اظہار اس طرح کیا تھا کہ آزادی کا ایک لمحہ ہے ہنر



غلامی کی حیات جلودار سے
 آزادی کی ایک یل کو غلامی کی حیات جلودار پر ترجیح دے کر جوش نے بجا طور
 پر آزادی اور غلامی کے فرق کو واضح کر دیا تھا۔ ان نظموں کا جائزہ لینے کے بعد ہم
 بغوی اندازہ کر سکتے ہیں کہ جوش کی نظموں میں انقلاب ، بغاوت ، آزادی ، امن اور
 حقیقت کی تصویر کتنی جیسے مضامین ترقی پسند تحریک کے وجود میں آنے سے پہلے ہی
 نظر آچکے تھے۔ ترقی پسند تحریک کے بعد یہ مضامین اور معلقوں پر کر ابھڑے ہیں۔ ان
 کی اس دور کی ایک اہم اور مقبول نظم "ایسٹ انڈیا کمپنی کے فرزندوں کے نام" کے لئے
 اگر یہ کہا جائے کہ ترقی پسند ادب کے فن یاروں میں اس سے زیادہ مقبول کوئی اور نظم
 نہیں ہو سکتی ہے تو غلط نہ ہوگا۔ یہ نظم آج بھی اتنا ہی تازہ تر لگنے والے پر طاری کرتی
 ہے ، متحظہ ہو :

کس زبان سے کہہ رہے ہو آج تم سوداگرو!
 دہر میں انسانیت کے نام کو اونچا کرو

جب یہاں آئے تھے تم سوداگری کے واسطے
 نوع انسانی کے مستقبل سے کیوں آف نہ تھے؟
 جوش نے اپنے زمانے کے مسائل کو اپنی شاعری میں اس طرح سمجھ دیا ہے کہ وہ ترقی
 پسندوں کے پیش رو کی حیثیت کے حامل بن گئے ہیں اور یہی سبب ہے کہ ترقی پسندوں نے
 اگر کسی کو آخری وقت تک قبلہ زندان جہل تسلیم کیا ہے تو وہ صرف جوش ہیں۔ جوش کی
 باخوبی اور مجاہدانہ روش اور ان کا انداز کچ کلپی اردو شاعری کا سرمایہ نظر رہے گا۔
 00000



جوش ملیح آبادی



اسوسی ایٹ پروفیسر ڈاکٹر شیخ میمونہ اللہ بخش
 یو ای ایس مہیلا مہاودھیالیہ ، شولاپور





Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: Dr. Shaikh Maimuna A. Topic:- Josh Mali Aabadi B Hesiyaat Taraki Pasand Shayar. College : Asso – Professor , U. E. S. Mahila Mahavidyalaya Solapur. The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of Nov 2018.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
E-mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

Review of Research



International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 11 | August - 2018

5.7631(UIF) 2249-894X

इलेक्ट्रानिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम आज और कल



प्रा. जमादार रुकसाना एल.

प्रा. जमादार रुकसाना एल.

यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना : कल्पना कीजिए आज सवेरे उठने के बाद पहली चाय के साथ हमने न समाचार पढ़ा न टि वी पर समाचार सुना और न ही रेडिओ पर समाचार या कोई अन्य कार्यक्रम सुना।.....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम आज और कल

प्रा.जमादार रूकसाना एल.
यु.ई.एस.महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना

कल्पना कीजिए आज सबेरे उठने के बाद पहली चाय के साथ हमने न समाचार पढ़ा न टि वी पर समाचार सुना और न ही रेडिओ पर समाचार या कोई अन्य कार्यक्रम सुना। और तो और आज सबेरे से न ही हमने किसी से मोबाईल पर बात की, न ही किसी को एसएमएस किया और न ही आज कोई पत्रिका या कोई पुस्तक पढ़ी हो। ऐसे सोचना या कल्पना करना भी हमारे लिए कितना मुश्किल हो रहा है, वहाँ अगर प्रत्यक्ष रूप से ऐसा होगा तो क्या होगा? क्योंकि आज हम जिस युग में जी रहे हैं, वह विज्ञान, तंत्रज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के साथ-साथ अब मीडिया का युग हो गया है। सब उठते ही हम समाचार पत्र, टी.वी, रेडियो, मोबाईल का समावेश अपने जीवन में करते हैं और मीडिया यह किसी भी विषय की जानकारी को जोड़ने का उजागर करने का सशक्त माध्यम है। जनसंचार माध्यम को हम दो भागों में विभाजित करते हैं।



१. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम।

२. मुद्रण माध्यम।

यह दोनों भाग अपने-आप में परिपूर्ण हैं। उनकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, अपना-अपना महत्त्व है। तो सबसे पहले हम मीडिया या माध्यम क्या है? इस पर विचार करेंगे।

जनसंचार विशेषज्ञ संचार को अर्थ का संप्रेषण कहते हैं- "संचार उस पारस्परिक क्रिया का रूप है जो प्रतीकों के माध्यम से घटित होता है। ये प्रतीक, प्लास्टिक या किसी अन्य रूप में हो सकते हैं और किसी व्यवहार विशेष के लिए उद्घोषित का कार्य करते हैं। ऐसा व्यवहार जो व्यक्तिगत विशेष दशाओं के अभाव में स्वयं प्रतीक द्वारा उद्घोषित नहीं हो पाता।"^१

संचार मनुष्य के जीवन की प्रथम आवश्यकता है। संचार की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी की मानव जाति। समय बदला, समाज बदला, धीरे धीरे मानव सभ्यता का विकास होने लगा और माध्यमों में परिवर्तन आने लगा।

लेखन, प्रकाशन संपादन और प्रसारण कार्य को मुद्रण और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से आगे बढ़ाने की कला को मीडिया (माध्यम) कहते हैं। आधुनिक बदलते परिप्रेक्ष्य में सबसे शक्तिशाली माध्यम जो हमें प्रभावित कर रहा है वह मीडिया ही है। बदलते वैज्ञानिक स्वरूप ने आज पूरे विश्व को इतना छोटा बना दिया है कि एक बटन दबाते ही सम्पूर्ण विश्व हमारे सामने आ जाता है। तकनीकी परिदृश्य इतना बदल गया है कि कम्प्यूटर के माध्यम से पूरा विश्व हमारे सामने कम्प्यूटर के स्क्रीन पर दिखाई देता है। दृश्य, आँकड़े तथा तस्वीरें इतनी आसानी से प्राप्त हो जाती हैं कि तिसकी कभी हमने कल्पना तक नहीं की थी।

मीडिया के कारण सम्पूर्ण विश्व हमें छोटा महसूस होने लगा है। बदलते परिप्रेक्ष्य में मीडिया व्यक्ति को उसके आधुनिक, सामाजिक परिवेश से जोड़ने की विश्व सहभागिता की ओर अग्रसर करता है। मीडिया की भूमिका विश्वस्तरीय परिप्रेक्ष्य में इतनी अहम हो गई है कि आज इसका प्रभाव दुनिया के हर एक कोने में दिखाई देती हैं। जिस तरह "ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दुसरों तक पहुँचना मुद्रित माध्यम था। उसी तरह शब्दों चलचित्रों द्वारा लोगों का मनोरंजन कराना इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है।"^२ आज मीडिया का प्रभाव छोटे बच्चों से लेकर वयस्क व्यक्तियों तक सभी को अपने जाल में जकड़े हुए है। आधुनिक समय में मीडिया यह एक महत्त्वपूर्ण संप्रेषण माध्यम तथा अनुसंधान है।

माध्यमों के दोनों भागों में से पहला हिस्सा आता है - मुद्रित माध्यम का। इसका प्रयोग स्वतंत्रता के पहले से होता आया है और आजादी के कामों में भी हस्तलिखित पत्रिकाओं का प्रयोग होता था और बाद में आधुनिक मुद्रण यंत्र आ गए। उसके बाद मुद्रित माध्यमों के

प्रयोग में बहुत बड़ी क्रान्ति हुई।रूपचंद्र गौतम के अनुसार "छपे हुए मटीरियल का आम जनता तक सूचना पहुँचाने का कार्य ही मुद्रित माध्यम है।"³ समाचार-पत्र,पत्र-पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित होनेवाले दैनिक साप्ताहिकों का मुद्रित माध्यमों में समावेश होता है।

खबरों को आम जनता तक पहुँचाने के लिए दो मार्ग सबसे ज्यादा लोकप्रिय रहे हैं।शिक्षित लोगों के लिए समाचार पत्र तथा अर्धशिक्षित लोगों के लिए रेडियो।पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएँ और ग्रंथ पढ़ने के लिए स्थानीय संस्थानों द्वारा ग्रंथालय स्थापित होते हैं। वहाँ अत्यल्प शुक्ल में पाठकों को पढ़ने के लिए साहित्य उपलब्ध हो जाता है।आजकल इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का चाहे जितना प्रसार हो लेकिन सुबह सवेरे हमें चाय के साथ आज भी समाचार-पत्र न पढ़ने को मिले तो चाय का स्वाद जैसे फीका लगता है।अनेक किताबें,पत्र-पत्रिकाओं का आज भी लोग बड़ी बेसब्री से इंतजार करते हैं और बड़े चाव से पढ़ते भी हैं।छात्राओं के लिए सहायक के रूप में मुद्रित माध्यमों की मदद लेनी पडती है। यह एक मार्गदर्शक के रूप में उन्हें सहायता करते हैं।

संचार माध्यमों के इस युग में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का महत्त्व बढ़ रहा है। पूरे विश्व भर में ब्राँडबैंड ग्राहक सिर्फ पचार करोड़ है। इंटरनेशनल टेलिकम्युनिकेशन युनियन इसका प्रयास कर रही है कि ब्राँडबैंड आम लोगों तक पहुँचे और पूरे विश्वभर में जो गरीब देश और गरीब वर्ग है उनके पास यह नया सूचना का तंत्र पहुँचे। पूरे विश्व में इंटरनेट का प्रयोग करने वाले केवल पचीस प्रतिशत व्यक्ति हैं। अभी भी पचहत्तर प्रतिशत लोग इंटरनेट का प्रयोग नहीं कर पाते क्योंकि वह कम्प्युटर साक्षर नहीं है।अर्थात् आज भी लगभग पचहत्तर प्रतिशत लोग मुद्रित माध्यमों का उपयोग करते हैं। इसीलिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का पठन-पाठन करने वालों की संख्या आज भी अधिक हैं।

मुद्रित माध्यमों के साथ-साथ गत २०-२५ वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आज मनुष्य के विकास का एक पर्याय बन चुका है। इस संदर्भ में नैमिशराय का कथन है-"विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से तात्पर्य ऐसी विद्या से है,जिसके माध्यम से नई तकनीकी के द्वारा व्यक्ति देश-विदेश की खबरों के अलावा अन्य जानकारी भी प्राप्त करता है।"⁴

मानवीय संवेदनाओं के आदान-प्रदान के लिए बहुत पहले से माध्यमों की आवश्यकता रही है और आज इसका स्थान इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों ने ले लिया है। जिससे बात करनेवाले व्यक्ति को हम प्रत्यक्ष रूप से देख और सुन सकते हैं। सात समन्दर पार बैठे व्यक्ति को हम अपने पास महसूस करते हैं।

आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रभाव बढ़ रहा है। सामाजिक जीवन में अनेक परीक्षाएँ भी इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाईन हो रही हैं। आईटी के क्षेत्र में तो सारे काम कम्प्युटर / इंटरनेट के माध्यम से हो रहे हैं। इसके लिए आप को ऑफिस जाने की भी जरूरत नहीं है। यह कार्य आप कम्प्युटर या लैपटॉप पर कही भी कर सकते हैं। किसी शब्द के अर्थ की जानकारी चाहिए तो आप झट से इंटरनेट द्वारा उसकी सारी जानकारी विस्तृत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। वहाँ आप को घंटों ग्रंथालयों में बैठकर अनेक पुस्तकें देखने की जरूरत नहीं पडती है। कोई पुस्तक आप पढ़ना चाहते हैं और वह ई बुक है तो उसे आप अपने घर ही पढ़ सकते हैं। उसके लिए ग्रंथालय जाने की आवश्यकता नहीं है।

रेल,हवाई सेवा का टिकट आप अपने घर बैठे उपलब्ध करा सकते हैं।साथ ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से आप अपने टिकटों की स्थिति भी जान सकते हैं। बैंक के व्यवहारों में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से ग्राहकों को सेवा देना आसान हो गया है।ई-बैंकिंग सेवा,एटीएम सेवाओं का प्रयोग अनेक लोग बड़ी सहजता से कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में सारे व्यवहार शेरों की खरीदी और बिक्री भी ऑनलाईन होती है। पूरी जानकारी का भण्डार हमें घर बैठे हो जाता है। हम ऑनलाईन शॉपिंग कर सकते हैं,जिसे डोर शॉपी कहा जाता है। फेसबुक,ट्यूटर के माध्यम से हम अपने विचार सोशल नेटवर्किंग द्वारा लोगों के सामने रख सकते हैं। कोई भी स्थान,गाँव,देश,खंड,कहीं भी हो इंटरनेट पर गुगल सर्च के माध्यम से उस जगह का सही स्थान,उसके आस-पास के स्थानों की सही जानकारी तथा संपूर्ण नक्शा हमें घर बैठे मिल जाता है। इस कार्य में सैटेलाइट की मदद ली जाती है। भारत एक विकासशील देश है परंतु यहाँ के सभी व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से परिचित नहीं हैं। इसीलिए उन्हें जब इन माध्यमों का ज्ञान होगा तब ही वे इसका सुगमता से प्रयोग कर सकते हैं।धार्मिक कार्य में भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग होता है।इस में ऑनलाईन दर्शन-पूजा की जाती है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। व्यक्ति के रहन-सहन,खान-पान,भाषा,पहनने-ओढ़ने,वार्तालाप करने में यह दिखाई देता है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के बढ़ते प्रचलन के कारण आज हम दो हफ्ते,महीने पहले का समाचार पत्र इंटरनेट के माध्यम से पढ़ सकते हैं।पत्र-पत्रिकाएँ देख सकते हैं,उसे पढ़ सकते हैं। आज मोबाइल ब्राँडबैंड के ग्राहक तो केवल १०%हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से लोग आज अपने माहौल,रिश्तेदार और समाज से कटते नजर आ रहे हैं। यहाँ तक कि घर के लोगों से भी संवाद नहीं कर पा रहे हैं। वह या तो नेट पर किसी अनदेखे इन्सान से दोस्ती करते हैं,या उससे बातें करते रहते हैं या संगीत सुनते रहते हैं या गेम खेलते रहते हैं,या फिर मोबाइल पर घंटों दोस्तों से बातें करते रहते हैं।इसका प्रभाव आपसी रिश्तों पर पड़ रहा है। आज-कल मनुष्य इन माध्यमों का गुलाम बन कर रह गया है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आज यह एक सामाजिक बदलाव का स्वरूप है।आज यह व्यक्ति के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के विकास के लिए नई दिशा की ओर अग्रसर करते हैं।इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की पीडा यह भी है कि यह सामाजिक सरोकारों से कटता जा रहा है।इसका सामाजिक अस्तित्व मिटता जा रहा है।

उपसंहार :

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और मुद्रित माध्यमों का अध्ययन करने तथा समाज में और व्यवहारों में इनका प्रचलन करने तथा समाज में और व्यवहारों में इनका प्रचलन करते हुए यह कहा जा सकता है कि एक ओर तो हम देख रहे हैं कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा है। सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलाव तेजी से बढ़ रहे हैं परंतु इसके दुष्परिणाम भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहे हैं। इसके प्रयोग का समाज में असर दिखना शुरू हो गया है। पर्यावरण भी इसके असर से नहीं छूट पाया है। आर्थिक मात्रा में ई-वेस्ट निकलता है। उन्हें जलाने से जहरीले वायु निकलती है, जो हमारे पर्यावरण के लिए घातक है। मोबाइल के अधिक प्रयोग से हमें कई बीमारियों का सामना करने पड़ता है। ज्यादा समय तक कम्प्यूटर पर काम करते रहने से व्यक्ति की आयु कम हो रही है। भविष्य में इसका प्रयोग बढ़ता ही रहेगा परंतु मनुष्य को अपने स्वास्थ्य के बारे में विचार कर इसका प्रयोग करना चाहिए। मुद्रित माध्यमों का प्रयोग भी आज बढ़ा है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग करने से इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जितनी क्षति होती है उतना ही मुद्रित माध्यम फायदेमंद है क्योंकि पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि का सोचने का नया आयाम मिलता है। पढ़ने से व्यक्ति की सेहत पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता उल्टा उसका ज्ञान बढ़ता है। आज भी मुद्रित माध्यम पर लोगों का विश्वास अधिक है तभी तो दूरदर्शन पर देखी हुई जानकारी की पृष्टि के लिए हम अगल दिन के समाचार पत्र में विस्तृत रूप से जानकारी पढ़ना चाहते हैं। मुद्रित माध्यमों में वाइरस से अपना डाटा डिलीट होने या सर्वर खराब होने से अपनी फाइलें या डेटा खराब होने का कोई डर नहीं रहता। विद्युत कनेक्शन न होने पर भी हम सूर्य की रोशनी में या अन्य रोशनी में बड़ी आसानी से पुस्तकें पढ़ सकते हैं। बदलते समय के अनुसार आपसी विचार-विनिमय के लिए अनेक साधनों का विकास हुआ है परंतु पहले हम जब अपने किसी सगे-सम्बन्धी को पत्र-द्वारा जो भाव व्यक्त करते थे, वह हम आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मिडिया द्वारा व्यक्त नहीं कर सकते क्योंकि इनमें हम प्रत्यक्ष सम्पर्क तो कर लेते हैं परंतु मुद्रित/लिखित माध्यम से मनुष्य के मन के जो भाव व्यक्त होते हैं, उनमें भावबोध होता है, जब कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से केवल यथार्थ बोध होता है।

मीडिया के इन दोनों माध्यमों में गुण और दोष दोनों विद्यमान हैं लेकिन दोनों का अपना अलग-अलग महत्त्व है। दोनों ही माध्यमों की सहायता से मनुष्य अपना विकास अच्छी तरह से कर रहा है। दोनों ही माध्यम एक-दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों माध्यमों का योग्य उपयोग करें तो मनुष्य हमेशा अग्रसर रहेगा, सफलता उसके कदम चूमेंगी।

संदर्भ सूची :

१. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ - डॉ. भोलानाथ तिवारी पृष्ठ. क्र. २०.
२. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया - पी.के. आर्य, प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली - ११००२, सं. २०१०, पृ. २१.
३. प्रिंट मीडिया सिद्धान्त एवम् व्यवहार - रूपचंद गौतम, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली ११००५३, प्र. सं-२००८, पृ-१४.
४. संचारिका पत्रिका अप्रैल -मई-जून ३ २०१२, पृष्ठ सं-४.



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: प्रा. जमादार रुकसाना एल. Topic:- इलेक्ट्रानिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम आज और कल. College : यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर। The research paper is original & innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of Aug 2018.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief



वैश्विक हिंदी और बौद्ध दर्शन

डॉ. जयश्री शिंदे

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

प्रस्तावना -

"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"

"भवतु सर्व्व मंगलम्"

वैश्विकरण एक अद्भूत शक्ति है, जो मनुष्य के बीच आर्थिक, राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक बहु आयामों में राष्ट्रीयता में ऊपर सोचने की प्रक्रिया है। वैश्विकरण आज जरूरी हो गया है, उसे स्वीकार करने में तात्पर्य है, राष्ट्र को विकसित बनाना। वैश्विकता अर्थात् सीमित दायरे में ऊपर उठकर विश्वमानव में तब्दील होना। वैश्विकरण मानवतावादी चेतना है तथा वैश्विकता मानवियता का विस्तार।

भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम्' को एक जीवनार्थ माना गया है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ एवं विभिन्न जातीयों है, फिर भी यहाँ के लोग भाईचारे में कंधे से कंधा मिलाकर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अब तो पूरा विश्व एक हो गया है। भारत में वैश्विकरण की प्रक्रिया का आरंभ वास्को-ड-गामा के भारत खोज से होता है। वैश्विकरण अर्थात् अन्तरराष्ट्रीय एकीकरण की भावना। एकीकरण की भावना में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इंटरनेट (अंतरजाल) ने विश्व में हिंदी को बहुआयामी मंच प्रदान किया है। संस्कृति और सभ्यता को बढ़ावा देने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हिंदी भारत देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा है। वह सर्वाधिक मशक्त, समृद्ध, वैज्ञानिक गुणों से युक्त संपन्न भाषा है। भारत के संविधान में जिस हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया है। उस खड़ीबोली हिंदी का विकास निम्नस्वरूप देखा जा सकता है - वैदिक > संस्कृत, संस्कृत > पाली, पाली > प्राकृत, प्राकृत > अपभ्रंश, अपभ्रंश > आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ (हिंदी, बंगला, गुजराती, मराठी आदि)

मध्यकालीन भारतीय आर्य - भाषाओं में सर्वप्रथम पाली भाषा का विकास हुआ। जब संस्कृत साहित्यिक स्तर पर सर्वोत्कृष्ट, समृद्ध थी और ग्रामीण भाषा के रूप में पाली भाषा विद्यमान थी, तब सर्वप्रथम तथागत बुद्ध ने बौद्ध दर्शन की शिक्षा देने के लिये लौकवाणी (उस समय पाली थी) को राष्ट्रवाणी का रूप दिया। प्राकृत से पाली शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। यथा- प्राकृत > पड़ज > पाली

'अभिधानप्य दीपक' के अनुसार 'पा' धातु में लिंग प्रत्यय के योग से पाली शब्द बना है, जिसका अर्थ पालन या रक्षा करना है। 'पालयति राक्षतीति पाली' अर्थात् जिस भाषा से बुद्ध के वचनों की रक्षा हुई है, वह पाली है। तत्कालीन समय में पाली समग्र भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, तथा संपर्क भाषा थी। उसका अपना एक अंतरराष्ट्रीय महत्व बना और उसका प्रचार चीन, जपान, श्रीलंका तक व्याप्त था, आज भी उसका स्वरूप उन्हीं देशों में सुरक्षित है।



वैश्विकरण के इस दौर में आज बौद्ध दर्शन प्रामाणिक है। वैश्विकरण में विश्व मानवतावाद खत्म होने का खतरा संहरा रहा है, बल्कि उसका मुख्य उद्देश्य तो विश्व मानवता ही है। विश्व में भारत की संस्कृति को आदर्श संस्कृति माना जाता है।

इसीलिये पूरी दुनिया भारतीय संस्कृति को पसंद करती है। संस्कृति कोई एक चीज नहीं होती, कई चीजों को मिला-जुलाकर वह बनती है। भारत देश की लंबी परंपरा, इतिहास, भूगोल और सिंधू घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन में फली-फूली, जिसमें खुद की प्राचीन विरासत सम्मिलित है। भारत के पड़ोसी देशों के साथ विश्व मानवता के संबंध बने। भारत में अनेक धर्मों का उद्भव तथा विकास हुआ। बौद्धधर्म, जैन, हिंदू, सिख, इसाई आदि धर्म भारत की प्राचीन संस्कृति है। मोहंजोदाड़ों की खुदाई में सिंधू संस्कृति के पूरे अवशेष मिले हैं। जिसे हम आज सिंधू संस्कृति अर्थात् स्मार्ट सीटी के नाम से जानते हैं। यह संस्कृति बौद्धकालीन है। बौद्ध धर्म केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में फैला हुआ था और आज भी है। 'बुराई पर अच्छाई की जीत' कहावत के मुताबिक विश्व में बौद्ध धर्म मैत्री, अहिंसा, शांति का संदेश प्राचीन काल से देता आ रहा है। बौद्ध दर्शन में साधुता, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, सबका कल्याण हो की भावना, समता, अहं, करुणा, बंधुता, दया-दान तथा मुचिता और मानव लोक कल्याण की भावना प्रमुख है। वह सुखमय, मध्यम जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। 'अकुशल कर्म का त्याग, क्रोध का त्याग तथा क्षमाशील होने की शिक्षा बौद्ध धर्म ने दी है।

भारत को बुद्धकाल में 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। यहां जब बौद्ध शासकों की सत्ता थी तब देश का राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश आदर्श था जिसका प्रभाव आज हम पूरे विश्व में देख सकते हैं। जब तक भारत बौद्धमय था तब तक देश ने कभी भी परतंत्र की धूल नहीं चखी। राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम की शिक्षा बौद्धदर्शन में है, इसीलिए म्यानमार, बर्मा, थाइलैंड, श्रीलंका, जपान, केनिया तथा चीन जैसे राष्ट्र अपने देश के लिये मरमिटने को सदैव तत्पर रहते हैं। कंबोडिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, मेलबर्न, रूस, मंगोलिया आदि देशों में बौद्धधर्म का प्रचार तथा प्रभाव आज भी दिखायी देता है।

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का सारा श्रेय सम्राट अशोक को ही जाता है। उन्होंने अपनी पुत्री संघमित्रा तथा पुत्र महेंद्र को श्रीलंका में धर्म प्रचार के लिये भेज दिया था। जिन्होंने वहां अहिंसा का प्रचार किया, साथ में युद्ध बंद करके सच्चे हृदय से अपनी प्रजा के लिए पुनरुद्धार करना चाहा। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और प्रजा के लिए कल्याणकारी योजनाएँ अपनायीं।

बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग' बताया। वे कहते थे कि, मुझ पर श्रद्धा रखकर बिना समझे ही मेरे बनाये मार्ग को ना अपनाओ, बल्कि आओ और देखो, इस धर्म की परीक्षा करो। प्रत्येक को अपने चित्त में अनुभव करना होगा - 'अन्न दीप भव', अर्थात् हे भिक्षुओं! तुम अपने लिये स्वयं दीपक हो दूसरे की शरण में न जाओ। बुद्ध ने चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग बताए जो मनुष्य जीवन के उत्तम मार्ग हैं। उन्होंने बताया कि जन्म है इसीलिये मृत्यु है, जन्म ही दुःख का कारण है। बुद्धने मानव को दुःख से मुक्ति का मार्ग बताया। इसे ही मध्यम मार्ग कहा है। हम उसे निम्नस्वरूप देख सकते हैं-

* चार आर्य सत्य : १. दुःख, २. दुःख का कारण, ३. दुःख का निरोध, ४. दुःख निरोध का उपाय - "जरा, व्याधी और मरण"। जन्म से ही ये विविध दुःख उत्पन्न होते हैं।

* अष्टांगिक मार्ग : १. सम्यक दृष्टि, २. सम्यक संकल्प, ३. सम्यक स्मृति, ४. सम्यक वाक, ५. सम्यक कर्मान्त, ६. सम्यक आजीविका, ७. सम्यक व्यायाम, ८. सम्यक समाधि।

बौद्ध धर्म विज्ञानवादी विश्वधर्म है। उसे आज संपूर्ण विश्व मानवता का धर्म इस रूप में स्वीकार करता है। भारत में सभी दर्शनों पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव दिखाई देता है। सम्राट अशोक, सम्राट कनिष्क और सम्राट हर्षवर्धन इनके कारण भारत में बौद्ध धर्म बहुत लंबे समय तक राजधर्म बना रहा। वैष्णव धर्म पर बौद्ध धर्म का अधिक प्रभाव है। करुणा, जनसेवा, आदर्श, एकात्मिकता, प्राणीमात्र का कल्याण तथा मोक्ष आदि विचार बौद्ध दर्शन से ही वैष्णव धर्म में आये हैं। इसाई धर्म पर भी बौद्ध दर्शन का प्रभाव है। बोधीसत्व ही ग्रीक रोमन चर्च में 'जोसफ' हो गये। इस्लाम धर्म पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव है। बौद्धों का निर्वाण ही मुस्लीम सुफियों के यहाँ 'फना' होना है। इस्लाम धर्म का प्रचार एशिया के जीत प्रदेशों में हुआ, वे सभी उसके पहले बौद्ध धर्म के प्रधान केंद्र थे।

बौद्ध दर्शन का खोत नैतिकता एवं सहअस्तीत्व है। नैतिकता सह अस्तित्व की आधार शीला है। मनुष्य सर्वश्रेष्ठ होनेपर भी वह शाश्वत नहीं है। प्रतिक्षण परिवर्तन होनेवाला है। सब प्रणियों के प्रति 'मैत्री भावना' ही बुद्धदर्शन की

योकप्रियता का प्रमुख कारण है। तथागत का बौद्धदर्शन ही सत्य तत्व है। नैतिकता सत्य की शक्ति है, बुद्धि और विवेक इसके संबंध है। शील इनका चरित्र है, प्रेम, करुणा एवं अस्तित्व इसके आचरण हैं और जीते जी पूर्णता की प्राप्ति इनका लक्ष्य है।

बौद्ध दर्शन पर दुःखवाद का मिथ्या आरोपन किया गया है। बुद्ध ने जीवन जगत की चार सच्चाईयों को बहुत गंभीरता से समझाया है। उनकी वाणी समझने पर ही उनका सही अर्थ समझ में आता है। दुःख जीवन की एक सच्चाई है। उसका समुदय तृष्णाजन्य राग और द्वेष से होता है। इन कारणों का उत्खनन हो जाए तो दुःख का भी मूलोच्छेदन अपने आप हो जाएगा। इसके लिए अष्टांगिक मार्ग है। दुःख, दुःख का कारण, दुःख का निवारण अर्थात् निरोध और निरोध का उपाय, इन चारों को आर्यसत्य कहा गया है। बुद्ध की शिक्षा का अंतिम लक्ष्य दुःख निरोध है।

बुद्ध की दुःख संकल्पना जिनकी व्यक्ति से संबंधित है, उससे कहीं ज्यादा वह सामाजिक है। संसार में व्याप्त दुःख एवं विसंगतियों को देखकर तथागत बुद्ध के मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ। इन दुःखों से मानव समाज को मुक्त करने के लिये तथागत ने चार आर्य सत्यों - दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध एवं, दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा तथा अष्टांगिक मार्ग के आधार पर अपने संपूर्ण चिंतन एवं जीवन दर्शन की नींव रखी। उन्होंने अनुभव एवं तर्क के आधार पर जीवन के सत्य को परखा है। ओशो के अनुसार - "बुद्ध धर्म के पहले वैज्ञानिक हैं। यदि समझने के लिये तैयार हो तो बुद्ध की नौका में सवार हो जाओ।" बौद्ध धर्म की आध्यात्मिक एवं सामाजिक अवधारणाओं के कारण ही समाज में बुद्धिवाद एवं तर्क को प्रोत्साहन मिला है। इसी वजह से बुद्ध को विश्व गुरु माना जाता है।

परम सत्य तक पहुँचने की एक विद्या और विधि होती है, जो भारत के पास थी। अंतर्मुखी होकर भीतर की सच्चाईयों को देखने लगे तो एक ओर मन के मूल उतरते जायेंगे, तथा दूसरी ओर उससे अधिक गहरी सच्चाई का दर्शन होता जायेगा। ऐसा करते-करते परम सत्य तक पहुँचें कि सारे मूल उतर जायेंगे। बुद्ध ने संसार को यह विद्या मिखाई इसीलिए वे विश्व गुरु बने। वे सच्चाई की अनुभूति देखकर बुद्ध बन गये, दुःखों से मुक्त हो गये, उनका चित्त नितांत निर्मल हो गया।

बुद्ध विश्व के महान् दार्शनिक एवं विचारकों में से एक है और उनका दर्शन विश्व का क्रांतिकारी दर्शन है। बौद्धदर्शन ने विश्व को प्रभावित किया और विश्व शान्ति का उपदेश दिया। उन्होंने बताया कि मनुष्य को मध्यम मार्ग पर चलकर ही निर्वाण संभव है। मानवतावादी समस्त गुणों ने बुद्ध परिपूर्ण थे। उनमें ध्रमा, सहनशीलता, त्याग, दया, स्नेह, करुणा थी।

वैश्विक स्तर पर भारत के अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं, उसका कारण बौद्ध दर्शन ही है। इस दर्शन के विश्वव्यापी प्रचार के कारण भारतीय संस्कृति को विशेष पहचान मिली है। बुद्ध ने अहिंसा, दया, परोपकार, सहिष्णुता, नैतिकता, विश्व-बंधुत्व, मानव कल्याण और आदर्श संस्कृति के साथ ही जाति प्रथा का विरोध कर मानवतावादी धारणाओं का प्रचार किया। सांस्कृतिक दृष्टि से बौद्ध दर्शन का अनन्य साधारण महत्व है। इस दर्शन को माननेवाले चीन, जपान, श्रीलंका, बर्मा, मंगोलिया, तिब्बत, जावा, सुमात्रा तथा थाइलैंड जैसे देशों ने भारत को पवित्र तीर्थक्षेत्र बना दिया। इसी कारण बौद्ध दर्शन विश्व में अपना स्थान बनाने में कामयाब हुआ है। यह दर्शन मानवकल्याण और शान्ति का उपदेश देने के साथ ही साथ सुखी तथा संपन्न, समृद्ध जीवन की कामना करते हुए संपूर्ण विश्व को मैत्रीपूर्ण भावना से एकता के सूत्र में बांधने में सहायक तथा उपादेय है।

अंतः तथागत के बुद्धदर्शन को डॉ. बाबामाहब अम्बेडकर ने 'बुद्ध और उनका धर्म' यह पुस्तक लिखकर पुनर्जीवित किया। उन्होंने 14 अक्टूबर सन् 1956 में प्रतिज्ञा ली कि, मैं भारत बौद्धमय करूँगा और स्वयं लाखों अनुयायीयों के साथ बौद्ध धर्म का स्वीकार किया। भारत से लुप्त हुई बुद्ध की विपश्यना विद्या को पुनः भारत में लाने का कठिन कार्य सत्यनारायण गोंयका गुरुजी ने किया है। यही विपश्यना विद्या विश्वशान्ति और संगल मैत्री की भावना का संदेश देते हुए भारत की संस्कृति को वैश्विक बनाने में कारगर साबित हो रही है। भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना है। साथ ही सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की पहचान है, जिसकी भारतीय संविधान की उद्देशिका में महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ:

1. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा - डॉ. लक्ष्मिकान्त पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
2. बुद्ध विचारधारा के विविध आयाम - डॉ. पुष्पा वादव
3. भगवान बुद्ध जीवन और दर्शन- धर्मानंद कोसंबी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

4. निमल धारा धर्म की - सत्यनारायण गोयंका
5. बुद्ध और बौद्ध धर्म - आचार्य चतुरसेन
6. क्या तुद्ध दुखवादी थे ? - सत्यनारायण गोयंका
7. दर्शन बौद्ध दर्शन- डॉ. भानुदास आगेडकर, साहित्य सागर कानपुर



डॉ. जयश्री शिंदे
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: डॉ. जयश्री शिंदे . Topic:- वैश्विक हिंदी और बौद्ध दर्शन. College : एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर। The research paper is original & innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of Sept 2018.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

Jan-2019

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal



Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)

Special Issue 83 (खण्ड- 3) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श

UGC Approved Journal

ISSN :

2348-7143

January-2019

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2019 Special Issue -83

खण्ड-तीन

(समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श
(किन्नर, वृद्ध, किसान तथा नारी विमर्श))

विशेषांक संपादक :

डॉ.सौ.सुरेय्या इसुफजल्ली शेख

असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक

अध्यक्षा, हिंदी विभाग,

मा. ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत

अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 900/-

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik



अनुक्रमणिका

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ.मधुकर खराटे	09
2	अनुसूया त्यागी कृत मैं भी औरत हूँ में किन्नर विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा	16
3	किन्नरों के जीवन का यथार्थ चित्रण	डॉ.शंकर शिवशेट्टे	22
4	तिसरी तली का सच	चंदना जैन	26
5	गुलाम मंडी उपन्यास में किन्नर विमर्श	डॉ.पिरू. आर.गवली	30
6	किन्नरों की व्यथा- कथा को व्यक्त करता उपन्यास : 'जिंदगी ५०-५०'	डॉ.साहेबहूसैन जे. जहागीरदार	36
7	संघर्षों, पीडाओं और दर्द से भरा किन्नर जीवन 'मै हिजडा ...मै लक्ष्मी ..'के विशेष संदर्भ में	डॉ.एस.एन.तायडे	39
8	हिंदी कहानियों में किन्नरों की समस्या	डॉ.शेख सैबाशरीन हारून रशीद	44
9	कबीरन कहानी में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ.सदानंद भोसले, राजेंद्र वरपे	47
10	हासिए का समाज- किन्नर	डॉ.अनिल साळुंखे	51
11	नीरजा माधव के यमदीप उपन्यास में किन्नर विमर्श	प्रा. समाधान नागणे, प्रा.देवेंद्र देवकुळे	55
12	एक और तिसरी दुनिया - पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सोपरा ★	डॉ. जयश्री शिंदे	59
13	किन्नर कथा में मानवतावादी दृष्टिकोण	डॉ. सविता प्रमोद	63
14	हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श	डॉ. रविंद्र पाटील	67
15	तृतीय पंथियों का जीवन संघर्ष: 'जिंदगी ५०-५०'	तेजश्री पाटील	69
16	अधुरी देहधारी : मैं पायल.....	शीला घुले	71
17	उपेक्षित वृद्ध जीवन की दास्तान: समय सरगम	डॉ. अपर्णा कुचेकर	74
18	२१ वीं शती के हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ.अशोक मरळे	77
19	जिंदगी की संध्यवेला से भायाक्रांत दौंड	प्रा.निवृत्ती लोखंडे	81
20	कृष्णा सोबती के 'समय - सरगम' उपन्यास में वृद्ध -विमर्श	प्रा.दादासाहेब खांडेकर	84
21	कृष्ण बलदेव वैद के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श	डॉ. हृणमंत पवार	93
22	कृष्णा सोबती की कहानी दादी-अम्मा में वयोवृद्ध स्त्री की विवंचना	डॉ. मदन खरटमोल	98
23	समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श	ज्ञानेश्वर मेहेरकर	101
24	वृद्ध जीवन की सही पहचान:रमेशचंद्र शाह के उपन्यास	साहेबराव काम्बले	104
25	हिमांशु जोशी के कथा- साहित्य में वृद्धजनों के प्रति संवेदना	श्रीमती अरुणा	106
26	वृद्ध विमर्श 'बूढ़ी काकी', 'चीफ की दावत' तथा 'बापसी' कहानी के विशेष सन्दर्भ में	इब्रार खान	111
27	नई दुनिया और बुढापा : एक सामाजिक चिंतन	कु.अनिता राऊत	115
28	हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श	शिल्ली नायक	118
29	किसान विमर्श और फॉस	डॉ.गिरीश काशिद	120
30	समकालीन हिंदी- मराठी उपन्यासों में गाँव	डॉ.मनोहर भांडारे	128
31	फॉस उपन्यास और किसान विमर्श	रेवनसिद्ध चव्हाण, प्रो.सदानंद भोसले	131
32	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित किसान जीवन		134



एक और तिसरी दुनिया – पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपरा

डॉ. जयश्री शिंदे

असोसिएट प्रोफेसर एवं शोध - निर्देशक

हिंदी विभाग,

यु.ई.एस.महिला महाविद्यालय,

141/1, सिध्देश्वर पेठ, सोलापुर

हमारे समाज में केवल दो लिंगों - स्त्री और पुरुष को मान्यता मिली है। स्त्री और पुरुष सृष्टि निर्माण का आधार शिल है। लेकिन समाज में एक और मनुष्य वर्ग है जो लैंगिक विकलांग है। जिन्हें समाज में कई नामों से जाना जाता है - किन्नर, मौसी, हिजरा, तृतीयपंथी, तृतीयलिंगी, उभयलिंगी, खुसरा आदि। इस वर्ग को अश्लील और घृणा से देखा जाता है। माँ-बाप ऐसे संतान का त्याग करते हैं, घर से बेघर होकर हिजड़ों के मंडली का हिस्सा बन जाते हैं। जीवन यापन करने के लिए भिक्षावृत्ति एक मात्र साधन होती है। हिजड़ों को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है- बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। जैसे तो देखा जाए तो हिजड़े बुचरा ही होते हैं, क्योंकि ये जन्मजात न पुरुष न स्त्री होते हैं। नीलिमा किसी कारणवश स्वयं को हिजरा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं, मानसा तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा ज्यादातर स्त्री लिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं, तो हंसा शारीरिक कमी यथा नपुंसकता आदि यौन न्यूनताओं के कारण बने हिजरे होते हैं। नकली हिजड़ों को अबुआ कहा जाता है जो वास्तव में पुरुष होते हैं किन्तु धर के लोभ में हिजड़े का स्वांग रख लेते हैं।

भारत में जिस तरह एक वर्ग अछूत बहिष्कृत रहा है, उन्हें पूरे समाज ने बहिष्कृत किया है। लेकिन हिजड़ों को स्वयं पहले तो अपना परिवार अर्थात् माता - पिता ही त्याग देते हैं, उसे बहिष्कृत करते हैं। यह स्थिति पूर्वी और पश्चिमी देशों में पायी जाती है। यह हर सुविधा से बेदरबल है। यहाँ तक कि इन्हें इंसान भी माना नहीं जाता। समाज ने इन्हें हशिये पर डाला है। अब ये समाज अपनी पीरा बयान कर रहा है। छटपटा रहा है, दुनिया के सामने अपनी हकिकत बयान करने। मीडिया में टी.व्ही., फिल्मों में साहित्य में हिजरो पर चर्चा होने लगी है। माँ-बाप का द्वारा अपने ही संतान को त्यागना अमानवियता है, इसका एहसास खुलकर सामने आने लगा है। भारतीय साहित्य में इसकी चर्चा प्राचीन काल से होती आई है जिसमें महाभारत का श्रीखंडी है।

हिन्दी साहित्य में विभिन्न धाराओं में किन्नर विमर्श पर लिखा जा रहा है। विषय व्यापक और विस्तृत है। हिन्दी उपन्यासों में चित्रित किन्नर या तृतीय लिंगी वर्ग की मानसिक द्वंद्व उनकी समस्याएँ शोषण, अत्याचार, बेकारी, बेघरी, शिक्षा का अभाव आदि बिंदुओपर केंद्रित शोधालेख प्रस्तुत कर रही हैं। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' सन् 2016 को

से प्रकाशित हुआ है। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की चर्चित लेखिका चित्रा मुद्गल को वर्ष 2018 के प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्हें 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' के लिए मिला है। थर्ड जेंडर के प्रति समाज की दकियानूसी मानसिकता का विरोध करना उपन्यास के केंद्र में है। यह उपन्यास पत्र शैली में लिखा गया है। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' मुंबई के स्थान को दर्शाता है। जहाँ से एक कथा दिल्ली की ओर सफर करती है मोहन बाबा नगर बदरपुर तक। 'शारीरिक अपंगता' इस सत्य को मानव समाज क्यों



सहजता से स्वीकार कर नहीं सकता? शरीर के एक विशेष अंग के अभाव में उसे समाज अपने ही घर से निष्कासित करता है। मैंने बचपन से सुना है कि माँ के पेट से अगर साँप भी पैदा होता है तो भी माँ उसे मार नहीं सकती। फिर शारीरिक अपंगता के कारण माँ अपने ही बच्चे का कैसी त्यागती है। यहीं सबाल लेखिका समाज को पूछती है " माँ और बच्चे की मर्मांतक पीरा इस में चित्रित है। उपन्यास में लेखिका उसी पीरा में अपील करती दिखाई देती हैं। परिवार समाज की बाध्यताओं के कारण माँ से छीन लिये बच्चे को माँ ही समाज को चुनौती देती हुई घर वापस बुलाती है। मरते हुए ही सही वह माँ माफीनामा के साथ एक नई लकीर खींच जाती है। उसकी पहचान सारे समाज के समक्ष विज्ञापन छपवा कर करवाई जाती है। समाज उसके इस कार्य को सफल नहीं होने देता लेकिन एकनई लकीर तो खींचने में माँ सफल जरूर हो जाती है।

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' शीर्षक में उन लोगों की पीरा व्यंजित होती है जिनके पास अपना कहने के लिए कोई घर भी नहीं होता, अपना कहने को घर कोई कोना तक नहीं होता। वंदना बेन शाह यों तो एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार के मुरिवया की पत्नी है। उनके पति के पास मुंबई में अपना एक घर है, कुछ पुश्तैनी और कुछ स्वयं द्वारा खरीदी जमीन-जायदाद है और परस्पर की एक अच्छी - खासी दुकान भी है। उनका बड़ा बेटा किसी निजी या सरकारी संस्था में ठीक -ठाक पद पर कार्यरत है और बहु भी उसी संस्था में रोजगारात है। एक तरह से वंदना बेन खाते-पीते घर-परिवार की मालकिन है। किन्तु विडंबना यह है कि अपने मझले बेटे विनोद से न तो वे अपने घर के पते पर पत्राचार कर सकती है और न घर के फोन पर परिवार वालों के सामने बात ही कर सकती है। विनोद से पत्राचार करने के लिए उन्हें अपने घर के पास के पोस्ट ऑफिस से अपना निजी पोस्ट बॉक्स नंबर लेना परता है और उसी पोस्ट बॉक्स नंबर पर आधारित उपन्यास है। परिवार की प्रतिष्ठ बनाये रखने के लिए वंदना बेन माँ होकर भी किशोर विनोद को हिजरा चंपाबाई की मंडली को साँपना परा और दुनिया के सामने अपने पति और बड़े बेटे के उस झूठ में भागी बनना परा कि विनोद की एक सरक दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है अपने हिजरे बेटे विनोद की यादों को मिटा देने के लिए उसके परिवारवाले कालबा देवी वाला अपना पुराना घर बेचकर नाला सोपारा में एक फ्लैट लेलते है। अपने बेटे बित्री से उसकी माँ वंदना बेन चिट्ठी के माध्यम से संपर्क में जरूर रहती है लेकिन परिवार से छिपाकर। माँ-बेटे के पत्रों के माध्यम से जीते जी परिवार के लिए मर चुके इस हिजरे युवक बित्री ऊर्फ विनोद ऊर्फ विमली की त्रासदी है उपन्यास के केंद्र में है।

उपन्यास नायक विनोद, परिवार से त्यागने पर हिजड़ों के मंडली में रहकर अपनी पराई इगू के माध्यम पूरा करता है। उसे किसे के दया - अनुकंपा पर जीना नहीं है, वह स्वाभिमानी है। विनोद कष्टों और तकलीफों का सामना करते हुए पर लिखकर अपने पैरों पर खरा होता है, वह राजनीति द्वारा उपलब्ध कराये अवसर का लाभ उठाकर अपनी हिजरा विरादारी को भी ओढी गई नियति से मुक्त होने का प्रबोधन देने के लिए प्रसास करता है।

'शिक्षित बनो, संघटित बनो और संघर्ष करो' डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के मूलमंत्र का मानो विनोद पालन ही कर रहा है। डॉ. बाबासाहेब ने दलितों के मुक्ति के लिए शिक्षा एकमात्र रास्ता बताया है उसी तरह विनोद भी हिजरो की मुक्ति के लिए पराई को ही एकमात्र रास्ता दिखता है। वह चाहता है कि हिजरे लोग अपनी क्षमताओं को पहचाने कि वे किसी से कम नहीं है। वह पर - लिखकर मात्र आत्मनिर्भर बनकर रह जाए, वह अपनी शेष हिजरा विरादारी को कुएँ का मेरक बने रहने को नहीं छोड सकता था।

चित्रा मुद्गल विनोद के माध्यम से ही हिजरो को संबोधित करती है कि वे हिजरे होने के अभिशाप को अपनी नियति मानकर निराश न हों, बल्कि चीजों को बदलने की कोशिश करें। जिस तरह दलितों को गुलामी से मुक्ति करने डॉ. बाबासाहब ने ताउम्र संघर्ष किया। एक दलित की मुक्ति अपने संपूर्ण दलित समाज की मुक्ति में ही अंतर्निहित होती है, क्योंकि समाज विशेष में जन्म लेने के कारण ही उसे दलित होने की यातना भोगनी



पड़ती है। लेकिन हिजडों के बीच मिलने वाले वर्गीय - जीतीय विभेदों के चलते यह अंतिम सत्य नहीं है कि समस्त हिजडों की मृत्यु में ही एक हिजरे व्यक्ति की मुक्ति संभव है।

लेखिका का उपन्यास के माध्यम से यह आग्रह रहा है कि, हिजडों को भी आम इंसान की तरह जीवन जीने का अधिकार है। एक हिजरा व्यक्ति आम इंसान की तरह ही प्यार का, परिवारिक रिश्तों का भूखा होता है। लेखिका ने घर - परिवार से इस हिजरे बच्चे के बिछोह के दर्द को पूरी मानवीय संवेदना से उकसा रा है।

विनोद पुरुष हिजरा है और स्त्री हिजरा है और स्त्री हिजरा से उसकी पहचान अलग है अतः वह अपनी पहचान मिटा स्त्री हिजरा नहीं बनना चाहता। इसी कारण वह पैंट और टीशर्ट पहनता है। विनोद अपने आपको स्त्री हिजडे के रूप में ढालने को तैयार नहीं क्योंकि ताली पीटना कभी उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं रही थी। विनोद अपनी माँ से सवाल करता है कि, "जो लक्षण मुझमें नहीं हैं, उन्हें सिर्फ इसलिए स्वीकारें कि मेरी बिरादरी के शेष सभी उन हाव-भावों को अपना चुके हैं... बैठ जाऊँ...। उन्हीं के संग और रेजर से बांहों और छाती के जंगल को साफ करने लगूँ उनका प्रतिरूप बने बिना मेरे सामने जीवन जीने के विकल्प शेष नहीं है" यह कथन विनोद का स्त्री हिजरा न होना हिजरों को लेकर चली आ रही उस रुढ़ सोच पर प्रहार करना है कि हिजरों का तन पुरुष का होता है, आत्मा स्त्री की। विनोद को तुळसी के डेरे पर कई बार मारपीट का शिकार होना परावावजूद स्त्री हिजरे का खोल ओढने के लिए तैयार विनोद नहीं है। अतः लेखिका इससे यह संदेश देती है कि, हिजरे लोगों को भी समझना चाहिए कि किसी पुरुष हिजरे को स्त्री हिजरा बनने के लिए बाध्य करना अपराध है, अनुचित है। अगर कोई हिजरा स्त्री प्रकृति का है और स्त्री की आत्मा अपने अंदर महसूस करता है तो उसे भी स्त्री के रूप में जीवन जीने की छूट होनी चाहिए। हिजरा पूनम जोशी के अंदर स्त्री की कोमल भावनाएँ हैं इसीलिए वह पुरुष हिजरा विनोद से प्रेम करती है।

चित्रा मुदगल ने उपन्यास में और एक अहम मुद्दा उठाया है हिजडों पर होनेवाले यौन शोषण और बलात्कार का। हिजडों के साथ होनेवाली यौन हिंसा पर आज पुलिस कोई भी कार्रवाई नहीं करती। हकीकत में तो हिजरा देह पुलिस के लिए भी मन बहलाने का निखिलाना मात्र होती है। इसकी शिकार, हिजरा चन्द्रा और पूनम जोशी होती हैं।

उपन्यास में लेखिका ने हिजडों को भी मनुष्य मानने और उनके प्रति सहज मानवीय संवेदना रखने का आग्रह किया है साथ में हिजरा बिरादरी से भी उसकी नकारात्मक प्रतिक्रियावादी मानसिकता और कुप्रथाओं को लेकर आत्मचिंतन करना चाहिए संकेत भी देती है। हिजरा बिरादारी के लिए प्रयुक्त, 'हिजडा' शब्द आम बोलचाल में नामर्दगी और निष्क्रियता की व्यंजक गाली सदृश्य है। आजकल सभ्य समाज में हिजरा संज्ञा के स्थान पर 'किन्नर' संज्ञा का इस्तेमाल होने लगा है, पर हम देख रहे हैं कि उपन्यास का नायक विनोद स्वयं को किन्नर कहा जाना भी पंसद नहीं करता क्योंकि यह शब्द भी उसकी रीढ़ में बरमे की पैनी नोक सा धसने लगता है - "सुनने में किन्नर शब्द भले ही गाली न लगे मगर अपने निहितार्थ में वह उतना ही क्रूर ओर मर्मांतक है, जितना हिजरा। (हिजरा का निहितार्थ) किन्नर की सफेदपोशी में लिपटा चला आता है, उसकी ध्वन्यात्मकता में रचा - बसा। कोई भूले तो कैसे भुले।

अंतः उपन्यासकार ने नायक विनोद के द्वारा हिजरों के प्रति अमानविय सोच को मानवियता में बदलने पर जोर दिया है। साथ में हिजरो को विनोद के ही माध्यम से लेखिका आग्रह करती है कि, वे हिजरे होने के अभिशाप को अपनी नियति मानकर निराश नहीं अपने को बदलने का भी प्रयास करें। उपन्यास पाठकों को अंदर से उकसाता है और अपने मनुष्य होने पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। विनोद का हिजडों के माता-पिता के लिए भाष्य-कन्याधूण हत्या के दोषी माता-पिता अपराधी है। उससे कम दंडनीय अपराध नहीं जननांग दोषी बच्चों को



त्यागना। लेखिका हिजडों के प्रति गहरी मानवीय सहानुभूति अपील करती है। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' समाज की ती तीसरीसत्ता को घृणा, तिरस्कार और उपेक्षा के अंधेरी सुरंग से बाहर लाकर उसकी सहज मानवीय पहचान, मानवाधिकार तथा नारकीय जिंदगी से मुक्ति के लिये जानेवला संघर्ष को मेरा सलाम। विनोद, पूनम जोशी, चंद्रा करुणा के हक्कदार है।

संदर्भ

- 1) पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा (सन् 2016) – चित्रा मुद्गल



2018-19
Dec-2019

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2018 Special Issue - LXXX[A]

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:

Dr. R. J. Moharkar
Head. Dept. of Geography
Sangameshwar College, Solapur
Dist. - Solapur [M.S.] INDIA

I
N
T
E
R
N
A
T
I
O
N
A
L
R
E
S
E
A
R
C
H
F
E
L
L
O
W
S
A
S
S
O
C
I
A
T
I
O



This Journal is indexed in :

- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*

ISSN :

Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)

2348-7143

Special Issue 80 [A] :

December-2018

UGC Approved Journal



Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2018 Special Issue - LXXX[A]

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College,

Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:

Dr. R. J. Moharkar

Head. Dept. of Geography

Sangameshwar College, Solapur

Dist. - Solapur [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon.
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- ❖ Dr. G. Haresh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- ❖ Dr. Samjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.]
- ❖ Dr. P. K. Shewale - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.]
- ❖ Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.]
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.]
- ❖ Dr. Sandip Mali - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.]
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.]

Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna kosic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- ❖ Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- ❖ Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopergaon
- ❖ Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Simar.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

**INDEX**

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Trends in Goa's Agricultural Growth And its Determinants: A Geographical Study	Dr. Prakash. R. Morakar	05
2	Comprehensive Cost + 50 Percent More: will Indian Farmer's Ever Get It?—A Study of Minimum Support Price	Dr. Dasharath Mehtry	14
3	The Effect of Climate Change on Agriculture in India	Malati Shankar Patgar & Dr. Shridhar Hadimani	20
4	Climate Change and Its Impact on Agricultural Productivity in India	Mr. Baiji Waghmare & Dr. M.V. Suryawanshi	27
5	Impact of Climate Change on Agriculture and Food Security in India	Dr. M. P. Manakari	33
6	A Delineation of Crop Diversification of Bawada Circle in Indapur Tahsil (Pune District)	Mr. S. B. Shinde	40
7	Impact of Educational Attainment on Per Hectare Yield of Sugarcane: A Case Study of Village Chavanwadi in Solapur District	Dr. Arjun H. Nanaware	45
8	Agro Tourism- A Business Model in India	Dr. T. N. Lokhande	51
9	A Study of Levels of Agricultural Productivity in Latur District, Maharashtra (India)	Dr. Mukesh Kulkarni	56
10	"Modern Technique of Water Conversion in Drought Prone Area and Agriculture Development - A Case Study in Sangola Tahsil of Solapur District. (M.S.)"	Prof. S.G. Patil & Dr. B. R. Phule	62
11	Spatio-Temporal Analysis of Fruit Farming Cultivation in Kolhapur District of Maharashtra	Anita Magadem & Dr. R. V. Hajare	71
12	A Geographical Study of Agricultural Development Levels in Indapur Tahsil : Pune District	Mulani Mahammad Sheklal	75
13	A Geographical Study of Agricultural Regionalization for Planning Improvement in Osmanabad District	Dr. Ganesh Jadhav	81
14	A Geographical Study An Importance of the Agro -Tourism Activities with Effect on Socio-Economic Development in Maharashtra	Prof. Jawahar Chaudhari	86
15	Role of Agro-Tourism in the Development of Farmers in Maharashtra	Dr. R.M. Khilare	93
16	Impact of Climatic Changes on Agriculture Development	Dr. Gautam Daivi	98
17	A Study of Agricultural Problems in India	Dr. D. S. Harwalkar	107
18	Agricultural Land use Efficiency and Changes Therein in Lower Sina Basin	Dr. Arjun Nanaware & Amar Wakde	113
19	Impact of Climatic Changes on the Agriculture And Socio System	Dr. Chandrakant Kamble	118
20	Agri-Tourism as A Source of Earning Income for Farmers	Dr. Rahul Surve & Dr. C.V. Tate	122
21	Agricultural National Policies in India	Vijaya Gaikwad	130
22	Agro Tourism Centers in Solapur – An over Review	Mrs. Z.A. Nayab	134
23	Changing Fruit Agriculture with Climatic Regions in India	Prof. D.S. Gaikwad	139
24	Scope and opportunities of Agro-Tourism in India	Mr. Amol Shinde	147



Agro Tourism Centers in Solapur – An over Review

Mrs. Z.A. Nayab
Assistant Professor
Geography Dept.
UES Mahila Mahavidyala,
Solapur.

Abstract –

Tourism is a recent origin. It relates to the interest of the visitors in places and regions for recreation purpose. Tourism is a composite phenomena which embraces the incidence of mobile population of travellers who are strangers to place they visit. It is essentially a pleasure activity in which many earned in ones normal domicile is spent in the place visited.

Tourism in rural areas is more appropriate than rural tourism. A variety of terms are employed to describe tourism activities in rural areas such as agro tourism, farm tourism, ecotourism etc. These recent trends of tourism have become so popular during the last decade. Farming is the dominant sector in the economy. They are important producers of food but are also a entrepreneurs in other fields such as maintainers of natural and cultural heritage, providers of space for recreation or leisure activity. To promote rural tourism new trends in tourism came into existence, agro tourism. The present paper makes an attempt to assess the impact of agro tourism on economic life of the farmers and new path of rural development.

Keywords – pleasure, ecotourism, agro tourism, farm tourism

Introduction –

Agro tourism is a recent phenomena. Now a days the major development in agriculture is taking place all round the world. Agro tourism gives a chance to breath fresh air, pick up fruits, feed animals, learn about rural environment and participate in actual work of farm. Agro tourism include nature tourism, rural tourism, heritage tourism, ecotourism and value added agriculture (Brant and Rhondes 2007). According to Marques (2006) “ A specific type of rural tourism in which the hosting house is carried out in to agricultural estate, allowing to take part in agricultural activities.

In Maharashtra 65% of the agro tourism farms run by small farmers. According to one survey 95% of the farmers said that agriculture is the main source of economy and they do not depend on agro tourism as a major source of economy. Hence their depends on agro tourism is very limited. Agro tourism is an activity where guests and hosts are inter- related with each other. Even the family of the host is involved in agricultural activities. Agro tourism offer local employment opportunities. It is a farm based business open to all. It offers things to see, things to do, to produced, allowing to view them growing, harvesting and processing activities. The main objectives of the farmers is provide opportunity to the visitors to get aware with agriculture area, agricultural occupation, traditional food and daily life of the rural people and also feels pleasure during the tour. Peoples are interested in how their food is produced and want to meet the producers and talk with them about what goes into food production. Children who visit in the farms often have not seen a live duck or goat and have not picked an apple from the tree.

With the co-operation of ATDC (Agriculture Tourism Development Corporation) and MART (Maharashtra Agriculture and Rural Tourism) various agro tourism centres are



established. Agro tourism provide various facilities to the tourist like home cooked food, stay in the farm, showing various agriculture practices – harvesting, bee keeping, dairying etc. Tourist can enjoy with natural environment, fresh air, pollution free environment. They can also enjoy a ride on bullock cart, on tractor and participate in village games like gullidanda, kite flying etc. The individual farmer can also start agro tourism who have minimum two hectors of land, own water resources, house and interested to entertain the tourist.

Objectives –

- To study the agro tourism centres in Solapur.
- To study the importance of agro tourism in the development of rural economy.

Methodology –

Primary information collected from personal interviews with selected agro tourism entrepreneurs, discussion with owners. Secondary data collected from secondary sources maps, news papers, internet, websites and conference materials.

Study Area –

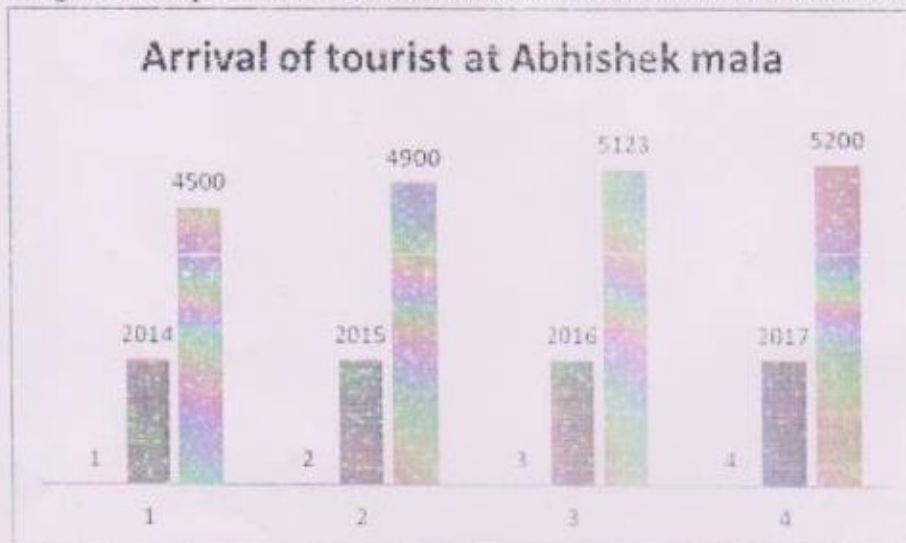
extended between 17 10' to 18 32' N latitude and 74 42' to 76 15' east longitude. The total geographical area of the district is 14895 sq.kms. Within this area Abhishek mal, Vanprasth Agro tourism and Picnic point have been selected for the research paper.





Abhishek Mala Agro Tourism Center –

As urban life faces stressful life. Agro tourism is a means that makes life more peaceful and forgot busy life schedule. Keep in a mind with this idea Mr. Raju Bhandarkavtekar established “Abhishek mala” on five hectares land in the season of hurda period in the year 2002. This agro tourism centre is 15 km away from Solapur at Pakni taluka of North Solapur in Solapur district. The farm is opened for “Hurda Party” from November to March. In this season hurda is available from their own farm but if the visitors are more in number, at that time hurda brings from Aurangabad district. Main intention of the owner is to give homely atmosphere to the guests. Simple home made food cooked on wood fire Chula adds the value of resort.



The above graph shows the growth of tourist at the farm. When this centre was developed for agro tourism, initially only 35 people were visited at hurda period, who are mainly the relatives and bank workers. They suggest that if the farm is opened for visitors it can be beneficial from the point of economy. In this way individual farm is converted into agro tourist centre. As a result every year number of visitors goes on increasing. In the last year near about 5200 visitors visit to this centre at the time of hurda season. And in off season period birthday parties, senior citizens meeting, engagement ceremonies and reception programmes are also organised.

Picnic Point Agro Tourism Centre –

This agro tourism centre is just 13 km away from Solapur on Solapur – Pune Highway, Chincholi – Kati, Solapur. Where tourists come for picnic, to recreate and to relax themselves. In this place one can enjoy the oxygenated environment. Various facilities are available like good healthy food, quiz competition, dance competition, yogasana workshop, personality development programmes are organised by the owner. Dal Bati churma platter is celebrated every year in the month of Sharavan. Apart from this Tailor – made packages for birthday, anniversaries, dohale bhojan, alumni meets, seminars, conferences facilities are also available. The speciality of this place is “ Unique Jhola Bhojan”and it records in Limca Book. The spot is also famous as “Kanhya Jhula Garden”.



Vanprasth Agro Tourism Centre –

The farm established for agro tourism in 2008. It is one of the popular picnic spot known as “Jadhav Garden”. It is located on Degaon Kegaon road, Solapur – Pune highway, Bale railway station, Solapur. It is a famous place to live in a lap of nature and best destination to visit and spend weekend in the farm house. One of the special quality of the farm is all the vegetables and fruits are free from pesticide. Poran poli, mango juice, lemon juice available here. 40 people stay at overnight. Ladies kitty party, senior citizen seminar, school and college trips are allowed to visit. Only male groups are strictly banned and alcohol composition is strictly prohibited. This centre is opened for visitors all the year round. Seasonality does not affect much. Owner of the farm is Mr. Sudhir Harishchandra Jadhav and Mrs. Swati Sudhir Jadhav and the couple was awarded by “Krusha Bhushan” award by Rotary Club Solapur.

All these three agro tourism centres are registered by ATDC (Agriculture Tourism Development Corporation) and MART (Maharashtra Agriculture and Rural Tourism).

Features of agro tourism centres –

Following are the important features of agro tourism.

Attraction – The agro tourism centres attracted the tourist because of its uniqueness, games, homely food, bullock cart ride and hurda party.

Accommodation – Overnight stay facility is available. Accommodation facilities are rare but clean and hygienic tents and rooms are made for stay.

Recreational activities – The facilities are available for children, adults and families. During the day time farm sight seeing, educational programmes – how to grow various crops, fruits and vegetables, what are the food value, how to take care of the cattle, demonstration of goat and cow milking as well as bullock cart ride, tractor ride, watching domestic animals.

Entertainment Programmes – Various entertainment programmes for children and adults are organised here such as volley ball, foot ball, table tennis, trampoline, net cricket, air walk, tug of war. Folk dance and folk song competition are also arranged.

Food facility – The food served is pure vegetarian. Breakfast which is made available at 9.00 pm is poha, upit, idly- sambar murmur chivda. For lunch chapatti, bhakri, bhaji, matki usad, shenga chatni, dal fry, curd, papad and in sweet shira, gulab jamun and jalebi. At evening tea, biscuits and wafers.

Safety – These agro tourism centres are safe and secure for tourist. There is one entrance for entering in the farm house. All the time watchman present on gate.

Effect of agro tourism –

- 1 – Agro tourism provide employment opportunities for the farmers.
- 2 – it can provide cash flow even in off season.
- 3 – It can provide an opportunity to sell the own product.
- 4 – The farmer share the agriculture experience with the visitors.
- 5 – It provide the recreational activities to the people of all age groups.
- 6 – It create awareness about rural life.
- 7 – It provide pollution free atmosphere.

Conclusion –

Agro tourism is a form of tourism which capitalizes on rural culture as a tourist attraction. The tourism has to be developed in the sustainable development principles by equality of people



and profit. It provide employment opportunities. Farm based business open to all. Though the large potential for development in agro tourism but individual efforts are not sufficient. It is difficult to provide publicity to remote agro tourism centres. Information technology can play very important role in promotion of these centres. If the government and tourism industry wish to develop these centres for tourism, they may look to the rural areas , which until not have been seen developed to a large extent for tourism.

References –

1. Dr. O.P.Kandari and Ashish Chandra – (2004) "Eco Tourism" Published by Shree publisher and distributors – New Delhi.
2. N. Jayapalan – (2001) "An Introduction to Tourism "Published by Atlantic publisher and distributors, Delhi.
3. Chadda D. And Bhokare – (2011) 'Socio economic implication of agro tourism in India'
4. [https:// www.research gate.net/publication](https://www.researchgate.net/publication)
5. [http:// www.biotecharticles.com](http://www.biotecharticles.com)
6. Abhishek mala agro tourism centre
7. Picnic point agro tourism centre
8. Vanprasthan agro tourism centre.

१८. होटगी परिसरावर साखर कारखान्यामुळे झालेल्या प्रदुषणाच्याय पर्यावरणीय समस्या - एक भौगोलिक अभ्यास

प्रा. नायब झेड. ए.

असिस्टंट प्रोफेसर, यु. ई. एम. महिला महाविद्यालय, सोलापूर.

सारांश

भारतात शीतूवर आधारित उद्योगधंद्यांमध्ये साखर उद्योगाचा दुसरा क्रमांक आहे. भारतामध्ये महाराष्ट्राचा साखर उद्योगामध्ये दुसरा क्रमांक आहे. महाराष्ट्रात सोलापूर जिल्ह्यामध्ये सर्वाधिक साखर कारखाने आहेत. साखर कारखान्यांची एक वैशिष्ट्ये आहे. हे सर्व साखर कारखाने हंगामी स्वरूपाचे आहे. जिल्ह्यातील बहुतांश लोकसंख्या साखर कारखान्यावर अवलंबून आहे. विशेषतः ग्रामीण भागाच्या विकासामध्ये साखर कारखान्याचे मोठे योगदान आहे. ग्रामीण विकासाला साखर कारखान्यांचा मोठा हातभार लागत असला तरी यामुळे अनेक पर्यावरणीय प्रदुषण समस्या निर्माण झालेले आहेत. प्रदुषण म्हणजे घातक दुषित पदार्थांचा पर्यावरणावर होणारा निचरा होय. उद्योगामुळे प्रगती होत असली तर याचे अनेक दुष्परिणाम भोगावे लागत आहे. उदा. वायु प्रदुषण, ध्वनी प्रदुषण, जल प्रदुषण, जमीन प्रदुषण इत्यादी.

विशेष संज्ञा - पर्यावरणीय, प्रदुषण, उद्योगधंदे

प्रस्तावना

लोकसंख्या आणि पर्यावरण या जागतिक स्वरूपाच्या समस्या झालेल्या आहेत. लोकसंख्येचा स्फोट हा सर्वच घटकावर परिणाम करणारा आहे. वाढत्या लोकसंख्येला अन्न, वस्त्र व निवारा या गरजा पुरविण्यासाठी विविध घटकांचा उपयोग करावा लागतो. यासाठी उद्योगधंद्यांची उभारणी आणि रोजगार उपलब्ध करून द्यावा लागतो. आद्योगिक क्रांतीनंतर जागतिक स्तरावर विविध उद्योगाचा विकास होत गेला. देशातील नैसर्गिक साधन संपत्तीचा उपयोग करून उद्योगधंद्यांची उभारणी केली गेली. असे उद्योगधंदे सर्व क्षेत्रांमध्ये उभे राहिले. उद्योगधंद्यांचा वाढीचा, कारखानदारांचा, औद्योगिकीकरणाचा परिणाम नैसर्गिक पर्यावरणावर होऊ लागला.

नैसर्गिक पर्यावरणावर समतोल राहण्यासाठी विविध प्रकारचे उपाय घेतले जाऊ लागले. नैसर्गिक पर्यावरणामध्ये हवा, पाणी आणि जमीन या घटकांवर ताण पडून यामध्ये दुषितपणा निर्माण होऊ लागला. याचा परिणाम परिसरावरील मानवी जीवनावर होत असल्यामुळे पर्यावरण स्वच्छ ठेवणे, प्रदुषण विरहीत परिसर ठेवणे ही गरज वाटू लागली. यासाठी प्रदुषित भाग ज्या कारणांमुळे झालेला आहे, त्या कारणांचा शोध घेणे महत्वाचे ठरले. यामुळे दुषित होणारे पर्यावरण नियंत्रित आणता येईल. प्रदुषणाचा नैसर्गिक पर्यावरणावर होणारा परिणाम व मानवी

जीवनावर होणारा परिणाम यांच्या अभ्यासासाठी ग्रामीण पर्यावरण आणि समस्या या अंतर्गत पुढील शोधनिबंध सादर केला आहे.

"होटगी परिसरावर साखर कारखान्यामुळे झालेल्या प्रदुषणाच्या पर्यावरणीय समस्या - एक भौगोलिक अभ्यास" या शीर्षकाखाली विशेष अभ्यास म्हणून श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना, कुमठे याचा विशेष अभ्यास केला आहे. ग्रामीण भागाच्या विकासात या कारखान्यामुळे भर पडलो. परंतु या कारखान्यामुळे निघणाऱ्या प्रदुषित घटकांचा होटगी परिसरातील मानवी जीवनावर झालेल्या परिणामांचा अभ्यास केला आहे.

- 1) **व्याख्या :- पर्यावरण** - मानवाच्या सभोवतालच्या नैसर्गिक परिस्थितीला पर्यावरण असे म्हणतात.
- 2) **प्रदुषण** - नैसर्गिक हवा, पाणी आणि जमीन यांच्या भौतिक रासायनिक किंवा जैविक गुणधर्मांत घडलेल्या कोणत्याही अनपेक्षित बदल ज्याचा जीवनावर किंवा सजीवांच्या आरोग्यावर परिणाम होतो किंवा निर्जिव वस्तु किंवा संपत्तीला हानी पोहचते यालाच प्रदुषण म्हणतात.

अभ्यास क्षेत्र

- i) **स्थान व विस्तार** - सोलापूर शहराचे स्थान जिल्ह्याच्या मध्यवर्ती असून सर्व बाजूंनी वाहतूकीच्या मार्गांवर असून रेल्वेचे जंक्शन आहे. $17^{\circ} 10'$ उत्तर ते $18^{\circ} 32'$ उत्तर अक्षांश व $74^{\circ} 42'$ ते $76^{\circ} 15'$ पूर्व रेखांश विस्तार असून पूर्व - पश्चिम लांबी 200 किलोमीटर व उत्तर - दक्षिण रुंदी 150 किलोमीटर आहे. सोलापूर जिल्हा हा भीमा, सीना, मान नद्यांच्या खोऱ्यात वसलेला आहे. सोलापूर जिल्ह्याचा बहुतेक भाग पठारी असल्यामुळे हवामान सर्वसाधारणपणे उष्ण व कोरडे आहे. पावसाचे प्रमाण कमी आहे.
- 2) **क्षेत्रफळ** - जिल्ह्याचे एकूण क्षेत्रफळ 14845 चौरस किलोमीटर आहे. सोलापूरच्या उत्तरेस अहमदनगर, पूर्वेस उस्मानाबाद, दक्षिणेस सांगली, कर्नाटक राज्य व पश्चिमेस सातारा व पुणे जिल्हा आहे.
- 3) **भौगोलिक** - सोलापूर महाराष्ट्र व कर्नाटक राज्यांना जोडणारा दुवा आहे तर दक्षिण भारताचे प्रवेशद्वार म्हटले जाते. सन 1838 मध्ये सोलापूर हा अहमदनगर जिल्ह्याचा उपजिल्हा बनला. त्यात आठ उपभाग सोलापूर, बार्शी, माढा, करमाळा, इंडी, हिप्परगी आणि मुद्देबिहाळ होते. सन 1864 ला जिल्हा बरखास्त करण्यात आला. सन 1956 मध्ये राज्य पुनर्रचनेनंतर सोलापूर जिल्हा मुंबई प्रांतात समाविष्ट करण्यात आला. सोलापूर शहराची सीमा रेषा सन 1853 पासून वाढत आहे. सोलापूर शहर हे उत्तर सोलापूर व दक्षिण सोलापूर तालुक्याचे मुख्य ठिकाण आहे.
- 4) **ऐतिहासिक पार्श्वभूमी** - सोलापूर शहरापासून 12 किलोमीटर अंतरावर होटगी येथे श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना स्थापन झालेला असून हा कारखाना महाराष्ट्रातील अनेक नामवंत कारखान्यांपैकी एक आहे. हा कारखाना सहकारी तत्वावर चालत असून या साखर कारखान्याला परिसरातील व शेजारी जिल्ह्यातून ऊस हा कच्चा माल उपलब्ध होतो. साखर कारखान्यात साखरेच्या

उत्पादनावरांबर कागद-उत्पादन ही करण्याचा प्रयत्न केला आहे. होंटगी हे गाव विजापूर आणि हैद्राबाद या मार्गाकडे जाणाऱ्या रेल्वेचे जंक्शन आहे. त्यामुळे सुलभ वाहतूकीसाठी याचा उपयोग केलेला आहे.

सोलापूर जिल्हा नकाशा



संशोधन पध्दती व माहिती संकलन

होंटगी परिसरावर झालेल्या पर्यावरणीय प्रदूषणाचा परिणाम अभ्यासण्यासाठी प्राथमिक स्वरूपाच्या माहितीचा उपयोग केला आहे. साखर कारखान्यातील संख्या, उत्पादन यांच्या आकडेवारीवरून अभ्यास केला. तसेच प्रदूषित क्षेत्राचा अभ्यास करताना कोणत्या घटकांमुळे हवा, पाणी, जमीन प्रदूषित होऊ शकली. या संबंधीचा अभ्यास दुय्यम स्वरूपाच्या माहितीतून संकलन केला.

विषय विवेचन व विश्लेषण

सोलापूर शहरापासून जवळ असलेल्या श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखान्यामध्ये साखरेचे उत्पादन मोठ्या प्रमाणात होते. या कारखान्याची स्थापना "MAHARASHTRA CO-OPERATIVE SOCIETY ACT 1960", Bearing No. SUR / PRG (A) / 2 च्या अंतर्गत 09 जून 1969 साली झाली. थोर समाज सुधारक स्व. अप्पासाहेब काडादी यांनी शेतकऱ्यांच्या सामाजिक व आर्थिक समस्या व बेरोजगारीची समस्या सोडविण्यासाठी या कारखान्याची स्थापनासाठी विशेष परिश्रम घेतले. या कारखान्यासाठी मशिनरीचा पुरवठा बालचंद इंडस्ट्री, बालचंद नगर, पुणे येथून करण्यात आला. या कारखान्यासाठी कच्चा माल म्हणजे ऊसचा पुरवठा कारखान्यातील सभासदांकडून केले जाते. जे सभासद ही आहेत आणि शेतकरी ही आहेत. कारखान्याचे एकूण क्षेत्र 4,07,599 हेक्टर आहे. साखर कारखान्यातील कामगारांची कायम व हंगामी स्वरूपाची संख्या 1,712 आणि 1,639 आहे. या ठिकाणी कामगार सोलापूर जिल्हाच्या परिसरातून येतात.

तक्ता क्रमांक 1

कार्यक्षेत्रातील समाविष्ट गावांची तालुकावर संख्या

अ. क्र.	जिल्हा	तालुका	गावांची संख्या
1.	सोलापूर	उत्तर सोलापूर	37
2.	सोलापूर	दक्षिण सोलापूर	80
3.	सोलापूर	मोहोळ	06
4.	सोलापूर	अक्कलकोट	121
5.	उस्मानाबाद	तुळजापूर	49

स्त्रोत :- श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना, कुमठे माहिती पुस्तिका.

वरील तक्त्यावरून असे निदर्शनास येते की, साखर कारखान्यातील समाविष्ट कार्य क्षेत्रात अक्कलकोट तालुक्यातील गावांची संख्या सर्वाधिक आहेत. तर मोहोळ तालुक्यातील गावांची संख्या कमी आहे. दुसऱ्या जिल्ह्यातील म्हणजेच उस्मानाबाद जिल्ह्यातील गावांचाही यात समावेश आहे.

ऊसाची एकूण गाळप क्षमता

अ. क्र.	वर्ष	गाळप क्षमता (मेट्रीक टन)	ऊस गाळप
1.	2013 - 2014	2,000	00.55
2.	2014 - 2015	2,000	01.58
3.	2015 - 2016	2,000	00.69
4.	2016 - 2017	2,000	00.00

स्त्रोत :- श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना, कुमठे माहिती पुस्तिका.

उत्पादित साखर व टाकाऊ पदार्थ

अ.क्र.	वर्ष	उत्पादित साखर (लक्ष क्विंटल)	मळी (मेट्रीक टन)
1.	2013 - 2014	08.26	2,892
2.	2014 - 2015	09.19	8,127
3.	2015 - 2016	08.32	3,667
4.	2016 - 2017	00.00	00

स्त्रोत :- श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना, कुमठे माहिती पुस्तिका.

वरील तक्त्यावरून असे स्पष्ट होते की, साखर कारखान्यातून निघणाऱ्या मळीचे प्रमाण वाढत आहेत. साखर कारखान्यातील मळी आणि रसायने जमिनीत मुरतात. परिणामी जमिनीतील पाणी अधिक प्रदूषित आणि बिशावट होत आहे आणि याचा आरोग्यावर घातक परिणाम होत आहे.

साखर कारखान्यातून मळीत हंगामात बाहेर पडणाऱ्या दुषितकांचा विचार केल्यास यामध्ये फॉस्फोरिक अॅसिड, कस्टिक सोडा, गंधक, आयपाल कंपाऊंड, डी. डी. 200, व्ही. डॉल, एस. ई. 40, एन्कलो आईल इत्यादी रसायने असून यांच्यापासून कारखान्यातून बाहेर पडणारे दुषितके प्रदूषण करतात. धुराळ्यातून बाहेर पडणाऱ्या

धुरामुळे वायु प्रदुषण होते. कारखान्यातून बाहेर पडणारी मळी, दुषित पाणी यांच्यामुळे परिसरातील जमीन नापाक बनते. वाहतूकीमुळे होणारा मोठ्या प्रमाणातील ध्वनी प्रदुषणाचा व वायु प्रदुषणाचा परिणाम तेथील पर्यावरणावर झालेला आहे. या परिणामाचा विचार केल्यास परिसरातील लोकांच्या आरोग्याचा प्रश्न निर्माण झालेला आहे.

पर्यावरणावरील परिणाम

साखर उद्योगाचा पर्यावरणावर विविध प्रकारे परिणाम झाल्याचे जाणवते. यामध्ये प्रामुख्याने हवा प्रदुषणामुळे परिसरातील हवा दुषित होऊन तिचा परिणाम मानवी आरोग्यावर झालेला आहे. तसेच हा परिसर शहराला अगदी जवळ असल्यामुळे येथे वाहनांची गर्दी वाढलेली आहे. शिवाय ऊस घेऊन येणारी वाहने यांची संख्या जिल्हा बाहेरील व राज्या बाहेरील असल्यामुळे याचा ही आज्ञाचा परिणाम येथील परिसरात झालेला आहे. जल प्रवाहात पाणी सोडल्यामुळे जल प्रदुषण हे त्या ठिकाणी साचलेल्या पाण्यावर झालेला आहे. परिसरात असलेल्या जमिनीत हे पाणी साचून राहते आणि त्याचा परिणाम जमीन प्रदुषणात झालेला आहे. साखर कारखान्यातून बाहेर पडणाऱ्या अनेक टाकाऊ पदार्थांचा येथील पर्यावरणावर परिणाम झालेला आहे. टाकाऊ पदार्थात प्रामुख्याने रसायने, वॅस्टन प्रक्रियेतील जिन्नस आढळतात. द्रवरूप कचऱ्यामध्ये रंग, विविध तेल, सोडपाणी आढळतात.

टाकाऊ पदार्थ साचल्याने होणारे आरोग्यावरील दुष्परिणाम येथील वसाहतीतील लोकांच्यावर आणि ऊस तांडणीसाठी आलेल्या मजूरंवर झालेला दिसतो.

- 1) साचून राहिलेला टाकाऊ पदार्थांमुळे प्रदुषण होते, कुजून परिसरातील हवा दुषित होते.
- 2) कुजलेल्या कचऱ्यामुळे तेथे रोग जंतूंचा प्रादुर्भाव वाढतो.
- 3) माशा, चिलटे कचऱ्यावर बसतात त्यांचा परिणाम उन्न पदार्थांवर होतो.
- 4) आसपासच्या परिसरात खाद्य पदार्थांच्या गाड्या असतात. त्यावर माशा बसतात, खाद्य पदार्थ दुषित होते. उलट्या, जुलाब या सारखे पचनाचे त्रास सुरू होतात.
- 5) वायुरूप पदार्थांमुळे मानवाला श्वसन मार्गांचे विकार होतात.
- 6) बाहेरून आलेल्या कामगारांच्या मुलांमध्ये बाल मजूरीचे प्रमाण सुध्दा या ठिकाणी दिसतात.
- 7) स्त्रियांमध्ये असणाऱ्या शिक्षणाच्या अभावामुळे अंधश्रद्धा आणि अज्ञान या गोष्टी दिसतात.

निष्कर्ष

- 1) होटगी परिसरावर साखर उद्योगाचा पर्यावरणावर परिणाम झालेला आहे.
- 2) फुमठे गाव, शिवशाही, टिकेकरवाडी येथे रेल्वे जाते. प्रवाशांना श्वासोश्वासाचा त्रास होतो, दुर्गंधी येते.
- 3) होटगी रेल्वे स्टेशन परिसरावर वास, दुर्गंधी पसरलेली आहे.
- 4) साखर उद्योगाच्या परिसरात अस्वच्छता, रोगराई, वाडे, धिपाडे, चौपड्या अस्ताव्यस्त पसरलेल्या असतात.
- 5) शिवशाही, संगमेश्वर नगर, नई जिदगी, विमानतळ, हत्तुरे वस्ती या भागात वाहनांची वर्दळ व संख्या जास्त असल्यामुळे ध्वनी प्रदुषण व हवा प्रदुषण जास्त झाले आहे.

उपाय

- 1) मोठ्या प्रमाणात झाडे लावावीत व वृक्ष तोड थांबवावी.
- 2) उद्योगधंदा व कारखान्यांनी आपली धुवाळी उंच बांधावीत व बाहेर पडणाऱ्या प्रदुषित वायुवर प्रक्रिया केल्याशिवाय ते बाहेर जाऊ देऊ नये.
- 3) हरीत गृह वायु हवेत सोडणाऱ्या उत्पादनाचा वापर कमी व गरजेपुरताच करावा.
- 4) वाहनांचा वापर कमी करावा.
- 5) कारखान्यातून बाहेर पडणारी मळी शेतीच्या जमिनीवर सोडण्याऐवजी घर करून अंतर्गत भागात सोडली तर मृदा प्रदुषण थांबेल.
- 6) परिसरातील लोकांच्या आरोग्याची काळजी घेण्यासाठी साखर कारखान्याच्या मार्फत प्राथमिक आरोग्य केंद्राची सुविधा केल्यास वेगवेगळ्या रोगाचे निदान करता येईल.
- 7) साखर कारखान्याच्या परिसरात स्वच्छतेची मोहिम राबवावी.
- 8) वाडे, घिपाडे, घोयट्या या सारख्या पदार्थांची बिल्कवॉट लावत असताना जाळण्याच्या ऐवजी त्याच्यावर प्रक्रिया करून त्याचा उपयोग कारखान्यात इंधन म्हणून केला जावा.
- 9) साखर कारखान्याच्या मार्फत होंगान्या प्रदुषणाला आळा घालण्यासाठी लोकांचा सहभाग गरजेच्या असल्यामुळे लोक जागृती करण्यात यावी.

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1) श्री. सिध्देश्वर सहकारी साखर कारखाना लि., कुमठे वार्षिक अहवाल.
- 2) सोलापूर गाईड - वि. ना. उदगिरी, श्री. चौडेश्वरी प्रकाशन, सोलापूर.
- 3) Gazetteer of India - Solapur District (Revised Edition), Govt. of India.
- 4) जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन - सोलापूर जिल्हा.
- 5) www.siddheshwarsugars.com.
- 6) https://www.indiacom.com>solapaur>



Solapur Zilla Samajseva Mandal's

SANTOSH BHIMRAO PATIL ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, MANDRUP

Tal - South Solapur, Dist - Solapur (MS) - 413 221

(Accredited 'B' grade by NAAC)

Solapur University, Solapur Sponsored

Interdisciplinary National Seminar

on

Recent Trends in Social Sciences

Organized by

Departments of Social Sciences



This is to certify that Prof. Nayab Z. A. of
UES Mahila Mahavidyalaya, Solapur has participated / presented a paper entitled
होस्टी परिवारावर सावरक कारकानामुळे सोलेकरा प्रदुषणाच्या in the
पर्यावरणीय समस्या : एक आंतराधिक अभ्यास
Interdisciplinary National Seminar on "Recent Trends in Social Sciences" Sponsored by Solapur University, Solapur and
organized by Departments of Social Sciences, Santosh Bhimrao Patil Arts, Commerce & Science College, Mandrup (MS) held
on Saturday, 2nd February 2019.

Mr. M. C. Hajare
Co-coordinator

Mr. N. D. Bansode
Co-coordinator

Dr. R. M. More
Coordinator

Prin. Dr. B. M. Banaje
Convener

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 7 | Issue - 12 | September - 2018

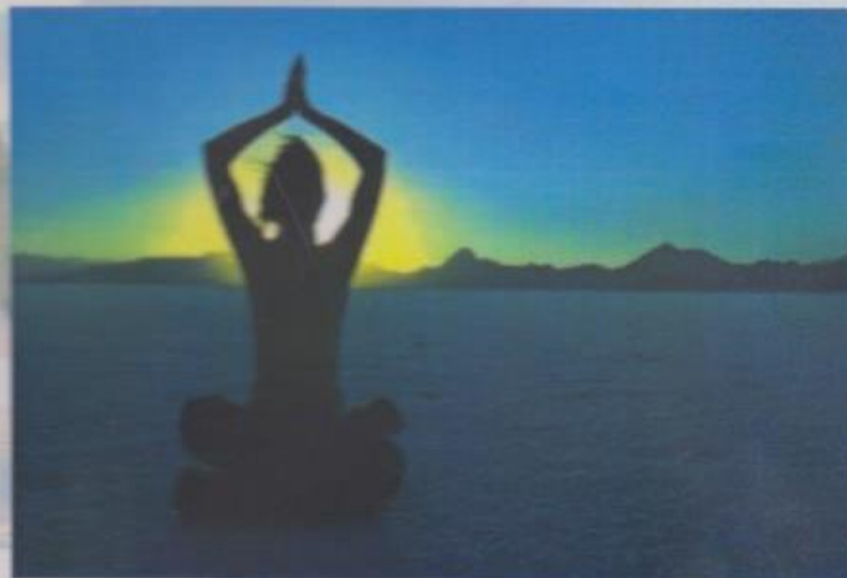
REVIEW OF RESEARCH



International Online Multidisciplinary Journal

Journal No.: 48514

YOGA TO MINIMIZE STRESS



Harkare Gulnar Md Hanif

Physical Director.

Harkare Gulnar Md Hanif

ABSTRACT: Stress is a dynamic practice where time has a significant influence. It is in this way obvious that straightforward word reference meanings of stress are lacking when trying to characterize and conceptualize it.

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

**YOGA TO MINIMIZE STRESS**

Harkare Gulnar Md Hanif
Physical Director.

ABSTRACT

Stress is a dynamic practice where time has a significant influence. It is in this way obvious that straightforward word reference meanings of stress are lacking when trying to characterize and conceptualize psychosocial and word related pressure. In any case, it is seen that lexicon definitions have developed to grasp changes in the utilization of the articulation. K. N. Udupa proposes, "In this way, a consolidated act of substantial stances, inward breath exercise and contemplation in a request is the best to get together with the present daytime needs of the general public. The result of these practices can be improved a lot further on the off chance that one follows all the proposed restrictions and observances in regular day to day existence." activities change is troublesome and one's character is established in layers of apathetic molding. This article hypothetically investigates the significance of yoga, reflection and breathing activities so as to diminish pressure.

KEYWORDS: *Yoga, meditation, stress, work environment, psychological process.*

INTRODUCTION

Yoga is a pathway of all-round development of an individual: real, personality, passionate and divine. Patanjali characterized yoga as a technique for having control over psyche. Vashishta affirmed that yoga is a capable way to deal with chill down the cerebrum. Directors and yogis by and large are probably going to stay committed in circumstances both great and negative.

A comprehension of stress: Stress is insufficient when looking to characterize and conceptualize psychosocial and word related pressure. The utilization of the word pressure changed to designate 'strain, weight, power or solid exertion'. Stress was anticipated to comprise of terms identifying with the laws of different orders, notwithstanding ones character or potentially mental forces (Hinkle, 1973). As to material science, stress alluded to an item's encounter to outside weight, and this model was obtained by the sociologies. Nonetheless, as Cox (1985) shows, the generation similitude is excessively innocent, 'we need to concede some predominant mental procedure which acts as a go-between the outcome. Stress or strain must be recognized by man. A bit of gear, then again, doesn't need to perceive the heap or stress put upon it.'

Later word reference definitions really partner the term worry with illness; 'endured by oversees, and so forth; subject to consistent pressure's More late restorative lexicon definitions consolidate both a reaction based and an improvement based way to deal with pressure. For instance, Steadman's Medical Dictionary (1982, 24th Edn.) characterizes worry as: 1. The responses of the creature body to powers of an injurious sort, irresistible, and different unusual states that watch out for nature, irresistible, and different irregular expresses that will in general upset its ordinary physiologic balance.



2. The opposing power set up in a body because of a remotely applied power.
3. In brain science, a physical or mental upgrade which, when impinging upon an individual produces strain or disequilibrium

Around 300 BC, an honorable man by name, Patanjali built up a technique for yoga which obviously incorporated past yogic conventions. It relates to a model of the human living being found in the consecrated Hindu messages, the Vedas. The model is recognized as the 'sheath' model, and depicts the human creature as a progression of concentric sheaths or envelopes, all made out of matter of shifting degrees of fineness or nuance. The extent of human material reaches from the most rough or thick, to the most completely fine or inconspicuous, and in this way the most 'genuine'. The motivation behind Patanjali's yoga is to detect the better parts of one's being bit by bit until purging prompts recognizable proof with the True Self, dwelling at the center of the sheaths. Patanjali's yoga, now and again is called Raja or 'regal' or 'great' yoga as its for the most part unbelievable aspirations, includes eight stages or stages, of which the initial five are considered 'outer' and the last three 'inner'. This identifies with the sheath model. In Indian medicinal hypothesis, for example, which likewise puts together itself to some extent with respect to the sheath model; sickness consistently starts all things considered and works its way in, so that even dysfunctional behavior is a type of physical disease that has advanced to the deepest sheaths. Recuperating, at that point, should likewise start with the physical and advance to the profound.

NATURE OF MIND

The psyche normally will in general hop and move about continually. Most punctual Yogic sacred writing prestigious that it can show up more muddled to deal with the brain than the breeze. Yogis have thus built up a total assortment of reasonable systems that will help in contemplation.

The Nature of Stress

Despite the fact that the cutting edge way to deal with understanding weight grasps an intelligent point of view, it is indispensable to know about plausible stressors in the environment. This is generally significant in the work setting, where occupation stress is 'a condition wherein business related elements help a specialist to change (for example hinder or improve) their psychological or physiological situation with the end goal that the individual (for example brain or body) is compelled to move away from regular execution. This definition characterizes what we mean by 'representative wellbeing'; to be specific an individual's psychological and physical condition. We are alluding to wellbeing in its broadest sense – the entire range from amazing mental and physical wellbeing right to death. Note that we are not barring the plausibility of advantageous impacts of weight on health.'

In this way, this article means to survey the idea of stress. In any case, affirmation from a developing examination association proposes that six most significant classifications of stress might be perceived. In perspective on the way that a huge level of the populaces are occupied with salaried assistance outside the home and most of the investigation will in general spotlight on work related pressure, five of these classes are worried about work pressure.

These include:

1. Stress in the work itself; stressors characteristic to the activity incorporate outstanding task at hand, poor physical conditions, low basic leadership scope, and so on;
2. Role-based pressure; related with job strife, job uncertainty and duty;
3. Relationships with others (for example bosses, associates and subordinates); relational requests are potential stressors;
4. Career improvement; including under or over advancement and absence of employer stability;
5. Organizational structure and atmosphere; this remembers limitations for conduct and the legislative issues and culture of the association as wellsprings of stress.

Albeit a noteworthy among of stress investigate has concentrated on professional occupations, shop floor hands on contemplates demonstrate that these groupings might be material to the work power all in all (Cooper and Marshall, 1978). Each activity has potential pressure specialists however each will shift as far as the level of pressure experienced from these five components. For instance, stressors natural for the activity are bound to highlight as pressure specialists among manual laborers than among proficient gatherings. Subsequently, stress sources will be characterized by the idea of the activity. In any case, it is additionally essential to recognize that worry in the work environment can't be completely comprehended except if reference is made to wellsprings of life stress.

HOW TO MEDITATE

Reflection is a characteristic condition of cognizance that isn't "adapted", anything else than you figure out how to rest. At the point when the brain becomes one-pointed and relentless, it will clearly venture out in front of the Normal commonplace mindfulness into state alluded to as Meditation. Normality is the Key for powerful act of intercession, consistency of time, spot, and practice are generally significant, as they condition the brain to center its energies. The psyche is by all accounts especially dynamic when you attempt to think, however similarly as any propensity can be built up through consistent practice, so the brain can be adapted to concentrate all the more rapidly once normality is set up.

The Yogic Path to Inner Peace

Yoga is life of self-control dependent on the fundamentals of "straightforward living and high intuition", to the antiquated Yogis, the body was viewed as a vehicle for the spirit, and this is valuable illustration in the cutting edge setting. Similarly as a car requires a greasing up framework, a battery, a cooling framework, the best possible fuel, and a dependable driver at the back of the wheel, so the body has certain necessities in the event that it is to work easily.

CONCLUSION

The present chief is required to have characteristics of a decent pioneer – capacity to build an innovative vision and ability to have believing association with enormous number of individuals with whose help this vision is to be satisfied. Outer milieu, with all its system and relics, is in truth a projection of man's inward milieu. A director with clearness of individual objectives and serenity of psyche must be a capable chief. With arranging and order we can act with more prominent effectiveness and less strain, stress and uneasiness emerge from our failure to confront a specific circumstance and to manage it successfully, when there is work frailty, stressed connections inside the family, or any passionate change, there is constantly pushed. All the time there is dread. The main certain thing about the world is that everything is dubious. Tolerating the way that nothing is sure; that all is unsteady, it mitigates pressure and stress.

This is where yoga helps.

1. Choose an Area in Your Home to be utilized distinctly for reflection.
2. Set Aside A Specific Time of day for contemplation
3. Begin By Sitting for contemplation for 20 minutes every day
4. Consciously Regulated The Breath
5. Withdraw Your Attention from every single outside item
6. Select A Point Of Concentration
7. Focus The Mind
8. Regular Repetition of a Mantra will decontaminate the brain
9. enter the condition of supernatural ecstasy
10. feel the - Super cognizant experience-Samadhi

REFERENCES

- Allen, J.R. (1998) "Lifestyle Change attempt and success rate findings from Lifegain Health Culture Audit surveys conducted at over 50 companies
- Allen, J.R. (1998) "Wellness mentoring can help rebuild the corporate culture,"
- Allen, R.F. and Allen, J.R. (1987) "A sense of community, a shared vision, and a positive culture: Core enabling factors in culture-based health promotion efforts."
- Allen, R.F. et. al. (1981) *Collegefields: From Delinquency to Freedom.*
- Allen, R.F. and Linde, S. (1981) *Lifegain: The Exciting New Program that will Change Your Health—and Your Life,*
- Allen, R.F. and Kraft, C. (1980) *Beat the System: How to Create More Human Environments,* McGraw-Hill Available from Human Resources Institute, Burlington, Vermont.



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: Harkare Gulnar Md Hanif. Topic:- Yoga To Minimize Stress The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of Sept 2018.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

18119
Dec-2018



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VII, Issue-IV
October - December - 2018
English Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF ENGLISH PART - I

Name & Author Name	Page No.
Trafficking of Women and Children in North East India Dr. Babli Choudhury	1-6
Impact of Education on Women Empowerment Dr. Anita Singh	7-11
Augmentation of LIS Education through MOOCS Amar Rangnath Dixit	12-18
ICT in Education at School Level in India Dr. Amit E. Gawande	19-22
Evolution from Image to Identity of a Muslim Women- A Heuristic Inquiry Dr. Aiman Nafis Ahmad	23-29
The Significant and Relic Caskets from the Buddhist Stupas in Andhra Desa Dr. A. Jammanna	30-34
To Study the Modern Tendency of Globalization for Commodity Trade in India Prof. Haresh T. Gajbhiye	35-41
Literature and Information Technology Dr. Chandrashekhar Vasant Joshi	42-47
Role of Teacher towards Environmental Education Mr. Avinash G. Yette	48-52
Human Rights Awareness among Primary School Teachers Dr. Amita Kaistha	53-61
The Rising Popularity of E - Commerce Aditi Maheshwari Dr. Anil N. Sarda	62-72
Time to Forget Religions Prof. Vikas S. Bele	73-77
Employment Opportunities through Social Work Education in Maharashtra Yogesh Shamrao Muneshwar	78-83

3. Augmentation of LIS Education through MOOC

Amar Rangnath Dixit

Librarian, U.E.S. Mahila Mahavidyalay, 141-A, Siddheshwar Peth, Solapur.

Abstract

Application of information and technology in library and information science education can help library science professionals to improve their skills to enhance the library service, digitalise their libraries. In recent years massive open online course (MOOCs) is evolved as a major online education system through which a library professional can advance his knowledge. This paper discusses about the present library science online courses and the possible subject areas in which new courses can be started.

Keywords: MOOCs, Advantages of MOOCs, MOOCs providing platforms.

Introduction

Allowing Non Government organization (NGO's) to run educational institutions and the inception of Distance Education System are the two major milestones in spreading of education to the aspirant knowledge seeker scattered in different geographical areas in India. Non Government organizations transmitted the "Gyan Ganga" up to the doorsteps of common man and the distance education system allowed the aspirants to choose the course as per their choice. These two decisions became tremendous successes in education systems. In this modern era, application of Information and Technology in distance learning system also proves to be a milestone. Hundred of national and international educational institutions are actively started offering courses through online mode for their remote learners. These courses are called massive open online courses (MOOCs). This attempt has become very much successful in education and a new era. One can assess its success by observing the number of learner's admitted for these courses.

Dave Carmier coined the terms Moocs in the year 2008. The online courses introduced in 2006 and became so popular in 2012 that the 'New York Times' stated it as 'The year of MOOCs' currently thousands of institutions are associated in providing such courses.

Advantages of MOOCs

1. One can choose his course as per his requirement from available institutions through the corner of world.

५५. आधुनिक युगातील यशस्वी ग्रंथपाल

प्रा. संजय महादेव देवकर

सौ. सुवर्णलता गांधी महाविद्यालय, वैराग.

अमर रं. दीक्षित

यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर.

आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगामध्ये मानवी जीवनात अनेक क्रांतीकारक बदल घडून येत आहेत. माहिती तंत्रज्ञानामुळे शैक्षणिक, राजकीय, सांस्कृतिक आणि औद्योगिक क्षेत्रांमध्ये संशोधनास चालना मिळत आहे. त्याचप्रमाणे ग्रंथालयाच्या क्षेत्रामध्ये माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर, वाचकांच्या वाढत्या गरजा पाहता ग्रंथपालांनाही नविन तंत्रज्ञान आत्मसात करून वाचकांना कमीत कमी वेळेत माहिती विविध साधनांच्या आधारे शोधून वाचकापर्यंत पोहचविणे आवश्यक आहे.

स्पर्धेच्या युगात इंटरनेटवर प्रचंड स्वरूपात माहिती मिळत आहे. यातील माहितीची निवड करून वाचकापर्यंत पोहचविण्यासाठी ग्रंथपालांनीही ग्रंथालयाचे संगणीकरण, ग्रंथालय संश्लेषित निर्माती पीडीएफ फाईलच्या स्वरूपातील साहित्य ई-मेल तसेच मोबाईल ॲपच्या सहायाने वाचकापर्यंत पोहचविणे यासाठी काही तंत्रे आत्मसात करावी लागतात. ग्रंथपालांना ज्या व्यवस्थापन, वाचकांच्या मागणीनुसार इलेक्ट्रॉनिक वितरण योग्य स्वरूपातील कामाची व्यवस्था करावी लागते. नव्या युगातील ग्रंथपाल यांना ज्ञान व्यवस्थापक, माहिती परिक्षक आणि ज्ञान वितरक अशा विविध प्रकारची भूमिका बजावावी लागते.

माहिती तंत्रज्ञानाच्या बदलत्या युगामध्ये ग्रंथालयाबरोबरच ग्रंथपालांनीही बदल स्विकारलेले आहेत. ग्रंथालयाच्या सुरक्षेतेत बरोबरच आपली क्षमता योग्यतः आणि नविन कौशल्य आत्मसात करणे महत्वाचे असते. आज ग्रंथालयांना आणि ग्रंथपालांना यशस्वी संचलनाच्या दृष्टीने महत्वाची भूमिका पार पाडावी लागत आहे. म्हणूनच महाराष्ट्र शासनाच्या विद्यापीठे कायदा २०१६ मध्ये ग्रंथपाल ऐवजी संचालक ज्ञान स्रोत केंद्र असे अधिकारी पद निर्माण केलेले आहे.

महाविद्यालयामध्ये मात्र आधुनिक माहिती तंत्रज्ञानाची कौशल्य आत्मसात केलेली व्यवस्थापकीय ग्रंथपाल अशीच मान्यता असल्याने कार्यक्षम ग्रंथपाल हा ग्रंथालयाचा महत्वाचा घटक मानला जातो यासाठी ग्रंथपालांना काही कौशल्य आत्मसात केली पाहिजे.

ग्रंथपालाच्या अंगी असणारे गुण

ग्रंथपालाचा ग्रंथ, वाचक व कर्मचारी या घटकाशी नियमित संबंध येतो. ग्रंथालयात येणाऱ्या प्रत्येक ग्रंथाचा अल्प परिचय तसेच ग्रंथ व ग्रंथेतर वाचन साहित्याचे तांत्रिक ज्ञान असणे आवश्यक असते.

ग्रंथपालामध्ये निज्ञासु दृष्टी असावी आपल्यापुढे कोणत्या अहचणी आहेत, कामातील त्रुटी याचा सतत शोध घ्यावा लागतो. वाचकांविषयी आपुलकी दुसऱ्याचे कर्तृत्व जाणून घेणे महत्वाचे असते. कामामध्ये सतत स्तुती न करणे सहायकांना आदेश देताना कारणे व पार्श्वभूमी स्पष्ट सांगायची.

ISSN No. 2321-5488

UGC Sr. No. 1208

1702 2019



RESEARCH DIRECTIONS

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal

UGC Journal No. 45489 (Monthly) Impact Factor-5.7

On the Occasion of Centenary of Celebrations
Rajawade Sanshodhan Sanstha, Solapur.

Special Issue
National Seminar on

NEW TRENDS AND TECHNOLOGIES
IN LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE

Organized By
Dept. of Library Science in Collaboration with IQAC
Laxmibai Shaurao Patil Mahila Mahavidyalaya, Solapur.

Date- 16th March 2019

Editor-in-Chief

56, Avashtya Bhavan, Hyderabad Road, Solapur-413006

Contact No- 0232371075 / 0232830742
Email - researchdirections2011@gmail.com

Journal Indexed in



Scientific Indexing Services



CiteFactor

18.	Role Of Librarian In Information Technology Environment	Dr. Amol D. Khobragade/ Dr. Pranali B. Gedam	84
19.	User Awareness In Computerized Library	Shri.Jadhavpravindattatraya	90
20.	ग्रंथालय साहित्यांचे संरक्षण आणि संवर्धन	श्री. दत्तात्रय शामराव पाटील	94
21.	डॉ. डी वाय पाटील इन्स्टिट्यूट ऑफ मॅनेजमेंट अन्ड इंटरप्रिनेर डेटहलपमेंट, वराळे. येथील ग्रंथालय पोर्टलचा : एक अभ्यास .	प्रा. राहुल अनिल देवमारे	101
22.	ग्रंथालये व माहितीसाक्षरता	सौ. आशा चंद्रशेखर जिरगे	110
23.	महाविद्यालय ग्रंथालय व्यवस्थापन : समस्या व उपाय	श्री.अमर रं. दौभत	116
24.	बाबुराव पाटील कला व विज्ञान महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांमध्ये असणान्या माहिती साक्षरता चा कौशल्याचा शोध एक अभ्यास	प्रा. महादेव नागनाथ चव्हाण/प्रा.सुधीर रामचंद्र नाळी/प्रा. श्रीमती न्योती रमेश यादव	123
25.	ज्ञान व्यवस्थापन	प्रा. न्योती रमेश यादव/प्रा. महादेव नागनाथ चव्हाण/प्रा.सुधीर रामचंद्र नाळी	138
26.	विद्यार्थी वाचन अभिरुची संशोधन प्रकल्प	प्रा. डॉ. मानसी लाटकर	149
27.	उरकुंडे (URKUND) प्लॅगिअरिझम (PLAGIARISM) मधील महत्त्व	श्री. प्रविण चंद्रकांत कुंभार	157
28.	माहिती आणि ज्ञान साठवणूक	भक्ती प्रसाद गवस	163

महाविद्यालय ग्रंथालय व्यवस्थापन : समस्या व उपाय

श्री.अमर रं. दीक्षित,

ग्रंथपाल यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर

श्री.संजय देवकर,

ग्रंथपाल सौ.स्वर्णलता गांधी महाविद्यालय, वैराग ता. बार्शी.

सारांश :-

महाविद्यालय ग्रंथालयाच्या व्यवस्थापनामध्ये आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या वापराने जश्या सुविधा निर्माण झालेल्या आहेत तश्याच काही अडचणीही निर्मिती झाली आहे.यावर उपाययोजना आवश्यक असून त्याबाबत प्रसंगी विशेष यंत्रणा, विभाग याची निर्मिती करणे गरजेचे आहे.प्रस्तुत शोधनिबंधात महाविद्यालय ग्रंथालयांना दैनंदिन कामकाजात येणाऱ्या अडचणी व त्यावर करावयाच्या उपाय योजनांची चर्चा केली आहे.

शोधसंज्ञा महाविद्यालय ग्रंथालय प्रशासन, ग्रंथालय संघटन आणि प्रशासन, कर्मचारी आकृतीबंध

उच्च शिक्षणाच्या प्रचार व प्रसारामध्ये महाविद्यालयाचे महत्त्वाची भूमिका बजावतात.भारतामधील सुमारे 799 विद्यापीठ अंतर्गत सुमारे 39700 महाविद्यालये कला, वाणिज्य, शास्त्र, व्यवस्थापन, अभियांत्रिकी, वैद्यकीय इ.विभिन्न विषयांमध्ये पदवी व पदव्युत्तर पातळीवर शिक्षणाची गरज पूर्ण करत आहेत.यातील काही महाविद्यालये शहरी भागात तर काही महाविद्यालये ग्रामीण भागात कार्यरत आहेत.तसेच या महाविद्यालयांची शासकीय व अनुदानित महाविद्यालये अशी वर्गवारी करणे शक्य आहे.

महाराष्ट्रातील सुमारे 95% महाविद्यालये ही शैक्षणिक क्षेत्रामध्ये कार्य करणाऱ्या स्वयंसेवी संस्थामार्फत चालवली जातात.या संस्थांची नोंदणी धर्मादाय आयुक्तांकडे केलेली असते.यांच्या संचालक मंडळावर समाजातील प्रतिनिधींची नियुक्ती असते.या महाविद्यालयांना शासन वेतन व वेतनेतर अनुदान देते.या आधारे हे संचालक मंडळ शिक्षक व शिक्षकेतर कर्मचारी यांची नियुक्ती करून महाविद्यालयाचे प्रशासन महाविद्यालय विकास समिती (सीडीसी) द्वारे चालवते.

उच्च शिक्षणाच्या क्षेत्रामध्ये काम करणाऱ्या महाविद्यालयांच्या मातृसंस्थाचे प्रतिनिधी होण्यासाठी त्यांची शैक्षणिक पातळी, अनुभव असे कोणतेही निकष नसल्याने अश्या मातृसंस्थाच्या अध्यक्ष, सचिव, संचालक पदांवर विंगर

Page ↓ ↓



ISSN : 2393-8900
IMPACT FACTOR : 1.9152 (UIF)

Historicity

International Research Journal



VOLUME - IV
January 2018
SPECIAL ISSUE

Theme

Postcolonial Studies





**Solapur University
&
UGC Sponsored
(Under CPE Scheme)
National Seminar
on
Postcolonial Studies
(NSPS-18)**

20th January 2018

Editor - In - Chief
Dr. Sanjay Gaikwad

Editor
Dr. Ravikiran Jadhav

Organized by
Department of English
Walchand College of Arts & Science, Solapur

Re-accredited with 'A' Grade

Postcolonial Studies

Anita Desai's 'Bye Bye Black Bird': A Novel of Traumas of Cross-Cultural Adjustments

Mrs. Shaikh Nikhat Mehmood Sab

Associate Professor, HOD English Department,
Union Education Society's Mahila Mahavidyalaya, Solapur.

ABSTRACT :-

Anita Desai is one of the leading figures in the literary worlds. Anita Desai Contributed to the Indian English Fiction. She is famous for her literary presentation of isolation, loneliness, family affairs, immigration and the position of men and women. What makes Anita Desai especially significant from the aspect of postcolonial literature are her depictions of the ordinary people alone against a sea of troubles, both in their original and their adopted homeland. She also presents her protagonist as individual who is hypersensitive and unusually tense.

Anita Desai's third novel *Bye, Bye Black Bird* (1971) is an authentic study of man-woman relationships bedeviled by cultural encounters, and it was set away from India. In this novel she portrays xenophobia and racism in England during the convergence of the commonwealth immigration in the 1950's and 1960's. The novel shows the life and experiences of Dev, a young man from Calcutta, who arrives in England to attend the London School of Economics. He is invited to move in with two friends, Adit and Sarah, a multicultural married couple. As Dev is more and more attracted to the English way of life. Adit wants to leave everything and go back to his native land and culture. He is absolutely disgusted with the vileness of the white people who treat him with object disdain and hurt his feelings. It is also about boycott of Sarah and English woman, who is humiliated in her own country, on account of her marriage to an Indian.

This makes her a pariah and she suffers on account of this alienation. *Bye- Bye, Blackbird*. Shifts out of India, and underlines broader issues that relate to postcolonial matters or racism, displacement, marginalization and suppression.

KEY WORDS : Problems of migrants, multilingualism, marginalization of the subalterns, alienation, loneliness and nostalgia.

Introduction :-

Anita Desai portrays well, the conflict of the immigrants who can't save their cultural roots and makes an effort to strike new roots in alien territory and eventually become alienated. The theme of alienation and loneliness is a recurring theme in modern Western fiction. Life in India is also no longer tranquil and composite, Life in our country is also changing fast and its changing facets are mirrored in Indian English novels. Kamla Markandaya, Shashi Deshpande, Arun Joshi and Kiran Desai have given a fictional form to this new experience of the upper urban society. They have shown their awareness of the emerging dilemma of human loneliness rootless ness, and an ardent sense of quest for ones identify are the leit motif of the fiction of Kufka, Sartre, Camus, Mann, Durrell, Saul Bellow and Malamud. Their protagonists grope in the labyrinths of existence, dilemma is metaphysical. They are living metaphors of loneliness.

The 20th Century has been rightly called The Age of Estrangement. Modern man is fated to suffer the coercive impact of alienation. The modern man has shrunk in spirit languishing in confusion, frustration, disintegration, disillusionment and alienation. Like wise *Bye- Bye Black bird* captures the confusions and conflicts of another set of alienated persons. R.S. Sharma

Postcolonial Studies

says, "It has rightly been maintained that the tension between the local and the immigrant black bird involves issues of alienation and accommodation that the immigrant has to confront in an alien and yet familiar world". In this novel Desai seeks to explore the complexities of the dilemma of alienated immigration by focusing upon its attractions as well as repulsions. In the novel there is dislike for the foreigners and it focuses on the sociopolitical and communal values or biases which make the life an individual a veritable hell in an alienated world.

The novel *Bye- Bye Black Bird* depicts the plight of Indian immigrants in London. In this novel Desai has concentrated at great length upon the problem of East- West relationship in an interview with Atma Ram, Desai, replying to a question regarding "*Bye- Bye Black Bird*" She observed that, "of all my novels it is most rooted experience and the least literary in derivation."³ Desai wants to portray Indians and English men in England, with their problems both physical and psychological. In the same sense, the torturous estrangement has been delineated through the protagonists Dev, Adit and Sarah. The restlessness or helplessness of Desai's protagonists like Dev, Adit and Sarah may be rightly interpreted in terms of their hectic search for self – identity and self – knowledge, Adit, an Indian, is married to Sarah, an English girl. Both of them suffer from problems such as, the loss of identity, alienation and humiliation largely on account of racial and cultural prejudices. Dev comes to England to study and feels hurt as Indian immigrants are openly humiliated, called "Wags" and Macaulay's "Bastards" and are not even allowed to use a common lavatory. He has a sort of love – hate relationship with England on one hand and on the other he does not belong to the country. He feels upset by standardization, regimentation and mass production. Tired of living an artificial life in England Adit too feels nostalgia for the Indian scene. However he keeps on a smiling face while his heart cries out in agony. Initially Dev is frustrated but ultimately gets the job of a salesman in a bookshop.

As the plot develops, one can find him turning into a completely disillusioned man. He feels estranged in London from both Indians and English men. There is a lack of sympathy in English man, who do not recognize their neighbors and be have with them like strangers. He realizes that the Indian immigrants rush to the west and in the process miss badly their own mother land. The novel deals with inner problems of immigrants. Local English society considers Indian as Black Birds Nathputs, 'The novel described the superiority complex of the people of England who uses the epithet the 'Blackbird' to the Indians' (234). It contains issues of isolation, alienations, identity crisis and accommodation. Indian have migrated to different countries of Asian; Pacific states as a labour to work in plantation and mines. The diasporic community is complex with complicated problems of exile

It is a unique contribution of Anita Desai in the field of fictions, because it has reflected cross cultural conflicts. She has carefully noted here experience in India and London through her characters and plot evolved in this novel. The writer's sole effort is to reveal the cross cultural relations through her narrative themes and character in an effective manner.

Indian immigrants in foreign countries have tried to protect their own cultural identity in food, dress as well as the entertainment methods. The careful observations made by the novelist can be rightly described in this work. She has tried to develop this novel as a mirror of their day to day life. The cross cultural conflicts have been depicted by her on the canvas of public life in London. The social milieu and cultural ethos reflected by her can be clearly seen in this novel. Her novels are basically reflecting cultural conflicts. The novel depicts the Indo- English encounter involving specifically sex, love and marriage B.R.Rao believes that the novel makes almost no mention of love and happiness in the married life of Adit and Sarah with numerous adjustment that the married couple is compelled to make or has failed to make their ways of living. Sarah has difficulty in adjusting to each other norms of cleanliness, she has problem of

Postcolonial Studies

wearing saree and Jewellery . The rituals and belief mean nothing to the groan in praise at the lack of regard part of the other, for what one hold dear to one's heart. The large part of the novel deals with the social isolation of Adit and Sarah.

Sandhyarani Das rightly remarks that characters in this novel experience a different type of defeat and disillusionment.¹⁵ Sarah tries her best to keep up her identity despite her Indian husband but is defeated. She finally decides to go to India with her husband. Adit betrays himself by adopting the citizenship of foreign country and marrying a foreigner but he too is finally defeated in his adventure. At last he decides to return to his country. When Adit informs Sarah about his desire to go back to India, Sarah also agrees to go with him. While, Adit and Dev has choice to opt for their natural conditions, their true circumstances-Sarah has no choice she surrender to the decision of her husband . A clear description of Sarah's identity crisis is to be found in later authorial comment in the same chapter of the novel. If a girl marries in the same culture it is easier for her to adjust to her new home and people. But interracial and intercultural marriage causes adjustment problem which are not easy to overcome. In Sarah's case the problem become more complicated for she has married a person whose race was once ruled over by her own. In spite of 'progress' and "modernity" old prejudices die hard. Sarah is homeless in her own native country which is the biggest irony.

Adit recollects the golden memory of his native land i.e. India. Memory of cultural and festival celebrations are getting hold on his mind. When he reads news about India and Pakistan being at war Adit plans to join army to fight against Pakistan. Adit changes his attitude and creates a feeling of patriotism. His plan to leave England and return to India is not miracle but the reflection of cultural consciousness. Adit goes back to his roots where from nobody could uproot him and the title of the novel assumes its full significance.

Make my bed and light the light.
I will arrive late to night.
Black bird, bye- bye.

Adit realized the uselessness of exaggeration and false survival and finally make a decision to go to India. Adit cherishes the memory of the Indian festival. Anita Desai comments : He longed with pain, to see the fire – works and oil – lamps of Diwali : night again, to join in a Holy rump of flying colored water and powder and leaping to the music of drum (185) Adit represents a modern educated youth of Indian society. At the end Adit accepts the reality. He is optimistic now and thinks positively about India. It is journey of self - realization and consciousness . Anita Desai has dealt with a every contemporary problem. It has still its bearing on the cultural relationship of these two nations.

In *Bye Bye, Blackbird* we find the same spirit and desire to have taken place for migration for a better future. England was and is a dreamland for Indian migrants. Indians migrant there to get better education and lucrative comfortable jobs, for England is "the land of opportunity" (P.9) . While living there they suppress their love towards their own home and country, they even forget temporarily their own festivals and religious ceremonies , and if not, observe them merely as a token. They are made to undermine their cultural heritage and cut their roots of birth and go to England with strong determination for their ambition to be fulfilled.

Conclusion :

This Anita Desai has brought to focus the exile, self alienation and torturous estrangement experienced by Adit, Dev and Sarah in '*Bye- Bye Blackbird*. The uprooted individuals Adit, Dev and Sarah have constant identity crises and suffer from cultural and social alienation throughout the novel . This paper has tried to present the growth of the Estrangement literature from

Postcolonial Studies

its humble beginnings to its status in the present day with special reference to Anita Desai's novel *Bye-Bye Blackbird*. She accepts, *Bye-Bye Blackbird* is the closes of all my books to actuality - practically everything in it is drawn directly from my experience of living with Indian immigrants in London.

Reference :

- 1) Anita Desai, quoted by R.S.Pathak in *Indian Women Novelists* ed. RK. Dhawan New Delhi ; Prestige Books, 1991) p 92
- 2) Ram, Atma Anita Desai ; *The novelist who writes for Herself.* (An Interview) *The Journal of Indian Writing in English*, Vol 5, No. 2 July 1977.
- 3) *Bye- Bye Black Bird* New Delhi : Orient paperbacks 1994 p 29.
- 4) Bidulata Chaudhary, *Women and Society in the Novels of Anita Desai* (New Delhi ; Prestige Books 1995) p 72.



Beehmath

JAR

PRINCIPAL

U.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur

NA - Co-Ordinator
U.E.S.
U.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur.



"वैचारिक तथा व्यावसायिक पत्रकारिता"

प्रा. जमादार आर. एल.

हिन्दी विभाग प्रमुख, असोसिएट प्रोफेसर, यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

● सारांश :-

समय और समाज के सन्दर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्वबोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। समाजहित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। श्री. रामकृष्ण खाडिलकर ने पत्र-कला और पत्रकार कला इन दो शब्दों का प्रयोग किया है। उनके अनुसार ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूम में दूसरों तक पहुँचाना ही पत्र-कला है। पहले पत्रकारिता का तात्पर्य समाचारों का संकलन तथा प्रसारण था। परन्तु जैसे-जैसे समाचार पत्रों में प्रेषण, मुद्रण, वितरण के साधनों में वैज्ञानिक, प्राविधिक और शिल्पगत उन्नति होती गयी, पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तृत होता गया।

● प्रस्तावना :-

मानव जिज्ञासाशील प्राणी है। वह अपने पड़ोसों तथा गाँव-शहर की हलचलों में बहुत दिलचस्पी लेता है, फिर उसके बाद वह अपने देश तथा विश्व के सन्दर्भ में अवगत होता है। अतः वह समाचार पत्र पढ़ना चाहता है। यह दूसरी बात है कि प्रत्येक की वर्तमान समय में उसके जानने की इच्छा मात्र अपने समाज, राज्य या देश तक सीमित न होकर विश्व के समस्त अतिविधियों तक बढ़ गई है। इसलिए समाचार पत्र को लोकतन्त्र की चौथी शक्ति कहा है और यह सच भी है। आज हमारे प्रत्येक दिन का प्रारंभ चाय से भी पहले समाचार पत्र से होता है। किसी भी समाज और राष्ट्र के जीवन में इसका ऊँचा स्थान है। वह मानवीय सभ्यता, संस्कृति तथा शील का प्रतीक हुआ है। साहित्य तथा ज्ञान की अन्य विधा के समान भारत में पत्रकारिता पश्चात्य की देन है।

● हिन्दी पत्रकारिता :-

पत्रकारिता जनभावना का अभिव्यक्ति, सद्भावों और उद्भूति और नैतिकता की पीठिका है। नेपोलियन का कथन है कि - पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करनेवाले शिकायतखोर, टीकाकार, सलाहकार बादशाहों के प्रतिनिधि और राष्ट्र के शिक्षक होते हैं, जो सर्वथा सत्य है। चार विरोधी पत्र चार हजार संगीतों से भी अधिक खतरनाक है।

भारत में हिन्दी पत्रकारिता 30 मई सन् 1826 ई. का दिन हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा का महत्वपूर्ण बिन्दु है, क्योंकि इसी दिन कानपुर निवासी श्री. युगार किशोर शुक्ल के सम्पादन में 'उदन्त मार्तण्ड' नामक पहला साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया गया था। 'उदन्त मार्तण्ड' का शाब्दिक अर्थ है - "समाचार सूर्य"। इस पत्र का मूल उद्देश्य भारतवासियों में राष्ट्र प्रेम और सर्वांगीण विकास हेतु जागृति का भाव पैदा करना था। हिन्दुस्थानियों की भलाई के लिए तथा उन्हें परावलम्बन से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के निमित्त प्रकाशित 'उदन्त मार्तण्ड' का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

किसी भी राष्ट्र की आजादी एवं उसकी अखण्डता, प्रभुसत्ता तथा सार्वभौमिकता को बनाये रखने की पहली शर्त है - विचार अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता। चाहे वह फ्रान्स की राज्यक्रान्ति हो या रूस की बोलशेविक क्रान्ति हो या भारत की आजादी की लड़ाई। सभी में लेखकों, विचारकों, पत्रकारों तथा साहित्यकारों ने अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया है। देश की चेतना को संचार करने तथा जड़ और मृतप्राय भावनाओं में क्रान्ति-बीज अंकुरित करने में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

वैचारिक तथा साहित्यिक पत्रकारिता अत्यंत रोचक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में होनेवाली गतिविधियों, नये प्रकाशन, आलोचना संक्रमण, रेखाचित्र, साहित्यकारों से भेट वार्ता आदि को पत्रकारिता द्वारा भी जन-जन तक पहुँचाकर समाज को नई दृष्टि प्रदान की जा रही है।

साहित्यकार और पत्रकार दोनों क्रान्ति के जनक होते हैं। दोनों काम सदैव क्रान्तिदर्शी रहा है। दोनों ने सामाजिक परिवर्तन में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका का वहन किया है। दोनों के लेखन का स्तर उग्र होकर बदल जाता है। ऐसे समय वह अपने कर्तव्य का वहन करते हैं, वे अपनी लेखनी के द्वारा जुलूम का विरोध करते रहते हैं।

हिन्दी पत्रकारिता का जन्म राष्ट्रीयता के उन्मेष में हुआ। आजादी से पहले



पूरे भारतीयों में एक साथ राष्ट्र प्रेम निर्माण करने के लिए प्रयासरत थीं। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी पत्रकारिता ने मिशन के रूप में काम किया। इन दिनों पत्रकारिता के सामने कई चुनौतियाँ थीं। एक तो सरकार विदेशी थी और दूसरी बात यह है कि जनसामान्य तक सूचना पहुँचाने के लिए साधनों का अभाव था। इसके बावजूद हिन्दी पत्रकारिता ने देशवासियों में जागरूकता निर्माण करने का प्रयास किया। राष्ट्रीय जागरण के इस दौर में पत्रकारिता के सामने एकमात्र उद्देश्य था - देश की आजादी। जनकल्याण को प्राथमिकता देते हुए सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों के चित्र पत्रकारिता ने उतारे। समाज को जगाने के लिए, उनमें संघर्षशीलता निर्माण करने के लिए उसे एक विचार देना जरूरी था और वह है राष्ट्रीयता। इसी कारण व्यक्तिगत आचरण से पत्रकारिता ने ऊँचे आदर्शों की स्थापना की। देश की आजादी के लिए, राष्ट्रीय सम्मान के लिए उस काल के पत्रकारिता ने बहुत अधिक कष्ट और यातनाओं को सहा। आजादी के आन्दोलनों के दौरान भारतीय पत्रकारों ने अपने अपूर्व त्याग, समर्पण भावना और बलिदान का परिचय दिया। इस काल को पत्रकारिता ने अपने युगीन दायित्व को सक्षमता के साथ निभाया।

आज पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम बन गया है। आज के वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता का महत्त्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। यह हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य घटित होनेवाली नई-नई घटनाओं को शीघ्रता के साथ दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाती है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र विशाल हो गया है।

प्राचीन काल से कागज के टुकड़े पर समाचार लिखकर भेजना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है। एक व्यक्ति दूसरों का हाल-चाल जानने तथा अपना हाल-चाल कागज के टुकड़ों पर लिखकर भेजता रहा है, यह प्रक्रिया आज भी चल रही है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासुवृत्ति का होने के कारण वह आस-पास घटने-वाली घटनाओं को जानने के लिए सदा उत्सुक रहता है। वर्तमान समय में उसके जानने की इच्छा मात्र अपने समाज, राज्य या देश तक सीमित न होकर विश्व के समस्त गतिविधियों तक बढ़ गयी है। पत्रकारिता के द्वारा ही उसकी इच्छाओं की पूर्ति सुगमता पूर्वक होती है। पत्रकारिता हमें हमारे समाज, देश की समस्याओं तथा विचारों से ही रूबरू नहीं करती बल्कि सम्पूर्ण विश्वभर की घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत कराती है।

स्वतंत्रता पूर्व युग की पत्रकारिता के प्रारंभिक चरण में साहित्यकार ही पत्रकार हुआ करते थे। इस युग का यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि प्रारंभिक चरण के अधिकतर साहित्यकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पत्रकारिता के साथ जुड़े हुए थे। इनमें सर्व प्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम आता है। बाद में पं. बालकृष्ण भट्ट, बाबू विष्णु पराडकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, बद्रीनारायण चौधरी, पं. बनारसदास चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती आदि। शायद यही कारण होगा कि इस युग की पत्रकारिता ने पूरे भारतीयों को स्वतंत्रता का विचार दिया। इन्होंने अपनी प्रतिभा, पैसा और श्रम पत्रकारिता में लगा दिया। देश की स्वतंत्रता के लिए जन-जागरण पर बल देते हुए सामाजिक विद्रूपताओं के भी चित्र उतारे। कई सामाजिक विषयों पर लेख लिखकर अपने दायित्व को निभाया, उन्होंने पत्रकारिता के दीप को सदैव जलाते रखने की कोशिश की। इसलिए बनाई शॉ ने कहा है - "कुशल पत्रकार, साहित्यकार से भिन्न नहीं है।" गलत और घातक प्रथाओं, जातीय, धार्मिक ढकोसले, साम्प्रदायिकता, विषमता जैसे विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे। अर्थात् "हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीयता की कोख में पली, सामाजिक - धार्मिक रूठियों, आडम्बरों के खिलाफ लड़ती रही। ध्येय की दृष्टि से लोकहित, लोक-कल्याण उसका प्रमुख लक्ष्य रहा। वह जनता को शिक्षित करने का सर्वसुलभ और सशक्त माध्यम बनी। राष्ट्रीयता की ओजस्विता, सामाजिक सुधार, धार्मिक आडम्बरों के विरोध में लोकजीवन का पैना हथियार बनी।"¹ तात्पर्य यह है कि आजादी से पहले जिस पत्रकारिता ने समाज में जागरण का बुनियादी काम किया, उसके पीछे एक विचार था। पत्रकारिता की एक दृष्टि थी, एक सोच थी। स्वतंत्रता पूर्व काल में हिन्दी पत्रकारिता संघर्ष की स्थिति से गुजरी है, लेकिन उसने कभी अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है। दोनों की विकास भूमियाँ एक-दूसरे के लिए पूरक साबित हुई हैं। जहाँ एक ओर हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता की बुनियाद रखी वहीं राष्ट्रीयता ने हिन्दी पत्रकारिता को प्रेरणा प्रदान की।

हिन्दी पत्रकारिता ने समाज सुधार और स्वतंत्रता संघर्ष के लिए हथियार के रूप में काम किया। भारतीयों के कल्याण हेतु और उन्हें पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए तथा उन्हें स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के लिए मौलिक विचार दिया। प्रगतिशील विचारों के माध्यम से जनमानस में नई शक्ति का निर्माण किया। हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी निष्काम और कर्मठ साधना द्वारा स्वतंत्र होने की प्रबल लालसा निर्माण की। गुलामी की मानसिकता से गुजरने वाले भारतीयों में आशा की नयी किरन जगाई। "राष्ट्रीय आंदोलन के समय पत्रकारिता के क्षेत्र में गांधीजी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के माध्यम से अपने अहिंसक क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया। सरकार को अपने राजनैतिक विचारों व कार्यक्रमों से अवगत कराया और आम जनता को एक बड़े आन्दोलन के प्रति जागृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अपने पत्रों में निर्भीकता व निष्कलता से अपने विचार व्यक्त करके गांधीजी ने अन्य पत्रकार सेनानियों को भी निर्भीकता-पूर्वक अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।"² पराधीनता के इस दौर में हर पत्रकार एक वीरयोद्धा हुआ करता था और उसका विचार एक बहुत बड़ा हथियार।

हिन्दी पत्रकारिता के विकास में वैचारिक पत्रकारिता के संदर्भ में पं. बाबूराव पराडकर और गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में इन जैसे कई पत्रकारों का विशेष योगदान रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप एक मिशन जैसा था। इसमें काम करनेवाले पत्रकार पूरी निष्ठा के साथ अपने दायित्व का निर्वाहन करते थे। हमारे पत्रकार और उनकी पत्रकारिता का इतिहास पराधीनता से स्वाधीनता की ओर अग्रसर होने का एक लम्बा संघर्ष है। ध्येय निष्ठा से प्रेरित होकर युग की पत्र-पत्रिकाओं ने तथा पत्रकारों ने त्याग और बलिदान की भावना का उच्च विचार स्थापित किया। इस युग की पत्रकारिता में तनिक भी व्यावसायिकता नजर नहीं आती। स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता में धीरे-धीरे व्यावसायिकता ने प्रवेश किया। विशेष कर औद्योगिकीकरण के साथ पत्रकारिता में व्यावसायिकता आ गयी। स्वतंत्रता के बाद और औद्योगिकीकरण से पहले पत्रकारिता अपनी उच्च परम्परा को कायम करते हुए अपना दायित्व निभा रही थी। आम जनता को बल, ज्ञान और उत्साह प्रदान करना उसके व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करना, अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ आवाज उठाना, आगे बढ़ने के लिए समाज को एक विचार देना और जनता के जीवन में आनंद निर्माण करना आदि भावनाओं को लेकर पत्रकारिता कार्यरत है। अर्थात् पत्रकारिता की रचनात्मक प्रतिभा ने भारत के निर्माण की दृष्टि से काफी प्रयास किया। एक नवीन भारत का निर्माण करने के लिए और उसे बलशाली बनाने के लिए पत्रकारिता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। नवीन भारत की तस्वीर बनाने में उसका काफी योगदान रहा है। देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों के चित्र उतार कर इन क्षेत्रों की समस्याओं का निराकरण करने हेतु विचार प्रस्तुत किए। पत्रकारिता ने ग्रामीण क्षेत्रीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया।

"वस्तुतः किसी समाज व राष्ट्र का उत्थान-पतन इन मूल्यों के संगठन एवं न्हास पर ही निर्भर करता है। इसलिए समाज, राष्ट्र, विश्व अथवा व्यक्ति के जीवन का विश्लेषण करते समय विज्ञान उनकी मूल्यनिष्ठा को ही केंद्रक मानकर चलते हैं। जीवन-मूल्य, सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य, विश्व मूल्य जैसे शब्दों की उत्पत्ति उसी के विकसित संदर्भों में हुई है। पत्रकारिता भी मूल्यों के अभाव में बंजर और बाँझ साबित हुई है, जब कि पत्रकारिता की मूल्यनिष्ठा समाज-परिवर्तन की दिशा तय करती है।"¹ इसी समाज परिवर्तन की दिशा में आजादी के बाद हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी दिशा निश्चित की। जीवन के हर क्षेत्र में स्वतंत्रता स्थापित करने के लिए पत्रकारिता को पारंपारिक साम्राज्यवादी मान्यताओं के विरुद्ध पुनः संघर्ष करना पड़ा। समाज से हजर प्रकार की विधमता नष्ट करने के लिए लेखनी उठानी पड़ी।

किसी देश की स्वतंत्रता उस समय सार्थक साबित होती है, जब देश का हर एक नागरीक आत्मनिर्भर हो। आत्मनिर्भर मनुष्य वह होता है जो अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए किसी पर निर्भर नहीं होता। जिस देश का प्रत्येक नागरीक आत्मनिर्भर होगा, तो हम कह सकते हैं कि देश का सर्वांगीण विकास हो गया है। इस देश में कल्याणकारी राज्य की प्रतिष्ठा हुई है। हिन्दी पत्रकारिता ने इस दृष्टि से काफी प्रयास किए। और-तो-और राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आजादी के पश्चात औद्योगिकीकरण के साथ जीवन के हर क्षेत्र में व्यावसायिकता ने प्रवेश किया। हर क्षेत्र में लाभ-हानि को लेकर विचार होने लगा। पत्रकारिता का क्षेत्र भी इस स्थिति का शिकार हुआ और वह अपने आपको दूर नहीं रख सका। पाश्चात्य संस्कृति और औद्योगिक क्रांति के प्रभाव में 'मिशन' से प्रारंभ हुई उसकी यात्रा 'प्रोफेशन' अर्थात् व्यवसाय के रूप में बदलने लगी। पत्रकारिता के मानदण्ड बदल गए। इसमें नए युग की सभी नई प्रवृत्तियों का समावेश होने लगा और वह आगे चलकर बहुत बड़े व्यवसाय का रूप धारण कर गई। उसके संचालन में लाखों रूपयों की पूँजी लगाई जाने लगी। जो उसमें पूँजी लगता है, वही उसका मालिक बन जाता है। एक उत्पादन की तरह आज उसे बनाया, सजाया, सँवारा जा रहा है। ऐसी ही पत्रकारिता बाजार पर कब्जा कर रही है। "आज व्यावसायिक पूँजी ने समाचार पत्रों पर एकाधिकार-सा कर लिया है। किसी समय मानवीय कल्याण तथा अर्थतंत्र ने उसकी स्थिति को इतना दयनीय बना दिया है कि आज पत्रकार उनका खिदमतगार बनकर रह गया है।"² अर्थात् पत्र-संचालन जब से व्यवसाय बन गया है तब से वह धन कमाने का साधन बन गया। पूँजीपति मालिक बन गए। संपादक तथा पत्रकार उनके इशारे पर काम करने लगे। परिणामस्वरूप उसमें धीरे-धीरे वैचारिकता कम होने लगी। सबकी खबर रखनेवाली पत्रकारिता एक विशिष्ट वर्ग की खबर रखने लगी। व्यावसायिक पत्रकारिताने वैचारिक पत्रकारिता को पछाड़ दिया।

व्यावसायिक दृष्टिकोण के कारण पत्रकारिताने नई आर्थिक व्यवस्था का स्वीकार किया। भूमण्डलीकरण के कारण देश की अर्थनीति में परिवर्तन हुआ। इसमें खुलकर व्यापारवाद आ गया। पत्रकारिता की विज्ञापन नीति में भी परिवर्तन हुआ। अधिकतर समाचारों का स्थान विज्ञापन ने ले लिया। एक समय था जब संपादकीय, विशेष रूप से अग्रलेख मुखपृष्ठ पर छपते थे, हमें पता भी नहीं चला कि वे बीचवाले पृष्ठ पर कब चले गए। आज पैसा कमाने के लिए पूरे मुखपृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित किए जा रहे हैं। व्यावसायिकता के इस दौर में पत्रकारिता में भी ठेकेदारी प्रणाली का विकास हुआ है। पत्रकारों के सिर पर हमेशा संघर्ष की तलवार लटकती रहती है। इस बात का सीधा प्रभाव पत्रकारों के काम पर होता है। वे पत्रकार वही लिख रहे हैं, जो पत्र का मालिक लिखवाना चाहता है।

देश के बाजारवाद ने पत्रकारिता के रूप-स्वरूप को ही बदल डाला। 'जैसी माँग वैसी आपूर्ति' यह बाजार का तत्व है। बाजार में जो बिकता है, वही समाचार पत्रों में प्रकाशित होने लगा। अपने समाचार पत्र की बिक्री संख्या बढ़ाने के लिए इनके बीच 'प्राइस वॉर' चलता है। अन्य समाचार पत्रों की बिक्री संख्या या ग्राहक संख्या के साथ तुलना कर हम औरों की तुलना में सबसे आगे है। यह दिखाने का प्रयास किया जाता है। कई समाचार पत्र तो अपने ग्राहकों को 'पॅकेज' दे रहे हैं। पुरस्कार, विदेश की सैर जैसे प्रलोभन देकर लोगों की मानसिकता का लाभ उठा रहे हैं। ये सारी स्थितियाँ पत्रकारिता में व्यावसायिकता के कारण ही आ गयी है। इन तमाम चीजों के बावजूद आज भी कई पत्र और पत्रकार ऐसे हैं जिन्होंने पूरी निष्ठा के साथ अपना दायित्व निभाया है। आज भी वह समाज के लिए यह मिशन चला रहे हैं। उन्होंने समाज से अपना रिश्ता नहीं तोड़ा है। व्यावसायिकता के इस दौर में भी वह पत्रकारिता के पारंपारिक मूल्यों की रक्षा करने में जुटा हुआ है। कुछ पत्रकार ऐसे भी हैं जिन्होंने व्यावसायिक नैतिकता का पालन करते हुए समाज हित में ही अपनी लेखनी उठाई है।

● निष्कर्ष :-

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आज हिन्दी पत्रकारिता में व्यावसायिकता आ गई है। इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह व्यावसायिक होते हुए भी अपनी मर्यादाओं का ध्यान रखकर सामाजिक दायित्व के प्रति सचेत है। हिन्दी पत्रकारिता व्यावसायिकता के बावजूद भी उसमें आम आदमी, समाज तथा राष्ट्र से अपना नाता नहीं तोड़ा है। आम जनता के पक्ष में बात कर समाज को आगे बढ़ाते हुए वह राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हिन्दी पत्रकारिता को राष्ट्रीयता की जो विरासत मिली है, उसे आज भी उसने कायम रखा है। यदि ऐसा कहा जाय तो गलत नहीं होगा कि आज अन्य क्षेत्रों की तुलना में ईमानदारी, सच्चाई समर्पण त्याग व बलिदान की भावना कहीं दिखाई देती है तो वह मात्र पत्र और पत्रकारों में है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1) डॉ. अंबादास देशमुख - 'प्रयोजन मूलक हिन्दी अधुनातम आयाम', शैलजा प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 2006, पृष्ठ 226, 247।
- 2) विनोद गोदरे - 'हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ 36।
- 3) डॉ. बापूराव देसाई - 'प्रयोजन मूलक हिन्दी व्याकरण एवं पत्रलेखन', विनय प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 1999, पृष्ठ 77, 79, 80।
- 4) विनोद गोदरे - 'हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ 56।



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

Associated & Indexed by EBSCO, USA

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.2331(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: जमादार आर. एल. Topic:- "वैचारिक तथा व्यावसायिक पत्रकारिता" College:-हिन्दी विभाग प्रमुख, असोसिएट प्रोफेसर, यु.ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापूर. The research paper is original & innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of Dec 2017.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

e-Mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

UGC Approved

ISSN : 2319 - 8648

Issue IX Vol III , OCT. 2017

Sr. No. 64310

Impact Factor : 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research
Refereed Multidisciplinary Journal

Editor In Chief

Special Editor

Mr. Arun B. Godam

Prof. Jadhav Baburao B.

Dept. of Political Sci.

Bapusaheb Ekambekar Mahavidyalaya , Udgir

ISSUE IX Volume III (Half Yearly) May. To Oct. 2017

Published on OCT. 2017

Editorial Office Address :

Khadgaon Road, Kapil Nagar,
Latur, Dist. Latur 413512
(M.S.) India

Contact- 8149668999

Email-

hitechresearch11@gmail.com



Publisher

Shaury Publication

Kapil Nagar, Latur

Contact- 8149668999

Price:- Rs. 300

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chitta Ranjan Panda

P.G. Dept. Of Odia
Shailabala Women's
Autonomous College
Cuttack - (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad

Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Maimanat Jahan Ara

Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf

Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane

R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

B.J. Hirve

Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Prain Diddeshwar Shete

Dept. of Zoology,
Maharashtra Udaygiri
Mahavidyalaya, Udgir,
Dist. Latur

Dr U.V.Panchal

H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande

Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. N.J. Waghmare

Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue IX Vol III , OCT. 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 2.143

Present Preface Message

EDITORIAL BOARD MEMBER

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

Dr. Bharat Handibag
Dean, Faculty of Arts,
Dr.B.A.M.University Aurangabd (M.S.)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

B.J. Hirve
Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. B.T. Lahane
Principal, Head, Dept. of English,
Sambhajirao Kendre College,
Jalkot, Dist. Latur (M.S.)

Dr U.V.Panchal
H.O.D ,Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Assistant Professor,
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

S. R. Uchale
Librarian,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Mumbai

S.R. Kadam
Head, Dept. of History,
Janvikas College,
Bansorala, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Gopal S. Bhosale
Head, Dept. of Hindi,
Janvikas College,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Hanumant Mane
Research Guide & Head, Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

Prof. Mohan S. Kambale
Dept. of Marathi,
Janvikas Mahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Prof.Chitade Nandkishor
Dept. of Economics,
Janvikas Mahavidyalay,
Bansarola, Dist. Beed (M.S.)

Dr Koshidnewar Bhasker
H.O.D (Computer Science)
Vc. C.M.Deglurkar College,
Degloor, Dt. Nanded (M.S)

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue IX Vol III , OCT. 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 2.143

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में	संतोष साहेबराय नागरे	1
2	सामाजिक सरोकारिता को निबाहती राजन स्वामी की गजल	डॉ. सचिन रमेशराव चोले	3
3	हिंदी गजलों में आतंकवाद को भयावहता	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	7
4	विषय : साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा : एक चिंतन	प्र. डॉ. एम. ए. येल्लूरे	10
5	बौद्ध दर्शन और असंगघोष की कविता	डॉ. संजय जाधव , प्र. डहाळे मुंजाभाऊ	13
6	प्रतीक नाटक परम्परा और भारतेंदु के नाटक	प्र. खराडे आर. एम.	18
7	खिलाडियों के जीवन में संतुलित आहार और व्यायाम का महत्व	प्र. अतुल शर्मा	22
8	राष्ट्रीय एकता में शिक्षा का योगदान	डॉ. प्रविण कांबळे	24
9	इक्कीसवीं सदी में दलित आन्दोलन	प्र. डॉ. सी. मंगला श्री. कठारे	26
10	सर्वेण्वरदयाल सक्सेन कथ 'लडाई' नाटक की प्रासंगिकता	प्र. डॉ. संजय जाधव	28
11	"मराठवाड्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक सांख्यिकाय विश्लेषण"	डॉ. नदाकशार मुळे	34
12	"मराठवाड्यातील भूमिहान शेतमजूर : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"	शिंदे भगवान	38
13	कापूस आदान-प्रदान किंमत विश्लेषण	डॉ. बोन्नर रेणुकादास यशवंत	41
14	'लीळाचरित्र' ग्रंथातून चक्रधर स्वामींनी सांगितलेला उपदेश	डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले	45
15	नागनाथ कोत्तापल्ले यांचे काव्यविश्व	प्र. बीबीशन विठ्ठलराव कांबळे	48
16	बहिणाबाईची कविता	प्र. डॉ. मारोती रामराव कोल्हे	53
17	आदिम काव्यातील धोर महात्मं	प्र. डॉ. राजेश धनजकर	57
18	'सोनचपा' व 'कस्तुरीमृग' जीवनाचा शोध घेणारी नाटयकृतौ	डॉ. संदीप अ. बनसोडे	62

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly

Issue IX Vol III , OCT. 2017

UGC Approved

Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648

Impact Factor : 2.143

19	स्वातंत्र्योत्तर राजकीय कांदबरी	श्री. विभुते शिवहार प्रकाश	67
20	"पोवाडा या शाहिरी काव्याचे स्वरूप"	प्रा. डॉ. श्रीहरी चव्हाण	69
21	'सभापती' व 'काला पहाड' कादंब-यांचा तुलनात्मक अभ्यास	श्री. परमेश्वर वाल्मिकि	72
दहिफळे			
22	भारतीय प्रसार माध्यमे आणि ग्रामीण विकास	प्रा.डॉ.संतोष चंपती हंकारे	75
23	अहमदपूर व चाकूर तालुक्यातील ज्वारी पीक प्रारुपाचा भौगोलिक अभ्यास	प्रा.डॉ.यु.बी.सोनुले	78
24	लिंगायतो का केंद्र सोलापूर : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रा.एम.एस.मुरुडकर	82
25	कायदा व सुव्यवस्था आणि केंद्र शासन	डॉ. लक्ष्मण रत्नाकर बाबुराव	86
26	सार्वजनिक आरोग्य आणि शाश्वत विकास	प्रा. डॉ. सयद कुरेशाबी नजीरसाहेब	89
दत्तराव			
27	"सुशासन आणि भारतातील सुशासनाचा विकास"	प्रा.डॉ.तिडके केशव	91
28	लातूर जिल्ह्यातील विविध जलसिंचन साधनाद्वारे सिंचनाखालील क्षेत्र - एक भौगोलिक अभ्यास	हेळंबे हनमंत बालाजी	94
29	"अम्बेडकरवाद, बुध्द दर्शन और मार्क्सवाद"	प्रा. चोंचंडे आर. यु.	100
30	मानवी हक्क : महिला	प्रा. डॉ. जयश्री शिंदे	103



“अम्बेडकरवाद, बुध्द दर्शन और मार्क्सवाद”

प्रा. डॉ. जयश्री शिंदे

सहयोगी प्राध्यापक, युनियन महिला महाविद्यालय, सोलापुर, महाराष्ट्र

(29) -----Dept. of Hindi-----

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर दलितों को अपनी तरह से संघटित करना चाहते थे। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि, जातिवाद की जड़े इतनी गहरी हैं कि उसे उखाड़कर फेंका नहीं जाता तब तक सामाजिक परिवर्तन की कल्पना करना भी असंभव है।

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर का विचार था कि भारत में सारी सामाजिक गड़बड़ी की जड़े वर्ण व्यवस्था ही हैं। उसे समाप्त किए बिना न तो जातिवाद समाप्त किया जा सकता है और न ही छुआछूत। इसलिए उन्होंने प्रारंभ से ही वर्ण व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई। सन 1920 के बाद 'मूक नायक' समाचार पत्र के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर ने दलित वर्ग को शिक्षित, संघटित और स्वाभिमानी होने का आवाहन किया। परिणामतः मराठी भाषा क्षेत्र में दलित वर्ग शिक्षित बनें, संघटित हुए और आंदोलन के लिए भी सक्रिय थे। दलित वर्ग का आंदोलन जनसंघर्ष का रूप ले रहा था। उसी जनसंघर्ष से दलित साहित्य की परंपरा विकसित हुई।

मार्क्सवाद एक विचारधारा है। प्रगतिशील साहित्य सृजन का मूल स्रोत इसी विचारधारा में है। दलित साहित्य की निर्मिति का मूलस्रोत डॉ. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकरकी विचारधारा में है। उसे ही अम्बेडकरवादी साहित्य कहा जाता है। अम्बेडकरवादी साहित्य प्रगतिशील साहित्य का एक सशक्त, समृद्ध प्रभावशाली रूप है।

मार्क्सवाद का उदय 19 वीं सदी के मध्य में और विकास बीसवीं सदी में हुआ। भारत को स्वाधीनता संग्राम के दौरान मार्क्सवाद ने प्रभावित किया। भारत में आजादी का आंदोलन सुधारवादी अपेक्षाओं से शुरू हुआ जो धीरे-धीरे साम्राज्यवाद विरोधी होता गया। साम्राज्यवादका विरोध पहला पक्ष था सत्ता परिवर्तन अर्थात् अंग्रेजों के स्थान परभारत की जनता द्वारा चुनी हुई सरकार हो - जनतंत्र हो और दूसरा पक्ष कि गहाँ जगतिहीन-वर्गविहीन आधुनिक समाज बने। नीतिगत मतभेदों के कारण साम्राज्यवाद विरोध और स्वराज्य की स्थापना की कोख से जन्मी-कम्यूनिस्ट पार्टी और अलग-अलग हो गई। काँग्रेस पार्टी की नीति से डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की असहमति थी, इसलिए उन्होंने दलितों को अपनी तरह से संघटित किया। बुनियादी सामाजिक परिवर्तन पर भरोसे के बाद भी वामपंथियों और दलितों के बीच अनबन बनी रही। अम्बेडकर और कम्यूनिस्टों के बीच सन 1936 में सूती मिलों की हड़ताल के समय एकता का आधार बना था।

बीसवीं शताब्दी में समाज के शोषित, पीड़ित वर्गों के आकर्षण का केंद्र मार्क्सवाद था। जिस समय डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने अपना राजनीतिक जीवन प्रारंभ किया था, रूस की समाजवादी क्रांति हो चुकी थी और विश्व के विभिन्न भागों में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रचार हो रहा था। भारत में भी किसानों, मजदूरों के बीच मार्क्सवादी विचारधारा से लैस समूह स्थापित हो चुके थे। सन 1925-35 के मध्य जब डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के लिए संघर्ष का बिगुल बजाया तो उसी समय मार्क्सवादी विचारों पर आधारित कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। समाज के शोषित, पीड़ित वर्ग के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के बावजूद भी डॉ. अम्बेडकर मार्क्सवाद की ओर आकर्षित नहीं हुए।

मार्क्स के उच्च विचारों और श्रमिक वर्गों के उत्थान हेतु लेनिन के उत्साह की प्रशंसा करते हुए भी मार्क्सवाद के साथ डॉ. अम्बेडकर के मतभेद इतने गंभीर थे कि उनके लिए साम्यवादी विचारधारा को स्वीकार करना असंभव था। मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद, सर्वहारा के अधिनायकवाद, वर्ग संघर्ष, धर्म और नैतिकता सम्बन्धि विचारधारा को वे स्वीकार नहीं करते थे।

(Handwritten signature)



डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर स्वयं एक अर्थशास्त्री होने के नाते कार्ल मार्क्स के आर्थिक सिद्धांतों से अवगत थे। लेकिन उनके विचार का मुख्य मुद्दा यही था कि भारतीय समाज व्यवस्था की दृष्टि से जातिव्यवस्था का निर्मूलन होना सर्वप्रथम आवश्यक है। इसीलिए उन्होंने वर्गसंघर्ष पर बल दिया। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने बौद्ध धम्म को स्वीकार करने के पश्चात बौद्ध धम्म की दृष्टि से मार्क्सवाद की आलोचना की और ऐसा निष्कर्ष प्रस्थापित किया कि कार्ल मार्क्स का दिखाया हुआ शोषण मुक्ति का क्रांतिकारी मार्ग हिंसा का था। अर्थात् मार्क्सवाद में हिंसा को स्थान है जबकि बुद्ध के तत्त्वविचारों में हिंसा वर्ज्य है। अहिंसा का ही मार्ग मात्र समता, स्वाधीनता एवं बंधुता के द्वारा मनुष्य को मानव धर्म की ओर ले जानेवाला है। यही संदेश डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने अपने अनुयायियों को दिया है (भारतीय दलित साहित्य: परिप्रेक्ष्य : वाणी प्रकाशन, मार्क्सवाद और दलित साहित्य : सदा क-हाडे, पृ. 56)

धर्म के बारे में भी डॉ. अम्बेडकर के विचार मार्क्सवादियों से भिन्न थे। मार्क्सवाद धर्म को अफीम के समान मानता है, क्योंकि वह लोगों को काल्पनिक दुनिया में ले जाता है। डॉ. अम्बेडकर मार्क्सवादियों के इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे। उनके अनुसार धर्म सामाजिक शक्ति है जो शांति व्यवस्था के लिए आवश्यक है। धर्म के बिना मानव जीवन अधूरा है। डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धम्म ग्रहण करते समय नागपुर में भाषण देते हुए कहा था- 'पीड़ित मानवता का उद्धार बौद्ध धम्म का मुख्य उद्देश्य है। मेरी मान्यता है कि बुद्ध मार्क्स से दो हजार चार सौ वर्ष पूर्व पैदा हुए थे। कार्ल मार्क्स ने ऐसा कुछ नहीं कहा जिसे गौतम बुद्ध स्वयं प्रकाश में न लाए हो। बौद्ध धम्म एक सर्वग्राह्य धम्म है। मार्क्सवाद की अपेक्षा बौद्ध धम्म उन्हें इसलिए पसंद था क्योंकि बौद्ध धम्म का आधार अहिंसा है। मार्क्सवाद को हिंसात्मक साधनों से क्रांति में कोई परहेज नहीं है।

बुद्ध ने जो साधन अपनाए, वे स्वेच्छापूर्वक अनुसरण करके मनुष्य की नैतिक मनोवृत्ति को परिवर्तित करने के लिए थे। तो साम्यवादी कहते हैं कि साम्यवाद को स्थापित करने का पहला साधन है हिंसा और दूसरा साधन है, सर्वहारा वर्ग की तानाशाही।

बुद्ध हिंसा के विरुद्ध थे। परंतु वे न्याय के पक्ष में ही थे और जहाँ पर न्याय के लिए बल प्रयोग अपेक्षित होता है, वहाँ उन्होंने बल का प्रयोग करने की अनुमति दी है। यदि एक दंडाधिकारी एक अपराधी को दंड देता है, तो यह दंडाधिकारी का दोग नहीं है; बल्कि न्याय का ही पालन कर रहा होता है। उस पर अहिंसा का कलंक नहीं लगता। बुद्ध ने तानाशाही का कभी भी समर्थन नहीं किया। गणराज्य के प्रति उन्हें लगाव और प्रेम था। बुद्ध पूर्णतः समतावादी थे। (बाबासाहब डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर संपूर्ण वाङ्मय खण्ड-7, क्रांति तथा प्रतिक्रांति, बुद्ध अथवा कार्ल मार्क्स, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर पृ. 355, 356, 357) बुद्ध प्रेम, अहिंसा, शांति, मैत्री के माध्यम से परिवर्तन चाहते थे।

महाराष्ट्र में दलित पैथर आंदोलन में मार्क्सवाद और अम्बेडकरवाद को लेकर वैचारिक संघर्ष की चिनगारी पड़ी जिससे दलित पैथर आंदोलन बिखरकर टूट गया। जिसका प्रभाव दलित साहित्यिकारों पर भी पड़ा। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर चाहते थे कि भारत के दलित वर्ग बौद्ध समाज में संघटित हो न कि साम्यवादी दल के पीछे जाएं। उन्हें विश्वास था दलितों का उद्धार बौद्ध धम्म अपनाकर ही हो सकता है। बाबासाहब साम्यवादियों से भी अपील करते थे कि वे बौद्ध धम्म का भी अध्ययन करें जिससे कि वे जान सकें कि मानवता के दुखों का अंत किस प्रकार किया जा सकता है। बाबासाहब पूरा भारत बौद्धमय करना चाहते थे। 14 अक्टूबर, 1936 को नागपुर में अपने दस लाख अनुयायियों के साथ डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने बौद्ध धम्म ग्रहण कर लिया। बौद्ध धम्म के 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' सिद्धान्त के कारण बौद्ध धम्म विश्व का सर्वोत्कृष्ट धम्म है। जो त्रिरत्न प्रज्ञा, करुणा और समता का द्योतक है।

डॉ. अम्बेडकर ने बुद्ध और कार्ल मार्क्स में लिखते हैं कि मार्क्सवादी लोग मार्क्स की तुलना बुद्ध से करना उचित न माने, पर यद्यपि यह है कि सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में बुद्ध अपेक्षाकृत अधिक युक्तियुक्त लगते हैं। बाबासाहब अम्बेडकर दोनों चिंतकों में समानता भी देखते हैं, लेकिन साथ ही यह भी मानते हैं कि बुद्ध का चिंतन अधिक मानवीय होने के साथ-साथ परिवर्तन को

(Handwritten signature)



स्थायी बनाने में सक्षम है। (प्रतिमान-समय समाज संस्कृति प्रवेशक : जनवरी-जून 2013 वर्ष-1, खण्ड- 1, अंक-1, पृष्ठ-56)

अतः भारतीय समाज को बदलने के लिए अमबेडकरवाद और बुध्ददर्शन जरूरी है। बौध्द धम्म और दर्शन ने जिस दृढ़ता और गंभीरता से जाति व्यवस्था का विरोध निरंतर किया था वैसा किसी अन्य धर्म में दिखायी नहीं देता। भारत के मार्क्सवादी जातिप्रथा पर बात करने से कतराते हैं। वे भूल गए कि जाति सिर्फ आर्थिक संरचना नहीं है बल्कि वह सामाजिक संरचना भी है। मार्क्सवादी होने का दावा करने के बावजूद वे 'जाति चेतना' से मुक्त नहीं हो पाते हैं। कार्ल मार्क्स ने आज से लगभग डेढ़ सौ साल पहले भारत की जाति-समाज-संरचना पर विचार करते हुए बताया था कि जातिप्रथा भारत की प्रगति और उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। जितनी जजह से भारत में कोई सामाजिक क्रांति नहीं हुई जबकि विश्व के अनेक देशों में सामाजिक क्रांतियाँ होती रही हैं। इसलिए जातिप्रथा को सामाजिक-आर्थिक संरचना मानकर उसका अध्ययन करना चाहिए। अमबेडकरवाद, बुध्ददर्शन और मार्क्सवाद मिलकर कार्य करते हैं तो जाति उन्मूलन की सामाजिक क्रांति हो सकती है।

भवतु सब्ब मंगलम्!

संदर्भ :

1. 'बयान हिन्दी मासिक, दिल्ली, वर्ष: 5, अंक:58, मई 2011, डॉ. अमबेडकर : बुध्दवाद और मार्क्सवाद - मार्क्सवाद डॉ. रामकुमार वर्मा , पृ. 15, 16
2. 'अन्विक्षण' मराठी त्रैमासिक, पुणे : वर्ष :3, अंक-4, अप्रैल-जून 2013 जातिअंत आणि जातीच्या मानसशास्त्राची शक्यता : डॉ. रावसाहेब कसबे, पृ. 10 से 33
3. भारतीय दलित साहित्य : परिप्रेक्ष्य -सम्पादक व अनुवाद पुन्नीसिंह, कमला प्रसाद, राजेंद्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, मार्क्सवाद और दलित साहित्य : सदा क-हाडे पृ. 41 से 58
4. मैनेजर पाण्डेय साहित्य और दलित दृष्टि: सर्वेश कुमार मौर्य : आलेख - आज का समय , मार्क्सवाद और दलित दृष्टि पृ. 180 से 192
5. 'अपेक्षा' त्रैमासिक अमबेडकरवादी साहित्य का मुखपत्र, अंक 36-37 वर्ष-10, जुलाई -दिसंबर 2011 : अपनी-अपनी अपेक्षाएँ मार्क्सवादियों की प्रगतिशीलता पृ. 3-9
6. साहित्यिक दृष्टि : अमबेडकरवादी विचारधारा : एक दृष्टि - वेद प्रकाश, पृ. 10 से 27

(Handwritten signature)

Review of Research



International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 3 | December - 2017

Impact Factor : 5.2331(UIF) 2249-894X

URDU SHAYARI OUR QUAMI EKJAHATI



Dr. Shaikh Maimuna Allahabuksh

Asso. Professor, U. E. S. Mahila Mahavidyalaya, Solapur.

Dr. Shaikh Maimuna Allahabuksh

ہندوستان کو آندی مل کر آج ۳۳ سال ہو گزرے مگر ہم ابھی تک اپنے وطن کو پاک نہیں کر سکے۔ سڑکیوں سے مل میں کر رہے ہائی ویز میں نفرت لایا جانے کے لئے تہمید تک کے بعد روٹی کی صل کو بھلا کر جلی کرنے کی کوشش کی تھی۔ کبھی اس کو مٹل اور کئی پتہ لگتا کہ نفرت کو مٹائی گی۔ کبھی اسے تہمید تک کی اصرار فرمایا گیا۔ اتنے دنوں بعد کہ مسلمانوں کی زبان کہا گیا۔ اور کہ مسلمانوں کی زبان (روایت سے بہت نقصان دار) مسلمانوں کی زبان نہیں ہے، صداقت ہے کہ وہ زبان کو اپنے لئے والوں میں مسلمان زبان تھی۔ جس طرح ہندوستان میں اسلامیت ہندوؤں کی ہے اس کا مطلب یہ نہیں کہ ہندوستان ہندوؤں کا ملک ہے۔ بالکل اسی طرح اور ہاتھ داناں میں مسلمان اسلامیت میں ہی اس کا مطلب یہ نہیں کہ وہ مسلمانوں کی زبان ہے۔ اس سے ہندو ہندوؤں کو اور کرنے کے لئے میں کوئی بیگنی کی رعایات کو اور لایا ہے۔ یہ ایک ٹولہ کہانی ہے اس مضمون میں جان کر ناممکن نہیں۔ اور انہی نے کوئی بیگنی کے حتمی کا خوب کہا ہے۔

جا کہوں اسے، زمین کو تو لو مانے
جرے ہم کو ان کے بت جو گئے ہوانے

ایوں سے رو رکنا تو جان سے بیکار
بیکاروں کو لکھنا حکم کو بھی دوانے

تک آکے میں نے آؤں وہ قوم کو چھوڑا
۲۰۱۷ء ۲۰۱۸ء ۲۰۱۹ء جرے لٹانے

جرے کی سورتی کو بھاپے تو ادا ہے
تاکہ زمین کا لہر اور ۲۰۱۷ء ۲۰۱۸ء

آجرت کے ہوانے کا ایک بار، پھر امدادی
بھوڑوں کو پھر سورتی لکھ سورتی سورتی

سورتی سورتی سورتی ہے سورت سے دل کی سورتی
اک ایک ہوا اور اس میں سورتی



جو علماء و شعرا بھی اردو کا قاری اور قوی بگتی ہے۔ اردو کا قاری لاہور کا ہے اور اس کا زبان اردو ہے ہی ہر قوم اور ہر مذہب کی ملی بلی کا سہولت سے ہے۔ ایک فوٹو سرت تک مختلف مذاہب اور تہذیبوں کے باہمی انکسار سے ہندوستانی سماج نے ایک خوبصورت سوچا اور ایسے سماجی تھیلے جو نکال کر اس نئے سماج نے ایسی مشور کہ زبان کی ضرورت محسوس کی جو اتحاد، بھائی بھائی اور حق کی تہذیب کی راہ میں کر سکے اور صحیح معنوں میں جمہوری طرز فکر کو فروغ دے سکے۔ ان تمام کے سرپرستوں کے لیے اردو زبان و ادب میں آئی۔ یہی علامت اردو کا قاری کی نشان اہتمام ہے۔ اردو کا قاری کی وجہ سے سولہویں، سترہویں اور اسیویں صدیوں نے بھائی بھائی، انسانی دوستی، سماجی اور تعلیمی اور سیاسی راہیں دی۔ آج بھی اردو کا قاری سے ایک مشور کہ ہندوستانی تہذیب اور نگراں گماں ہے۔ اس کی کامت میں ہندوؤں اور مسلمانوں، سکھوں اور عیسائیوں نے مل کر حاصل کیا ہے۔ ہر مذہب و نسل کے افراد کے عرصت اور جذبات کو سمجھ کر ان کی اصلاحی روپ ملا گیا ہے جس سے زبان کے ادب اور قاری باہمی میل جول اور تعلیمی اتحاد، محبت اخلاقی اور قوی بگتی کے ذریعوں کی بنیاد پڑی ہے۔ ان ہی عناصر کی موجودگی نے اردو زبان کے ادب کا ایک نئے سماج بنا دیا ہے۔ جو سارے ہندوستانی عوام کے جمہوری تہذیب سے ہم آہنگ ہے۔ چنانچہ اردو ادب کی ہندوستانی تہذیب کی ان اہمیت شعور نظر میں اس طرح کو لایا ہے کہ وہی ایک حد مسلم ہوتی ہے۔ اگر ہم اردو قاری سے اردو کا قاری میں قوی بگتی کے تصور کا ہاؤ میں تو اردو کا قاری انہیں ملے گا جس نے بگتی کے تصور کو جنم دیا۔ اردو کا قاری میں قوی بگتی کا تصور بھی پہلوؤں سے ملتا ہے۔ اس کا ایک اہم پہلو تصور میں ملتا ہے۔ ہر شخص کے جذبات کا احترام تمام بشری نوع انسان سے محبت ہر مذہب سے عقیدت کی صورت میں ملتا ہے۔ قوی بگتی کا یہ پہلو اردو کا قاری کی روگ میں خون کی کر دیاں دیاں ہے۔

اردو کی ترقی میں سولہویں کا بہت اہم حصہ ہے۔ انہوں نے اپنے عظیم محبت کا عوامی بولی اپنی اردو میں لوگوں تک پہنچایا۔ اس نے اردو میں علامت اور علامت اور اردو کا قاری میں محبت، تعلیمی سہولت اور اردو کی انسانی دوستی ہر ایک کے لئے احترام و عقیدت کو سب سے زیادہ بگتی۔ ان سولہویں کی عظیم کی مداح تھی۔

قوی بگتی کا اردو سماج اور اردو کا قاری میں ہندوستانی، مسلمان، ہندو تہذیب، ہندو سماج کا ذکر ملتا ہے۔ اردو شعراء انکسار ملتا ہے کہ ہندو سماج نے اپنے تھیلے اور قاری کا تھیلہ اپنا لیا۔ قوی بگتی کا تھیلہ اپنا لیا ہے۔ سماج ایک مذہب کے قاری نے دوسرے مذہب کے قاریوں اور تھیلوں، تھیلوں یا مذہبی رہنماؤں کی تعریف کی ہے۔ اردو کا قاری سماج عظیم انسانیت کا تصور اور دوسروں کے جذبات کی فصل میں ملتی ہے۔ اسی طرح اہم اور اہم اور انسانی دوستی کے لیے باہمی اتحاد کی ضرورت کی صورت میں ملتا ہے۔

ماتنے کے لیے اپنے کام کے لیے قوی بگتی کا عظیم ہوا ہے۔ وہ کہنے کے ساتھ ہی عظیم کی ہندو انسانیت کی محبت اور انسانی حقوق کی صورت کا کہنے ہے۔



ہندو کی مسلم کی ہندوستانی میں بھی
جہانی ہوں اپنی ماری گولہ نہیں ہوں گے بھی

خیر پلے کہہ ڈھپتے ہیں ہم اخیر
سارے جہاں کا درد ملے جگر میں بھی

ایم
نہیں ہوتی:

ناقص ہیں الی ہندوستان مستحکم کے
دوست کے نام نہ اسی جہ میں مجھ کے

ناقص ہوتی:

کاؤنٹنہیں کنگ جہن میرے لیے
کم نہیں ہے سے میرا دل میرے لیے

ختم ہے کہ ہندوستان کی طرح ہندوستانی لاہور بھی قومی اتحاد سے ہے اب ہندوستانی ہندی قومی تنظیم کی قریبی تاریخ
ہے۔ تنظیمی محنت ہندوستانی احزاب بالائے ہندوستانی کے غیر میں ہے۔ ہندی متحرک تہذیب لاس سے ڈاٹو سارے ہے۔ لہذا
سے لے کر آج تک نفروں کو کٹانے اور دونوں کو لانے لہذا ہندی قومی قومی ہے ہر کرتی ہے۔

کسی بار میں ہر ماہ نہیں کہ ہندوستان میں ہر ماہ نہیں

سرخ کر دینی باتوں میں اب ہر دینی کوئی بات نہیں

ہندوستان کی ہندی زبانوں کے مطالبے میں ہندوستان سے زبان ہر ہندوستانی کے ساتھ قومی تنظیم کے چند بات کو چاہی گیا
ہے۔ اپنے بھی یہ کہانت مشہور ہے کہ ایک اور ایک ہمارے ہوتے ہیں۔ لاس اب سے ہم سب ہندوستان کی مالیت ہندو
آندی کو فرور کھینے کا حکم ہم کر گئے۔

۲۰۱۷:

ایک ہندوستان قومی تنظیم میں ہر دن نہیں

دردوں کو ہر سے ہندوستانوں سے کہا بات ہے



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

UGC Approved Journal No. 48514

Impact Factor : 5.2331(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: Dr. Shaikh Maimuna Allahabuksh. Topic:- Urdu Shayari Our Quami Ekjahati. College : U.E.S. Mahila Mahavidalaya , Solapur. The research paper is original & innovative. Your article is published in the month of Dec 2017.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

☆ پندت برج نرائن چکسبت:

چکسبت نے 1882ء میں فیض آباد کی سر زمین میں آنکھ کھولی اور اُن کی وفات 1926ء میں رائے بریلی انٹنشن پر دل کے دورے کی وجہ سے ہوئی۔ اُن والد بھی شاعر تھے۔ یقیناً اُن تخلص تھا۔ چکسبت نے بی۔ اے، ایل۔ ایل۔ بی کی ڈگری حاصل کی اور وکالت کو اپنا پیشہ بنایا۔ چوں کہ شاعری کا ذوق ورثے میں پایا تھا۔ اس لئے وکالت کے ساتھ ساتھ شاعری میں بھی خوب نام روشن ہوا۔ چکسبت شاعری میں خیالات کی تازگی کے ساتھ ساتھ زباں میں شاعرانہ لطافت اور الفاظ میں تاثر کا ہونا ضروری سمجھتے تھے۔ ان کی غزلوں میں عاشقانہ مضامین کم نظر آتے ہیں۔ فلسفیانہ حکیمانہ مضمون زیادہ ہیں۔ چکسبت کے کلام میں اصلاحی رنگ نمایاں ہے۔ زمانے کی تاہوار یوں پر اُن کی نظر تھی۔ اپنی شاعری کے ذریعہ وہ زمانے و معاشرے کی اصلاح کا انجام دینا چاہتے تھے۔ چکسبت سچے محبت و وطن تھے۔ اُن کے کلام میں بیداری کی تصویر چلتی ہے۔ اقتصادی مسائل بھی اُن کی نگاہ میں تھے۔ غریبوں اور مفلسوں سے انھیں محبت تھی۔ لڑکیوں کو بھی مسلسل نصیحتیں کرتے تھے۔ سماجی تاہوار یوں سے وہ برگشتہ تھے۔ اُن کے اشعار میں مذہبی نظریے کے نقوش بھی ملتے ہیں۔ جن سے مسلمانوں کو کہیں کہیں فرقہ واریت کی پوٹلی ہے۔ لیکن یہ درست نہیں ہے۔ چوں کہ چکسبت ایک حقیقی محبت و وطن تھے۔ اس لئے اہل وطن اور وطن کی محبت کے ساتھ ہی ساتھ منابر قدرت کی منظر کشی بھی اُن کے کلام کا جز و لازم ہے۔ چکسبت فطرتاً استعمال پسند ہیں۔ اس لئے اُن کے یہاں ہر محالے میں توازن ہے۔ حالانکہ اُن کا انتقال کم عمری میں ہوا۔ اس کے باوجود بھی وہ اُردو شاعری کی تاریخ میں ایک منفرد مقام رکھتے ہیں۔ اور ان کا کلام آج بھی زندہ اور تازہ ہے۔ ان کے بعض اشعار تو زبان زدِ خاص و عام ہیں۔ مثلاً یہ شعر

زندگی کیا ہے عناصر میں ظہورِ ترتیب

موت کیا ہے ان ہی اجزاء کا پریشان ہونا

چکسبت کی زبان صاف اور سست ہے غزلوں میں بیان کی دلکشی کے سبب ایک تاثیر محسوس ہوتا ہے ساتھ ہی ایک فنکارانہ نگار اور وسیع انظری کا احساس ہوتا ہے۔ انھوں نے اُردو غزل کے دامن کو فلسفہ اخلاقیات، سیاست وغیرہ موضوعات سے آراستہ کیا ہے۔ مختلف موضوعات سے تعلق رکھنے والے چند اشعار پیش کئے گئے ہیں۔

سدا حاری منزل کتنی سے کس پہاقتائی سے

تن خاکی کو شاید رزق نے گر دسٹر جانا

صفتیہ دیر میں ہم پر قدرت سمجھو

پھول کا خاک کے تودے سے نمایاں ہونا

بہت سو در ہاوا عطا تھے نار جنم کا!

حرہ سو ز محبت کا بھی کچھ اے خبر جانا

True Copy

PRINCIPAL
U.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur



عدم سے آئے تھے دنیا میں کیا معلوم تھا ہم کو
 رہے گا ساتھ سو از زندگی کا در دہر ہو کر
 زندگی تلخی ایام کا افسانہ ہے
 زہر بھرنے کے لیے عمر کا بیان ہے
 درود لہا، پاس و قاء، جذبہ ایمان ہونا
 آدمیت ہے یہی اور یہی انسان ہونا
 مصیبت میں بشر کے جو ہر مردانہ کھلتے ہیں
 مبارک بزدلوں کو گردش قسمت سے ڈر جانا

چکسبت کے کلام کا مطالعہ اس حقیقت کو منکشف کرتا ہے کہ ذات و پات کی تفریق سے ہٹ کر وہ اردو کے ایک بلند مرتبت شاعر ہیں۔

☆ تلوک چند محروم:

تلوک چند نام محروم تخلص 1887ء میں عیسیٰ خیل ضلع میانوالی (پاکستان) میں پیدا ہوئے ابتدائی تعلیم میانوالی اور گریجویٹ عیسیٰ خیل سے کیا۔ اور وکس و تدریس کے پیشے سے منسلک ہو گئے۔ شاعری کی تقریباً تمام اصناف پر انھیں عبور حاصل تھا۔ لیکن ان کا خاص موضوع نظم تھا ان کی شاعری کے مختلف مجموعہ شائع ہو چکے ہیں۔ پہلا مجموعہ 'سرخ معانی' تھا۔ زبایعات کا ایک مجموعہ 'زبایعات محروم' کے نام سے شائع ہوا ہے۔ محروم نئے پرانے اور ملے جلے رنگ کے شعراء میں بڑے محرم سمجھے جاتے ہیں۔ ان کے کلام میں مذہبی اتحاد اور جب الوطنی کا جذبہ پایا جاتا ہے۔ اور ساتھ ہی ساتھ عصری آگہی اور مناظر قدرت کی عکاسی بھی۔

محروم نے پھوٹ، بھٹاق، تنگ نظری، تعصب اور فرقہ واریت کی سخت سے سخت الفاظ میں مذمت کی ہے۔ قومی یک جہتی کے دل سے قائل تھے۔ ہندو مسلمانوں میں جو نا اہتاقی کی فضا پیدا ہوئی ہے اسے اپنے شعور اور احساس کی پوری قوت صرف کر کے ختم کرنا چاہتے تھے۔ تاکہ ہندو مسلم پھر سے ایک قوم بن کر روبرو نہ رہیں۔ اور ان کے درمیان کا افتراق ختم ہو جائے ان کا خیال تھا کہ انگریزوں کی ذالی ہوئی پھوٹ نے کی بدولت ہندو اور مسلمانوں میں مہر و وفا اور صدق و صفا کے اوصاف ختم ہو گئے ہیں۔ ہندوستانی خود اپنے امن و آمان کے دشمن بن گئے ہیں۔ اور اپنی ذلت و بربادی کو خود دھوٹ دے رہے ہیں۔ محروم نے غزلیں کم لکھی ہیں۔ لیکن جو کچھ لکھی ہیں وہ پر کیف ہیں۔ کہیں کہیں خوبصورت عناصر ملتے ہیں اور انداز مستی بھی پائی جاتی ہے۔ محروم عملاً زندگی میں پرستی اور خود قصور سے کوئی سروکار نہیں رکھتے تھے۔ بلکہ وہ اپنی شعراء کی طرح انھوں نے بھی اپنی غزلوں میں صنف نازک کے ناز و ادب کا عیش پرستی کا ذکر کیا ہے۔ مگر جب ان کے اسلوب میں پختگی آگئی تو وطن کی محبت، قومی یک جہتی اخلاقیات اور

معاشرت کو اپنی غزلوں کا موضوع بنایا۔ چند اشعار دیکھیے۔
 دام غم حیات میں اُلجھا گئی امید
 ہم یہ سمجھ رہے تھے کہ احسان کر گئی
 کفر و دین میں اُستوار جاویداں پیدا کریں
 نالہ ناتوس سے باگب ازاں پیدا کریں
 ہم رہو قدیم ہیں اور جانتے ہیں خوب
 ہموار رہ گزار گئی ہے کبھی نہیں
 وہ دانا ہے جسے دنیا میں ہے اقرار نادانی
 کسے دانائی کا دعویٰ ہے نادانوں کا ناداں ہے
 گلستانِ وطن میں آئی ہے کیسی بہار اب کے
 عبادل کفوا نچی فغاں معلوم ہوتی ہے
 بہت عزیز تھے غربت کے ہبزہ زاروں سے
 جنوں نواز وہ اپنے وطن کے ویرانے

☆ فراق گورکھپوری:

فراق 1896ء میں گورکھپوری میں پیدا ہوئے۔ شاعری انھیں ورثے میں ملی تھی۔ ان کے والد منشی گورکھ پرشاد شخص
 عبرت اپنے زمانے ممتاز شاعر تھے۔ ابتدائی تعلیم گورکھپوری، الہ آباد سے بی اے اور آگرہ یونیورسٹی سے انگریزی ادبیات میں
 ایم۔ اے کیا۔ الہ یونیورسٹی میں انگریز کے پروفیسر مقرر ہوئے۔ پھر قوم کی جدوجہد آزادی نے انھیں اتا متاثر کیا کہ تحریک آزاد
 میں کود پڑے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ملازمت سے برطرف کئے گئے اور انھیں جیل جانا پڑا۔ فراق نے ہر صفحہ سخن میں ملیح آزمائی کی۔ اور
 کامیاب بھی رہے غزل اُن کا خاص میدان تھی۔ غزل گوئی میں وہ اپنے ہم عصروں میں سب سے بلند مرتبہ رکھتے ہیں۔ کلام کے
 مختلف مجموعے ہیں۔ 'روپ اُن کا رہا عبات کا مجموعہ ہے۔ یہ حقیقت ہے کہ فراق نے اپنے بزرگوں سے بہت کچھ سیکھا تھا۔ سچیدگی
 اور فحور نگار کرنے کی عادت بچپن ہی سے اُن کے حراں کا خاصہ تھی۔ انھوں نے کئی زبانوں کا گہرا مطالعہ کیا تھا۔ فراق ابتداء میں
 امیر مینائی سے متاثر تھے۔ لیکن جب انھوں نے مختلف اُردو شعراء کے کلام کا مطالعہ کیا تو اُن کے طرز شاعری میں تفسیر آیا۔ اور اُن کا
 اپنا ایک طرز بن گیا۔ اُن کا خیال تھا کہ محض کلاسیکی شعراء کا مطالعہ کسی کو اہم شاعر نہیں بناتا جب تک کے اُس کے جذبات برائے حقیقت
 ہونے کی صلاحیت نہ رکھتے ہو۔ شاعر میں انفرادی تخلیقی قوت کا ہونا ضروری ہے۔ اُس میں باریک بینی اور تجرزی کا وصف بھی خاص



طور سے ہو۔ محکم میں فراق جذباتی شاعر ہیں۔ اُن کے خیالات حکم اُن کی آواز کا انکسار کے ساتھ روز اور دردمندی کے ساتھ انسانی زندگی پر بھروسہ بھی ملتا ہے۔ اُن کے زبان میں شمس، بلوچ، پلک اور پیار کی جاشنی ہے۔ محاکات کی خوبی بھی اُن کے کلام میں ہے۔ ابتدا میں اُن کی زبان فارسی آمیز تھی۔ بعد میں انھوں نے ہندی الفاظ کا استعمال حسن و خوبی سے کرنا شروع کیا۔ فراق ترقی پسند شعرا اور مفکروں میں بہت بلند مرتبہ رکھتے ہیں۔ کیوں کہ ان کے کلام میں معاشرے و زندگی سے تعلق رکھنے والے سبھی حصہ مسائل کی ترجمانی پائی جاتی ہے۔ فراق کی غزل میں روایتی مضمونوں سے لے کر سیاست اور سماجی منکشف نم حیات کا تصور اور محبت کی کمک سب کچھ ہے۔ لیکن جس چیز سے فراق کو فراق بنا دیا وہ اُن کا طرز احساس ہے۔ اس طرز احساس میں فراق کی فنکارانہ انفرادیت پوشیدہ ہے۔ اُن کے کلام میں عشق کی نفسیاتی باریکیاں بھی ہیں۔ فراق کی عظمت اُن غزلوں پر قائم ہے۔ جہاں انھوں نے دن کی باتوں کو کہنے کی کوشش کی ہے۔ اشعار دیکھئے۔

شام بھی تھی دھواں دھواں حسن بھی تھا اُداس اُداس

دل کو کئی کہانیاں یاد آ کے رہ گئیں

اس دور میں زندگی بشر کی

پیاری رات ہو گئی ہے

ہستی یہ جزنائے سلسل کے کچھ نہیں

پھر کس لئے یہ نگر ثباتِ دُعا ہے

غرض کے کاٹ دیئے زندگی کے دن اسے دوست

وہ تیری یاد میں ہوں یا تجھے بھلانے میں

مہربانی کو محبت نہیں کہتے اسے دوست

آہ اب مجھ سے تیری رنجش بے جا بھی نہیں

لیکن فراق اپنے اس امتیازی شان کو چھوڑ کر بار بار سطحی لذت کو شیوں کی طرف مائل ہوتے ہیں۔ اور بڑی حد تک اپنے توجہ

اُن ہی پر مرکوز رکھتے ہیں۔ فراق اپنی غزلوں میں ہندوستانی تہذیب اور اُس کے نقش و نگار کو ایک خاص انداز میں پیش کرنے میں

پہلوئی رکھتے ہیں۔ فراق کے یہاں محبوب اپنی خاص سچ دہج کے ساتھ نمایاں ہے۔ ذیل کے اشعار دیکھئے۔

ہر عضو بدن جام یہ کف ہے دم رفتار

ایک مرد چہ امان نظر آتا ہے خراماں

یہ جسم ہے کہ یا کرشن کی ہنسی کی کوئی ہو

بل کھایا ہوا روپ ہے یا شعلہ بیچاں

طبیعت اپنی گہرائی ہے جب سنان راتوں میں
ہم ایسے میں تری یادوں کی چادر تان لیتے ہیں۔

☆ آئندہ نرائش ملا:

1901 میں لکھنؤ میں پیدا ہوئے اور آباؤ اجداد کشمیری تھے۔ والد کا نام کاہلیت نارائن ملا تھا۔ جو ایک ماہر قانون داں اور لکھنؤ بار کا وکیل کے چیرمن تھے۔ آئندہ نارائن کی ابتدائی تعلیم فرنگی محل لکھنؤ سے شروع ہوئی۔ گل کالج لکھنؤ سے بی۔ اے اور ایم۔ اے انگریزی ادب میں کیا۔ پھر ایل۔ ایل۔ بی کا امتحان پاس کیا۔ اور خاندانی پیشہ وکالت سے ہی وابستہ ہوئے پارلیمنٹ کے ممبر بھی رہے ہیں۔ اردو، فارسی زبان اور شاعری سے دلچسپی ابتدائی ہی سے تھی منوہر لال زکری کی اصلاح پر شاعری کا آغاز کیا۔ مزاج میں نفاست تھی۔ وہ جمالیاتی احساسات سے بہرہ ور تھے۔ اُن کا کلام میں انسان دوستی، حب الوطنی، قومی و وطنی احساسات مناظر قدرت اور سیاسی و تہذیبی افکار کی آمیزش نظر آتی ہے۔

ملا کی غزلوں میں فکری پہلو اور احساس جمال نمایاں ہے۔ غزل کے موضوعات میں تنوع ہے۔ غم اور خوشی دونوں ہی موضوعات انھیں اپنی طرف کھینچتے ہیں۔ ملا نے اپنی غزلوں میں لکھنؤ کی زعمہ روایات کو جگہ دی ہے۔ اُن کی ابتدائی غزلوں میں نہیں لیکن بعد کی غزلوں میں فنکارانہ نگار اور وسیع انظری کا احساس ہوتا ہے۔ ملا اقبال اور حالی سے بے حد متاثر تھے۔ دونوں کے کلام سے متاثر ہونے کے باوجود بھی اُن کا اپنا ایک فکری رویہ ہے۔ جو دونوں سے جدا ہے۔ ملا کے کلام کے دو مجموعے ہیں۔ 'جئے شیر' اور 'کچھ ذرے کچھ تارے'۔

ذیل میں ملا کے کلام کے چند نمونے پیش ہیں۔

نظام یکدہ ساقی بدلنے کی ضرورت ہے
بزاروں ہیں حبش جن میں نہ ملے آئی نہ جام آیا
واہی اور بے کی یہی شعلوں کی زمیں
ابھی مٹی کے فرشتے سے بھی ماہیں نہیں
ایک ہنگامہ آتش نفساں بھی ہے حیات
یہ نظر انجمن شعلہ خاں ہی تو نہیں
اب کہیں جا کے ہوئی جگر کی شب بھر کی شب
آج آنکھوں میں کوئی اشکِ فرداں بھی نہیں۔

True Copy



PRINCIPAL
E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur

☆ پنڈت ہری چند اختر:

وطن ہوشیار پور تقسیم ملک تک لاہور میں رہے۔ فارسی میں منشی، فاضل اور انگریزی میں ایم۔ اے کیا۔ مضمون نگاری اور شعر و شاعری سے ابتداء سے لگاؤ تھا۔ مختلف ملازمتیں کیں بعد میں آل انڈیا ریڈیو سے وابستہ ہوئے۔ روایتی شاعری سے ہٹ کر بڑے چمکا دینے والے موضوعات غزل میں داخل کئے اختر کی غزلیں اپنے بیان کی دلکشی کی بدولت ایک تاثر رکھتی ہیں۔ اختر بہت ہی ذہین اور حاضر جواب تھے۔ مشاعروں کی انوائٹنگ میں اپنا جواب آپ تھے۔ جس محفل میں جاتے لطائف کی بارش کرتے تھے ان کا مجموعہ کلام 'کفر ایمان' ہے۔ ذیل میں ان کے چند اشعار درج ہیں۔ بعض میں سنجیدگی و مسانت ہے اور بعض میں سنجیدگی و مسانت کے ساتھ خوشی فطری کی فضا ہے۔

تکلم کی خوشی کہہ رہی ہے حرفِ مطلب سے

کہ اشکِ آمیز نظروں سے ادا ہونے کا وقت آیا

ہمیں بھی آپرا ہے دوستوں سے کام کچھ، یعنی

ہمارے دوستوں کے بے وفا ہونے کا وقت آیا

ٹلے کی شیخ کو جنت مجھے دوزخ عطا گا

بس اتنی بات ہے جس کے لیے محشر پیا ہوگا

رہے دوزخ فرشتے ساتھ اب انصاف کیا ہوگا

کسی نہ کچھ لکھا ہوگا کسی نے کچھ لکھا ہوگا۔

یروز شرعاً حاکم قادر مطلق خدا ہوگا

فرشتوں کے لکھے اور شیخ کے ہاتوں سے کیا ہوگا

غرض درج بالا شعراء کے کلام کی شاعرانہ خوبیاں اور ان کے کلام کے مضموں کے مطالعہ سے یہ واضح ہوتا ہے کہ غیر مسلم شعراء بھی مسلم شعراء کی طرح اردو شاعری کے رحوں و نکات سے احسن طریقے سے واقف تھے۔ موضوع، طرز و اسلوب، شاعرانہ خوبیاں زبان کی سلاست فصاحت و بلاغت غرض جس پہلو سے بھی غیر مسلم شعراء کے کلام کو دیکھتے ان کے اور مسلم شعراء کے کلام میں برابری نہیں ہے۔ شاعری کی حد تک دیکھیں تو نہ ان میں لسانی تعصب ہے اور نہ مذہبی۔ اگر نام سے ناواقف ہوتے ہوتے ان کے کلام کو پڑھیں تو کہیں سے بھی ثابت نہیں ہوتا کہ یہ غیر مسلم شاعر کا کلام ہے۔



True Copy

PRINCIPAL
U.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur

SHOLAPUR SOCIAL ASSOCIATION'S ARTS & COMMERCE COLLEGE, SOLAPUR

C.T.S NO. 10659, 128- B, Siddeshwar Peth,
Opp. Saifee Hospital, Solapur – 413005 (M. S.)
(Permanently Affiliated to Solapur University, Solapur)
(NAAC Re accredited by B Grade with 2.76 CGPA)
Email: Socialcollege@gmail.com



Editorial Board

Dr. I. S. Patel
Editor in Chief

Prof. S. A. Rajguru
Dr. D. S. Narayankar
Editor

Prin. Dr. M. A. Daial
Principal

1. Prin. K.M.Jamadar: Founder, Solapur Zilla Bhugool Shikshak Sangh, Solapur.
2. Prin. Dr. B.M. Bhanje: Prin. SBP College, Mandrup.
3. Dr. T.N. Lokhande: BOS Geog. Chairman, Solapur Uni., Solapur.
4. Dr. N.N. Chakradev: HOD Geog., Sangmeshwar College, Solapur
5. Dr. N.G. Shinde: HOD Geog., DBF Dayanad College, Solapur.
6. Prof. Dr. S.M. Mulani: HOD Geog., DSG College, Mohol.
7. Dr. A. A. Gadwal: HOD Soci., SSA's Arts & Commerce College, Solapur.
8. Dr. M. A. Chobdar: HOD Urdu, SSA's Arts & Commerce College, Solapur.
9. Mrs. Dr. N. A. Kakade: HOD Hist., SSA's Arts & Commerce College, Solapur.
10. Dr. J. K. Mulla: HOD Comm., SSA's Arts & Commerce College, Solapur.

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

EduIndex Impact Factor 5.18 UGC Approved Journal No 48178, 48818

ISSN-2278-5655

Volume-VII, Special Issue-III,

January 2018

Index

Sr. No.	Author Name	Name of Research Paper	Page No.
1	Zauhara A.R. Faniband & P.P.Prabhakar	Management Using GIS & Remote Sensing Techniques	1
2	Mr. Ingale Vaibhav Bhagwat	Disparity In Literacy Rate In Osmanabad District (Ms).	10
3	Shri Nangare M. R. & Miss. Patil S. S	Socio-Economic Profile Of Sugarcane Producing Farmers In Maishiras Tahsil Of Solapur District	15
4	डॉ. लॉडे सी. वी.	सोलापूर जिल्ह्यातील तालुकानिहाय उस पीक विविधतेचा भौगोलिक अभ्यास	20
5	Dr. H.L. Jadhav	Role Of GIS In Disaster Management	22
6	Dr. Shinde Dnyanoba Gorakh	To Study The Service Areas Of Cattle Market Centers In Satara District	24
7	शंकरराव मोहिते	सोलापूर जिल्ह्यातील तालुकानिहाय उस पीक विविधतेचा भौगोलिक अभ्यास	30
8	Dr. Shivaji Shankar Maske & Prin. Dr. B. R. Phule	A Study Of Sc And St Population In Maharashtra	33
9	Dr. Nagare vikas B.	Identification Of Changes In Different Land Use-Land Cover Categories: A Case Study Of Madh Tehsil Solaour District, Maharashtra.	37
10	डॉ. इणमंत लक्ष्मण नारायणकर	ठाणे जिल्हा भिवंडी तालुक्यातील वेगवेगळ्या पिकाखालील क्षेत्र : एक भौगोलिक अध्ययन	42
11	Prof. Dr. V.K. Pukale	Female Aggressive Attitude In Society: A Geographical Analysis Of Solapur District In Maharashtra State	45
12	डॉ. शेख ए. आय.	घन कचरा व्यवस्थापन एक पर्यावरणीय अभ्यास	53

53	Dr Inamdar Sajjid A. & Dr. Mrs Ayesha Rangrej	Innovative Teaching Strategies For Net Geners (Youth) In Higher Education	277
54	A.Tayyab Saheblal Shaikh &Dr.Mrs Ayesha Rangrej	A Study Of Usefulness Of Blended Learning (Hybrid Technology) In Higher Education	280
55	डॉ. नभा काकडे	प्राचीन भारत : भौगोलिक पार्श्वभूमी	283
56	Dr. Virbhadra C. Dande & Dr. D. N. Ligade	A Geographical Study Of Origin And Evolution Of Udgir Urban Center Using GIS (Latur District)	288
57	Dr.Asma Salim Khan	Nostalgia And Melancholy Of Childhood In Ruskin Bond's Autobiography The Lone Fox Dancing.	291
58	Dr.Raut Bapu Bhima	Flood Hazard Related To Urbanization	294
59	Dr. D. S. Narayankar	Zone Wise Changing Land Use Pattern Of Solapur City	297
60	Dr.Asma Salim Khan	The Phenomenon Of The Phenomenal Woman Maya Angelou	305
61	Prof. Sachin A. Rajguru & Prin. Dr. B. M. Bhanje	Applications Of Geographic Information Systems	312
62	Prof. Sachin A. Rajguru	Density Of Rural Population: A Gram Panchayat Level Study In Solapur District	318
63	Nayab Z A	PROBLEMS OF DRINKING WATER IN SOLAPUR CITY - A GEOGRAPHICAL ANALYSIS	325
64	प्रा. शिरमाळे महेबुबपाशा बाबुमीर्यो	जागतीक तापमान वाढीचा पर्यावरणावर होणारा परिणाम एक अभ्यास	329
65	Dr. Gause Ahmed Nabilal Shaikh	Urdu ke Feroog me Information Technology ka Role	333
66	Dr.Shaikh M.A	Iqbal ki Shairi me Faisfaye Khudi	338
67	Nikhat Ara Mushtaque Ab. Shaikh	Advance Technology in Geo- Economic Development	348

PROBLEMS OF DRINKING WATER IN SOLAPUR CITY – A GEOGRAPHICAL ANALYSIS

Nayab Z. A.

Assistant Professor, U.E.S. Mahila Mahavidyalaya, Solapur

Abstract-

Water is important natural resource necessary for life of human being. Human development is related to water. Huge water is available on the earth surface, but very limited water is usable or fresh water. There is great demand of water and the demand already exceeds supply in many parts and many more areas are expected to experience the imbalance near future. Water is used for various purposes e.g. domestic, agriculture, industries, environmental and recreational activities. It is estimated that nearly 8% of water is use for domestic purpose. These includes drinking, washing, bathing, cleaning and gardening purposes. Solapur is situated in drought prone zone of Maharashtra state. Water scarcity is recurrent phenomena in Solapur. The present paper helped to solve the problem of drinking water in the study area.

Key words- resource, domestic, scarcity, phenomena

Introduction- Water is a prime natural resource and considered as a precious national asset. It is a major constitute of a living being. On the earth surface water is available into two forms, surface water and groundwater. Water is a need for various purposes such as domestic, agriculture, industries and many other purposes. Water is one of the essential ingredient of life. Without water there cannot not be a life at all. There is a scarcity of water for all uses. Today thousands of villages and towns facing an acute water shortage. Even though in the city area huge water supply plants but water is not sufficient and their supply is very limited to a very short period of the day. With the rapid increase of pressure of population and industrialization on our water resources more and more villages and towns are facing the problems. Water problems are classified in several ways. They are identified as problems of supply, distribution, quality, pollution, floods and variability. Each of these problems are serious. As the population and economy of the region grows more and more water will be used and problems will become more acute. This research paper focuses the problems of distribution and utilization of water for domestic purpose.

Objectives –

- 1- To study the water resources in Solapur.
- 2- To study the distribution of water in Solapur.
- 3- To study the supply of drinking water in Solapur.
- 4- To study the problems of water in Solapur.
- 5- To suggest remedial measures.

Research Methodology-

The present study based on secondary data. The data collected from the munciple Corporation and socio economic abstract of Solapur District. The information is also collected from daily news papers.

Study Area-

Solapur district is situated in eastern part of western Maharashtra and south eastern part of Maharashtra. It is extended from $17^{\circ} 10'$ N to $18^{\circ} 32'$ North latitude and $74^{\circ} 42'$ east to $76^{\circ} 15'$ east longitude. The total geographical area of the district is 14895 sq. Kms. From the administrative point of view it is divided into 3 sub-divisions namely Solapur, Pandharpur and Madha. The district is divided into 11 Talukas and 1142 villages.

Solapur district is bounded by Ahmednagar in the north, Osmanabad to east, the border of Karnataka and Sangli to the south, Satara and Pune district to the west.



Results and Discussion- Solapur district is the 4th in Population and geographically in Maharashtra. Solapur district is situated in drought prone zone so there is water scarcity in this district. we find very less rain fall in rainy season also therefore we have to face the problem of drinking water.

If we think of the distribution and usage of water then we can divide the water resources into three types.

1. Water that gets naturally
2. Water that gets through dams and ponds
3. Water that gets through the canal, bore well etc.

Water is a prime necessity of life. But humans are facing a worldwide water crises. According to United Nations many people do not have access to clean water to drink or to wash. Sometimes there is not enough water and sometimes the available water is unclean and unhealthy. Water distribution system play a important role in presenting a desirable life quality to the public. It comprises the distribution pipeline network, service reservoir, treatment plant, flow meters, chamber and indicator. Providing sufficient water of appropriate quality and quantity has been one of the most important issue in human history.

Solapur corporation is established in 1964. At that time the area of Solapur Corporation was 23.23

sq.kms but in 1992 the area of Solapur Corporation was extended. The neighbouring 13 villages are included in Solapur Corporation. After the extension of Solapur Corporation the area has gone up to 178.50 sq. kms. The present population of Solapur is approximately 10.50 lakh.

The following statistical information will tell us more about the domestic use of water and the sources of water. The information is given by public health officer of Solapur corporation.

Table No - 1

Water supply from solapur municiple corporation

Sr.no	Name of project	Year	Design capacity(mld)	Available water(mld)	Actual availablewater(mld)
1	Hipparga(Ekrakh)	1932	27.00	15.00	00.00
2	Bhima river(takdi)	1968	108.00	80.00	65.00
3	Ujani dam	1998	80.00	75.00	75.00
	Total		215.00	170.00	140.00

Source- SMC, public health department, Solapur

The above-mentioned water storage is from 1932 to 1998. The Hipparga dam is constructed in 1932. the capacity of a Hipparga dam is 27 MLD. The available water storage is only 15 mld. The most important thing is that water is not made available in the summer season from this dam.

With the increasing demand of the water in 1968 water from Bhima river 30 kms south of Solapur was tapped from jack well in the river bed through pump house and supplied to the city. Takali dam on Bhima river is started in 1963. The capacity of this dam is 108 mld but water that is made available is only 80 mld. Since this dam has become very old, the storage capacity has become very less. At present only 65 mld water is made available every day. As there is water scarcity in Solapur so the pipeline is made available to bring the water from Ujani dam. This plan came into existence with the share by Chincholi MIDC so 10 mld water is reserved. Ujani water storage project is started in 1998. Water storing capacity is 80 mld but only 75 mld water is made available. If these three projects put together then the storage capacity of water goes up to 250 mld but only 140 mld water is made available from these three dams. The problems faced in water supply systems are-

- 1- Wastage and leakage
- 2- Degradation of quality of water
- 3- Cross connection
- 4- Leaching of pipe material
- 5- Reduction in carrying capacity

Findings-

The scarcity of water in Solapur city is because of short fall of rainfall. The main pipelines which carry the water from main lines are full of leakage. The water pipelines and drainage lines are close to each other. Sometimes water get mixed with drinking water because of leakage. The present quantity of water is not sufficient for the growing population. There are many good schemes, after completion of which there will be no problem of water.

Suggetions-

- 1- The machinery used to be replaced.
- 2- The internal pipelines should be replaced.
- 3- The water pipelines and drainage pipelines should be taken to keep the distance, so that the citizen will get pure water.
- 4- There should be proper water distribution management
- 5- In extention areas attention should be given to the proper distribution of water.
- 6- Rain water harvesting systems must be implemented..

References -

- 1- Solapur municipal corporation
- 2- Socio economic abstracy of Solapur
- 3- R.K.Gurjar and B.C.Jat, "Geography of water resources" Rawat Publication,Jaipur(2008)
- 4- District census hand book

DOI Prefix: 10.22183 Journal DOI: 10.22183/23501081 ISSN 2350-1081 Impact Factor: 5.210

RESEARCH DEMAGOGUE

An International Refereed, Indexed & Peer Reviewed Bi-annual Journal in Education

Volume IV, Issue I, October 2017

UGC Approved Journal No. 44476



Guest Editor

Sanjeev Kumar Mishra
Research Scholar,

Department of Adult Continuing Education and Extension,
University of Delhi, Delhi

Chef Editor

Dr. T. Manichander

Dr. S. Radhakrishnan Post Doctoral Fellow (UGC),
Department of Education, Osmania University,
Hyderabad, Telangana

Executive Editor

Dr. Ganesh Pundlikrao Khandare

Department of English,
Yashvantrao Chavan Arts & Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir, Washim, Maharashtra



A STUDY OF PHYSICAL TUTORING & SPORTING IN INDIA

Harkare Gulnar Md.Hanif
Physical Director

ABSTRACT

Advancement around the globe has made physical education and sports a vital piece of our life. The disregarded control has begun accepting significance now-a-days in every one of the strata's of individuals. Thus due significance to physical training educating and sports is being given due consideration. Sports individual are viewed as the best ministers of the country and the equivalent can be valid for an instructor in physical training in schools and colleges. The general situation doesn't appear to support as there is diminished interest for physical training rather than expanded danger of life for a typical person. This paper talks about the present situation of physical education and sports in India, likewise included is the report features of physical training world summit in Berlin.

Keywords: Sports Training, Physical Fitness, Stamina, Physical Maturity.

Introduction

Physical education and sports is one of the critical measuring sticks and also indispensable piece of training for any nation anytime of time. Thus each nation should attempt to set out a structure of activity plan for promotion and advancement of physical education and sports paradoxically, sports is seeing a tremendous blast in the media spotlight everywhere throughout the world including India while it is by and large genuinely disregarded inside the instructive framework. Physical Education goes about and in addition the arrangement of resources for the country and in the development of assessment framework in education improvements and it advances the improvement physical education in a nation. At present contrast with prior years and now we can come over the decrease of physical education in training contrast to present is one needs with beaten the obstacles and fights to improve the structure and framework status in around to build up the overall discipline in physical training and sports.

Physical Education in Post Globalization Era

Despite endeavors by part state to advance and create physical education and sports with universal collaboration; its distinctive nature and significance to training remain a consistent source of concern. Physical education and sports demonstrated disturbing (particularly within instructive framework), which given the social significance and media-inclusion of games. Its effect might be found in the move by physical education and sport public experts towards elite and high media well disposed games (at a national dimension, over the general population and private framework). A noteworthy precedent without clear separation between Ministries of Youth Affairs and Sports & Ministries of Education. The status of physical education and sports gathered the Physical Education World Summit in Berlin this activity was advanced by reports revealing the expanding basic

circumstance of physical education and sports in numerous nations. An overall similar investigation collect data and writing for about 120 nations turned out with following significant discoveries.

- a) Decreased time gave to Physical Education in Educational Programmed.
- b) Diminished spending plans in addition to deficient money related, material and staff assets.
- c) The subject experiences low status.
- d) In numerous nations instructors are not legitimately prepared.
- e) Existing Physical Education rules are not appropriately connected.

Role of Physical Education & Sports

The Physical Education and Sports safeguards the fundamental piece of information that exists between Physical Education and Sports. The equal guarantee highlighted the arrangements of in that capacity it is important to consider Physical Education and Sports as a characteristic piece of training in all schools and universities in a nation, where sports ought to be mandatory right from grade school level to till school level. Indeed, quality education involves the administering the basic necessities of fundamental abilities i.e. learning to

- i) Self-inspiration, innovativeness and critical thinking
- ii) Use intelligent apparatuses (correspondence, physical and IT)
- iii) To join and live inside sociality jumpers gatherings.

All these Board based life abilities are decisively what physical education and sports can create. Consequently, it's a given that physical education and sports must be effectively advanced by International organizations, state governments, nearby specialists. The field of education must facilitate and streamline these endeavors to shield the cause of

physical education and sports. This will incorporate aiding to redress the equalization of physical education and game in education in its drive to enhance the circumstance of physical education and sports worldwide.

Physical Education & Sports

Indian Situation:

Physical education and sports shapes an essential piece of educational system notwithstanding when it never got the significance it merits. Even though it is incorporated as a major aspect of the educational programs from the beginning times of education, it has never been considered important by the instructive administrators, the academicians and the understudies. Physical education is the main calling where you talk and play/perform. The concept of physical education in the psyche of overall population is huge round, play & play and no work. Abraham Lincoln cited in one of his address, Sportsman is the best Ambassador of the Nation. Hence, the Physical Education Director/Teacher can likewise be the best Ambassador of our Institution/University. The issue of characterizing physical education isn't just that the term is broad based and complex, including such huge numbers of sorts of wonders, but also it implies distinctive things to various individuals. Sports prompt advancement of aggregate identity of the youngster and its satisfaction and perfection in body, psyche and soul. Despite the fact that this definition differs significantly with respect to accentuation on various perspectives, they still have numerous basic components. Some of them might be noted as: physical education is a period of aggregate education process. It is entirety of aggregate experience and their related reactions. Experience developed and responses developed out of interest in enormous strong exercises. All-round development of individual - physical, mental, social, moral is the genuine aim of physical education. It is equivalent to in general education. In the Indian setting, physical education is maybe the main viewpoint of education which has not been given due consideration. That is expected, most probably to the way that we have stayed happy with what the British have given over to us, with no genuine endeavors on our part to prepare any solid and extensive program for physical education specially suited to our conditions. We have ever-focused on the academic aspects, the physical one being moderately immaculate. This has resulted in an inexorably expansive number of Indians who are neglecting their bodies, to whom physical education is like physical training, whose physical wellness isn't what it ought to be they are getting "soft". One of the primary destinations of any physical education movement is to maintain and enhance the soundness of the adolescents in our school and colleges. What's more, the School has the duty to see that all students achieve and keep up ideal wellbeing, from an ethical point of view, as well as from the

standard point that instructive experience will be much increasingly significant if ideal wellbeing exists. A youngster learns less demanding and better when he is in a condition of good health. Even one's qualities have a lot to do with wellbeing building and destroying activities. Lamentably, countless experience the ill effects of "value illnesses", i.e. they comprehend what they should do to keep well, yet they neglect to do as such. They realize that tobacco smoking can cause death from Lung Cancer, and still, after all that they don't surrender smoking. They understand how liquor influences the driving capacity, yet they drive in a state of inebriation. They value the job of customary exercise in weight control, yet they do little to change their inactive method for living. Education and wellbeing and restorative experts have in this manner, long recognized the requirement for a program of Director Physical Education exercises in school educational programs. It is amid the developmental and quickly developing period of grade school-age that establishment of legitimate propensities, attitudes and thanks toward every single physical action, including play is implied and attractive citizenship qualities obtained, so that in adulthood he will be outfitted with the information, sound reasoning procedures, physical stamina and passionate development to live adequately in an ever-changing and exceedingly complex society. In that regard, instructors bear a noteworthy responsibility in noting that challenge adequately. It is stated, "An inert personality is the devil's workshop".

Need of Physical Education & Sports

To think about physical education and sports isn't just to examine performance, technique or records journalistic-partner yet to take a gander at some of the implicit suspicions held by the all inclusive community about physical education and sports. Regardless of the criticalness of games, it has been primarily a vehicle of 'escape' in excess of a road of education. A sport has been seen as a diversion from the preliminaries of regular day to day existence. Ask some companions why they are engaged with games. The reaction will probably have something to do with "fun" or "delight".

Interpretation

Each College/University ought to have an elective subject of physical education, if not obligatory, where 60% pressure ought to be given to theory and 40% to handy. Another perspective is that all the first year students ought to experience a base physical education programme like National Physical Fitness Test; else they won't be given the degree. We ought to have schools of physical education with 4 to 5 years degree course, similar to Indian Institute of Physical Education and Sports Science. Physical education and sports are seen not merely as a play area but rather additionally as a research facility in which the speculations of each discipline might be tried or potentially as a marvel whose worthiness value, and

impact on individuals and society must be consistently investigated.

Suggestions & Recommendations

1. Revision and reconstruction of physical education schedule in context with need of society.
2. Periodical refresher course for physical educational work force by the qualified organization.
3. Updating and upgrading of the subject and related zone in collaboration with top educational & physical education bodies. Strict usage and pursue up of the recommended physical education standard.
4. A legit and true examination framework for aggregate assessment and feedback.
5. The scholarly investigation of physical education and sports might be as stimulating and fun as experience as one's genuine cooperation in sports.
6. Once the standard, topic, and "spirit" of the two recreations are understood, they might be similarly fulfilling. General education is for the masses, so likewise physical education.
7. Recreation is an essential as reading, writing and arithmetic in the life of common man. Physical exercises do the attire of physical education when the centre is around the methods used, namely, huge muscles, 'Recreation' when the emphasis is on life is worth living (euphoric) mentality or use is recreation time.

Conclusion

Youngsters are the advantages of any nation on the planet, with most astounding under 25 populace on the planet India stands to pick up with more work and yield with the Human Resources accessible, however then safeguarding the human resource & maintaining of these youthful ones is a test to India, one of the quickest creating country of the world. Therefore, to empower a person to lead glad, agreeable and healthy life as an individual from society, he ought to consistently participate in amusements and sports and diverse exercise software engineers to guarantee development of Physical Fitness and learn abilities in games and recreations, which have vestige esteem. Society then again ought to give enough opportunities to its individuals with the goal that they may draw in themselves dormancies of their own decision and therefore create or keep up the dimension of physical fitness. Except if there is enhancement in the 'General Standard of Health', brilliance in games can't progress. Physical education and sports exercises in instructive foundation should go for health related and performance related territories to guarantee enhancement of performance in aggressive sports. Physical education in this manner comprises in promoting a deliberate all-round improvement of

human body by scientific technique and along these lines keeping up phenomenal physical fitness to accomplish one's treasured objectives throughout everyday life. Consequently any association of physical education should begin with building up an inspirational frame of mind and self-certainty among Physical Educators themselves and make them feel, physical education require not exist in the outskirts of the schools/universities, however ought to stretch out itself to the classrooms and move toward becoming the focus or main issue of educational system.

References

- Kales, M. L. & Sangria, M. S. 1988. Physical and History of Physical Education. Ludhiana: Parkas Brothers.
- Chu Donald. 2002. Dimension of Sports Studies, John Wiley & Sons, New York Chic ester Brisbane Toronto Singapore 1982 Sethumadhava Rao, V. S. "Brand Image of Physical Education", HPE Forum, 2(2), 1-3.
- Connor-Kuntz & Dummer. (1996). Teaching across the curriculum: language-enriched physical education for preschool children. Adapted Physical Activity Quarterly, Vol. 13, pp.302-315.
- Nathan M. Murata (2003). Language Augmentation Strategies in Physical Education. The Journal of Physical Education, Recreation & Dance, Vol. 74.
- Grewal C. S. 1989. Why Physical Education? Vyayam Vidnyam, 22(4), 15-19.
- Cramer, J. 1997. Brave Start. Leisure Management, 17(5), 20-23.
- Mberi, N. 2001. Civil war at Marathonas. Eleftherotypia, 17 (translated from Greek).
- Hall, C. M. 1987. The effects of hallmark events on cities, Journal of Tourism Research, 26(2), 44-45.
- Burbank, M., Andranovich, G. & Heying C. 2001. Olympic Dreams: the Impact of Mega-events on Local Politics. Lynne Rienner Publishers, Boulder.

Feb 17/18
2018

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

A Peer Reviewed Journal
Eduindex Impact Factor : 5.20

UGC Approved journal No. 48833
ISSN : 2277-8721

Vol. VII Special Issue – II

NEW STREAMS IN HIGHER EDUCATION

— EDITORS —

Dr. Smt. Mudekar Tejaswini B.
Head, Department of Economics,
Kamala College, Kolhapur.

Dr. Shri. Powar Nataji V.
Co-ordinator, YCMOU Study Centre
Kamala College, Kolhapur.

— CO-EDITOR —

Dr. Shri. Patil Sujay B.
Department of Marathi,
Kamala College, Kolhapur.



KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR
NAAC Reaccredited 'A' grade (3.12 CGPA)
College with Potential for Excellence
www.kamalacollegekop.edu.in

Sr. No.	Title	Author	Page No.
77	Overview of Indian Leather Industry	Dr. D. K. More & Dr. P. Y. Burute	321
78	Higher Education and Challenges Before Higher Education	Mr. Ramchandra Keshav Wakarekar	326
79	Skill Development and Education in India	Smt. Pranita Abhijeet Jadhav	329
80	New Trends in Commerce Education (With Special Reference of Vocationalisation of Traditional Education)	Smt. Prachi Sushant Khade	333
81	A Geographical Analysis of Physical Set of Satara District	Prof. S. P. Patil & Dr. C. U. Mane	337
82	Higher Education and Skill Development in India	Dr. Suryanarayana S. Bure & Dr. S. S. Shejal	344
83	Best Practices in The College Libraries	Ravindra R Mangale	347
84	Challenges Before Higher Education in India	Smt. Rajnanda Hindurao Deshmukh	354
85	Start Up India and Opportunities Challenges	Prof. Mayur S. Hiremath	357
86	International Student Mobility in Higher Education and Brain Drain	Janhavi A. Rode	360
87	Role of National Cadet Corps in Skill Development in Higher Education	Prof. Mrs. Varsha .P. Sathe	362
88	Emerging Trends in Teaching English	Dr. Neeta S.Dhumal	366
89	Use of New Technologies in Higher Education	Prof. Ranjana V. Bansode	369
90	Use of New Technologies in Higher Education	Prof. Dr. Shivanand B. Bhanje	372
91	Use of New Technologies in Higher Education	Prof. Umashankar G. Nadargi	377
92	Understanding the need to Incorporate Soft Skills in Higher Education	Suchita R. Suragihalli	381
93	Higher Education in India: Emerging Issues and Challenges	Sunita S. Amrutsagar	384
94	'Why we are not Success in Higher Education System?'	Ms.Nishigandha Prakash Bansode Ms. Nagina S. Mali	389
95	माहिती व तंत्रज्ञान युगात ग्रंथपालाची भूमिका	अमर रंगनाथ दिक्षित	393
96	नोटाबंदीनंतरच्या काळातील भारतीय अर्थव्यवस्थेतील बदलांचे स्वरूप	डॉ. शशिकांत रामचंद्र गाडगीळ	396
97	उच्च शिक्षणाचे आंतरराष्ट्रीयीकरण आणि भारतातील उच्च शिक्षण	प्रा.सी.नूतन विभूते	401

Historicity

International Research Journal

UGC
APPROVED
62782

VOLUME - IV

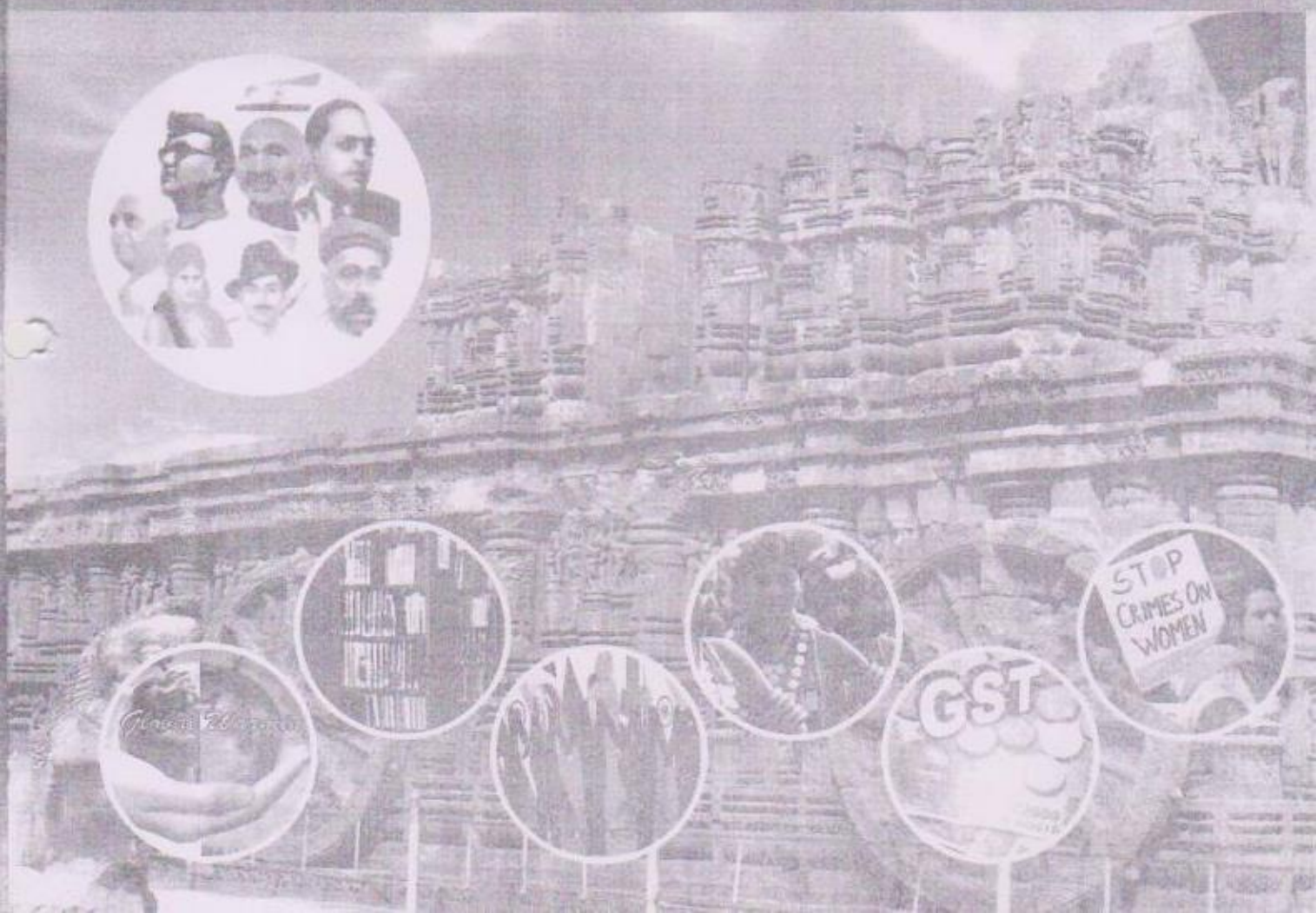
Feb. 2018

SPECIAL ISSUE

Theme

Feb-2018

**Contemporary Issues and
Challenges in Social Sciences**



INDEX

60	Remote Sensing and GIS Approach for Groundwater Potential Mapping in Sangola Taluka of Solapur District (MS) --- Dr. Govindrao Uttam Todkari	279
61	APPLICATION OF CONCENTRIC ZONE THEORY ON KALAMB TOWN Dr. Tatipamul R.V	285
62	RFID new technology for library Security Dr. Manisha K.Tank	288
63	Social & Cultural Contribution of Warkari sect Dr. Swarali Chandrakant Kulkarni	294
64	काह्यमधील प्रतिबंधात ग्रंथासूचीची भूमिका अनल संशोधन दिशित	297
65	मध्ययुगीन भारतीय समाजातील शिवांधे स्थान डॉ. प्रा. अमिता सोपान जावळे,	301
66	महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांचा आत्महत्या आणि उपाययोजना : एक अभ्यास अमोल राजाराम तळवणकर	306
67	वाकसंगीची इतिहास लेखन आणि डॉ.इरफान हुसीन --- प्रा.जयराज द्यायज धरवीडे	309
68	सोलापूर जिल्ह्यातील सोपे पध्दत प्रा.रेवणसिध्द बंठनगीकर, डॉ.सदाशिव देवकर	312
69	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कानगाव विषयक काही डॉ. भागवत गजधारे	317
70	महात्म्या गांधी यांचे पंचायतराज व्यवस्था व इंग्लंडराज्य विषयी विचार प्रा. धुळे एन.एस	320
71	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सौंदर्यविषयक विचार प्रा. आन्यासरादेन बिडनके	322
72	बाबतत विकासवादी विचार डॉ. आनंद इनामदार सिंगे	324
73	समृद्ध भारतीयवादी गांधी विचारांची जाणवणकता डॉ.माधवी धंदेबाई	327
74	पंचायत जगाच्या साहसूचक शोकावलीत प्रभाव : संगमनेर तालुका विशेष अभ्यास, डॉ. हज्जत इडमण नारायणकर	329
75	स्त्रीवादाची संकल्पना डॉ.सतिसाधु अंबुलगीकर	333
76	जगाविकासकारणातची बदली जीवनशैली आणि ई-गोमट डॉ.भीकान्त जे. होदकर	335
77	सामाज्यातील आंबेडकरांचे चळवळीतील साहित्यिकांचे योगदान प्रा.डॉ. इश्वरी रामचंद्र मुलगे	339
78	'पंचतंत्रातील उद्योगित सामाजिक संस्था - साहूदेव बाबाजी गवले कालकाव्य' प्रा.डॉ.विकास लक्ष्मण बांदे	343
79	सहित्यावरील आभासकार : सहिता मानवाधिकारांचे उद्बोधन डॉ. चंद्रकांत जावळे	347
80	जगाविकासकारण, टाईमिंग आणि आर्थिक विषमता प्रा.छोबले आर.के.	351
81	सांभुतिक भारताच्या उभारणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचे महत्त्व कुर्णिकर गजराज टांडे	355
82	सोडबंदी : शक्ती, उद्योग आणि सेवा क्षेत्रावरील परिणाम ललितान विठ्ठलजी किर्लोस्कर	358
83	भारतातील अर्थकारण व लोकशाही प्रा. विद्यासंगर लखडे	360
84	सामाजिक चळवळीचे बदलते स्वरूप --- प्रा.डॉ. शामराज महादेव लंडे	363
85	भगवान बुद्ध और उनके धम्मका संस्कृत डॉ. धम्मपाल देवना माशाळकर	366
86	जगाविकासकारण व सहकारी चूर्ण विस्थापनावरील अर्थव्यवस्था प्रा.डॉ.मैतकी संतोष माहली	369
87	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चळवळीत आभार सनातनाचा सहभाग डॉ. धनंजय मामोराव मोगले	372
88	भारत-चीन संबंधाचा नया अन्वयाचा डॉ. संगमेश्वर निला	375
89	राजकीय परिवर्तनाचे सिद्धांत : लेनिन व गांधी डॉ. पंडित महादेव लखंडे	381
90	महात्मा गांधीजींचे तत्वज्ञान डॉ. राजेंद्र भागनाथ मायकाबाई,	384

CONTEMPORARY ISSUES & CHALLENGES IN SOCIAL SCIENCES

वाङ्मयचौर्य प्रतिबंधात ग्रंथालयांची भूमिका

अमर रंगनाथ दीक्षित

ग्रंथपाल

यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय,

१४१/अ, सिध्देश्वर पेठ, सोलापूर

ar_dixit@yahoo.com

सार : संशोधन क्षेत्रात वाङ्मयचौर्य करणे हा गंभीर गुन्हा मानला जातो. विद्यापीठ अनुदान आयोगाने जाहीर केलेल्या निकषानुसार संशोधनामध्ये तृतीय पातळीवर म्हणजेच ६०% वाङ्मयचौर्य आढळल्यास संशोधकाचे ते संशोधन रद्द होण्याची कार्यवाही होऊ शकते. प्रस्तुत शोध निबंधात वाङ्मयचौर्य म्हणजे काय? त्याचे प्रकार, वाङ्मयचौर्य शोधणाऱ्या आज्ञावली, वाङ्मयचौर्य न होण्यासाठी ग्रंथालयाचे कार्य याविषयी लेखन करण्यात आले आहे.

शोधसंज्ञा : वाङ्मयचौर्य, वाङ्मयचौर्याचे प्रकार, वाङ्मयचौर्याची कारणे, कॉपीस्केन, ग्रामरली, प्लॅगस्कॅन, टर्नईटइन इ.

प्रस्तावना : माहिती व तंत्रज्ञानाच्या विकासाचा थेट परिणाम ग्रंथालयांच्या कार्यपध्दतीमध्ये झालेल्या बदलांवरून लक्षात येतो. पारंपारिक ग्रंथालयाचे आधुनिक डिजिटल ग्रंथालयामध्ये झालेले रूपांतर हा दृश्य परिणाम ग्रंथालयांमध्ये काम करणाऱ्या ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांच्या सकारात्मक मानसिकतेमुळेच शक्य झाला आहे. समाजातील इतर सेवाभावी संस्थांमध्ये ग्रंथालयांचा मुद्दा समावेश होतो. या सर्व सेवाभावी संस्थांमध्ये अत्याधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर ग्रंथालयांनी सर्वप्रथम सुरू केल्याचे निदर्शनास येते. या कर्मचाऱ्यांकडे माहिती व तंत्रज्ञानातील उच्च कौशल्ये भलेही नसतील मात्र या तंत्रज्ञानाचा उपयोग आपल्या दैनंदिन कार्यांमध्ये खूप अधिक प्रमाणात करत आहेत. एकंदरीतच समाजातील तांत्रिक बदलांचे प्रतिबिंब ग्रंथालयांच्या कार्यपध्दतीमध्ये दिसून येते. ग्रंथालयातील दैनंदिन कार्यांसाठी संगणकाचा वापर करणारी ग्रंथालये अर्धसंगणकीकृत ग्रंथालये (हायब्रीड ग्रंथालये) म्हणून ओळखली जातात. तर काही ग्रंथालये आपल्या वाचकांना सेवा-सुविधा पुरवण्यासाठी ऑनलाईन तंत्राचा वापर करतात. या सेवा सुविधांना पुरक, ऑनलाईन तंत्राने पुरवठा करता येण्यासारखी इलेक्ट्रॉनिक स्वरूपात वाचनसाहित्याची खरेदी किंवा निर्मिती करतात. त्यांना डिजिटल ग्रंथालये म्हणतात. सद्यस्थितीत सर्वच प्रकारची ग्रंथालये डिजिटल तंत्राचा वापर करत असल्याचे दिसून येत आहे.

इंटरनेटचा प्रचार व प्रसार झपाट्याने झाला असून या डिजिटल किंवा हायब्रीड ग्रंथालयांचा वाचक बऱ्याच अंशी आपल्या माहितीची गरज पूर्ण करण्यासाठी त्यावर अवलंबून असल्याचे आढळून येत आहे. सोशल मीडियाच्या माध्यमातून नवनव शैक्षणिक, व्यावसायिक, भाषिक वाचक गटांची निर्मिती झाल्याचे आढळते. वाचक या गटांमध्ये हस्तांतरित होणाऱ्या माहितीवर बऱ्याच प्रमाणात अवलंबून असल्याचे आढळून येत आहे. बऱ्याच वेळा ही माहिती परिक्षणाविना हस्तांतरित होऊन असल्याने या माहितीची अनुकता किंवा खरेपणा स्पष्ट होत नाही.

ग्रंथालयांद्वारे पुरवण्यात येणाऱ्या सेवांतर्गत दिल्या जाणाऱ्या माहितीची गुणवत्ता तज्ज्ञांमार्फत तपासलेली असते. या वाचनसाहित्याच्या बौध्दिक हक्काची तपासणी केलेली असते. त्याची खरेदीप्रक्रिया (लायसेंस) पूर्ण केलेली असते. त्याची किंवा वाचकांच्या गरजांशी पुरक असते. या माहितीचा शोध व वापर करण्याविषयी ग्रंथालये आपल्या वाचकांचे उद्बोधन करत असतात. यामुळे ग्रंथालयांद्वारे दिल्या जाणाऱ्या माहिती सेवांचा दर्जा गुणवत्तेनुसार उच्च स्तरावरचा असतो.

माहितीसेवांची प्रक्रिया काटेकोरपणे राबवूनही बऱ्याचवेळी माहितीच्या उपभोक्त्याकडून स्वतःचे संशोधन कार्य करत असताना जाणते किंवा अजाणतेपणी वाङ्मयचौर्य झाल्याची प्रकरणे घडलेली आहेत. यामुळे संशोधक, संशोधन संस्था किंवा संशोधनपूर्ती दरम्यान वाङ्मयचौर्य म्हणजे काय, ते कसे टाळता येते. 'फेअर युज' अंतर्गत इतर संशोधकाचे संशोधन किती प्रमाणात वापराता येते, मूळ संशोधकाला कसे उद्धेचित करून देता येते. आपले संशोधन वाङ्मयचौर्येच्या उज्यापासून कसे वाचवता येते. त्यासाठी तपासणी कशी करतात. त्याच्या कोणकोणत्या आज्ञावली उपलब्ध असतात, याची सखोल माहिती असणे आवश्यक आहे.



Dnyansadhana Shikshan Prasarak Mandal Nivade, Sanchalit
M. H. Shinde Mahavidyalaya, Tisangi

Tal. Gaganbavada, Dist. Kolhapur. 416 206 (M.S.)

Affiliated to Shivaji University, Kolhapur Re-Accredited By NAAC with 'B' Grade (2.55)



Hon. M. H. Shinde

One Day Interdisciplinary National Seminar

On

Nation Builders

CERTIFICATE

This certificate is awarded to Prof./Dr./Mr./Ms. अमर रंगनाथ दीक्षित

of _____ for Participation / Paper presentation / Chairing a session

on ग्रंथालय विह्वंस : ग्रंथालय विकासातील अवृथ्त शत्रू. at One Day Interdisciplinary National Seminar on

'Nation Builders' organized by M. H. Shinde Mahavidyalaya, Tisangi at Seminar Hall in Kamala College, Kolhapur on 17th Feb., 2018.

True Copy

PRINCIPAL
U.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur

Dnyansadhana Shikshan Prasarak Mandal Niwade, Sanchalit

M.H.Shinde Mahavidyalaya ,Tisangi

Tal. Gaganbavada, Dist. Kolhapur (M.S.)

**One Day
Interdisciplinary National Seminar
17th Feb.2018**

**On
Nation Builders**

A Special Issue of

**Aayushi International Interdisciplinary
Research Journal**

Special Issue - XXI

ISSN -2349-638x UGC Approved No. 64259

Impact Factor 4.574

Editor

PRIN. DR . N. K. SHINDE

DR . VINOD KAMBLE

True Copy

PRINCIPAL
J.E.S. Mahila Mahavidyalaya
Solapur

Sr. No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1.	डॉ. डॉ. एक चटेल	राष्ट्रधारणीत नवमानवतावादी विचार आणि सं. कायदेभंग नाटक	1 To 2
2.	डॉ. टी. क. कुमार वलवी	भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील आदिवासी स्त्री स्वातंत्र्य सेनानी : दशरीबेन	3 To 4
3.	डॉ. शिवाजी विठ्ठल सुतार	यशवंतराव चव्हाण, यांचे भाषाविषयक विचार	5 To 7
4.	डॉ. डॉ. नामदेव कृष्णा मोळे	महात्मा जोतीराव फुले यांच्या शैलीविषयक विचारांचे महत्व	8 To 10
5.	श्री. एम. बालू, पोवार	ग्रामीण साहित्याची चळवळ आणि ग्रामीण साहित्य	11 To 12
6.	प्रा. महादेव च. जाधव	मराठी कविता व नाटकाचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान	13 To 14
7.	रेखा काशिनाथ पसाले	राष्ट्रवांधणीत समाजसुधारकांच्या साहित्याचे योगदान	15 To 17
8.	प्रा. श्रीमती नंदा श्रीपती पाटील	महात्मा फुले यांचा शैक्षणिक दृष्टिकोन	18 To 21
9.	श्री. अनिल राघव महाजन	भारतीय विकासात शिक्षणचे योगदान	22 To 24
10.	प्रा. प्रेरणा एल. चव्हाण	'कृष्णाकाठ' मधील राष्ट्रउभारणी विषयक विचार	25 To 27
11.	प्रा. सी. एस. एस. पाटील	कादंबरी वाङ्मयाचे राष्ट्रिय योगदान	27 To 29
12.	प्रा. सी. कृष्णा कतुराज जांभळे	यशवंतराव चव्हाण - राष्ट्रीय विचार	30 To 31
13.	श्री. संभाजी राजाराम उबारे	कविवर्य नारायण सुर्वेचे साहित्यातील योगदान (सुर्वेच्या कवितेतील स्त्री रूप)	32 To 33
14.	प्रा. आशा लता नारायण खोत	कुसुमाग्रजांच्या साहित्यातील सामाजिक जाणिव	34 To 35
15.	कु. वैजनाथ शहाजी हिरवे	राजर्षि शाहू महाराजांचे शिक्षणक्षेत्रातील योगदान	36 To 37
16.	प्रा. सुखदेव नारायण एकल	राष्ट्रवांधणीत समाजसुधारक महात्मा फुले यांचे योगदान	38 To 40
17.	प्रा. डॉ. एन. सोनकांबळे	पंतप्रधान : इंदिरा गांधी यांचे राष्ट्रउभारणीतील योगदान	41 To 43
18.	डॉ. वर्षा शिरोधर फाटक	पुरोगामी विचारवंत राष्ट्र संत नुकडोजी महाराज	44 To 46
19.	प्रा. सी. अश्विनी हिरीकुडे	राष्ट्रवांधणीतील १९४२ च्या लढ्याचे योगदान	47 To 48
20.	प्रा. ए. ए. घोडके	गहननिर्माणगीत शिक्षकांचे योगदान	49 To 52
21.	प्रा. डॉ. मधुकर ग. सुतरे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान	53 To 57
22.	अमर रंगनाथ दीक्षित	ग्रंथालय विध्वंस (Library Vandalism) : ग्रंथालय विकासातील अदृश्य शत्रू	58 To 61
23.	प्रा. डॉ. आर. पी. आझाव श्री. सरदार निवृत्ती पाटील	राष्ट्र उभारणीमध्ये ग्रंथालयांचे स्थान	62 To 66
24.	प्रा. उदयकुमार. ना. लाड	सहकार चळवळ आणि राजकारण : विकासात्मक वाटचाल	67 To 70
25.	प्रा. कमलाकर एन. राक्षसे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवांधणी	71 To 72
26.	प्रा. दयानंद इनामदार	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पूर्व दलित नेतृत्वाची चळवळ (संदर्भ : गोपाळ बाबा दलंगकर, शिवराम जानवा कांबळे, किसन फागू बनसोडे)	73 To 75
27.	प्रा. मच्छिंद्रनाथ मारुती सूर्यवंशी	पंडीत नेहरू / राष्ट्रवाद, लोकशाही विचार	76 To 77
28.	प्रा. ए. बी. मोहिते	महाराजा सयाजीराव गायकवाड - सुशासित राज्यकारभाराचा आदर्श	78 To 81
29.	प्रा. भरत पाटील प्रा. डॉ. बी. एस. जाधव	पर्यावरण संवर्धन चळवळ व्यक्तीगत संस्थात्मक वा गटात्मक	82 To 83
30.	कु. श्यामा तुकाराम भालेकर	भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनात राष्ट्रभक्ती गीतांचे असणारे योगदान	84 To 85

ग्रंथालय विध्वंस (Library Vandallism) : ग्रंथालय विकासातील अडथळ म्हणू

अमर रमेश्वर डोंडले

मुंबई

पु.ई.एस.महिला महाविद्यालय,

१४३अ, सिध्द्वर पेट, सोलापूर.

सारांश :- डॉ. एस. आर. रंगनाथन यांच्या पाचव्या मुलभूत कायद्यानुसार ग्रंथालय ही वर्धिष्णू संस्था आहे. ग्रंथालयाच्या स्थापनेनंतर ही संस्था निरंतर वाटत राहते. आधुनिक काळात संगणकीकरणामुळे ह्यात वृद्धीच झाली आहे. ग्रंथालयाचा निर्दोष विकास होण्यासाठी ग्रंथालयांना होणाऱ्या हानीकारक उपद्रवी घटकांवर नियंत्रण असणे आवश्यक आहे. प्रस्तुत शोध निबंधात ग्रंथालय विध्वंसासाठी कारणीभूत घटकांची सविस्तर माहिती देऊन त्यावर करावयाच्या उपाययोजनांची चर्चा केली आहे.

शोध संज्ञा :- ग्रंथालय विध्वंस, ग्रंथालय विध्वंसाचे प्रकार, वाचनसाहित्य विध्वंस, पायाभूत सुविधा विध्वंस, ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांशी वैरवर्तन, व्यवस्थापनातील मतभेद इ.

ग्रंथालय यांना शैक्षणिक संस्थांचा आत्मा मानले जाते. डॉ. राधाकृष्णन यांनी तर ग्रंथालय प्रस्तावना हे शिक्षण संस्थेतील सर्वांत महत्त्वाचे अंग मानून त्यास हृदयाची उपमा दिली आहे. शिक्षण संस्थांच्या रचनेमध्ये ग्रंथालयांना केंद्रस्थानी ठेवण्यात आले आहे. अध्ययन, अध्यापन, संशोधन यांना उच्चशिक्षणात अत्यंत महत्त्वाचे स्थान असून संशोधकांच्या उर्ध्वपूरतीसाठी ग्रंथालये अविरत प्रयत्नशील असतात. आधुनिक माहिती व तंत्रज्ञानाचा उपयोग आपल्या दैनंदिन कार्यात करून वाचकांच्या माहितीविषयक विविध गरजांच्या पूर्तीसाठी सेवा सुविधांची योजना ग्रंथालयांनी केलेली आहे. या विविध सेवा व सुविधांसाठी पुरक वाचन साहित्य संग्रहविकास, मनुष्यबळ विकास, पायाभूत सुविधांचा विकास केला जातो. या विकासांची प्रक्रिया अखंड व सातत्यपूर्ण असल्याने ग्रंथालये आपल्या अंदाजपत्रकात या सुविधांचा समावेश करतात. मिधीची तरतुद करून पध्दतीक प्रकाशही राबवले जातात. बऱ्याच संस्थांमध्ये या सर्व योजना राबवण्यासाठी भविष्यकालीन धोरण ठरवण्यात येऊन ठरवलेल्या कालखंडात त्याची निर्मिती केली जाते.

ग्रंथालय सेवा व सुविधांच्या सातत्याकडे व त्यांच्या मूल्यमापनाकडे मात्र ग्रंथालये किंवा शैक्षणिक संस्था व्यवस्थापनांनी पाहिलेले वेव्हारा प्रमाणात लक्ष दिल्याचे आढळत नाही. राष्ट्रीय मूल्यांकन परिषद (नॅक) किंवा नॅशनल बोर्ड ऑफ अॅक्रीडिटेशन (एनबीए) किंवा इंटरनॅशनल अॅक्रेडिटेशन फॉर स्टॅटिस्टीकल प्रोसेसिंग (आयएससी)द्वारे उच्च शिक्षणातील संस्थांचे मूल्यांकन करून घेण्याचे बंधन घातल्यामुळे किंवा या संस्थांनी केलेले मूल्यांकन व त्याद्वारे मिळालेला दर्जा ही गौरवाची बाब असल्याने महाविद्यालये व विद्यापीठांनी आपल्या ग्रंथालयात विविधांगी सुधारणा केल्या. त्यात वाचनसाहित्य संग्रह-विकास, संगणक प्रयोगशाळा, इलेक्ट्रॉनिक वाचनवाहिन्यांची खरेदी व व्यवस्थापन, ग्रंथालयाचे अंशतः किंवा पूर्णतः संगणकीकरण ग्रंथसंग्रहाच्या संग्रहासाठी, स्मार्टकार्ड योजना, आयएफआयटी तंत्रज्ञान यांचा समावेश होतो.

या सोयी सुविधांच्या भविष्यकाळातील सातत्यपूर्ण कार्यांमध्ये अनेक धोके किंवा अडचणी निर्माण होण्याची शक्यता असते जसे तंत्रज्ञानाची अधःपावता, कर्मचाऱ्यांची बदली किंवा निवृत्ती, नवनिवृत्त कर्मचाऱ्यांचा त्रुटीकोन, आर्थिक तरतूद इ. या सर्व धोक्यांमध्ये वाचनसाहित्य विध्वंस (Books, Manuscripts and Related material Vandallism) हा ग्रंथालयासमोरील गंभीर धोका असून या व इतर सर्व भविष्यकालीन धोक्यांवाचत ग्रंथालयांनी आपली व्यवस्थापकीय धोरण ठरविणे आवश्यक आहे.

विध्वंस :- (Vandalism) अँक्सफर्ड डिक्शनरीनुसार Vandallism म्हणजे "Action involving deliberate destruction of damage to public or private property". सार्वजनिक मालमतेची सहेतुकपणे केलेली मोडतोड म्हणजे विध्वंस होय हा विध्वंस परिबद्ध व्यवस्था, आरोग्य व्यवस्था, प्रशासन व्यवस्था या सारख्या सार्वजनिक सेवा संदर्भात सातत्याने अनुभववास येतो. समाजाचा शासन, प्रशासन सार्वजनिक घटना याच्या विरोधात निषेध प्रकट करण्याचा प्रयत्न पाड्याने होत असतो.

ब्रिटीश समाजशास्त्रज्ञ प्रो.स्टॅनली कोहन, लंडन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स यांनी अशा विध्वंसाची पुढील पाच प्रकारांमध्ये विभागणी केलेली आहे.

१) मूल्यवान वस्तूंच्या प्राप्तीसाठी :- (Acquisitive Vandallism) सार्वजनिक मालमतेचा विध्वंस पैसा किंवा मूल्यवान सामानाची म्हु करण्यासाठी केला जातो. ए.टी.एम. मशींस किंवा वेडिंग मशींस फोडण्याची उदाहरणे नियमित घडल्याचे वाचनास मिळते.

२) पध्दतशीरपणे ठरवून केलेला विध्वंस :- (Tactical Vandallism) एखाद्या घटनेची किंवा निजघर्याची प्रतिक्रिया म्हणून, प्रश्नाक प्रशासनाचे लक्ष वेधण्यासाठी म्हणून विध्वंस केला जातो. इमारतीची, दारे, सिंखड्यांशी मोडतोड करणे इ. चा यात समावेश होतो.

३) वैचारिक धोरण भूमिकेतून विध्वंस :- (ideological Vandalism) हा Tactical Vandalism चा पुढील भाग असतो. प्रशासनाच्या विरोधात भिंतीवर घोषणा रंगवणे, पोस्टर/बॅनर लावणे, पोलीसांचा हस्तक्षेप होऊन प्रसिध्दी मिळवण्यासाठी केलेल्या चळवळी, रास्ता रोको, निदर्शने, चक्काजाम इ. चा पात समावेश होतो.

४) प्रत्युत्तर म्हणून केलेला विध्वंस :- मालमतेच्या मालकाविरोधात रोष व्यक्त करण्यासाठी केलेला विध्वंस जसे बाह्यांची मोडतोड, मालमतेची नासधूस याचा पात समावेश होतो.

५) उद्‌घाटने/खेळ म्हणून केलेला विध्वंस :- (Play Vandalism) गटांमधील एकमेकांना दिलेल्या आव्हानांची परिणीती म्हणून केलेला विध्वंस चात समाविष्ट होतो. इमारतीच्या वरच्या मजल्यावरील खिडक्यांची तांबदाने फोडणे, रस्त्यावरील खांब्यांचे दिवे फोडणे इ. या प्रकारच्या विध्वंसाची उदाहरणे आहेत.

६) उद्‌वीगनतेतून केलेला विध्वंस :- (Malicious Vandalism) दुजामाव, श्रेय न मिळणे या कारणामुळे काही गटाद्वारे विध्वंस केला जातो.

ग्रंथालय व वाचनसाहित्य विध्वंस :- समाजासाठी निस्वार्थीपणे काम करणाऱ्या संस्थामध्ये ग्रंथालयाचे स्थान अग्रभागी आहे. उच्चशिक्षणातील संस्थांची ग्रंथालये तेथील उच्चशिक्षण प्रचार, प्रसार व संशोधन कार्यात मदत करतांना उपभोक्त्याद्वारे केलेल्या विध्वंसाचा सामना करत असतात. ग्रंथालयाच्या विकासाचा आराखडा तयार करतांना भविष्यात होणाऱ्या अद्या विविध प्रकारच्या विध्वंसांना आळा घालण्यासाठी धोरण निर्माण करून त्याबाबतची उपाय योजना करणे आवश्यक आहे. या ग्रंथालयाचे उपभोक्ते विविध वयोगटातील शैक्षणिक पातळीतील, विविध सामाजिक किंवा राजकीय पात्रभूमी असलेले असतात त्याच बरोबर अध्यापक, संस्थेचे विविध कर्मचारी, व्यवस्थापन परिषदेचे सदस्य, माजी विद्यार्थी परिसरातील विद्यार्थी व नागरिक यांचाही त्यात समावेश असतो. हेतुपूर्वक किंवा आजानव्याने पापैकी बऱ्याच उपभोक्त्यांकडून ग्रंथालयाच्या वाचनसाहित्य संग्रहाचे, पाषाणूत सुविधांचे नुकसान करण्यात येते. तर काही वेळा नैसर्गिक आपत्तिसमुळे ग्रंथालयाचे नुकसान होते. हे नुकसान तात्पुरते किंवा कायम स्वरुपी ठरते.

ग्रंथालय विध्वंसाचे पुढील प्रकार आहेत.

१) वाचनसाहित्य विध्वंस :- ग्रंथालयातील वाचनसाहित्याचा उपयोग करणारे उपभोक्तेच ग्रंथालयाच्या वाचनसाहित्याचे विध्वंसक असतात. ग्रंथ किंवा नियतकालीकाचे अंक, अनुद्रीत वाचनसाहित्य पावर खुणा करणे, अधोरेखीत करणे, ग्रंथाच्या दर्जाविषयी मुख्यपृष्ठ किंवा इतरत्र लेखन करणे, ग्रंथाची पाने दमडणे, पत्ते, फोन नंबर लिहिण्यासाठी ग्रंथाचा त्राण करणे, बांधणी खिळखिळ होण्यापर्यंत पुस्तके फेकणे, आपटणे, एकमेकांना मारहाण करण्यासाठी वापरणे, मुक्ताहार ग्रंथालय पध्दतीमध्ये ग्रंथाची कपाटातील जागा बदलणे ग्रंथातील महत्त्वाची माहिती असलेली पाने फाडणे, ग्रंथाची चोरी करणे, ग्रंथालयाचे ग्रंथ परत न करणे, बारंबार स्मरणपत्रे देऊन सुध्दा त्याची दखल न घेणे, बदली होणे, विवाह, मृत्यू या कारणामुळे वाचकांच्या शिक्षणात खंड पडतो पर्यायाने ग्रंथालयाचे वाचनसाहित्य त्यांच्याकडून परत न केल्याने मौल्यवान ग्रंथ संग्रहावून बाद होतात.

२) पाषाणूत सुविधांचा विध्वंस :- ग्रंथालयामध्ये वाचकांसाठी विविध सोयी व सुविधांचा विकास करण्यात आलेला असतो. यामध्ये वाचनकक्ष, अभ्यासिका, स्वागत कक्ष, पिण्याच्या पाण्याची सोय, झेरॅक्स सुविधा, महाविद्यालय व विद्यापीठ ग्रंथालयामध्ये मोफत इंटरनेट सेवा देण्यासाठी सुराज्य संगणक प्रयोगशाळांची निर्मिती, स्वागत कक्ष, अभ्यासिका येथे प्रसन्नता पेण्यासाठी शोभेच्या फुलांची रोपांची योजना, ग्रंथालयातील नोटीसबोर्ड, फॅन किंवा

वातानुकुलीत यंत्रणा, मेन्स व विमेन्स रुम्स, कॉफी वेंडींग मशिन इ. सुविधा निर्माण केले जाते. ग्रंथालयाचा उपयोग करणाऱ्या वाचकांपासून या सेवांना धोका पोहचला जातो व या सेवासुविधांच्या सातत्यात खंड पडतो.

टेबली खुल्याची मोडतोड करणे, ग्रंथालयाच्या विविध विभागांच्या इमारतीवर शेरबाजी लिहिणे, विधुत उपकरणांची मोडतोड किंवा अज्याहत वापर करणे, नोटीसबोर्डवरील मजकूर नष्ट करणे, संगणक व इंटरनेट सेवेचा दुरुपयोग करणे, टेबलावर रेखाटणे, आकृती, नावे लिहिणे इ. कृती वाचक करतो.

३) ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांशी गैरवर्तन :- वाचनसाहित्य व वाचक यांना जोडणारा दुवा म्हणजे ग्रंथालय कर्मचारी होय. वाचनसाहित्याची निवड, व खरेदी करणे त्यावर वर्गीकरण तांत्रिकीकरण या तांत्रिक प्रक्रिया करून नोंदी करणे, संगणकाच्या (OPAC) च्या माध्यमातून त्याची सूचना वाचकांपर्यंत पोहचवणे इ. कार्ये अविरतपणे तो करत असतो. बरिष्ठांचे आदेश, वाचकांच्या अपेक्षा व ग्रंथालयाची उद्दिष्टपूर्ण करण्यासाठी परीश्रम करत असतो, ग्रंथालयाचे यश याच कर्मचाऱ्यांच्या परिश्रमाचे फळ असते. या कर्मचाऱ्यांचा कामाचा उल्हास व

मानसिकता त्यांना मिळालेल्या प्रोत्साहनामुळे टिकून राहते. त्यांना विविध प्रकृतीच्या वाचकांकडून अपशब्द वापरणे, अरेरावी, प्रसंगी मारहाण करण्याच्या घटना घडतात.

प्रशासनाच्या पातळीवरही त्यांच्याशी वरिष्ठांद्वारे असेच गैरवर्तन झाल्याचे अनुभव असलेले. ग्रंथालय कर्मचाऱ्यांना इतरत्र नेमणूक देणे, त्यांच्याकडून असेसिपिक कामे कठम देणे, कार्यालयीन वेळेपेक्षा ही अधिक वेळ बांधण्याचे आदेश देणे, वार्षिक वेतनवाढ रोखणे, कालबन्ध प्रदोषाची वेण्यास उशीर करणे, ग्रंथालय नुकसानीस जबाबदार धरून भरपाई देण्यास भाग पाडणे, नैमित्तिक, अर्जात रजांचे प्रस्ताव नमनूर करणे, उजळणी, उद्बोधन वगांत सहभागी होण्यापासून रोखणे, विविध विकासकामांसाठी वेळी अचेंडी त्यांना आर्थिक सहकार्य करण्याचे आदेश देणे या व पासारख्या गैरवर्तनामुळे कर्मचाऱ्यांची निराश मानसिकता होते. पर्यायाने त्यांच्या कार्यक्षमतेवर परिणाम होतो.

४) व्यवस्थापनातील मतभेद :- महाराष्ट्रातील जवळजवळ सर्व अकृषी महाविद्यालये ही धर्मादाय आयुक्तांकडे नोंदणीकृत संस्थांद्वारे चालवली जातात. उच्चशिक्षणाचा प्रचार व प्रसार करण्यासाठी शासनाने अनुदानित महाविद्यालयांचे प्रशासन अशा संस्थांकडेच दिलेले आहे. स्वातंत्र्योत्तर काळात ध्येयनिष्ठ पदाधिकाऱ्यांच्या मार्गदर्शनाखाली अशा महाविद्यालयांनी पायाभूत सुविधा, शैक्षणिक गुणवत्ता यात वाढ करून ही महाविद्यालये नांवारूपास आणली मात्र कालांतराने व्यवस्थापकांची नवी पीढी या शैक्षणिक संस्थांकडे व्यवसायीक दृष्टीकोनातून पाहू लागल्याने संचालक मंडळांमध्ये गटाटटाचे वाद विकोपाला गेले आहेत. बऱ्याच महाविद्यालय यांच्या व्यवस्थापन मंडळाचे हकाचे वाद न्यायालयीन प्रक्रियेत अडकले आहेत. या वादाचा परिणाम महाविद्यालयांच्या दैनंदिन प्रशासनावर पडतो व शैक्षणिक विकास खुंटल्याचे आढळून येते.

ग्रंथालये याच महाविद्यालयांच्या महत्त्वाचा विभाग असल्याने या घडामोडींचा ग्रंथालयावर परिणाम होतो. वार्षिक अंदाजपत्रक, पायाभूत सुविधांचा विकास, मनुष्यबळ व्यवस्थापन, गुणवत्ता विकास कार्यक्रमांचे आयोजन इ. बाबतचे निर्णय महाविद्यालय विकास समितीच्या (स्वयंसेवक व्यवस्थापन समितीच्या) मंजुरी अभावी प्रलंबित राहतात, यामुळे ग्रंथालयाच्या विकासामध्ये अडथळे निर्माण होतात.

५) नैसर्गिक आपत्तिद्वारे विध्वंस :- भारतीय हवामान व भौगोलिक विविधता याला अनुसरून ग्रंथालय इमारतीची निर्मिती करणे आवश्यक आहे. उष्णता, पर्जन्यमान, दमटपणा या श्रुतुंचा परिणाम ग्रंथालयातील वाचनसाहित्यावर होतो, तीव्र हवामान रोधक ग्रंथालय इमारती बनवणे, पुरक फर्निचरचा वापर करणे त्यावर उत्तम उपाय ठरतो. ग्रंथसंग्रहाची जागा पुर, उष्णता, धुळ, कृमीकीटक मुक्त असावयास हवी. स्वच्छ सूर्यप्रकाश, मोकळी हवा, प्रदूषणमुक्त परिसर वाचनसाहित्याचे आयुष्य वाढवण्यास मदत करतात. ग्रंथालयामध्ये विद्युत उपकरणांची निपमित तपासणी व दुरुस्ती करावी, त्यामुळे शॉर्टसर्किट होणे टाळता येते. फ्लॅशिंग सुविधाची देखरेख केली पाहिजे. ग्रंथालयात अग्निरोधक यंत्रणेची उभारणी आवश्यक आहे. ग्रंथालय इमारतींना निपमितपणे फेरटीसार्ड करून वाळवी पासून संग्रहाचे होणारे नुकसान टाळता येते. काही वेळा समाजातील मतभेदांना, राजकारणाचा मटाटटातील विरोधाचा प्रतिकूल परिणाम ग्रंथालयावर होतो. समाजकटकांनी अशावेळी ग्रंथालयाची नासधूस किंवा जाळपोळ केल्याच्या घटना पडल्या आहेत. पासाठी ग्रंथालयाच्या संरक्षासाठी पुरेशी काळजी घ्यावयास हवी.

आधुनिक काळात ग्रंथालय संगणकीकरण झाल्याने दैनंदिन कार्याचे संगणकांमार्फत नियंत्रण होते, सेवा सुविधा, नोंद आकडेवारी अहवाल उपस्थिती नोंद, संगणकामध्ये साठवलेल्या असतात. काही ग्रंथालयामध्ये आज्ञावली (साफ्टवेअर्स) क्लाउड कॉम्प्युटींग सुविधांद्वारे पुरविलेली असतात. ग्रंथालये आपल्या सेवा सुविधांसाठी संकेतस्थळांचा वापर करतात. इलेक्ट्रॉनिक वाचनसाहित्याचा पुरवठा व वापर वाढल्याने ग्रंथालयांनी आपल्या संग्रहात व देवघेव सेवेमध्ये ई-बुकस व ई-जर्नलची संख्याही वाढविलेली आहे. या अर्थ किंवा पूर्ण संगणकीकृत अवस्थेमध्ये ग्रंथालयांना डेटा करंट होतो संकेतस्थळ हँक होणे, संगणक व्हायरस या संगणकीय विध्वंसाचा सामना करावा लागतो यामुळे दैनंदिन कामकाज ठप्प होण्याचे प्रसंग घडतात. यामाडी ऑटोव्हायरस साफ्टवेअर वापरणे, बनावट अज्ञावलींचा वापर टाळणे योग्य उपाययोजना आढळवून समासदत्व देणे, पासवर्ड, पुजर आयडी इ.ची सुरक्षितता राखणे इ. उपाय करणे शक्य आहे.

असोसिएशन ऑफ कॉलेज अँड रिसर्च लायब्ररीतून (ACRL) ची मार्गदर्शक तत्वे :- एसीआरएल या संघटनेने आपल्या मार्गदर्शक तत्वांमध्ये सुरक्षा उपाययोजना व ग्रंथचोरी विरोधात कार्यवाही या दोन प्रमुख विभागांतर्गत अनेक उपाययोजनांचा अवलंब करण्याच्या सूचना केल्या आहेत त्यात प्रामुख्याने, सुरक्षा रक्षक नियुक्ती, संरक्षण धोरण निर्माण, कर्मचारी नियुक्ती व त्यांचे प्रशिक्षण, जबाबदाऱ्यांचे वाटप, कायदेशीर उपाय योजना अहवाल, नोंद व्यवस्थापन, इ. चा प्रामुख्याने समावेश होतो.

ग्रंथालय विध्वंस विरोधात ग्रंथालयाने करावयाची उपाययोजना :-

१) ग्रंथालय ओळख कार्यक्रम :- उच्चशिक्षण क्षेत्रातील संस्थांच्या ग्रंथालयांनी नव्याने प्रवेश घेतलेल्या समासदांसाठी ग्रंथालय ओळख कार्यक्रमाचे आयोजन करावयास हवे या अंतर्गत ग्रंथालयाचे विविध विभाग व त्यांची कार्ये त्यांचे प्रमुख, तसे उपलब्ध सोबी सुविधा व

त्यांच्या वेळा घाची इत्यंभूत ओळख वाचकांना करून घावघात हवी घासाठी फिल्ल, माहितीपत्रक, ज्वालयान इ. पध्तीचा वापर केला जाऊ शकतो.

२) माहिती साक्षरता कार्यक्रम :- घा अंतर्गत ग्रंथालघातील मुद्रीत अमुद्रीत वाचनसाहित्य संग्रहाची ओळख करून देवून घा वाचनसाहित्याची रचना समजावून घाची. माहिती उपभोक्त्यांना त्यांच्या माहिती विषयक गरजा पूर्ण करण्यासाठी घाचा उपयोग कसा करता येतो यांचे प्रार्याक्षिक करून दाखवावे संगणकाची ओळख त्याची हाताळणी इ-बुक, इ-जर्नल, माहितीसाठे (डेटाबेस) यांची रचना व वापर घाबाबत कार्यशाळेचे आयोजन केले जावे. मुद्रीत व अमुद्रीत वाचनसाहित्याचा संशोधन व संशोधनरूरक कार्यासाठी वापर करण्याचे प्रशिक्षण उपभोक्त्यांना दिले गेले घाहिजे विविध राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावरील संशोधन संस्था, प्रकाशन संस्था यांच्या संशोधन सादर करावघाच्या निघमांबलीची (Style manual) ओळख वाचकांना करून घाची पूर्वी झालेल्या संशोधनाचे योग्य संदर्भ देऊन वाड.मपघीरं टोळण्याचे प्रशिक्षण दिले घाहिजे.

३) वाचनसाहित्य संरक्षण योजना :- मुल्यवान, दुर्मिळ वाचनसाहित्याचे जतन करण्यासाठी ग्रंथालघानी विशेष काळज घेतली घाहिजे. मुक्तद्वार पध्तीअंतर्गत उपभोक्त्यांच्या ग्रंथालघातील वावरावर लक्ष देवून त्यांना योग्य सूचना देण्यात घाव्यात. ग्रंथदेवणे कक्षामध्येही घा सूचना लिखित स्वरूपात लावण्यात घाव्यात. वाचनसाहित्याची देववेच करताना त्याची बांधणी पृष्ठे इ. ची तपासणी करण्यात घाची. अधोरेखांकन, पाने फाडणे, दुमडणे, आकृती चिचे यांना फाडणे इ.कृती करण्यापासून वाचकांना परावृत्त करावे. वाचनसाहित्याचे आयुष्य वाढण्यासाठी त्यावर बाळगी विरोधी प्रक्रिया करावी.

४) सुरक्षारक्षकांची नियुक्ती :- ग्रंथालघ इमारत, ग्रंथालघ सेवा, वाचनसाहित्य, ग्रंथालघ कर्मघारी यांना अनावश्यक उपद्रवापासून वाचघण्यासाठी योग्य संस्थेने सुरक्षारक्षकांची नियुक्ती करावी आयुनिक तंत्रज्ञानांतर्गत सी.सी.टी.व्ही. कॅमेरे, आर.एफ.आप.डी. संरक्षण प्रणाली बसवण्यात घाव्यात. उपभोक्ते कर्मघारी किंवा सेवाबाबतघ्या तक्रारीघ्या तात्काळ निघटारा करण्यासाठी तक्रारनिघारण पंगणेची उभारणी केल्यास समर्या निर्माण होणार नाहीत.

ग्रंथालघ इमारत, वाचनसाहित्य कर्मघारी यांना विभासरक्षण दिले जावे, इमारती व इतर घावामुत सुविधांची निघमित तपासणी करण्यात घाची.

५) ग्रंथालघ - वाचक सेतू प्रकल्प :- ग्रंथालघ व त्याचे वाचक घाव्यामध्ये निकीत संबंध निर्माण करण्यासाठी एखाघा संघटनेची स्थापना करता येईल. घा अंतर्गत वार्षिक कापरंक्रमांचे आयोजन सोपी सुविधा व सेवांचा आढावा घेऊन नविन सेवा सुरु करणे किंवा कालबाह्य सेवा बंद करणे घाविषयीचे निर्णय घेणे. वाचक प्रशिक्षण कार्यक्रमांचे आयोजन करणे, वाचकांद्वारे सूचना मागवणे त्यावर उपाययोजना करणे, घासाठी तक्रार / सूचना घेटीची योजना करणे. इ. कार्य करता येतील.

६) ग्रंथालघ कर्मघारी प्रशिक्षण :- ग्रंथालघ कर्मघारी ग्रंथालघासंबंधे विषयातील तज्ञ असतात मात्र सेवाक्षेत्रासाठी आवश्यक कौशल्यांची बऱ्याच पंगामध्ये उणिव असते. ग्रंथालघ सेवा परिणामकारक होण्यासाठी ही कौशल्ये कर्मघार्यांनी आत्मसात करण्यासाठी प्रशिक्षण कार्यक्रमांचे आयोजन करावे. घा अंतर्गत माघा कौशल्य संभाषण कौशल्य, संगणक हाताळणी कौशल्य, वैयक्तीक स्वच्छता व निटनिटकेपणा, सामान्यज्ञान कौशल्य, परिसर, राज्य घाबाबतचे सामान्यज्ञान, छंद जाणसणे, बकृत्य कौशल्य संशोधन प्रक्रियेचे ज्ञान, नेतृत्वगुण इ. सारखी कौशल्ये कर्मघार्यांमध्ये निर्माण करता येणे ज्ञान्य आहे.

निष्कर्ष :- ग्रंथालघातील वाचनसाहित्य अमूल्य आहे, त्याची भरपाई रघ्यामध्ये करता येणार नाही. हे मूल्यवान वाचनसाहित्य संग्रहीत करण्यासाठी अनेक वर्षे निघोजन करावे लागते. अर्थसंकल्पात तरतूद करावी लागते. हा वाचनसंग्रह अघाबत ठेवण्यासाठी ग्रंथालघ कर्मघारी आपटे ज्वाबदायीक कौशल्य पंगाला लावतात त्यामुळेच वाचनसाहित्य संग्रह परिपूर्ण राहतो. अशा परिपूर्ण संग्रहास अंतर्गत किंवा बाह्य शत्रुपासून हानी होण्याची शक्यता अघाते. ग्रंथालघाघ्या वाड व विकासाचे निघोजन प्रत्येक संस्थेमध्ये केले जाते मात्र ग्रंथालघांना असणाऱ्या संभाव्य धोखांबाबत कमी उपाय योजना केल्या जातात. अशा उपाययोजनांबाबत शैक्षणिक संस्थांघ्या व्यवस्थापनामध्ये जाणिवजगृती होणे हे ग्रंथालघाघ्या विकासामध्ये महत्वाचे धोरण ठरेल.

संदर्भ :-

- 1) <http://en.oxforddictionaries.com/definition/vandalism>
- 2) www.ala.org/acrl/standards/security on 22/01/2018
- 3) S.J. Gadekar : Library crime & vandalism in Engineering College download through shodhganga.inflibae.ac.in on 24/01/2018.